उपोद्घात

अनन्यधन्य विश्वमान्य प्रभु सर्वोत्तम श्रीकृष्णचन्द्र जी के अनंत चमत्कार प्रचुर लीला कल्लोलिनी में स्नान करने वाले महानुभाव भागवत धर्मियों का जन्म धन्य है. जो अज अजित प्रभु को अपने अव्यभिचारीभक्ति रशनासे स्वाधीन कर लेते हैं. और जगदाधार भी स्वभक्तों के परिषदमे षड्गुणैश्वर्य संपदाकी महतीको छोड़ उनके वशवर्ती होकर स्वजनोंका आनंद अनंतगुणितकर जगत्प्राण वायु की लीला का अनुकार करते स्वभक्तों के सत्वशाली हृदयदर्पण में यथाशय यथारुचि प्रतिबिम्बित होते हैं. ऐसे भगवदेकशरण जनोंकी सेवार्चा करना तो महद्भाग्योदयका लक्षण है, क्योंकि भागवतों का हृदय, लक्ष्मी पतिका विहार-स्थान है. और सेवार्चा करना तो उसी विषयका नाम है, कि जो वस्तु भगवत प्रेमियों को प्रियतम है, वह उन्हें समर्पण किई जावे. परन्तु भागवतों का प्रिय-पदार्थ तो केवल एक भगवच्चरित्र मात्र है. किसको यह बात अगोचर है कि योगीन्द्र श्रीशुकदेवजी श्रोता वक्ता के इहामुष्मिक संसिद्धिहेतु भागवत में श्री-कृष्णानंद कंद के जगत्पावक कीर्ति सुधापगाको प्रगटकर, सर्व विद्या रस रसिक राजा परीक्षित को लीला सरस्वतीमे सुस्नात करके सर्व विषयों की विरसता प्रत्यक्ष दिखाय कृतार्थ करते भये. "कोवा भगवत स्तस्य पुण्य श्लोकेड्य कर्मण: शुद्धिकामो न शृणुयाद्यश: कलिमला पहम्" ॥ १ ॥

अब हरिगुण लीलाश्रवण दर्शनकी रुचि उत्पन्न होना यह केवल स्वधर्म के

योग्य परिपालनका परिपाक है "धर्मः स्वनुष्ठितः पुंसां विष्वक्सेन कथासुयः ॥ नोत्पादयेद्यदि रतिं श्रम एवहि केवलम्" ॥ २ ॥ जिस मनुष्य के अंतःकरण में हरिगुण लीला श्रवणदर्शन विषयक प्रेम नहीं है, केवल कर्म मार्गी है तो वह बिना श्रम भारके कुछ भी लाभ न उठावेगा. ऐसे पुरुषों को छोड़ केवल स्वधर्म निष्ठ भगवत्प्रेमीजनोंके पूजा सत्कारार्थ, नटवर वेष धर जगन्नाटकाचार्य श्रीकृष्ण प्रभु की प्रणय सुभग ललित लीला, सार्थ त्रिमात्र शीला, प्रणवानुकूला, व्रज वन निकुंज मूला, मानादि कैतवाल वाला, कल्पलता, परमहंस ज्ञेयप्रतीता, सद्रसोल्लासिता, शुकादि सत्पक्ष पाति निषेविता, व्रजभाषा सद्वृक्षा लिंगिता, प्रभु मुरारी के लीला नाट्य मंडप निर्माण हेतु हरि परिचारक रसिक भक्तों को तच्चित्त विनोदार्थ सार्ध त्रिभागात्मक ग्रंथोपायन समर्पण है. जो हरि-हर-ब्रह्मा चिच्छक्ती का अधिष्ठान है. जिस अकार, उकार, मकार और अर्धमात्रा के एकी भावरूप प्रणवकी उपासना, मौनभाव से परमहंस करते हैं. उसी इस साढ़े तीन भाग लीलादृश्य प्रणवकी समर्चा, जो श्रीकृष्णैक शरण हैं, वे मुक्तकंठ से गावते, सद्बुद्धी से अनुभावते, सन्मित्रों को दिखावते, प्रसन्ननेत्रों से ध्याते, स्वंय भव जल से परपार हो अन्यों को निभावते हैं, कहा है "श्रीपतेः पदयुगं स्मरणीयं लीलया भवजलं तरणीयं ॥" इसी प्रकार हरिलीला (सिंहक्रीड़ा) भव गज को विदारने वाली है "प्रिय पिप्लंहि रजसा क्रीडतं चित्त मत्त मातंगं ॥ हंतु पंचास्यं श्रय रिंगतं तुंगशैल शिखराग्रे" इसी प्रकार हरिलीलाका धर्म ही जगत को स्ववश करने का है. "आत्मारामाश्च मुनयो निर्ग्रंथा अप्युरुक्रमे ॥ कुर्वन्त्यहैतुकीं भक्ति मित्थं भूत्तगुणोहरिः" ॥ ४ ॥ श्राव्य तथा दृश्य काव्य में दृश्य काव्य का परिणाम दर्शकों के चित्त पर अति शीघ्रही आरूढ होता है, यथा सुने हुये वृत्त से देखा प्रसंग अत्यंत हृदयंगम होता है. जिस प्रकार श्रीमद्भागवतादि सद्ग्रंथों के श्रवण से चेतस्तोष होगा, सो प्रभु जी के रासादि लीला लास्य से अनंतगुणित होगा। यही आशय करुणाकर प्रभु अपने श्री मुख से विशद करते हैं "मच्चित्ता मद्गत्त प्राणा बोधयंतः परस्परं ॥ कथयंत श्चमांनित्यं तुष्यंतिच "रमंति" च ॥ तेषामहं समुद्धर्त्ता मृत्यु संसार सागरात्" ॥ इत्यादि प्रमाणों से सुसिद्ध है कि विना भगवच्चितहुये लीला नाट्य दुष्कर है, और लीलानुकारही सद्यो मुक्ती का महा द्वार है. चकार प्रयुक्त रमंति इस क्रिया पद से

यह आशय निर्मत्सरसज्जनों को अति शीघ्र संमत होगा. और उस महा द्वार की सोपानराजी इस ग्रंथ के प्रत्येक भाग की लीला संख्या है. तथा विश्रांति सोपान चत्वर, व्रज वन निकुंज छद्म लीला भाग ही सुपरिष्कार हैं. साधक भक्त भ्रमर हरि पद प्राप्ती को निकलकर लीला सीढ़ियों से चलते २ मध्यवर्ती दीर्घ विस्तृत भागरूप आरामस्थलपर विश्रांति लेते हुये जगज्जीवन के पद पद्म पराग का यथा सुख सेवन करते रहेंगे ॥

अब इस ग्रंथ के निर्माण करनेका योग अकस्मात कैसे प्राप्त हुवा, इस का वर्णन करना भगवत्प्रेमी अप्रसंगिक नहीं समझेंगे. मध्यदेशवर्ती छिन्दवाड़ा में रासधारियों का एक स्तोम आया था. और उन से नियमित लीला के बिना दूसरी लीला नहीं होसकती थी. यह देखकर इस शहर के हरिभक्तों को इच्छा हुई कि, भगवज्जन्म से लेकर रासपंचाध्यायी पर्यंत प्रायः सर्व लीला नवीन रचकर उनका दृश्य किया जावे. इस सदिच्छानुसार व प्रभु प्रेरणानुरूप यह ग्रंथ यथा मति रचकर एक मास पर्यंत सर्व लीला यथा क्रम बड़े उत्साह से रासधारियों को सिखाय भव्यमंडप में समारोह पूर्वक लीलानाट्य सांगोपांग हुवा. इस के निर्माण करते समय हमारे प्रिय मित्र पंडित प्रभाकर श्रीधर शास्त्री रोडी इनका संशोधनादि प्रमाणदान कार्य में पूर्ण सहाय हुवा. और लीला के करने में गायन वादनादि सर्व शोभन व्यवस्था के अर्थ स्वयं सुशिक्षित हो प्रसंग को उचित ऐसा भव्य सहाय हमारे हितैषी पंडित मारोतिराव अमृत पारोसे लोकलबोर्ड मुहर्रिर इन्होने दिया, इसी प्रकार पंडित गोविन्दराव माधव जोशी इन का ग्रंथ लेखनादि कार्य में पूर्ण सहाय मिला मैं इन सब का अत्यंत कृतज्ञहूं ॥

अब सकल निर्मत्सर विद्वज्जनों से निवेदन है कि, इस भगवत लीला ग्रंथ में बहु कवि कोकिलकूजित राजीका यथास्थान निवेश करते समय अपने कायवाक् स्वांत शुद्धी के अर्थ जो नवीन काव्य रचना कहीं कहीं समाविष्ट किईं हैं. जहां कहीं दोष स्थल दिखे अपने अनुचर को आज्ञा करेंगे और इसकथांमृत को हंसन्याय नीर क्षीर विवेक विधि से आकल्प यथा सुख प्राशन करते रहेंगे. ग्रंथस्थ

विरचना लेखनादि दोष प्रसुगुण पद्यावली से निःशेष प्रनष्ट होते हैं. एतदर्थ श्री राधामाधव पद पद्मसंचिंतनपूर्वक प्रणति परा ग्रंथ पुष्पांजली प्रभु जी को समर्पण है, अलमिति पल्लवितेन ॥

आपका
श्रीराधामाधवानुचर
हनुमान प्रसाद शर्मा
ज्योतिषराय
मु० दमोह
हाल सिवनी मालवा

सूचीपत्र

इति

॥ श्री गणेशायनमः ॥

रास रत्नावली
पहिला भाग ब्रजलीला
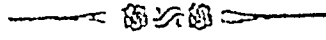
मंगला चरण

अथ श्री गुरु वंदना

श्लोक आर्या

श्री गुरु चरण द्वं द्वं वंदे ऽहं मथित दुःसह द्वन्द्वम् ॥
श्रांति ग्रहोपशांति पांशु मयं यस्यभासित मातनुते॥१॥
देशिक वरं दयालं वंदेऽ हं निहत सकल संदेहम् ॥
यच्चरण द्वयम द्वय मनुभव मुपदिशति तत्पदस्यार्थम् ॥२॥
अज्ञानान्धस्य लोकस्य ज्ञानान्जन शलाकया ॥
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै सद्गुरुवे नमः ॥३॥

दोहा

श्री गुरु पद पंकज रजहिं । वंदों वारहिवार ॥
जातें होय प्रकाश उर । कृष्ण कथा रस सार ॥४॥

श्लोक

यावद्गुरुर्न क्रियते सिद्धिस्तावन्न लभ्यते ॥
तस्माद्गुरुर्हि कर्त्तव्यो नैव सिद्धि गुरुंविना ॥५॥
एकाक्षर प्रदातारं यो गुरुं नैव मन्यते ॥
श्वान जन्म शतं गत्वा चांडालेष्यपिजायते ॥६॥

दोहा

तिमिर गयो रवि देखके, कुमति गई गुरुज्ञान ।
सुमति गई पर लोभ तें, भक्ति गई अभिमान ॥७॥

श्लोक

गुकारो ऽंधकारस्तु रुकारोऽस्मै निरोधकृत् ।।
अंधकार विनाशत्वं गुरुरित्यभिधीयते ।।८।।

रेखता

जय श्री नारायण स्वामी , राधावर पद अनुगामी .
वृंदावन पावन धामा , वेदन गो लोक वखाना .
यमुना जल शीतल तीरा , वहे मंद सुगंध समीरा .
मन भावन पावन कुंजें , मतवारे भंवरे गुंजें .
बोलें कोयल अरु मोरा , नाचें गावें करि शोरा .
तहां केशीघाट सुहावन , पतितों के हित अति पावन
तहीं आश्रम आप बनाई , राजें स्वामी सुखदाई .
अति कोमल सरल स्वभाऊ , निज सेवक के हितचाऊ.
बहु तेजस्वी बलवाना , योगेश्वर रूप निधाना .
श्री श्यामा श्याम पियारे , तिनके गुण गावन हारे .
अति मधुरी कोमल वानी , बहु प्रेम भरी रस सानी .
कहि कहि शुभ २ उपदेशा , भंजे सब भक्त कलेशा .
पद छंद अनेक बनाये , प्रभु की जिन लीला गाये .
कीन्हें बहुते व्रत कामी , श्री लाल लली अनुगामी .
इनकी शरणें जे आये , निज जीवन को फल पाये .
इन के पद पंकज ध्यावें , हरिदास सदा गुण गावें. ९

श्लोक

मूकं करोति वाचालं पंगुं लंघयते गिरिम् ।।
यत्कृपात्महं वंदे परमानंद माधवम् ।।१०।।
एते चांश कलाः पुंसः कृष्णस्तु भगवान स्वयम् ।।
इन्द्रारि व्याकुलं लोके मृणयंति युगे युगे ।।११।।
फुल्लेन्दीवर कांति मिन्दु वदनं वर्हावतं सप्रियम् ।।
श्री वत्सांक मुदार कौस्तुभ धरं पीताम्वरं सुन्दरम् ।।
गोपीनां नयनोत्पलार्चित् तनुं गो गोप संघा वृतम् ।।

गोविन्दं कलवेणु वादनं परं दिव्यांग भूषंभजे ॥१२॥
बर्हा पीडं नटवर वपुः कर्णयोः कर्णि कारम्॥
बिभ्रद्वासः कनक कपिशं वैजयंतींच मालां॥
रंध्रान्वेणो रधर सुधया पूरयन् गोप वृंदै॥
वृन्दारण्यं स्वपद रमणं प्राविशद्गीत कीर्तिः॥१३॥
अहो भाग्य महोभाग्यम् नंद गोप ब्रजौ कसां॥
यान्मित्रं परमानंदं पूर्णब्रह्म सनातनं॥१४॥

दोहा

प्रेम चितेरे की सुमति, कापै बरनी जाय।
मोहन मूरति श्याम की, हिय पट लिखी बनाय॥१५॥

सवैया

हटके न रहें अटके पल ओट भटू मेरे नयनन में वसिके।
अटके उतही सटके मन लै नट के सब ठाट टके रसके॥
लटके लट छोरनि सों लटके पटके न कटाछन के कसके।
मटके न छटा छवि के झलके न लगें इन चाहन के चसके॥१६॥

कवित्त

कारे झपकारे रतनारे अनियारे सोहैं सहज ढरारे मनमथ मतवारे हैं। लाज भरि भारे जो चपल अनियारे तारे सांचे कैसे ढारे प्यारे रूप के उजारे हैं॥ आधी चितवनही में आधीन किये ते हरि टोने से वसीकर के लोने पनियारे हैं। कमल कुरंग मीन खंजन भंवर वृषभान की कुंवरि तेरे दृगनि पर वारे हैं॥१७॥

दोहा

वारों बलि तो दृगनि पर, अलि खंजन मृग मीन।
आधी चितबन चितै के, किये लाल आधीन॥१८॥

कवित्त

श्याम तन श्याम मन श्याम ही हमारो धन आठों याम ऊधो यहां श्याम ही सों काम है॥ श्याम हिय श्याम जिय श्याम विन नाहीं द्वितिय अंधे कीसी लाकड़ी अधार एक श्याम हैं॥

श्याम गति श्याम मति श्याम ही प्रताप पति श्याम सुखदाई सो भुलाये घर धाम हैं। तुम भये बौरे यहां पाती ले आये दौरे योग कहां राखें हम रोम रोम श्याम हैं ॥१६॥

रुसि रहो हम सों तो हमें, नितही परि पांयन पांय मनाइबो।
बोलो न बोलो हमें नित बोलिबो, चाह करो न करो हमें चाहिबो॥
देखो न देखो दया करि प्यारे, हमें नित नयनन सों दरसाइबो।
मानो न मानो हमें यह नेम नयो, नित नेहको नातो निवाहिबो॥२०

बचन विलास में मिठास आई वासकरे, हरे हृदय रोग भोग माने जे जियारी के। नयेई जे जात जाति बात न सुहात नेकु, पुलकत न गात दृग धाराजल न्यारी के॥ रूप गुण माते देह नाते जिते हाते होत, सो तज्यों सलिल मन मिलन जियारी के। और सब संग हम संग के समान किये, सोई सत संग रंग बौरे लाल प्यारी के ॥२१॥

श्लोक

मिलंतु चिंतामणि कोटि कोटिशः स्वयं वहिर्दृष्टि मुपैति वाहरी।
तथापि वृन्दावन धूरि धूसरं न देह मन्यत्र कदापि यातुमें ॥२२॥

सवैया

चंचल जो मनकी गति है अलि, रूप सुमन वन में फिरिये।
कुंडल लोल कपोलन में, अलकनि झलकनि चित में धरिये॥
बर बेंदी भाल रसाल दिये, अधरानि में मोती थर हरिये।
अलबेली बाल विहारिन को, दिन रैन निहारबोही करिये॥२३

मानिहै तो भली थिरके रहतू, हरि के पद पंकज में गिर तू।
कवि सुन्दर जोन स्वभाव तजे फिर बोई करे तो यहां फिर तू॥
मुरली पर मोर पखा पर ह्वै, लकुटी पर ह्वै भृकुटी भ्रम तू।
इन कुंडल लोल कपोलन में, घन से तन में थिरके रहतू ॥२४॥

कहा बृत नेम गजेन्द्र कियो, कहा वेद पुराण पढ़ी गणिका।
अजामिल कौन अचार कियो, निश वासर पान पुरा पपिका॥
कहा जप जाप वधिक कियो, सो हतो धन जीवन को हरिका।

तुलसी अघ पर्वत कोटि जरें, हरि नाम हुताशन को कनिका ॥२५

कवित्त

ये न तहां जहां संगति कुसंगति होय, कायर के संग शूर भागि है पै भागि है। फूलन के पास बसे फूलन की वास होत, कामिनी के संग काम जागिहै पै जागिहै॥ घरवसे घर वसे घरमें बैराग कहां, माया मोह ममता में पागिहै पै पागि है। काजर की कोठरी में कैसोहू सियानो जाय, एक रेख काजरकी लागिहै पैलागिहै ॥२६

सवैया

निशि वासर वस्तु बिचार करे, सुख सांच हिये करुणा धन है।
अघ निग्रह से ग्रह धर्म कथा, सुपरि ग्रह साधन को गन है॥
कह केशव भीतर योग जगे, अति ऊपर भोगन में तन है।
मन हाथ सदा जिन के तिनको, बनहीं घर है घरहीं वन है ॥२७

श्लोक

नाहं वसामि वैकुंठे योगिनां हृदयेनच।
मद्भक्ता यत्र गायन्ते तत्र तिष्ठामिनारद ॥२८॥
अहो वकीयं स्तन काल कूटं जिघांसया पाययतप्यस्तध्वी।
लेभेगतिंधात्र्युतिसांतताऽन्यंकंवादयालुंशरणंव्रजेम ॥२६

पद

वंदो श्री हरि पद सुखदाई ॥ टेक ॥
जाकी कृपा पंगु गिरि लंघे, अंधेरे को सब कुछ दरशाई।
वहिरो सुनैं गूंग पुनि बोलें, रंक चलें शिर छत्र धराई॥
शूरदास स्वामी करुणा मय, बार बार नमो तेहिं पाई॥३०

भजन

करि मन युगल चरण अनुराग ॥ टेक ॥
बहुत दिवस तोहि सोवत बीते, जागिरे मूरख जागु।
वे सुखियन की संगत से तू, जैसे बने त्यों भाग॥
उनको साथ सदा दुखदाई जिमि ढिंग कारो नाग।
हैं वैरी पुनि मारि हैं तोको, मृग कों वरुआ राग॥

या विधि तोहि विषय दुख देगो, चेतर मंद अभाग ।
बस वृन्दावन भज राधावर, सूलि के अंत न लाग ॥
नारायण वनि जायगी तेरी, अवतू असना त्याग ॥३१

पद

भज मन राधा श्री गोपाल ॥ टेक ॥
गोल कपोल अधर बिंबाफल, लोचन परम विशाल ।
शुक नासा भौं दूजचन्द्र सम, अति सुन्दर है भाल ॥
मुकट चंद्रिका सीस लसति है, घुंगरारे वरु वाल ।
रतन जटित कुंडल कर कंकण, गल मुतियन की माल ॥
पग नूपुर छुन छुन जब बाजत, चलत हंस गति चाल ।
गौर श्याम तन बसन अलिक कर, पग मेंहदी सों लाल ॥
मृदु मुसक्यान मनोहर चितवन, बोलन अधिक रसाल ।
कुंज भवन में बैठे दोऊ जन, गावत अद्भुत ख्याल ॥
नारायण छवि के निरखत खन, पुनि पुनि होत निहाल ॥३२

पद

भरोसो दृढ़ इन चरणन केरो ॥ टेक ॥
श्री वल्लभ नख चन्द्र छटा बिन, सब जग मांझ अंधेरो ।
साधन और नहीं या कलि में, जासों होय निवेरो ॥
सूर कहा कहे द्विविध आंधरो, विना मोल को चेरो ॥ ३३॥

कवित्त

चाहे तू योग करि भृकुटि मध्य ध्यान धारे ।
चाहे नाम रूप मिथ्या जानि के निहार ले ॥
निर्गुण निर्भय निराकार ज्योति व्यापार हयो ।
ऐसो तत्व ज्ञान निज मन में तू धारि ले ॥
नारायण अपने को आपही बखान कर ।
मोते वह भिन्न नहीं या विधि पुकार ले ॥
जौलों तोहि नंद को कुमार नाहिं दृष्टि परो ।
तब लों तू भलो वैठि ब्रह्म को विचार ले ॥३४॥

सांझ

श्री कृष्ण कृपा चाहो प्यारी याद सवेरे ॥ टेक ॥
वज्राङ्कुश यव आदि हैं प्रभु पद चिन्ह उनीस ।
द्वादस प्यारी पांव के सदा सुमिर इकतीस ॥
यमुना तट वृन्दा विपिन अतिहिं सघन तम पुंज ।
दोउ मिल क्रीड़ा करत नित मंजुल मंजु निकुंज ॥२
युगल चरण की तरणि पै चढ़न चहत जो कोय ।
ताको भवसागर तरन गोपद के सम होय ॥
याही नौका ध्यान धरि सकल सुजन भे पार ।
अन्य जनन हित वाहि को छांड गये संसार ॥
सकल सुकृत को सार है युगल चरण को ध्यान ।
सोई चहत हरिदास नित जानि सकल श्रम मान ॥२५

सांझ

ब्रज वास की विनंती मेरी मान लीजौजी ॥टेक॥
बृज समुद्र मथुरा कमल वृन्दाबन मकरन्द ।
बृज वनिता सब पुष्प हैं मधुकुर गोकुल चन्द ॥
वृन्दावन जे बास करि शाक पात नित खात ।
तिन के भाग्यन को निरखि ब्रह्मादिक ललचात ॥
भूतल भार उतारि हौं धरि हों रूप अनेक ।
बृज तज अन्त न जाइ हों यह मेरी है टेक ॥
आचारज ललिता सखी रसिक हमारी छाप ।
नित्य किशोर उपसना युगल मंत्र को जाप ॥
यह विनती हरिदास की प्रभु जी लीजो मान ।
वास लहे वृन्दाविपिन जो सब सुख की खान ॥ ३६॥

अथ जन्मोत्सव ॥ २ ॥

आनन्दै आनन्द बढ्यो अति ।टेक।
देवन दिवि दुंदुभी बजाई सुनि मधुपुरी प्रगटयो यादव पति ।
विद्याधर किन्नरी सकल मिलि उपजावत अनुराग अमित गति ॥

गावत गगन धरनि पै सुनि सुर जय जय करत सकल मानत रति।
शिव विरंच इन्द्रादि सकलमुनि फूले सुख न समात मुदित अति॥३७

पद

देवकि मन मन चकृत भई ॥ टेक ॥
देखहु आय शुभ सुख काहेना, ऐसी कहुं देखी न दई ।
शिर पर मुकुट पटपीत उपरना, भृगु पद उर भुज चारि करे ।
पूरव कथा सुनाय कही हरि, तुम मांग्यो याहि भेप धरे ।
छोरे निगड़ सुवाये पाहुरु, द्वार कपाट उघारे ।
तुरत मोहि गोकुलहिं जाहु लै, यह कहतहि शिशु भेप धरे ।
तबहीं रोय उठे वसुदेव सुनि, हरपवंत नँद भवन गये ।
धरि सूत सो लाय देवी कौं, आय सूर मधुपुरी भये ।३८।

पद

नंदराय के नवनिधि आई ॥ टेक ॥
माथे मुकुट श्रवण मणि कुंडल, पीत वसन भुज चारु सुहाई ।
बाजत ताल मृदंग यंत्र गति, चर्चि अर्गजा अंग चढ़ाई ॥
अक्षत दूब लिये शिर वंदत, घर घर बंदन वार बंधाई ।
छिरकत हरद दही हिय हरषत, गिरत अंक हरि लेत उठाई ॥
सूरदास सब मिलत परस्पर, दान देत नहिं नंद अघाई ।३९।

पद

गोपी गावहिं मंगल चार, बधायो बृजराज के । टेक ।
अब भयो अमर सब काज, बधायो बृजराज के ।
रानी जायो है मोहन पूत, बधायो बृजराज के ॥
बहुत नारि सुहाग सुन्दरी, और घोष कुमारी ।
सजन प्रीतम नाम लै लै, देहिं परस्पर गारी ॥
अतिशय भयो आनंद घर घर, नृत्य ठांवहिं ठांव ।
नंद द्वार भेट लै लै, उमड़यो है गोकुल गांव ॥
साथिये शामा है द्वारे, सात सखी बनाय ।
नव किशोरी मुदित ह्वै ह्वै, गहत यशोदा जू के पांव ॥

चौक चंदन लीपके, आरति धरी संजोय।
कहत घोष कुमारि ऐसो, आनँद नितही होय॥
करि करि अलंकृत गोपिका, पहिर आभूषण चीर।
गाय वच्छ सम्हारि लाये, ग्वालिनी की भई भीर॥
मुदित मंगल सहित लीला, करहिं गोपी ग्वाल।
हरद अक्षत दूब दधि ले, तिलक करहिं बृजबाल॥
एक हेरी देहिं गावहिं, एक भेटहिं धाय।
एक एकन गिनत काहुन, एक खिलावत गाय॥
एक वृद्ध किशोर बालक, एक यौवन योग।
कृष्ण जन्म सुप्रेम सागर, क्रीड़त सब बृज लोग॥
प्रभु मुकुंद के हेतु नूतन, होहि घोष विलास।
देखि बृज की संपदा को, फूले हैं श्री सूरदास॥ ४०

पद

देखोरे अद्भुत अवगति की गति, कैसो रूप धरयो है॥टेक
तीन लोक जाके उदर भवन में, सूप की कौन परयो है।
जो मुख दरश काज सनकादिक, चतुराई सब ठानी॥
जिन कानन गज की विपता सुन, गरुड़ासन विसरायो है।
तिन कानन के निकट यशोदा, हुलरायो गुण गायो है॥
जिनही भुजा प्रहलाद उबारयो, प्रगट होय खंभ फारयो है।
सो भुज पकरि ग्वाल अरु गोपी, ठाड़े होय दुलारयो है॥
जाके काज रुद्र ब्रह्मादिक, कठिन योग वृत साध्यो है।
जाको ध्याय नंद की रानी, ऊखल सों गहि बांध्यो है॥
जाको मुनिजन ध्यान धरत हैं, शंभु समाधि न टारी है।
सो ठाकुर है सूरदास को, गोकुल गोप बिहारी है॥४१

पद

देखोरी यह कैसा बालक, रानी जशुमति जाया है॥ टेक
सुन्दर वरण कमल दल लोचन, देखत चन्द लजाया है।
पूरण ब्रह्म अलख अविनाशी, प्रगट नंद घर आया है।

मोर मुकुट पीताम्बर सोहे, केशर तिलक लगाया है।
कानन कुंडल गल बिच माला, कोटि भानु छवि छाया है।
शंख चक्र गदा पद्म विराजें, चतुर्भुज रूप बनाया है।
परमेश्वर पुरुषोत्तम स्वामी, यशुमति सुत कहलाया है।
मच्छ कच्छ वाराह नारसिंह, बावन रूप दरशाया है।
खंभ फारि प्रगटे नरहरि वपु, जन प्रहलाद छुड़ाया है।
परशुराम बुध नेह कलंक हिय, भुव का भार मिटाया है।
काली मर्दन कंश निकंदन, गोपी नाथ कहाया है।
मधुसूदन माधव मुकुंद प्रभु, भक्त वत्सल पद पाया है।
शिव सनकादिक अरु ब्रह्मादिक, शेष सहस मुख गाया है।
परमानंद कृष्ण मन मोहन, चरण कमल चित लाया है ॥४५

रेखता।

जग फांस फंद फारन फरजंद नंदको।
वसुदेव देवकी के काटन को बंधको ॥ १॥
यशोदाजी नंदजी को दिखरावे बाल लीला।
असुरन संघारबेको लघु रूप बड़ गुनीला ॥२॥
सब सूत वंदी मागध विरदावली बखाने।
दिवि देवता विमानों पै लागे गुण को गाने ॥३॥
मन में अनंद नंद दान देते हैं घनेरे।
लुटवाई संपदा को मंगतों के डेरे डेरे ॥४॥
व्रज भूमि धूम भारी डोलैहैं गोपी ग्वाला।
दे दे अशीष बोलैं चिरंजीवो नंदलाला ॥५॥
दधि दूध छिरके गलियों में कीच मची भारी।
हरिदास गोप फूले फूली हैं व्रज की नारी ॥६॥४२

सवैया।

ध्वज वज्र सरोरुह अंकुश अंकित, हैं अति कोमल रंग सने।
अरुनाई लसे अँगुली मुख पै, नख की दुति मानहु लाल कने॥
इनकी जो प्रभा प्रविसे उर में, तबहीं भ्रम भीरु अंधेर हने।

असवे भव जान प्रभू पदको: नितही सुमरा हरिदास भने ॥४४

बधाई

आज नंद घर देवोरी बधाई ॥ टेक ॥

शुभ लक्षण सुन्दर सुत जायो,बड़ भागिन है जशुमति माई ।
वृद्ध वधू सब जुरि मिलि आई,यथा योग्य कुल रीति कराई ।
दान मान विप्रन को दीन्हों, मणि मुक्ता पट भूषण लाई ।
मृग नयनी कल कोकिल बैनी, करि शृंगार बैठी अंगनाई ।
लै लै नाम नंद यशुमति को , गावत गारी परम सुहाई ।
ध्वज पताक तोरण मणि जाला, द्वारन वंदन वार बंधाई ।
नारायण वृज आनंद छायो, प्रगट भयो जहां कुंवर कन्हाई ॥४५

कवित्त

धन्य तूही है रानी किये उपकार घनो ।
ऐसो सुत जायो जासों जगतहू तरैगो ॥
जाको मुख निरखत ही दूर होत काल रोग ।
कौतुक करि गिरवर निज कर पै लै धरेगो ॥
पूतना प्रलंब तृणावर्त केशि कंश आदि ।
महावीर असुरन के प्राणन हरैगो ॥
नारायण ऐसे कुछ परे है नक्षत्र याके ।
सुरपति को गर्व छिन में दूरि सब करेगो ॥४६

पद

देख चरित मोहि अचरज आवे ॥ टेक ॥

जो कर्त्ता जग पालक हरता,सो अब नंद को लाल कहावे ।
विनकर चरण श्रवण नाशा द्रग, नेति नेति जाकी स्तुति गावे ।
ताको पकरि महरि अंगुरी तें,आंगन में चलिवो सिखावे ।
ब्रह्म अनादि अलक्ष अगोचर ,ज्योति अजन्म अनंत कहावे ।
सो शशि वदन सदन शोभाकी, नंद रानी निज गोद खिलावे ।
जाके डर डोलत नभ धरणी,काल कराल सदा भय पावे ।
सो वृजराज आज जननी की, भौंह चढ़ी को निरखि डरावे ।

जाके सुमिरण से जीवन को, सब बंधन छिन में छूटि जावे ॥
सोई आज बंध्यो ऊखल तें, निरखत को सगरो वृज वासे ।
पूरण काम क्षीर सागर पति, मांगि मांगि दधि माखन खावे ॥
भक्ताधीन सदा नारायण, प्रेम की महिमा प्रगट दिखावे ।४७

पद

वृज वनिता सब लाई वधैयां ॥ टेक ॥
कंचन थार लिये कर धाई, आय अजिर आरति उतरैयां ।
सुभग सिंगार किये सब ठाढीं, गावत गीत परत शिशु पैयां ॥
देत अशीष नचत आंगन में, कुल ठाढीं आनंद भरैयां ।
सुख हरिदास कहै नहिं पारै, गोप सुता मिलि लेत बलैयां ॥

अथ संप्रदाय वर्णन

श्री स्वामी निर्बाक चलाई सनकादिक संप्रदा जहान ।
श्री रामानुज स्वामी सिरजी श्री संप्रदा सकल सुख खान ॥
अम्बारज शिव संप्रदाय के श्री विष्णु स्वामी गुणवान ।
ब्रह्म संप्रदा के उपदेक श्री माधवाचार्य महान ॥
दयावान करुणा निधान श्री कृष्णचन्द सब गुण की खान ।
यही चार अवतार रूप हुई चार संप्रदाय किई निर्माण ॥
भक्ति रूप भू भार राखवे इन चारों को दिग्गज जान ।
धर्म भागवत को सुख रूपी इनही बोयो बीज निदान ॥
इन चारों के अंतरगत हैं और संप्रदा बीज जहांन ।
इनके नाम मात्र के सुमिरण हरीदास जगको कल्यान ॥४८

काटि बंध

संत सभा चित चर्चा प्यारी, द्योस निशा नित आनंदकारी ।१
करहिं परस्पर याही चर्चा, भांति भांति भगवत की अर्चा ।२
भक्त भावते गीत गांवते, काव्य कला चतुराई जाने ।३
भगवत चित्र चरित्र बखाने ॥
कथा कहै कोई पंडित ज्ञाता, कोई मंत्र जपे दिन राता ।
विरले केवल नाम अराधें, स्तोत्र पढ़ें वा स्तोत्र पढ़ावें ॥

कथा सुने वा कथा सुनावें, ध्यान लगावें मोद बढ़ावें।
रूप अनूपहि उर में लावें, सदा मगन मन सुख में रहते॥
या प्रकार की सौख्य सार की, भगवत सेवा मनकी सेवा।
संत समाजी सुख्खन काजी, करि कीर्तन अर्पहि तन मन॥
हरिदास चित नित ललचावे। ५०।

पद

कलि में कीर्तन धन हमरो॥ टेक॥
नंद नँदन वृषभानु नंदिनी, ये तन मन धन सबरो। १।
इनको नाम रटन गुण गायन, रूप लखन को डगरो॥२॥
सत संगति हरि जन की सेवा, इनको दृढ़ करि पकरो।३।
अगणित अधम पतित पुनि पापी, कायर क्रूर उमगरो॥४
भगवत चरित तरणि गहि पहुंचे, भवसागर की कगरो। ५
देखत माखी खात वृथा शठ, मूंदि नयन को नजरो॥६॥
क्यों न रंगे हरिदासयुगल रंग, त्यागि जगत को झगरो।५१

गजल

श्री वृन्दावन वास की लागी है कबै आशा मोरी॥टेक॥
है सदा ऋतुराज का शुभ राज वाही ठौर पर।
बहे वायु शीतल मंद बोले मोर कोयल की जोरी॥१॥
झुक रहीं द्रुमों की डालियां यमुना के तट शीतल छैयां।
श्री राधिका नंदलाल डोलें माधवी कुंजन खोरी॥२॥
छिनहुं छबीलो छैल छांडत गैल ना वा विपिन की।
होय त्रिभुवन ईश हू करे दूध दधि माखन चोरी॥३॥
इस धाम की महिमा कहे को लाय जिभिया चाम की।
कीजिये जितनी स्तुति हरिदास उतनी है थोरी॥४॥

इति मंगलाचरणम्

अथ श्री शिवजी की लीला लिख्यते

दोहा

कृष्ण जन्म वृज में भयो, सुनके शंभु सुजान।
चले तुरत कैलास सों, दरश लालसा आन॥ ॥१॥
पहुंचे गोकुल गांव में, मन में अति हरषाय।
भीर बहुत भारी लखी, नन्द पौर पै जाय ॥२॥

पद

आज नन्द घर भारी भीर ॥टेक॥
घर बाहर बड़ी कीच मची है, गौ रोचन दूवा दधि चीर।
उमड़ चले गोपी अरु ग्वाला, जिमि वरषा में नदिया नीर ॥
साजि साजि के सब मंगल आरती, पहुंचन भीतर होत अधीर।
शंकर मन हरिदास मनावे, जन्मन को वृज बीच अहीर ॥३॥

वार्तिक

भीतर जावे को कठिनाई देख भोलानाथ बोले अरे हम हूं को कबू हमारे ईश को दर्शन होवेगो वृज में हमारो जन्म होतो तो हमहूं अपनो भाग मनावते.

कवित

एक रज रेणुका पै चिन्तामणि वारडारों, वारडारों विश्व सेवा कुंज के विहार पे ॥ लतान की पतान पै कोटि कल्प वारडारों, रंभा को वारडारों गोपिन के द्वार पे ॥ वृज की पनिहारन पै रची शची वारडारों, वैकुंठ हू को वारडारों कालिन्द्री की धार पै॥ कहै अभयराम एक राधाजू को जानत हौं, देवन को वारडारों नंद के कुमार पै ॥४

दीनबंधु दीनानाथ वृजनाथ रमानाथ, राधानाथ मोक्षनाथकी सहाय कीजिये॥ तात मात भ्रात कुलदेव गुरुदेव स्वामी, नातो तुमहू सों प्रभू विनय सुन लीजिये॥ रीझिये निहाल देर कीजिये ना झीनी कहूं, दीन जान दास मोहिं अपनाय लीजिये॥ की-

जिये कृपा कृपाल सांवरे बिहारीलाल, मेट दुःख जाल वास वृंदावन दीजिये ॥५

योग देन गयो हों वियोग वारिवारिध में, वूड़त बच्यो हों नाथनारी नयना पूबहो ॥ गंगाहूं सहस्र धारा अधिक ही सुधारा जान, वर्षा न होय जो रहोगे गिरिहूं गहो ॥ एतो जल अवनी न समाय कहूं वारिध में, सुनी पै न अच्यौ जात कान खोलहौं कहो ॥ कवि प्रहलाद जो मिलाप पाल बांधो नाहिं, वटके बटूक पात सांवले भले रहो ॥६

सवैया

मानसहूं तो वहीं रसखान, मिलूं पुनि गोकुल ग्वाल मँझारन। जो पशु होऊं कहां वश मेरो, चरुं पुनि नन्द की धेनु मंझारन॥ पाहनहों तो वही गिरिको, जो कियो जिमि छत्र पुरन्दर कारन। जो खग होऊं बसेरो करूं जहां, कालिन्द्री कूल कदंब की डारन ॥७

वार्तिक वृजबासी बचन श्री शंकर प्रति

बताओ तो आपन को हैं अरु कहां तें आये ॥

श्री शंकर जी बचन

भैया मैं शंकर हूं कृष्ण जन्म सुनके तिनके दर्शन को कैलास से आयो हों ॥

बृजबासी बचन

महाराज– जातो आपने रूप के विपरीत बात बोले शंकर नाम तो वाको होय जो जगत को कल्यान करे भला भला आपको भंयकर रूप देख कौन कल्यान कारी कहेगो ।

श्री शंकर जी बचन

अरे भैया शिव हूं कैलास से आयो हों ॥

वृजबासी बचन

जा ठीक है शव नाम है मुरदा को वाकी भस्म लगाये हो

अरु जो सर्प लपेटे हो सो काटि के हम सब को मुरदा करि हैं राक्षस तो ऐसेही मारे डारे हैं उनकी सहाय को आप आये ॥

श्री शंकरजी बचन

भोलानाथ हूं अलख जगाऊं हूं ॥

बृजबासी बचन

समझे ना महाराज भोरों के धन द्वार, धोका दे लेइ के वाके मालिक बने हो यहां ऐसो भोरो कोउ नाय जो आप को अपनी संपति दे डारे नंद के घर जो कछु रह्यौ सो भिखारी लै चुके ॥

श्री शंकर जी बचन

भैया महादेव हू को नहीं जानो ॥

बृजबासी बचन

जानैं हैं महादेव जैसो महावासन जाको मुखहूं देखबो अशुभ है ॥

श्री शंकरजी बचन

महादेव कहे तैं बड़ौ देव परन्तु कृष्ण जू को सेवक ॥

बृजवासी बचन

ठीक है. बड़े देव हो तो भीतर पधारो ॥

वार्तिक

या प्रकार वृज की बड़ाई करते २ भीर हटाते २ भीतर पौर पहुंचे अरु गायबे लगे ॥

रेखता

कैलास बास छांडौ गिरिजासी छांड़ी नारी ॥
आयो हौं नन्द पौरी लखि गोप भीर भारी
जसुदा ने पूत जायो जगदीश जग अधारा ॥
वह देवतों को देवा सब ईश देव प्यारा ॥
टुक देहु मोहि देखन नन्दरानी मूर्ति वाकी ॥
सब जगत जसहू गावे ध्यावे है शरण जाकी ॥

करि आस आज दर्शन मैं हूं तुम्हारे आयौ॥
हरिदास की विनंती सुन पूत को दिखावौ ॥८

जसोदा बचन

महाराज भले आये परन्तु लाला छोटो है आप के रूप ही सों डरैगो यह सुनके शिवजी गायवे लगे ॥

पद

मैं योगी यश गायारी बाला, मैं योगी यश गाया॥
तेरे सुत के दर्शन कारण, मैं काशी तज धाया।
परब्रह्म पूरण पुरुषोत्तम, सकल लोक जमाया॥
अलख निरंजन देखन कारण,सकल लोक फिर आया।
धन तेरो भाग यशोदा रानी, जिन ऐसो सुत जाया॥
गुणन बड़े छोटे मत भूलो, अलख रूप धर आया। ९

जसोदा बचन

जो भावे सो लीजिये रावल, करो आपनी दाया।
देहु असीस मेरे बालक को, अविचल बाढ़े काया ॥१०

श्री शिवजी बचन

ना मैं लैहों पाट पितंबर, ना मैं कंचन माया।
मुख देखों तेरे बालक को, यह मेरे गुरु ने बताया ॥११

जसोदा बचन

कर जोरे विनवै नंदरानी, सुन योगिन के राया।
मुख देखन नहिं दैहों रावल, बालक जात डराया ॥१२

श्री शिवजी बचन

जाकी दृष्टि सकल जग ऊपर,सो क्यों जात डराया।
तीन लोक का साहिब मेरा, तेरे भवन छिपाया ॥१३

समाजी बचन

कृष्ण लाल को लाई यशोदा,कर अंचर मुख छाया।
गोद पसार चरण रजवन्दी,अति आनन्द बढ़ाया॥
निरख निरख मुख पंकज लोचन, नयनन नीर बहाया।

सूरश्याम परिक्रमा करके, सिंगी नाद बजाया ॥१४॥

वार्तिक

दर्शन होते ही शिवजी आनन्द में मग्न होय के अलख बड़े सुर सों बोले अरु परिक्रमा करके शंख बजायौ यह सुन नंद लाल रो उठे अरु शंकर प्रणाम करके पधारे ॥

जसोदा वचन

पद

काहू जोगिया की लागी नजर, मेरो बारो कन्हैया रोवैरी ॥टेक॥
मेरी गली जिन आउरे जोगिया, अलख अलख कर बोलैरी ॥
घर घर हाथ दिखावे जसोदा, बार बार मुख जोवैरी ॥
राई लौन उतारत छिन छिन, सूर को प्रभु सुख सोवैरी ॥१५

वार्तिक

लालजी को रोवन देख बृजवासी ने फिर शंकर को बुलायौ महाराज जो का करतब करगये ॥

पद

चलरे योगी नंद भवन में, यशुमति तोहि बुलावै ॥
लटकत लटकत शंकर आये, मन में मोद बढ़ावै ॥
नन्द भवन में आयो योगी, राई लौन कर लीन्हो ॥
बार फेर लाला के ऊपर, हाथ शीश पर दीन्हो ॥
व्यथा गई सब दूर बदन की, किलक उठे नन्दलाला ॥
खुशी भई नन्दजू की रानी, दीनी मोतिन माला ॥
रहुरे योगी नन्द भवन में, बृज में वासो कीजे ॥
जब जब मेरो लाला रोवै, तब तब दर्शन दीजे ॥
तुम तो योगी परम मनोहर, तुम को वेद बखानै ॥
बूढ़ो बाबू नाम हमारो, सूर श्याम मोहिं जानै ॥१६

श्री शिवजी वचन

मैया मैंने खूब झाड़ दियो है, अरु गंडा हू बांध दियो है जब कभू फेर लाला रोवै तो मोकौं पुकार लीजैं यह कह प्रणाम

कर पधारे ॥

रेखता शिवजी बचन

श्री कृष्ण को हूं चेरो मैं गारुड़ी तुम्हारो ॥
गुण मंत्र मोरे मुख पै सब रोग राई झारो ।
मोरे तबीज पहिरे जो बाल वृद्ध नारी ॥
नहिं पास आवै तिनके कोई भूत प्रेत भारी ।
तुव लाल रोवै जबहीं तब मोहिं को बुलवैयो ॥
मेरो कुरूप देखौ चिन्ता न नेक लैयो ॥
सुमिरे तें आय जैहों नहीं चाहिये बुलौना ।
मैं डीट नजर झारौं ललकारौं जादू टोना ।
या भांति मात को प्रबोध शंभु जू सिधारे ॥
हरिदास भजते भजते श्री नंदजू के बारे ।

बार्तिक

यह कहि शिवजी निज धाम को सिधारे ॥

इति श्री शिवलीला सम्पूर्ण

---=००---

अथ ढांडी लीला

दोहा

नंद पौर आनंद सुन, कुल ढांडी अकुलाय ।
ढांढीनी को संग लै, तुरतहि पहुंचो आय ॥ १५

छंद

देश देश ते ढांडी आये, मन वांछित फल पायो ।
को कहि सकै दशौंधी उनको, भयो सबन मन भायो ॥
ता दिन ते सगरे या वृज में, रस रूप दरसायो ।
निज कुल वृद्ध जान येक ढांडी, गोवर्द्धन ले आयो ॥

परम उदार महा वृज पतिजू, ढांडी निकट बुलायो ।
बाजत हुडुक मंजीरा नूपुर, नाना भांति नचायो ॥२

वार्तिक नंद बचन

कुल ढांडी तुम भले आये और सब संगतो को देख मोरे मन में यह औसर पर तुम्हे देखने की लालसा लग रही अब गाय बजाय के आनंद करो ॥३

पद ढांडी बचन

मैं घर को ढांडी वाहिको , मो सरि करे न आन ।
सोइ लेहौं जोई मन भाई , नंद महर की आन ॥
धन्य नंद धनि धन्ययशोदा, धनि धनि जायो पूत ।
धन्य तुम वृजवासी धन धनि, आनंद करत अकूत ॥
घर घर होत आनंद वधाई, जहं तहं मागध सूत ।
मणि माणिक पाटांबर अंबर , लेत न बनत बहूत ॥
हेगे लहन भंडार दिये सब, फेरि भरे सौ भांति ।
तबही देत वाहि फिर देखति, संपति घेर न आमांति॥
ते मोहि मिले जात घर अपने, मैं बूझति तब जाति ।
हंसि हंसि दौरि मिलेअकंम भरि, हम तुम एकै ज्ञाति॥
संपति देहु लेहु नहिं एके , आन वस्तु केहि काज ।
जो मैं तुम सों मांगन आयो, सोई लेहों नंदराज॥
अपने सुत को वदन दिखावहु, बड़े महर सिरताज ।
तुम साहिब मैं ढांडी तेरो , प्रभु मेरो वृजराज ॥
चन्द्र बदन दरशन संपति है, सो लै मैं घर जाऊं ।
जो संपति सनकादिक दुर्लभ, सो सब तुम्हरे ठाऊं॥
जाको नेति नेति श्रुति गावत, लेइ कमल पद ध्याऊं ।
हों तेरो जनम जनम को ढांडी , सूरज दास कहाऊं॥४ ॥

वार्तिक

मन में आनंद मान ढांडी फिर गायबे लगे ॥५॥

पद

नंदजू मेरे मन आनंद भयो, हों गोवर्द्धन ते आयो।
तुम्हरे पुत्र भयो हो सुनिके, अति आतुर ह्वै धायो॥
वंदीजन अरु भिक्षुक सुनि सुनि, जहां तहां तें आये।
येक पहिले ही आशा लागी, बहुत दिनानि के छाये॥
ले पहिर कंचन मणि भूषण, नाना वसन अनूप।
मोहि मिले मारग में मानो, जात कहीं के भूप॥
तुमसो परम उदार नंदजी, जिन जो माग्यो सो दीन्हो।
ऐसो और कौन त्रिभुवन में, तुम सरि सादा कीन्हो॥
कोटि देहूती पेरउ रहेगो, बिन देखे नहिं जैहों।
नंदराय सुनि बिनती मोरी, तबही विदा भले ह्वै जैहौं॥
दीजे वेगि कृपा करि मोको, जोहो आयो मांगन।
जसुमत को सुत अपने पायन, चलि खेलन आवे आंगन॥
मन मोहन मैया करि टेरई, वह सुनिके घर जाऊं।
होंतो तोरे घर को ढांडी, सूरदास मोहि नाऊं॥६

वार्तिक

सगरे बृजवासी याको रूप देखि अरु गायन सुन प्रसन्न भये तव नंदजी बोले ढांडी जी तुम को मैंने अबलौं नहीं बुलायो सो बड़ी भारी चूक भई याको कारन भी है॥७

नंद बचन रेखता

अंधियारी आधीराते जसुधा ने पूत जायो।
घन घोर गर्जना में बादल अकाश छायो॥
तबही से मोर उरमें उपजी उमंग भारी।
मुंह मांगो दान देकै संपति लुटाई सारी॥
बृज भूमि धूम भारी चहुंओर में बधायो।
मम पौर को आनंद मोपे नाहिं जात गायो॥
यह चूक है हमारी तुम को जु ना बुलाये।
कुल ढांडी संग ढांडिनी लेके भले जु आये॥

बूढ़ी सी वेस मैंने सुख पूत को जु देखो ।
हरिदास दरस पाय के तुमहू जु भाग लेखो ॥ ८

वार्तिक ढांडी बचन

नंद महाराज आप सांची कहो हौ आनंद की वार्ता सुन के मैं आपही बिना बुलायो आयो हूं सो मोरी इच्छा पूर्ण करो । ९

रेखता

बृज बीच मंगतों की देखीजू दौरा दौरी ।
सुत जन्म सुनके हमहूं आये है नंद पौरी ॥
हम नंद कुल के ढांडी बिरदावली बखाने ।
संग ढांडिनी हमारे जग जाहि को पिछाने ॥
आये हैं दूर धाये हम मंगता भिखारी ।
मांगें जड़ाऊं गहने कपड़े सुरंग सारी ॥
जुग जुग जगत में जीवे नंद बाबा पूत तेरो ।
विध्वंस कंस करि हैं सब देव में वडेरो ॥
देके असीस याही हम दोउ घर को जाते ।
बिनती यही हरिदास की टुक पूत को दिखाते ॥१०॥

नंदजी बचन बार्तिक

ढांडीजी तुम्हारी करतब देखि बृजवासी बड़े आनंद हो रहे हैं तनक और गावो ॥११॥

पद

ढांडी हरष नंद गृह आयो ॥टेक॥
कुंवर जन्म की चर्चा सुनके, उर आनंद न समायो ।
पहुंचो आय नगर गोकुल में, घर घर बजत बधायो ॥
धन्य भाग जसुधा रानी को, कापै जात सरायो ॥
वह सुख किमि हरिदास मंद अति, आपन चाहे गायो । १२

वार्तिक

ढांडिनी से नहीं रहो गयो तब वाहू गायवे लगी ॥१३

पद

मोही नंद घर लै चलो, ढांढनियां मचल रहो ॥ टेक
पुत्र भयो सब जग ने जानो, मोतें क्यों न कही।
मोहि मिलै नख शिखको गहनो, लाऊं तो बात सही॥
जसुदाजी के वस्त्र मिलेगें, फरिया चोली नई।
कृष्ण कृपा विन को या जग में जिन मेरी बांहि गही॥१४

वार्तिक नंद वचन

अबतो ढांडनिया कछू करतब दिखाती तो अच्छी बात होती यह सुनके ढांडिनी नाचबे लगी॥१५

पद

देखि कुवँर ढांडिनि वलि गईरी॥ टेक॥
सुन्दर बदन कोटि शशि लजवत, पद नख द्युति सब न मन सईरी
भीर भई वृषभान भवन में, सुरनर मुनि सब अस्तुति ठईरी
इक निकसत प्रविसत एक गृह में, तन मन सुधि सब दीन्ह भुलईरी
कुल ढांडिनी नचत आंगन में, ताल नवल नई गत उपजईरी
चित हरिदास लग्यौ चरनन में, छवि लखि लखि मति बौरी भईरी १६

पद

रानी जसोदारी मोरी तुमसों पुकार, हंस हंस मांगत ढांढनिया॥टेक
मुदरी छला सुनहरी गजरे, दे देव रानी गज मोतियन हार।
सीस फूल हतफूल ककनियां, दे देव पाय की पायल उतार॥
लहंगा और लहरिया चूनर, पहिरा देव चोली बूटेदार।
अस औसर हरिदासन पाऊंगी, लीन्हो है आज जगदीश्वर औतार१७

वार्तिक

या पीछे नंदराय जीने इनको बहुतसो दान दियो॥१८॥

छंद

झंगा पगा अरु पाग पिछोरा, ढांडी को पहिरायो।
हार दरियाई कंठ लगाई, परदर सात उठायो॥
बहुत दान दीन्हे उपनंदजू, रतन कनक मनि हीर।

धरा नंद धन बहुतही दीन्ही, जों बरसत धन नीर ॥
कुंडल कान कंठ माला दे, भेव नंद अति सुख पायो ।
सीधो बहुत सुरसुरा नंदै, गाडा भरि पहुंचायो ॥
कर्मी धर्मी नंद कहत हैं, बहुतहि दान दिवायो ।
वृजरानी ढांडिन पहिराई, मन वांछित फल पायो ॥
चले भवन को दे असीस दोऊ, निरभय कीरत गावै ।
जिन यांचे बृजपति उदार अति, याचक फिर न कहावै॥१६॥

बार्तिक

या उपरांत असीस दे दे सब मंगता बिदा भये ॥२०

इति

अथ पूतना बध लीला लिख्यते

दोहा

जगदंबा सुख सों सुन्यो, गोकुल में अरि जन्म ।
शिर धुनि धुनि पछतात नृप, कहै न काहू मर्म ॥

पद

जा दिन से अरि जन्म सुन्यो है, कंस रजेनिशि नींद न आवे ॥टे०
दिवस निसा मन में यहि सोचत, कौन उपाय दई बन पावै ॥
काहे बिचार कहूं कहं जाऊं, अब मो जीवन कठिन दिखावै ॥
यह रिपु को हरिदास वधै जो, ताहि सबै सुख खान बतावै ॥

वार्तिक

सर्व मंत्री और सभासदों को बुलाय २ यही वार्ता कहते भयो मोरे घोर शत्रु हतन की जतन वताओ तो तुम्हारो बड़ो उप-

कार मानूंगो, अरे भाई मोको तो दिवस निशि शत्रु नैनों में झूलै है ॥

पद

जित देखो तिति श्याम मई है ॥ टेक ॥
श्याम कुंजवन यमुना श्यामा, श्याम गगन घन घटा छई है।
सब रंगन में श्याम भरो है, लोग कहत या बात नई है ॥
मैं बौरन के लोगन ही की, श्याम पुतरिया बदल गई है।
चंदसार रविसार श्याम है, मृग मद श्याम काम विजयी है॥
नीककंठ को कंठ श्याम है, मनहुं श्यामता बेलि बई है।
श्रुति को अक्षर श्याम देखियत, दीप शिखा पर श्याम तई है॥
नर देवन की मोहर श्यामा, अलख ब्रह्म छवि श्याम भई है।४।

वार्तिक

राजा कंस के ऐसे २ विलाप के वचन सुन के असुरों ने यही मंत्र दिया कि यादव वंश के जितने बालक आज काल में उपजे हैं उन सब को मार डारबो ही उचित है, राजा हू के मन में यह बात भाई और राजा बोल्यो ।५।

पद

जाहु असुर सब मम हितकारी ॥ टेक ॥
यादव कुल जन्में जे बालक, तिनहिं सपदि तुम डारो मारी।
इनहूं में मम शत्रु मरेगो, तब मन में हम होइ सुखारी॥
जग कारन संघारन के हित, धाय चले हरिदास सुरारी ॥६॥

वार्तिक

राजा कंस पूतना राक्षसी को बुलाय के बोल्यो ॥७॥

दोहा

अरी पियारी पूतना, तू जा नंद के धाम।
मार जसोदा पूत को, करहु सकल मम काम ॥८॥

पद

राजा को काज आज करे आऊं ॥टेक॥
वेग संघारौं सकल घोष शिशु, जो सुख आयसु पाऊं।
मोहन मुरली वसीटी पठ्यो, मति सन्मुख होय धायो॥
अंग सुभग साजे मधु मूरत, नैनन मांहिं समायो।
घसि चंदन उरोज नील पर, लषि सों पय प्यायो॥
सूर सोच मन करे अबहीं, तो पूतना नाम कहायो।९।

पद

रूप मोहनी धरि बृज आई ॥टेक॥
अद्भुत साज सिंगार मनोहर, असुर कंस दे पान पठाई।
कुच विषलाई लपेट कपट कर, बाल घातिनी परम सुहाई॥
बैठी यहां यशोदा मंदिर, हुलरावत सुत श्याम कन्हाई।
प्रगट भई तहां आय पूतना, भरत काल अवधि नियराई॥
आवत पीठ बैठनो दीनो, कुशल पूछ अति निकट बुलाई।
पौढ़े हरि अति सुभग पालने, नंदरानी कछु काज सिधाई॥
बालक लियो उछंग दुष्ट मति, हर्षित अस्तन पान कराई।
बदन तिहार प्रान हर लीनो, परी दैत्यनी योजन आई॥
सूरज प्रभु गति ताको दीन्ही, मातु मानि सुलधाम पठाई।१०।

बार्तिक

ताको रूप अनूप देखि के जसोदा आदिक ने काहू प्रकार छेड़ छांड़ नहीं कीन्ही अरु अपने समीप बैठाय के प्रेम भरी बातौं करवे लागी पूतना बोली अरी बीर थारो सुत देखबे काजै राजा कंस ने मोको पठायो है।

पद

नेक गोपालहिं मोको देरी ॥टेक॥
देखो कमल बदन नीके करि, ता पाछें तू कनिया लेरी।
अति कोमल कर चरण सरोज सु, अधर दशन नाशा सोहैरी॥

लटकन सीस कंठ मणि भ्राजित,मन मथ कोटिन वारन गेरी ।
घोसहुं निशा समान विलोकत,यह छबि कबहुं न पाई भैरी ॥
निगमनि अगम सुनातन बालक, बड़े भाग पाए हैं तेरी ।
जिनके रूप जगत के लोचन,चन्द्र कोटि रवि आलय हैरी ॥
सूरदास बलि जाय यशोदा, गोकुलनाथ पूतना बैरी ।१२।

वार्तिक

स्तनपान करावते ही श्री महाराज ने पूतना को प्राण दूध के साथ ही खींच्यौ ताके हाथ पांव कांपवे लगे और सब शरीर में अतिशय पीड़ा होयवे लगी तब विलाप करके पूतना विसूर २ के रोयवे लगी ॥१३॥

रेखता

स्तनपान पूतना को, जब कीन्हो श्रीहरी ।
पय संग प्रान खींच्यो, बोली मरी मरी ।
थहरात अंग सारो, उर मांझ पीर भारी ।
मुख श्री मलीन दीसै, रंगत सभी है कारी ।
मन मन मनावै देवा, करिहौं तुम्हारी सेवा ।
नंद पूत आजु उपज्यौ है, मेरो प्रान लेवा ।
मैं याके गुन न जानी,बल आपने भुलानी ।
नाहक को खायौ धोखौ,जो कंस कही मानी ।
या भांति सौं विलाप करे, रोवै झार झारी ।
हरिदास पूतना कौं,प्रभु मार बाहर डारी । १४ ।

वार्तिक

पूतना को प्राणांत होते ही लालजी ने ताको उठाय गांव के बाहर फेंक दियौ अरु आप ताके मृतक शरीर पर खेलवै लगे, जसोदा गृह काज कर बाहर आई अपने प्राण प्यारे राज दुलारे को पालनो सूनो देख चकित होय के चित्र सरीखी रहगई ॥ १५ ॥

पद

देखहु यह विपरीत भई ॥ टेक ॥
अद्भुत रूप नारि एक आई, कपट हेत क्यों सहै दई।
कानहिं ले जसुमति कोरा तें, रुचि करि कंठ लगाई।
तब वहि देह धरी योजन लों, श्याम रहे लपटाई ॥
बड़े भाग हैं नन्द महर के, बड़ भागिनि नन्दरानी।
सूरश्याम उर ऊपर उबरे, यह सब घर घर जानी ॥१६॥

वार्तिक

यह अद्भुत चरित्र देख सिगरी वृजबाला अरु गोप ग्वाल पूतना को देखबे सिधारे अरु, ताके अंग पै निर्भय बालक खेलतो देख बहुत विस्मय करिबे लगे ॥१७॥

रेखता

प्रभु पूतना पछारी, पलना पड़े पड़े।
गुण गोप ग्वाल गावैं, याके खड़े खड़े ॥
गमबारो नंदबारो, तन पूतना पै खेलैं।
मुसक्यान माधुरीसी, मुख में अंगूठा मेलैं ॥
शिशु कर्म सुनके अद्भुत, वृजबाला दौरी आवै
दुलरावै लाल लै लै, अंग न्हाय गंध लावै।
दै दै भभूत माथे, गौ पूंछ सें जु झारैं ॥
जंतर अनेक मंतर, पढ़ पढ़ के सभी मारैं ॥१८॥

पद

उबरेउ श्याम महर बड भागी॥ टेक॥
बहुत दूरितें परेउ आइ धर, देखौ मैं कहुं चोट न लागी॥
रोग जाउ बलि जाउं कन्हैया, यह कहि कंठ लगाई।
तुमही हौ वृज को जीवन धन, देखत नैन सिराई॥
भली नहीं तेरी प्रकृति यशोदा, छांड़ि अकेले जाति।
गृह को काम इनहुंतें प्यारो, नेकहुं नहीं डराति ॥

भली भई अबके हरि बाचे , अजहुं सुरति सम्हारि ।
सूरदास भाकि कहेउ ग्वालिनी,मन मन महरि बिचारि ।१६॥

वार्तिक

या उपरांत नंदराय जसोदाजी ने बहुत दान दियो अरु देवता मनाये पूतना की गति देख वृजवासी बोले ॥ २० ॥

पद

पूतना विष दे अमृत पायो टेक ।
जो कछु देयत सो फल पैयत , नाहक वेद ने गायो ।
शत सु यज्ञ राजा बलि कीन्हो, बांध पताल पठायो ।
लक्ष गऊ राजा नृग दीनी, गिरगट रूप करायो ॥
रंक जन्म के मित्र सुदामा, कंचन धाम बनायो ।
सूरदास तेरी अद्भुत लीला, वेद नेति कह गायो ॥२१॥

स० कवित्त

अति सुन्दर गोप वधू कर रूप , धरेजु निशाचरि पूतन है ।
रुचिके कुच में विष बीज बयो, जग जीवन मारन कोजु चहै ॥
तेहि को अपने कर सों हनिके, निज मात समान दई गति है ।
अस दीन दयाल प्रभू तजके , किहि के पद जा हरिदास गहै ॥२२

इति श्री पूतना वध लीला सम्पूर्ण

अथ श्रीधर स्वामी की लीला लिख्यते

दोहा

कंस सुन्यौ वध पूतना, मनही मन अकुलाय।
बुद्धिवान मंत्री गनहिं, तुरतहिं लिये बुलाय ॥१॥
मन मलीन तन ताप अति, तिनहिं कह्यो समझाय।
नंद सुवन के बधन को, सब मिलि करहु उपाय ॥२॥

पद

मो मन में अब संकट भारी ॥ टेक॥
पुतना को पुरुषारथ एतौ, मम शिशु रूप रिपू तिहिं मारी॥
मम कारज करिवे कहां नाहीं, कोउ दिखै मथुरा नर नारी ॥
नाहिन नेक भरोस कहूं अब, मीत कहो कछु मंत्र बिचारी॥
जो हरिदास करै मनमानी, ताहि लुटैहों सम्पत सारी ॥३॥

बार्तिक

वा सभा के श्रीधर नाम एक ब्राह्मण अति प्रवीण पंडित रह्यो सो उठि बोल्यो राजाधिराज आप इतने व्याकुल काहे को होवे हो, मैं अबहीं नंद घर जाय बालक को बधन करौंगो. बीरा मिलै ॥४॥

रेखता

करिहौं मैं काज सारौ, धारो अभी चलौं।
तुव लागि प्राण त्यागौं, तुव लौन से पलौं॥
टुक धीर धारो राजा, मम बुद्धि देख लीजै।
तुव काज आज करि हौं, मो बात को पतीजै ॥
अंग लेप लाउं चन्दन, माथे पै तिलक धारौं।
कर लेइके सुमरनी, गल भार माला डारौं ॥
पूरो बनौं पुरोहित, पोथी बगल में दाबौं।

नंद पूत मारि अबहीं, तुम्हरे समीप आवौं ॥
इहि भांति भूप बोध्यौ, बन विप्र बड़ पुजारी ।
हरिदास जगत कारन, मारन चहै मुरारी ॥

वार्तिक

या प्रकार कपट वेषधारी पुजारी नंद पौर पहुंच्यौ जसोदा ने ताको रूप देख बहुत सन्मान कियो अरु पालने के समीप बैठाय बोली विप्र बालक को देखते रहियौ मैं जमुना न्हाय के अबही आयहूं अरु तुम्हें अपनो सुत दिखाऊंगी विप्र बोल्यौ भलौ माई ॥६॥

पद

जमुना न्हान चली नन्दरानी ॥ टेक ॥
विप्र मनहिं मन आनन्द छायो, सुफल करौं अपनी अब बानी ।
शिशुहिं उठाय लियौ पलना मैं, करन चही अपनी मनमानी ॥
तजि शिशि रूप प्रभू तब प्रगटे, विप्र रह्यौ मन विस्मय ठानी ।
मूड़ मरोरि मटकि मुख नायो, भाजन फोर भगे सुखदानी ॥
यह कौतुक लखि मौन रह्यो द्विज, बुधि ताकी हरिदास भुलानी ॥७

वार्तिक

लौट के आवते ही ब्राह्मण को मूड़ दधि की मटुकिया में देख बोली, अरे महाराज जेतो दही मांगतौ उत्तौ देती. भाजन फोर के काहे को दधि की चोरी कर खावे है, विप्र बोल्यौ घबराय के ॥८॥

पद

जसुमति तो सुतकी करनी जा मैया, मैं नहीं माखन खायो ॥टेक॥
आपुहिं आप उठयो पलना तें, मो मुख मटुकी मांहि घुसायो ॥
भाजन फोरि धरनि में डारे, दूध दही सिगरो बगरायो ॥
गुणन बड़ो छोटौ मत जानौ, कोऊ देव तो सुत बनि आयो ॥
आपन जीव बचाय भगों अब, या दरशन तें बहुत अघायो ॥९

वार्तिक

जसोदा बोली महाराज बालक को अपराध क्षमा कीजो अरु यहां से शीघ्र पधारो ॥१०॥
श्रीधर जी विदा भये ॥

इति श्री श्रीधर स्वामी की लीला सम्पूर्ण
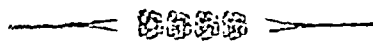
अथ कागासुर वध लीला

दोहा

जबहिं पूतना मारि कै, हरि फेकी गो ठान।
सुन के नृप चकृत भयो, करत विविध अनुमान ॥१॥

पद

गोकुल में है कोउ औतार ॥ टेक ॥
गई पूतना मारन वाको, ताहु को दीन पछार।
अब मेरो मन डरपत भारी, मंत्री करहु विचार ॥
नंद सुवन को मारन भैया, दीसै मोहि पहार।
जो याको हरिदास हने अब, मानूंगो उपकार ॥

पद

यह सुन एक असुर बोलो.
कौन बड़ी जा बात रजारे ॥ टेक ॥
जाको कहौ हनौ मैं अबही, तुम सम को पुरुषारथ वारे।
भूमि विवर पैठत नहिं सकुचों, तोरों जाय गगन के तारे॥
देव वीरा हरिदास चलो अब, लाऊं पकरि दोऊ नंदके बारे॥२

वार्तिक

यह कहि कागा को रूप बनि गोकुल में आय जहां नंद लाल पलना में पड़े रहें, तहां आनि बैठ्यो नंदलाल ने ताकी चोंच पकरिके फेंक्यो सो कंस की सभा में गिर्यो राजा ने विस्मित होय पूछी तब बोलो .

रेखता

औतार कोऊ ब्रज में, अब कंस मौत तोरी .
लघु रूप पड़ो पलना में, चींच को मरोरी .
अति बल से मोहि फेंक्यों, मैं वायु वेग आयो .
मोहि लाग्यो ऐसो राजा, मो पीछे कोई धायो .
वह बीर बड़ो भारी, कहुं हाथ को उठा के .
अब कोई नाहिं जैयो, रे मारवे को वाके .
यह सुन के कंस डर्प्यो, मन धीर नाहिं धारे .
नंद पूत कैसे मारों, हरिदास जा विचारे .

वार्तिक

राजा यहि प्रकार बिलाप करि सभा तें उठि गयो ॥

इति कागा सुर बध लीला सम्पूर्ण

अथ सकटा सुर लीला

पद
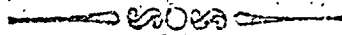
जब बीसरु सात दिना बितये, पुनि जन्म नक्षत्र पड़ो ललना ।
जननी जन गोप बधू जुरिके, दुलराय झुलावत हैं पलना ॥

अंग लेप लगाय अन्हाय शिशु, तन हेरत कान्हू लगे पलना।
मथुराधिपति हरिदास डरे, सुनि नयनन नींद पड़े कलना ॥१

पद

मथुरा पति जिय अतिहि डरानो ॥ टेक।
सभा मांझ असुरन के आगे, बार बार सिर धुनि पछतानो ॥
बृज भीतर उपज्यो रिपु मेरो, मैं जानी यह बात।
दिनहीं दिन यह बढ़त जातु है, मोको करि है पात ॥
दनुज सुता पूतना पठाई, छिनुक मांझ संघारी।
चोंच मरोरी कागसुर दीन्हों, मेरे ढिंग फटकारी ॥
अबहीं ते यह हाल करतु है, दिन दिन होत प्रकाश।
सेना पतिन सुनाय बात यह, नृप मन भये उदास ॥
ऐसो कौन मारिहै ताको, मोहि कहे सो आई।
वाको मारि अनुप यों राखै, सूर बृजहिं सो जाई ॥२॥

वार्तिक कंस वचन

अरे भाई तुम तो कोई उपाय नहीं करो देखो मेरे मारिबे के हेतु गोकुल में कैसे उत्साह हो रहे हैं. ॥३॥

पद

नंद की पौरि आनन्द मच्यो है ॥टेक॥
यदुकुल केर सकल जुरि आये, जन्म नक्षत्र उछाह रच्यो है।
भोजन करन बसन भूषण हित, गोकुल गांव सबै उमह्यो है॥
तुम सिगरे कहं सोचत बैठे, मोको संकट घोर परयो है।
धीर नहीं हरिदास धरे मन, जबलो नंद को लाल बच्यो है॥४॥

वार्तिक

ऐसी २ खेद की वार्ता सुन सकटा सुर बोल्यौ ॥५॥

रेखता

उलटाऊं जाय पलना, यशुदा को मारों ललना।
महाराज काज कीन्हे बिन, मोहि चैन पलना ॥

मारोंगो यादव वंशी, कडुं गोकुला उजारों।
मुहं साम्हु आवे ताकों, पटकों उठाय मारों॥
सब नंद फंद फांसों, नासों जु बूढ़े वारे।
अपने प्रभू के काजे, तोड़ों अकाश तारे।
येक नंद पूत मारबे को, कौन काम भारी॥
हरिदास अभी जाऊं, लाऊं मैं ताहि मारी॥६॥

पद मल्हार

पल में चलो नृप आनि कीन्हो॥ टेक॥

गयो सिर नायके गर्वहिं बढ़ाय के, सकठ को रूप धरि असुर लीन्हो॥
सुनत घवरात बृज लोग चकृत भये, कहां आघात धुनि करत आवै।
देखिआकाशचहुंपासदसहुंदश दिशाडरै नरनारि तनुसुधि भुलावै॥
आपु गयो जहां तहां हरि परे पलने, कर गहे चरण अंगूठा चचोरेउ।
किलकि किलकित हंसत लाल शोभा लसत जानि, तहि कसत रिपु आयो भोरउ। नेक पटक्यो लात भयो अति आघात, गिरेऊ भहरात सकटा संहारेउ॥ सूर प्रभु नंदलाल दनुज मारेउ, ख्याल मेटि जंजाल बृजजन उबारेउ॥७॥

॥ यहां ते सकटासुर मारो॥

राग बिलाबिल

कर पग गहि अंगुठा मुख मेलत॥टेक॥

प्रभु पोढ़े पालने अकेले, हरषि हरषि अपने रंग खेलत॥
शिव सोचत विध बुद्धि बिचारत, बाट बढ़यो सायर जल भेलत।
बिड़रि चले युग प्रलय जानिकर, दिगपति दिग दंतीन सकेलत॥
मुनि मन भीत भये भुव कम्पित, शेष सकुचि सहसो फन पेलत।
सो सुख सूर भयो सब गोकुल, किलकत कान्ह सकट पग ठेलत॥८

बार्तिक

जसोदा ने आय भाजन फूटे देख बालकों प्रति॥६॥

यशोदा बचन

पद

को यह भाजन फोरि गयो ॥ टेक ॥

सकट गिराय धरनि को डारयो, को दधि माखन दाह दयो ।
मैं ग्रह कारज मांझ भुलानी, कौन भवन घसि पियों पयो ॥
खेलत हते इतहि तुम सिगरे, देहु बता जो जाने फोरयो ।
मैं हरिदास तुम्हे मारूंगी, तुमहीं करो उतपात नयो ॥१०॥

बालक बोले

पद

मैया अबहीं लाल जगोरी ॥ टेक ॥

पांव पसारे उठाये ऊपर, सकट झुलाय यहां पटकोरी ।
यातें दधि के बासन फूटे, दूध दही माखन लुड़कोरी ॥
तोरे सुत के कारन माई, हम सबको यह दोष लगोरी ।
खाय लई सौगंध अभी, हम आईहैं ना खेलन तो पोरी ॥
झूठही हरिदास डरावे, कहिहै ना कबहूं या खोरी ॥११॥

वार्तिक

यह चमत्कार देख सब बृजवासी जो नंद गेह वा दिन आये रहे अति विस्मित भये और नंदरानी लालन को गोद में लेके दूध पियावन लगी ॥१२॥

पद

चरन गहे अंगुठा मुख मेलत । टेक॥

धरनि गावति अरु हुलरावत, पलना पर किलकत हरि खेलत॥
जो चरनारबिंद श्री भूषन, उरते नेकन टारति ।
देखो धौं का रस चरनानि में, मुख मेलत करि आरति ॥
जो चरनारबिंदु के रसको, सुर नर मुनि करत बिबाद ।
यह रस है मोहूं कों दुर्लभ, तातें लेत सवाद ॥
उछलत सिंधु धराधर कांप्यो, कमठ पीठि अकुलाये ।

शेष सहस फन डोलन लाग्यो, हरि पीवत जब पाये ॥
बढ़्यो वृक्ष वटपुर अकुलाने, मगन भयो उतपात ।
महा प्रलय के मेघ उठे करि, जहां तहां आघात ॥
करुना करि छांड़ि पग दीन्हो, जानि सुरनि मन हंसा ।
हुं हां गूंगी रटत सूर प्रभु, सुर मुनि करत प्रशंसा ॥१३॥

पद बिहाग

यशोदा मदन गोपाल सोवावे ॥टेक॥
देखि स्वप्न गति त्रिभुवन कंपति, ईश विरंच भ्रमावे ॥
असित अरुन सित आलस लोचन, उभय पलक परि आवे ।
जनु रवि शशि गत होत महा निशि, दुग्ध सिंधु छबि पावे ॥
सांस उदर ऊस सत योजन, जग खेल भंडार समावे ।
नाभि सरोज प्रगटि पद्मासन, उतरि ताल पछितावे ॥
कर सिर तर करि स्याम मनोहर, अलक अधिक सो भावे ।
सूरदास मानहुं पन्नग पति, प्रभु ऊपर फन छावे ॥१४॥

॥ इति सकटासुर लीला सम्पूर्ण ॥
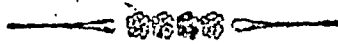
अथ तृणावर्त वध लीला

दोहा

कागा सुर अरु पूतना, वधे कृष्ण शिशु रूप ।
यह सुनिकै अतिही डर्यो, जिय मथुरा कौ भूप ॥

पद [दुबारा]

मथुरा पति जिय अतिहि डरानो ॥ टेक ॥

सभा मांझ असुरनि के आगे,बारबार शिर धुनि पछितानो।
वृज भीतर उपज्यो रिपु मेरो , मैं जानी यह बात ॥
दिनही दिन यह बढ़त जातु है, मोको करि है पात ।
दनुज सुता पूतना पठाई , छणक माझं संहारी ॥
चोंच सरीरि काग सुर दीन्हे , मेरे ढिंग फटकारी ।
अबही तें यह हाल करतु है , दिन दिन होत प्रकाश ॥
सेना पती सुनाय बात यह , नृप मन भये उदास ।
ऐसो कौन मारि है ताको , मोहि कहे सोई आई ॥
वाको मारि अनुप यों राखे , सूर वृजहिं सो जाई ।२।

दोहा

कंस भृत्य भारी बदन ,त्रणावर्त बल धाम ।
उठि बोल्यो अब आजही,करौ भूप को काम ॥ ३॥

वार्तिक

बोलो महाराज आज्ञा होय तो मैं जाऊं वीरा मिलै यह कौनसी बड़ी बात है अवै तो नंद सुत पांचही माहिना को है॥४

वार्तिक

याही समय नंदरानी अपने ललना को लेके आगन में दूध पिया रही थी जग जीवन ने राक्षस को आगम जान अपनो शरीर वहुत भारी कर दीन्हो सो जसोमति कौ धरवो कठिन पड़ गयो ।५।

पद सोरठ

यशुमति मन अभिलाष करै ॥ टेक॥
कब मेरो लाल घुटुरुवन रेंगे , कब धरनी पग द्वैक धरे ।
कब द्वै दांत दूध के देखों, कब तुतरे मुख बचन झरै ॥
कब नंद ही बाबा करि बोलै , कब जननी कहि मोहि टेरे ।
कब मेरो अंचरा गहि मोहन , जोई सोई कहि मोसो झगरे ॥
कबधों तनक तनक कछु खैहै , अपने करले मुखहि भरे ।

कब हंसि बात कहेंगे मोसों, वा छवि तें दुख दूरि हरे॥
श्याम अकेले आंगन छांड़े, आप गई कछु काज घरे।
यहि अन्तर अंधवाहि उन्यो एक, गरजत गगन सहित घहरे॥
सूरदास बृज लोग सुनत धुनि, जो जहं तहं सब अतिहि डरे।६।

रेखता।

चहुंओर गोकुला में, आंधी अंधेरी छाई।
पटि पेड़ पड़े धरनी, वन भौनना सुझाई ॥१॥
घर खापरा उड़ाने, गौ ग्वाल दुखी भारी।
जहं भाग भाग जावैं, वांही झुकी अंधारी॥
नहिं कोऊ काऊ दीसे, घबराने गोकुल वासी।
सब देवता मनावैं, विधि काटो आज फांसी ॥३॥
वसुदेव बात सांची, कहैं नंद जू पुकारी।
हरिदास कोई मधुवन, से आयो असुर भारी ॥४

नंद वचन

अरे भाई वसुदेव जी हम कूं प्रथम ही कही रही गोकुल में नित नये उपद्रव उठेगें बारे लाल को देखो कहां पर्यो है॥

पद

मो सुत कंस की आंख गड़ेरी॥ टेक॥
जबसे जन्म भयो ललना को, तब सों जानै जन्म को बैरी।
कौनउ दिन याको मरवावों, जब देखो तब याहि कहेरी॥
गोकुल को अब बास कठिन है, मेरे लला सिर काल नचैरी।
तुरत तज्यो हरिदास यही थल, जाते मेरो लाल बचैरी ॥८॥

पद राग सूहो

अति विपरीत तृनावर्त आयो ॥टेक॥
बात चक्र मिस बृज ऊपर परि, नंद पौरि के भीतर धायो।
पौढ़े श्याम नंद के आंगन, लेत उठ्यो आकाश चढ़ायो॥

धुंधुंद भयो सब गोकुल, जो जहं रहेउं सु तहंहिं छपायो ।
बहुरि ति धाम आय जो देखे, श्याम श्याम कहि टेरन लाग्यो ॥
कापहु नंद गुहारि करो किन, तेरो सुत अंधवाइ उड़ायो ।
माहि अंतर आकाश तें आवत, पर्वत सम कहि सबनि बतायो ॥
मारो असुर सिला सों पटक्यो, आप चढ़े ता ऊपर आयो ।
दौरे नंद यशोदा दौरी, तुरतहि लै हित कंठ लगायो ॥
सूरदास यह कहति यशोदा, ना जानो विधनहिं का भायो ।९।

वार्तिक

श्री महाराज ने तृनावर्त को गरो दबा के नंद द्वार पै पटक दियो अरु आप आके मृतक शरीर पर खेलवे लगे नंदादिक अरु गोपी ग्वाल दौरे आये अरु कहिबे लगे ॥१०॥

पद

उबरे श्याम महरि बड़ भागी ॥टेक॥
बहुत दूरि ते पर्यो आय घर, देखौं मैं कहूं चोट न लागी ।
रोग जाऊं बलि जाऊं कन्हैया, यह कहि कंठ लगाई ॥
तुमही हो बृज को जीवन धन, देखत नयन सिराई ।
भली नहीं तेरी प्रकृति यशोदा, छांड़ि अकेले जाती ॥
गृह को काम इनन तें प्यारो, नेकहु नाहिं डराती ।
भली भई कैसे हरि बाचै, अजहूं सुरति सम्हार ॥
सूरदास खीझी कहत ग्वालिनि, मन में महरि बिचार ॥११॥

दोहा

काजाने केहि पुन्य तें, को कर लेत सहाय ।
कियो काम बड़ पूतना, तृनावर्त फिर आय ॥१२॥

इति तृणावर्त लीला सम्पूर्ण

अथ गर्गाचार्य लीला

दोहा

एक दिवस वसुदेव जी, सुरत सुतन की कीन्ह।
मो समान को जगत में, होय भाग को हीन ॥१॥
जा दिन तें नँद गेह में, पहुंचायो निज वाल।
ता दिन तें देख्यो नहीं, वाको कौन हवाल ॥२॥
सुत जायो जो रोहणी, ताहिय देख्यौ नाहिं।
दोउ भैया द्वै हैं खिलत, जसुधा आंगन मांहि ॥३॥

वार्तिक

या प्रकार मन में खेद लायके कुल पुरोहित गर्गाचार्य जी को बुलाय के बोले, महाराज रोहणी ने गोकुल में सुंदर सुत जायो है आप वा ठौर जाय के ताको नामकरन कर दीजो तो उपकार होयगो ॥४॥

वार्तिक

आचार्य जी बोले जो आज्ञा ॥४॥

दोहा

मनही मन आनन्द द्विज, गमन गोकुले कीन्ह।
जगदीश्वर के दरश की, उर इच्छा धर लीन ॥५॥
ढूंढ़त ढूंढ़त नंद ग्रह, शीघ्र पधारे जाय।
बाहर ठाड़े दरश हित, मनही मन अकुलाय ॥६॥

वार्तिक

पौरिया – अजी बुड्ढे बाबा कहां ते आये कौन हो ॥७॥
आचार्य – वसुदेव कुल को उपाध्या ॥८
पौरिया – महाराज आज काल नित प्रति गोकुल में उपाधें आय रहीं हैं आपही की कमी रही सो भले आये अब

नंद जसोदा को इश्वर ही मालिक है ॥९॥

आचार्य – अरे भैया मैं ऋषि राज हों नंद जी के पुत्रों को नामकरन करवे आयो हों ॥१०॥

पौरिया – यहां रीछों के राजा को कहा काम है कहुं वन में जाय के वन जंतुओं के नाम धरावो ॥११॥

आचार्य – ऋषिराज नहीं मैं ऋषिराज हों ॥१२॥

पौरिया – वाह महाराज भीख तो मांगे हो परन्तु रूस के राजा बने हो क्या बात है, रहैं भटोई में वृंदावन की बातें करें, नंद के बालकों के नाम राक्षस लोग काटि रहे हैं न जाने आप कहा करोगे ॥१३॥

आचार्य – भैया येक तो मैं बूढ़ो दूसरे इतनी दूरसे चलके आयो थकि गयो, काहे को वृथा अबगरी करो हो भीतर जाने देव मैं गर्गाचार्य हूं ।१४।

पौरिया – गूंगा चारों को कोई काम नहीं भलेई लौट जावो ऐसी वासी हत्या को कोई कहा करेगो ॥१५॥

आचार्य – अरे भैया! मैं कुल को पुरोहित हूं वसुदेव जी ने मोकौं पठायो है ॥१६॥

पौरिया – भले महाराज तब से ऐसी न कही, भीतर जावो ॥१७

पद

महरि भवन ऋषि राज गयो ॥ टेक ॥

चरण धोय चरणोदक लीन्हौ, अरघासन करि हेत दयौ ।

धन्य आजु बड़ भाग हमारे, ऋषि आये अति कृपा करी ॥

हम कहँ धनि धनि नंद जसोदा, धनि यह बृज जहां प्रगट हरी ।

आदि अनादि रूप रेखा नाहिं, इनते नहीं प्रभु और बियौ ॥

देवकी उर औतार लेन कह्यो, दूध पिवन तुम मांग लियौ ।

बालक करि इनको नहिं जान्यो, कंस विध्वंस यही करि हैं ॥

सूर देह धरि सुरन उधारन, पुहमी भार यही हरि हैं ।१८।

पद

धन्य यशोदा भाग तिहारो, जिन ऐसो सुत जायो है।
जाके दरस परस सुख तनमन, कुलको तिमिर नसायो है॥
विप्र सुजन वंदी औचारन, सबै नंद गृह आयेहो।
करि तन शुभग हरदि दधि छिरके, हरष असीस बधाये हो॥
गर्ग निरूप कहेउ सब लच्छण, अविगत है अविनाशी हो।
सूरदास प्रभु लगन सुनि सुनि, आनंदित वृज वासीहो॥१६

बार्तिक

गर्ग जी का वचन सुन के सब को आनन्द भयो पुनि रोहणी सुत के लच्छण देख गर्ग जी बोले॥२०॥

दोहा

राम नाम है रासि को, सुख निवास अभिराम।
वली हो गयो लोक में, सब कहि हैं बलिराम॥२१॥

[बार्तिक] श्रीकृष्ण जी की जन्म कुंडली बनाकर गर्ग मुनि बोले, हे नंदजी तुम्हारौ पुत्र जो श्याम रंग है इसका नाम श्री कृष्ण राख्यो है इनके अनेक नाम हैं॥२२

रेखता

जानो न याहि बालक, जो जगत को अधारा।
याको न भेद जग में, है कोउ कहन हारा॥१॥
वसुदेव गेह जनमो, कहलायो वासुदेवा।
नद नंद भयो अबहू, यो देवतों को देवा॥२॥
जग जितने काम करि हैं, हुइहैं जु उतने नामा।
महिमा अपार इनकी, करिहैं सुरों के कामा॥३॥
पायो है पूत ऐसो, तुम कीन्हो पुण्य भारी।
हरिदास इनके गुणकी, गिनती करे को सारी॥२३॥

पद

आदि सनातन हरि अविनाशी, सदानिरंतर घट२ वासी॥

पूरण ब्रह्म पुरान बखाने, चतुरानन शिव अंत न जाने ॥
महिमा अगम निगम जिहिं गावे,सो यशुदा लियेगोद खिलावे॥
एक निरंतर ध्यावे ज्ञानी, पुरुष पुरातन है निर्वानी ॥
शुक शारद को नाम अधारा, नारद शेष न पावे पारा ॥
जपतप संयम ध्यान न आवै, सोई नंद के आगन धावै ॥
लोचन श्रवणन रसना नाशा, बिन पद पानि करे परकाशा ॥
अरुन असित सित वर्णन धारे, मुनि मनसा में कहां बिचारे॥
बिश्वंभर निज नाम कहावे, घर घर गोरस जाय चुरावे ॥
जरा मरन ते रहित अमाया, मात पिता सुत बंधु नजाया ॥
आदि अनंत रहे जल शाई, परमानंद सदा सुखदाई ॥
ज्ञान रूप हिरदे में बोले, सो बछरन के पाछे डोले ॥
जलधर अनल अनिल नभ छाया, पांच तत्व मेंजगउपजाया॥
लोक रचै पाले अरु मारै, चौदह भुवन पलक में धारे ॥
काल डरे जाके डर भारी, सो ऊखल बांध्यो महतारी ॥
माया प्रगट सकल जग मोहै, कर्म अकर्म करे सोइ सोहै ॥
जाकी माया लखे न कोई, निर्गुण सगुन धरे बपु दोई ॥
शिव समाधि जाको अंत न पावे, सो गोपन की गाय चरावे ॥
गुण अनंत अवगतहि जनावे, यश अपार श्रुति पार न पावे॥
चरन कमल नित रमा पलोवें, चाहत नेक नैन भर जोवें ॥
अगम अगोचर लीला धारी, सो राधा वश कुंज बिहारी ॥
जो रस ब्रह्मादिक नाहिं पायो, सो रस गोकुल गलिन बहायो ॥
बड़ भागी यह सब बृजवासी,जिनके संग खेले अविनाशी ॥
सूर सुयश कहि कहा बखाने, गोबिंद की गति गोविंद जाने॥२४

इति

अथ पांड़े लीला

दोहा

तीन लोक को ईश जो, अखिल सच्चिदानंद।
सो जन्मो नंद गेह में, होय जसोदा नंद ॥१॥
ताके दरशन लागि अरु, देखन बाल विनोद।
पांड़े जी गोकुल चले, मनमें बढ्यो प्रमोद ॥२॥

द्वारपाल – अजी! कौन हो कहां ते आये ॥३॥
पांड़े – जसुदा के मइके के पाड़े ॥४॥
द्वारपाल – दुवे तिवारी चौवे पांड़े, घर पहुंचे बिकवाये भांड़े, क्या इन्हीं मेंके हो, पुत्रोत्सव में नंदजी सारी संपति लुटाय बैठे, अब भाड़े बिकने को रहे हैं ॥५॥
पांड़े – अजी! ऐसी अन्होनी ना भाखो मैं पंडित हूं ॥६॥
द्वारपाल – जहां चार पंडित, वहीं बात खंडित, बलिहार महाराज क्या याहि समय आवना था ॥७॥
पांड़े – भाई! तुमतौ बात बात पकरो हो, मैं पुजारी हूं ॥८॥
द्वारपाल – पहुंचे पुजारी, और नगरी उजारी, भले महाराज॥६॥
पांड़े – भाई! मैं जसोदा के माइके को पुरोहित हूं, ज़ाने देत हो तो ठीक है, नहीं घरको लौट जाऊं ॥१०॥
द्वारपाल – महराने के पुराने हितू हो समझे महाराज समझे अब भीतर पधारो ॥११॥

पद

महराने ते पांड़े आयो ॥ टेक ॥

बृज घर घर बूझत नंदरावर, पुत्र भयो सुनके उठि धायो।
पहुंच्यो आय नंद के द्वारे,यशुमति देखि आनन्द बढ़ायो।
पांव धोय भीतर बैठारेउ, भोजन बनिवे भवन लिपायो।

जोभावे सो जेवन कीजे, विप्र मनहि अति हरष बढ़ायो।
बड़ी वेस विधि भयो दाहिनो, धनि यशुदा ऐसो सुत जायो।
धेनु दुहाय दूध लै आई, पांड़े रुचि करि खीर चढ़ायो।
घृत मिष्टान्न खीर मिश्रित करि, परुसि कृष्ण हित ध्यान लगायो।
नयन उघारि विप्र जो देखे, खात कन्हैया देख न पायो।
देखहु आय यशोदा सुतकृत, सिद्ध पाक यह आनि जुठायो।
महरि विनय करि दोउ कर जोरी, घृत मधु पयफिरि वहुत मंगायो।
सूरश्याम कत करत अचगरी, बार बार ब्राह्मनहिं खिझायो।१२।

वार्तिक

अरी जसोदा मैं रसोई बनाय के ठाकुर भोग लगायहूं तेरो लाल जुठार देवे है याकूं रोक नहीं घर चलो जाऊंगो ॥१३॥

जसोदा बोली – महाराज बालक की चूक माफ करो और फिर रसोई बनावो ॥१४॥

वार्तिक

पांड़े ने ध्यान कियो इतने में नंदलाल फेर भोजन को आ बैठे ॥१५॥

पद

पांड़े भोग न लावन पावै ॥टेक॥
करिके पाक जबहिं अरपतु है, तबहिं ताहिं छुइ आवे ॥
इच्छा करि मैं ब्राह्मन निवत्यों, ताको श्याम खिजावे ॥
वह अपने ठाकुरहि जिवावे, तू तबहीं छुइ आवै ॥
जननी दोष देति कत मोकों, विधि विधान करि ध्यावे ॥
नयन मूंदिकर जोरि नाम लै, बारंबार बुलावै ॥
कहि अंतर क्यों होय भक्त को, क्यों मेरे मन भावै ॥
सूर दास बलि बलि ताकी जो, जन्म पाय यश गावै ॥१६

जसुधा बोली – अरे लाला तू काहे को पांड़े को खिजावै है. १७
कृष्ण बोले – मैया मोको बार बार बुलावै हैं तब जात हूं. १८

ब्राह्मन को वचन

पद

सुफल जन्म हरि आजु भयो ॥टेक॥

धनि गोकुल धनि नंद जसोदा, जाके हरि अवतार लयो ॥
प्रगट भयो सब पुण्य सुकृत फल, दीनबंधु मोहि दरस दयो ॥
बारंबार नंद के आंगन, लोटत द्विज आनन्द भयो ॥
मैं अपराध कियो बिन जाने, को जाने केहि भेष जयो ॥
सूरदास प्रभु जगत हेत बस, यशुमति के औतार लयो ॥

या प्रकार आनन्द करि पांड़े जी सिधारे

॥ इति पांड़े लीला सम्पूर्ण ॥
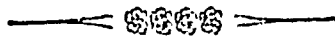
अथ चंद्र खिलोना लीला

दोहा

एक समय जसुमति लिये, अंगन खिलावत लाल ।
मांगन लागे हरि तबै, लखि नभ छवि विधु बाल ॥१॥

पद

ठाढ़ी अजिर यशोदा अपने, हरहि लिये चंदा दिखरावत ।
रोवत कत बलि जाउं तुम्हारी, देख्यो धौं भरि नयन जुड़ावत ।
चितै रहे तब आपुन शशि तन, अपने कर लेलै जु बतावत ।
मीठो लगत किधौं यह खाटो, देखत अति सुन्दर मन भावत ।
मनही मन बुधि करत हरि तब, माता सों कहि ताहि मंगावत ।

लागी भूख चंद मैं खैहों, देहु देहु रसि करि विझुझावत।
यसुमति कहति कहा मैं कीन्हों, कत मोहन अतिहीं दुख पावत।
सूर श्याम को यशुमति बोधत, गगन तरइयां उदर दिखावत।२।

वार्तिक

अरी मैया! ह्यां तें तो चंदा दूर दीसे है अरु मोको तो बड़ी भूख लाग रही है जल्दी वाको निकट बुलाय दे। ३॥

जसोदा वचन

पद

केहि विधि करि कान्हहि समुझैहों॥ टेक ॥
मैं भूली चंदवा दिखरायो, ताहि कहत मोहि दे मैं खैहों ॥
अनहोनी कहुं भई कन्हैया, देखी सुनी न बात ॥
यह तो आहि खिलौना सबको, खान कहत वोहि तात ॥
यहै देत नव नीतहुं मोकों, छिन छिन सांझ सवारे ॥
बार बार तुम माखन मांगत, देऊं कहां तें प्यारे ॥
देखत रहो खिलोना चंदा, आरि न करो कन्हाई ॥
सूर श्याम लिये हंसति यशोदा, नंदहि कहति बुझाई ॥

वार्तिक

प्यारे लाला चंदा खायवे की वस्तु नाहीं यह तो जगत को खिलोना है और कछू खाउ तोहि देऊंगी अब न रोवे ॥

पद

आछो मोरो लाल हो ऐसी आरि न कीजै ॥टेक॥
मधु मेवा पकवान मिठाई, जोइ भावै सोइ लीजै ॥
सद माखन साजो देऊं घृत, अरु मीठो पय पीजै ॥
पालागौं हट जिनि करो प्यारे, अति रीसन तनु छीजै ॥
आन बतावत आनहीं देखत, इन बातनि कैसे कीजै ॥
सूर श्याम हठि चंदा मांगे, चंद कहां ते दीजै ॥८॥

नंदवचन

वार्तिक

प्यारे लाला चंद्र मांगने की रार नाहिं कीजे जो तु नाहीं मानो तो तोरी माय चंदा काहू प्रकार बुलाय देगी वाही की गोदी में खेलो ॥७॥

पद

बार बार यशुमति सुत बोधति, आव चंद तोहि लाल बुलावे ॥
मधु मेवा पकवान मिठाई, आपु न खैहै तोहि खवावे ॥
हाथहि पर तोहि लीन्हे खेले, नेक नहीं धरनी बैठावे ॥
जल बासन करिके जो उठावति, यहि में तन धरि आवे ॥
जल पुट आनि धरनी पर राख्यो, गहि आन्यो वह चंद दिखावे ॥
सूरदास प्रभु हंसि मुसकाने, बार बार दोऊ कर नावे ॥८॥

वार्तिक

अरे लाला मैंने या जल के भाजन में चंदा बुलाय दीनो है याकों खूब खिलाय ले अरु रार मति करे ॥९

पद

ल्यौंगोरी मा चंदा ल्यौंगो ॥टेक॥

कहा करों जल पुट भीतर कौ, बाहर चौकी गहोंगो ।
यह तो झलमलात झक झोरत, कैसे करि जु लहौंगो ।
वह तो निपट निकट ही देखत, बरजे हों न रहोंगो ।
तुमरो प्रेम प्रगट मैं जान्यो, बौराए न चहोंगो ।
सूर श्याम कहै करगहि ल्याऊं, शशि तन ताप दहौंगो ॥१०

वार्तिक

अरी मैया जो चंदा तो जलही में कलमलावे है, या को बाहर निकास दे नहीं तो वाही चंदा बुलाय दे ॥११॥

पद

लालयहचंदालैलेकमलनयनबलिजाय,यशोदा नीचौनेक चितैहो ।
जा कारन तुम सुनि सुन्दर वर, कीन्ही ऐसि अनेहो ।

सोई सुधाकर देखि दामोदर, या भाजन में है हो।
नभ ते निकट आनि राख्यो है, जल पुट जतन जुगैहो।
लै अपने कर काढि चंदा को, जो भावै सो कैहो।
गगन मंडल ते गहि आन्यो हो, पक्षी येक पठै हो।
सूरदास प्रभु इतिक बात को, कत मेरो लाल हटै हो। १२।

वार्तिक

अरे लाला वाही चंदा को मैंने येक पक्षी को पठाय या भाजन में बुलाय लीनो है चंदा तो ते डरपे है याते बाहर नहीं निकसे ॥१३॥

पद

तुव मुख देखि डरत शशि भारी ॥टेक॥
कर करिकै हरि देख्योई चाहत, भाजिय ताल गयो अपहारी॥
वह शशि तो कैसेहु नहिं आवत, यह ऐसी कछु बुद्धि विचारी॥
बदन लखे बिधु विधु संकित मन, नैन कंज कुंडल उजियारी॥
सुनहुं श्याम तुहि शशि डरपत है, कहत ये शरण तुम्हारी॥
सूर श्याम बिरझाने सोये, लीए लगाय छतियां महतारी ॥१४

वार्तिक

यातें ताको पकरिन की रार नहीं कीजे ताको देख चंदा भागत फिरे हैं तोहि भूक लगी हुइ है चल कछु खायवे देऊं॥१५

पद

यशुमति लै पलिका पौढावति ॥टेक॥
मेरो आजु अतिहिं सिरझानो, यह कहि मधुरे सुर सों गावति।
पौढि गई आपुन हरवे करि, अंग मोरि तब हरि जसुदाने।
कर सों ढांकि सुतहिं दुलरावति, लट पटाय बैठ अतुराने।
पौढ़हु लाल कथा एक कहिहों, अति मीठी श्रवनिन को प्यारी।
यह सुनि सूर श्याम मन हरषे, पौढि गये हंसि देत हुंकारी।१६

इति

अथ माटी भक्षन लीला

दोहा

एक समय लरकान के, संग खेलैं दोऊ भाय।
मन मोहन ने तनकसी, माटी लीनी खाय ॥१॥
श्री दामा ने तुरतहीं, जसुधहिं कही पुकार।
खाई माटी मुख में, जसुमति तोरि कुमार ॥२॥

वार्तिक

अरी मै! यातनक आयके तो देखो, तुम्हारो कन्हैया माटी खावे है याको कछु खावे नाहिं मिलै ॥३॥

पद

मैं देखत यशुमति तेरे ढोटा, अबहीं माटी खाई ॥टेक॥
यह सुनके रिसके उठि धाई, बांह पकर लै आई।
एक करसों मुख गहि के गाढ़े, एक कर लीनी सांटी।
मारति हों तोहि अबहि कन्हैया, वेगि न उगलो माटी। ४।

वार्तिक

अरे लाला! इतनो दही दूध घृत पकवान मिठाई छोड़के तू माटी खावै है ॥५॥

कृष्ण जी अपनो मुख पोंछ के बोले ॥६॥

पद

मैया मैं नहिं माटी खाई ॥टेक॥
बृज लरिका सब तेरे आगे, झूठी कहत बनाई।
मेरे कहे नहीं तू मानत, दिखरावहुं मुख बाई ॥७॥

दोहा

झूठ कहत तोसों सभी, माटी मोहि न सुहाय।
नहिं मानै जो बात तू, दिख लावों मुख वाय ॥८॥

जसोदा बचन

बार्तिक

अरे लाल मुख काहे को बावे है माटी उगलि दे ॥६॥

पद

मोहन क्यों नहिं उगलै माटी ॥टेक॥
बार बार अनरूचि उपजावति, महरि हाथ लिये सांटी।
महतारी से मानत नाहीं, कपट चतुरई ठाटी।
बदन उघारि दिखाय आपनो, नाटक की परिपाटी।
बड़ी बार भई लोचन मूंदे, भ्रमति जननि मन फाटी।
सूर निरख वृजनारि थकित भई, कहत न मीठी खाटी।१०।

बार्तिक

जसोदा बोली लाला मोहे काहे को खिजावे है माटी काहे नहीं उगिले तब कन्हैया ने मुखफार के दिखायो ॥११॥

पद

मोहन ने जब मुख दिखरायो ॥टेक॥
त्रिभुवन बन घन नदिया पर्वत, रवि शशि नभ तरागन छायो॥
अखिल ब्रह्मांड खंड की महिमा, सिंधु सुमेर सभी बतरायो॥
चकित भई हरिदास जसोदा, बार २ निज माथो नायो ॥१२

रेखता

शशि सूर्य सात द्वीप मेरु वायु अग्नि तारे।
जल ज्योति चक्र लोक नौंहीं खंड न्यारे २ ॥१॥
वसुदेव नंद मथुरा पति जसुधा गोपी ग्वाला।
मुख माहिं देव सारे दिखराये नंद लाला ॥२
यह देख के तमाशा मिहतारी मत भुलानी।
भय भीत मौन ठाड़ी मन गर्ग बात आनी ॥३॥
बहु देवता मनाये उर में प्रणाम कीन्हो।
मम पूत पती त्रिभुवन को मैने आज चीन्हो ॥४॥

बदलाई माता मति को प्रभु जु वाहि काला ।
हरिदास गले लायो मान जान वारो लाला ॥१३॥

बार्तिक

जसोदा बोली अरे लाला तोरी वलइयां लेऊं अपनो मुख ढांपिले मैं तेरो भेद भली भांति जानि गई अब तेरे पिता से कहूंगी ॥१४॥

पद

नंदहि कही यशोदा रानी ॥ टेक ॥
माटी के मिस मुख दिखरायो, तिहूं लोक रजधानी ।
स्वर्ग पताल धरनि वन पर्वत, वदन मांझ है आनी ॥
नदी सुमेर देखि चकृत भई, याकी अकथ कहानी ।
चितै रहे तब नंद युवति मुख, मन मन करत बिनानी ।
सूर दास तब कहति जसोदा, गर्ग कही यह बानी ॥ १५ ॥

नंद जी वचन

पद

कहत नंद यशुमति सुन बौरी ॥टेक॥
ना जानिये कहां तें देख्यो, मेरे कान्हहिं लावति ढौरी ।
पांच वरस को मेरो कन्हैया, अचरज तेरी बात ।
ये काजहि सांटी लै धावति, ता पीछे बिललात ।
कुशल रहें बलराम श्याम दोऊ, खेलत खात अन्हात ।
सूर श्याम को कहा लगावति, बालक कोमल गात ।१६

दोहा

नंद कहत सुन बावरी, हरि अति कोमल गात ।
लै सांटी धावत वृथा, पुनि पीछे पछतात ।१७।

सोरठा

अचरज तोरी बात, को जाने देख्यो कहां ।
कुशल रहैं दोऊ भाय, राम श्याम खेलत हंसत ॥१८॥

नंद बचन

वार्तिक

अपनो घर काज करो बालकों के खेलवे में ऐसी शंका नहीं कीजतु हैं, नंद रानी ने मुसकराय दीन्हों ॥१६॥

लावनी

अंगना संग बालक लेइं, खिलैं दोउ भैया।
लखि लखि वृज वनिता, बाल मगन मन मैया।१।
चल घुटनों के बल फिरै तोतरे बोले।
पकरै बछरों की पूंछ पिछारी डोलै।२।
प्रभु कौतक करिवे काज मृत्तिका खाई।
अंगना के आगे दौर सखा न भुवाई।३।
जब बालक अरु बलराम कही यह जाई।
सुनि महरि मचाई धूम छड़ी लै धाई।४।
मुख ते अबही महि मोहना उगल दे माटी।
नहिं सबहिं सखन के बीच मारहौं सांटी।५।
नहिं माटी खाई कहत न तोहि पत्याऊं।
वाको फल अवही लाल तोहि दिखराऊं।६।
मन मोहन खोल दिखा अपनौ मुख मोको।
नित नाहक माटी खात वधूं अब तोको।७।
घर में कितने पकवान मिटाई मेवा।
वहि कत न खात हरिदास छांड़ि यह टेवा।८।

इति

अथ बाल खेलन लीला

पद

खेलत श्याम ग्वालनि संग ॥टेक॥
सुबल हलधर अरु श्री दामा, करत नाना रंग ॥
हाथ तारी देत भाजत, सबै रुचि करि होड़ ॥
बरजे हलधर श्याम तुम, जिनि चोट लागहि गोड़ ॥
तब कहेऊं मैं दौरि जानत, बहुत बल मो गात ॥
मोरी जोरी है श्री दामा, हाथ मारे जात ॥
बोलि तबहिं उठे श्री दामा, जाहु तारी मार ॥
आगे हरि पाछे श्री दामा, धरेउ श्याम हंकार ॥
जानिके मैं रहेउ ठाढ़ों, छुवत कहा जु मोहि ॥
सूर श्याम खीजत सखन सों, मनहिं कीनो कोहि ॥

वार्तिक

छील छिलोना खेलने में श्री दामा श्री हरिजी के पीछे दौरयो, वे खड़े होय बोले अरे मैं तो आपही खड़ो होय गयोहो तू ने कहा छीयो सखा फिर भाग्यो अरु बोल्यो ॥२॥

खेमटा

हमैं छीलो नंद लाल तुमको चुनोटी दीन्ही ॥टेक॥
तुमहो महर के लाड़ले महर के लाड़ले, तुम्हरे हैं बड़े ख्याल ॥
खिसयावो रोवो क्यों खेल में रोवो क्यों खेल में, बने रहो भूपाल ॥
गुइयां के दावक्योंना देवजी दाव क्योंना देवजी, भली नहींजा चाल
देखै हंसें दोई भईया हंसें दोई भईया, हरिदास निहाल ॥३॥

पद गौरी

सखा कहत हैं श्याम खिसियाने ॥टेक॥
आपुहिं आप लुकि भये ठाढ़े, अब तुम कहा रिसियाने ॥
बीचहिं बोल उठे हलधर तब, इन्ह के माय न बाप ॥

हारि जीत कहँ नेकन समुझत, लरकानि लावत पाप ॥
आपुन हारि सखा सों झगरत, यह कहि दियो पठाय ॥
सूर श्याम उठि चले रोय के, जननि पूछत धाय ॥४॥

पद

खेलत में को काको गुसैयां ॥ टेक ॥
जाति पांति हमते बड़ी नाहिन, ना हम बसत तुम्हारी छैयां ॥
अति अधिकार जनावत याते, अधिक तुम्हारे गैयां ॥
रूठि करे तासों कहा खेलैं, बैठे जहां तहां सब गुइयां ॥
हरि हारे जीते श्री दामा, बरबस ही कत करत रुसैयां ॥
सूर श्याम प्रभु खेलो चाहत, दाव दियो करि नंद दुहैयां ॥५॥

दोहा

बोले उठे बलराम तब, इनके माय न बाप ।
हार जीत जाने नहीं, लड़किन लावत पाप ॥

वार्तिक

यह वचन सुनते ही श्याम सुन्दर रोते हुये यशोदा पास जाकर बोले ॥७॥

चौपाई

मैया मोहि दाऊ दुख दीन्हों, मोसों कहत मोल को लीन्हों ।
कहा करूं या रिसके मारे, मैं नहीं खेलन जात दुबारे ।
२ कहत कौन तेरी माता, को तेरो तात कौन तेरो भ्राता ।
नंद यशोदा गोरी, तुमतो कारे आये चोरि ।
कहत देवकी जाये, लै वसुदेव यहां निशि आये ।
कछुक वसुदेवहिं दीन्हो, ताके पलटे तुम को लीन्हो ।

जसोदा वचन

वार्तिक

अरे लाला मैंने तो को बहुत बरजो है, लरकों से काहे कों खिजावे है अब अपने घरही खेलिबू करौ ॥ ६ ॥

लालजी बचन

पद

खेलन अब मेरी जाय बलैया ॥ टेक ॥
जबहिं मोहि देखत लरिकन संग, तबहिं खिजत बल भैया॥
मोसों कहत तात वसुदेव को, देवकी तेरी मैया॥
मोल लियो कछु दे वसुदेवहिं, करि करि जतन बढ़ैया॥
अब बाबा कहि कहत नंद सों, यशुमति सों कहि मैया॥
ऐसे कहि सब मोहि खिझावत, तब उठि चलो खिसैया॥
पाछे नंद सुनत हैं ठाड़े, हंसत हंसत उर लैया॥
सूर नंद बल रामहिं घेरयो, सुनि मन हरष कन्हैया॥ १० ॥

पद सारंग

मैया मोहि दाऊ बहुत खिझायो ॥ टेक ॥
मोसों कहत मोल को लीन्हो, तूं कब यशोदा जायो।
कहा करों यह रिसके मारे, खेलन हूं नहिं जात।
पुनि पुनि कहत कौन है माता, कौन है तेरो तात।
गोरे नंद यशोदा गोरी, तुम कत सांवल गात।
चुटकी दे दे ग्वाल सुनावत, हंसत सबै मुसकात।
तू मोहीं कों मारन सीखी, दाऊहि कबहुं न खीझै।
मोहन को मुख रिस समेत, ये बातें सुनि सुनि रीझै।
सुनो कान्ह बलभद्र चबाई, जन्महि को वह धूत।
सूर श्याम मोहि गोधन की सों, हूं माता तू पूत॥ ११ ॥

प्रातकाल फेर खेलवे गये

जसोदा बचन

पद धनाश्री

खेलन को हरि दूरि गयोरी ॥टेक॥
संग संग धावत डोलत कहधों, बहुत अबेर भयोरी।
पलक ओट भावत नहीं मोकों, कहा कहों तोहि बात।

नंदहिं तात तात कहि बोलत, मोहि कहत है मात।
इतनी कहत श्याम घन आये, ग्वाल सखा सब चीन्हो।
दौरि जाय उर लाय सूर प्रभु, हरषि यशोदा लीन्हो ॥१३॥

वार्तिक

बारे लाल इतनी दूर न जायवो करो हाऊ पकर लेगो ॥१४

पद

खेलन दूरि जात कत कान्हा ॥टेक॥
आज सुन्यों मैं हाऊ आयो, तुम नहीं जानत नान्हा ॥
एक लरिका अबहीं भजि आयो, रोवत देख्यो ताहि ॥
कान तोरि वह लेत सबनि को, लरिका जानत जाहि ॥
चलो न वेगि सबेरे जैये, भाजि आपने धाम ॥
सूर श्याम यह बात सुनतही, बोलि लिये बलराम ॥१५

श्री कृष्ण वचन

लावनी

दूर खिलन जिन जावो ललन कहि हाऊ आये बतायेरी।
कहु कौन पठाये कहां ते मैया हाऊ आयेरी ॥१॥
बंसी बट जमुना तट मेरी गाय सघन बन डोलेरी।
पैठ पताल व्याल गहि नाथ्यो हाऊ तहां नहीं आयेरी ॥२॥
जे बातें सुन सुन डर पावैं मोहे दाऊ बीर हंसावैरी।
सात रसातल शेशासन रहि तब की सुरत भुलायेरी ॥३॥
चार वेद ले गयो शंखसुर जल के बीच लुकायेरी।
मीन रूप धरि ताहि पछारो हाऊ तहां नहीं आयेरी ॥४॥
मथि समुद्र सुर असुरन के हित मंदर जलहिं समायेरी।
कमठ रूप धरि धरनि पीठ पर जल ते बाहर ल्यायेरी ॥५॥
हिरण्याक्ष की गरब तोर संग असुर बहुत संहारेरी।
रूप धरि सूकर दांतन में दाब धरनि को ल्यायेरी ॥६॥
बिकट भेष नरसिंघ रूप धरि असुरहिं नखन बिदारेरी।

पहिलाद उबारे तहां नहिं मैया हाऊ आयेरी ॥७॥
बामन रूप धारि बल को छलि भूम दान हम मांगेरी।
त्रैलोकन पायो तहां नहिं मैया हाऊ आयेरी ॥८॥
परसराम औतार धारि छत्री रन मांह संघारेरी।
भू भारि उतारे तहां कबहूं ना हाऊ आयेरी ॥९॥
राम रूप रघुवंश मांह धरि रावन असुर संघारेरी।
सब लंक जराई तहां नहिं मैया हाऊ आयेरी ॥१०॥
अबहिं पूतना त्रणावर्त कागासुर सकट पछारेरी।
मन कंस डरायो कहां ते और हाऊ पहुंचायेरी ॥११॥
मैयारी मोरे गुन बहुते तोहि माटी खाते दिखायेरी ॥
हरिदास भुलानी अजहुं लौं हाऊ से डर पायेरी ॥१२॥१६॥
यह सुन माताने गलेलगाय लीन्हो अरु बलैयां लेवेलगी ॥१७

इति

अथ माखन चोर लीला

समाजी बचन

दोहा

नारायण इक वृज वधू, चली न्हायवे प्रात।
ढिंग की सखी बुलाय के, कही तासु यह बात॥१
बीर यहां पै तनक तू, बैठि चौकसी काज।
मेरे घर आवै नहीं, चोरन को शिर ताज ॥२

कालिंगडा

जमुना न्हान चली वृज गोरी॥ आस्ताई॥
सजनी एक चौकसी कारन, बैठारी निज घर की पौरी।
ताके भवन धसे मन मोहन, कियो चहत माखन की चोरी।
रूप ठगोरी डारि सखी पै, आप गये जहां धरी कमोरी।
कछु खायो कछु भूमि गिरायो, आंगन मांहि मटुकिया फोरी।

नारायण या विधि कुशाल करि, भाजि गये निधि बनकी खोरी।

दोहा

जब द्वारे आई सखी, छींक भई ततकाल।
पुनि आंगन में जाय के, देखी अधिक कुचाल ॥४॥

सखी वचन सखी प्रति परस्पर

कालिंगड़ा

किन मेरो माखन बिखरायौ ॥ आस्ताई ॥
फूटी परी मटुकिया आंगन, कहा भयो भीतर को आयो।
मैं निज हितू जानके तोकों, रखवारी करिबे बैठायो।
अरी भटी तुमहूं रही सोवत, भलो चोर तें भवन रखायो।
आवत छींक भई मो सन्मुख, उन अपनो फल प्रगट दिखायो।
नारायण तें मेमानि बनि कें, मेरो घर सबरो लुटवायो ॥५॥

छंद

कटी पीत पट मुख मुरली मुकुट सीस, कांख में लकुट नटवर की चटक। तिलक ताटंक कान कुंडल कपोल, बनमाल की लटक तामें चटक मटक॥ वपु घन घटा तामें मोतीहार बग ठठा, सुन्दर सुभग पग पांवरी खटक। ब्रज की भटक दधि चोरी की सटक ऐसी सिंह सुरती पुनि मनकी अटक ॥६॥

पद

प्रथम करी हरि माखन चोरी ॥टेक॥
ग्वालिन मन इच्छा पूरन करि, आपु भजे हरि वृज की खोरी।
मन मन रहे बिचार करत प्रभु, वृज घर घर सब गाऊं।
गोकुल जन्म लियो सुख कारन, सब के माखन खाऊं।
बाल रूप जसुमति मुहि जानै, गोपिन मिल सुख भोग।
सूरदास प्रभु कहत प्रेम सों, ये मेरे वृज लोग ॥७॥

सखी को उत्तर

आसावरी

वाकी चौकसी कैसे करूं मैं, ना जानूं कित सों वह आवै ॥आस्ताई॥

अचक अचक पग धरत द्वार, नूपुर की धुनि होन न पावे।
उझकि उझकि इत उत ये झांक के, फिर सैनन निज सखा बुलावे।
छींके धरी कमोरी माखन, अंगुरी सों पुनि तिन्हें बतावे।
वस्तु चोर हो ताकूं पकरें, चाहे जितौ बलवान कहावे।
नारायण वा चित के चोर सों, काहू की ना कछु बसि आवे ।८

पुनि सखी बचन

दोहा

तोहि चतुर जानूं जबी, चोर न जावे भाज।
हाथ पकरि पुनि लै चले, जसुमति के ढिंग आज ॥९॥

समाजी बचन

दोहा

कुल देवी पूजन चली, इतनी कह बृजनार ॥
पुनि ताके घर में गये, चोरन के सरदार ॥१०॥
झट किवार की ओट ते, निकसि नवेली बाल।
लपकि झपकि निज अंक भरि, पकरि लिये गोपाल ॥११॥

सखी बचन लालजी प्रति

राग भैरवी

मोहन अब कित भाजि के जैहौ ॥ आस्ताई ॥
बहुत अनीत करी तुम बृज में, आज सबी फल पैहौ।
राखूंगी तोहि पकरि भवन में, कौन सहाय बुलैहौ।
चंचल चपल चोर चूड़ामणि, पुनि माखन न चुरैहौ।
नाच गाय कछू करो विनती, गहरी भेट चढ़ैहौ।
नारायण जबही छूटोगे, फिर नाहीं टेढ़े बतैरहौ ।१२

लालजी बचन सखी प्रति

राग कालिंगड़ा

सखी मोहि चोर चोर मति भाख ॥ आस्ताई ॥
तू ही कहे मेरो दधि नीको, तनक श्याम लै चाख।

निशि दिन मेरे नंद बाबा घर, तोसी आवत लाख।
मैं चोरी को नाम न जानूं, बूझ लै मेरी साख।
मोहि कहा तेरे गोरस सों, चाहे गैल में नाख।
नारायण जो हमें देह तू, सो अपने घर राख ॥१३॥

सखी बचन लालजी प्रति

राग नट

अब तुम कहां जाओगे आज ॥ आस्ताई ॥
चोरी करत फिरत नित घर घर, तनक न आवत लाज।
बाधूंगी मैं हाथ तिहारे, भले मिले हो आज।
नारायण निज भवन होयगौ, नन्दराय को राज ॥१४॥

वार्तिक

यों कहके सखी श्री लालजी के हाथ बांधवे लगी, तब लालजी बोले अरी तोई हाथ बांधवोऊ नांहिं आवै देख हम तोंहि सिखावें ॥१५॥

दोहा

छैल छली छल कपट सों, बांधि सखी के हाथ।
माखन ताहि दिखाय के, जेवत ग्वालों साथ ॥१६
गिरि तनया को पूजि के, घर आई बृज नार।
मगन भई निज हिये में, कौतुक नयो निहार ॥१७

सखी बचन लालजी प्रति

कालिंगड़ा

आज यहां कैसे तुम आये ॥ आस्ताई ॥
सूने भवन धसत नहीं डरपत, ऐसे निडर कौन के जाये।
छींके सों मटुकी उतारते, नेक नहीं मन में सकुचाये।
भले सपूत भये निज कुल में, लाज शरम के खोज मिटाये।
काहे को यह ग्वाल बाल सब, और पास तुमने बैठाये।
नारायण या विधि से घर घर, जेवत हो नित माल पराये ॥१८

लाल जी बचन

राग खम्माच

मैं कहा कहूं कछु कही ना जावे ॥ आस्ताई ॥
ऐसो समौ कबू नहीं देखो , कीजौ भलौ बुराई आवे ।
तो छींके एक चढ़ी बिलैया , माखन मटुकी भूमि गिरावे ।
ताहि विडार करूं रखवारी , याहू पै मोहि दोष लगावे ।
यही समझ के सखा बुलाये , मति कहुं ग्वालिन फैल मचावे ।
नारायण यह साख भरेंगे , घर बुलाय के चोर बनावे ।१६।

बार्तिक

यह बचन रसीले सुनि के सखी मुसिक्याय गई अरु शोभा धाम की शोभा निरखि के बोली बलिहार वा चतुराई पै तब आप बोले अरी सखी घबरावे क्यों है अभी तौ कई वेर बलिहार होयगी.२०

दोहा

नारायण मैं सत्य कहुं , बिना कपट छल छंद ।
ये लीला जो नित सुनै, पावै परमानंद ॥२१॥

इति श्री माखन चोर लीला सम्पूर्ण

अथ उराहनो लीला

समाजी बचन

दोहा

विधु वदनी शोभा घनी, मृग नैनी वर वाम ।
सहजही नंद भवन गई, देखे सुंदर श्याम ॥१॥

निरखि रूप अति मुदित मन, घर आई वृज नारि ।
अपर सखी बूझन लगी, वाकी दशा निहारि ॥२॥
अरी सखी तू प्रात सों, नहिं भाषत मुख वैन ।
कियो न कछु सिंगार तन, दियो न काजर नैन ॥ ३

राग सिन्दूरा

येरी मैं तो सहज स्वभाव गई नन्दजू के, तहां देख्यो सुख और ॥आस्ताई॥ इकले श्याम नइसी धज सों ठाड़े भवन की पौर ॥ रतन सिंगार बहार हंसन की माथे केशर खौर ॥ नारायण सो छबि दृग छाई रही न काजर ठौर ॥४

वार्तिक

यह सुन के सखी आपस में कहने लगीं ॥ ५

राग परज

अब नंदलाल भवन में चलोरी वीर ॥ आस्ताई ॥
सांवरे कन्हाई बिन कल न परत घरी पल छिन मन न धरत है धीर. दृग अति अकुलावें नहिं पलक लगावें पुनि उतहिं को धावें परी इन पै भीर ॥ तन सुरत विसारी लगी चटपटी भारी नारायण हमारी को जानत है पीर ॥ ६ ॥

दोहा

जुरि मिलि के पुनि गई सब, नव गौरी वृजबाल ।
मिस उरहानो करि सुघर, निरखत मोहनलाल ॥७॥

सखी वचन, यशोदा प्रति

खम्माच काजिल्ला

हमारी पुकार सुनो नंदरानी ॥ आस्ताई ॥
तेरो छैल गैल नित रोके , नयौ भयौ दधि दानी ॥
और कुचाल करत जो हमसों , सो हम कहत लजानी ।
नारायण ताकूं तुम बरजौ , बोलत अटपटि बानी ॥८॥
अपनो गांव लेहु नंद रानी ॥

बड़े बाप की बेटी ताते, पूतही भले पठावत पानी।
सखा भीर लै पैठत घर में, आपु खाय तो सहिये।
मैं जब चली सामुहे पकरन, तव के गुन कहा कहिये।
भाजि गये दूरि देखत कतहूं, मैं घर पौढी आई।
हरे हरे वेनी गहि पाछे, बांधे पाटी लाई।
सुनि मैया याके गुन मोसों, इन मोहे लियो बुलाई।
दधि में परे सेंत की चींटी, मोपै सबई कढाई।
टहल करत या के घरकी मैं, यह पति संग मिलि सोई।
सूर वचन सुनि हंसी यशोदा, ग्वालि रही मुंह गोई।९

रेखता।

घर घूम घूम घनीसी चोरी चवाई की करतूत है।
वृज में जसोदा को लाड़िलो उपजोजु पूत सपूत है।
घुस जावे सूने घरों में जा दधि दूध माखन खानको।
ऊंचे ऊंचे सींकों को टोर के खावे खुवावै आन को।
कभू रोकि आवै हसैं कहूं तो चिड़ावे मूंको बनाय के।
ढिंग आयके झकझोर दे बहियां मरोरे धायके।
चोली कों छोर कें फार दे चमकीली चूरी जड़ाव की।
धरि फारै चूनर चांद की पांजेब उतारे पांव की।
देखत को छोटा सों खोटा है गुन याके जाने न मातरी।
हरिदास अवके अकेला पा दिखरा हैं याकी जातरी॥१०॥

अगर सखी बचन यशोदा प्रति

जोगिया आसाबारी

हमारो न्याव करो महतारी॥ आस्ताई॥
या वृज में प्रगटयो उत पाती, तेरो छैल विहारी।
विना बात हम सों नित अटके, ढीट बड़ो है भारी।
अचरा झटकि पटकि सिर गागरि, पुनि ठाड़ो दै गारी।
तुम वाको घरमें नहीं बरजती, कुल की रीति बिगारी।

नारायण कछु जान परत है, एक सलाय तिहारी ।११

अपर सखी बचन
यशोदा प्रति
कालिंगड़ा धीमाताल

वृज में कैसे बसेंरी माई ॥ आस्ताई ॥
जहां नित प्रति उतपात करत है, तेरो कुंवर कन्हाई।
भोरही मैं सोवत आंगन में, अचकही आय जगाई।
उठरी सखी तोहि द्वार पै, टेरत कोउ लुगाई।
मैं तो द्वार पै देखवे निकसी, को है कहां ते आई।
पीछे ते इन घर भीतर सों, सांकर तुरत लगाई।
मैं बाहर ये भवन मांहि मन, मानत धूम मचाई।
बासन फोरि तोरि सब छींके, दधि गोरस ढरकाई।
यह कौतुक सुनिके वृजवनिता, निरखन को सब धाई।
हंसि हंसि के बूझत मोसों, कहा लीला फैलाई।
भांति २ की बोली बोलत, जो जाके मन भाई।
मैं अपने मन कहुं नारायण, यह कहा कुमति कमाई।१२

यशोदा बचन
राग टोड़ी जौनपुरी

ग्वालिन झूठ उराहनो लाई ॥आस्ताई॥
कब तेरे घर गयो सांवरो, कब गोरस ढरकाई ॥
याही मिस मेरे मोहन को, तू अब देखन आई ॥
नारायण तेरे मनकी मैं, जान गई चतुराई ॥१३॥

सखी बचन यशोदा प्रति
राग बिलावल

जसुमति तेरी भली बनि आई ॥आस्ताई॥
पूत सपूत प्रगट भयो जाको, नित उठ करत कमाई ॥
भूषन चीर चुराय हमारे, मानत अधिक बड़ाई ॥

घर में लाय तोहि पहिरावत, भलो कुंवर सुखदाई ॥
घाट बाट नित मांगत डोले, निज कुल रीति मिटाई ॥
नारायण सोइ करे कौतुक, जो तैं पट्टी पढ़ाई ॥१४॥

यशोदा वचन सखी प्रति
राग टोड़ी जोनपुरी

ग्वालिन रूप के मद इतरावे ॥ आस्ताई ॥
तू अति तरुणी मेरो सुत बालक, नाहक दोष लगावे ॥
तुही नई भई जोवन वारी, नेक लाज नहिं आवे ॥
नारायण अब जा घर अपने, क्यों तू बात बनावे ॥१५

सखी वचन यशोदा प्रति
कालिंगड़ा

वृज रानी तैने भलो सुत जायो ॥आस्ताई॥
घर बाहर नित अटकत हमसों, करत जो जिय में भायो ।
मेरे भवन में आय अचानक, निज पट आप दुरायो ।
द्वार निकसि कहि याहि चोरटी, मेरो बसन चुरायो ।
पार परोसिन देख हंसे सब, सोमन अति सकुचायो ।
नारायण तुम ही रहो वृज में, हम बसिवो भर पायो । १६ ।

रेखता

सुनिये यशोदा रानी छोड़ यह वृज तिहारो ।
कहीं जाय के बसेंगी अति ही करें किनारो ॥
नित कहां तलक सहिये नुकसान तेरे सुत को ।
घर जाय के हमारे माखन चुरावे सारो ॥
तेरे ही पास बालक यह बन के आय बैठे ।
जब जाय घर सखिन के सुन्दर तरुण निहारो ॥
छींके पै हो कमोरी लठिया तें फोर डारे ।
दधि की मथनियां तोर के माखन सभी बिगारो ॥
नित करें हानि हमरी रंगीन याहि बरजो ।

ऐसो चपल ढीट है यशुदा जी सुत तिहारो ॥१७॥

यशोदा बचन सखी प्रति

खम्माच काजिला

मेरे सुत पीछे क्यों परी वृज नारियां ॥ आस्ताई ॥

कोउ तो नचावे कोउ चोर लै बनावै, नित झूंठही लगावै दोष देवे मिल गारियां ॥ दौरी दौरी आवौ नहिं नेक सकुचावौ, तुम रूप गरवीली बड़े गोप की कुमारियां ॥ कहां मेरो लाल कहां तुम नारायण, अचरज आवै बातें सुनि के तिहारियां ॥१८

सखी बचन

दोहा

नंदरानी तू धन्य है, धन्य तिहारो लाल ॥
हमहूं वृज में धन्य हैं, जो नित सहैं कुचाल ॥ १६

वार्तिक

भलो न्याव कियो ॥ २० ॥

नंद रानी को बचन लाल जी प्रति

राग खम्माच

मोहन तू इतनी कही मान ॥ आस्ताई ॥
बाहर मति उरझै काहू सों, मेरे जीवन प्रान ॥
ब्रज बनिता तेरे गुन मोसों, नित प्रति करत बखान ॥
मेरो कहौ तू सांच न मानै, सुनि लै अपने कान ॥
इन बातन सों निंदा उपजै, ठाकुरापन में हान ॥
नारायण सुत बड़े बाप के, तज दे ऐसी बान ॥२१

लाल जी बचन

मैया प्रति

झंझोटी तीन ताल

जननी तू इनकी मति मानै ॥ आस्ताई ॥
जा विधि तू होवे रिस मोपे, सो यह कौतुक ठानै ॥

धोखे सों मोहि निकट बोल कें, उर लगाय लियो याने ॥
जबही अचक आये पीछे तें, मुख चूमन कियो बाने ॥
खंजन दृग चंचल चपलासी, अजहुं कुटिल भौं ताने ॥२२

लावनी

मोरी पांच बरस की वायस छंद ना आवें।
तरुनी मृग नैनी नाहक दोष लगावें ॥ आस्ताई ॥
जब गोकुल गलियों में खेलन हम जावें।
जुर के आवें दस पांच नाच नचवावें ॥
चटकीली एक सों एक रूप गरबीली।
नित मोह खिजावत आय बड़ी मटकीली ॥
घर घर ले जाके देय दही अरु माखन।
पुनि तो ढिंग चोर बनाय लगीं यह भाषन ॥
इतनोही मानो सांच बड़ी तू भोरी।
इत जोबन जोर जे होंय देहु मोहि खोरी ॥
धर आपहीं मेरो हाथ छुवावैं छाती।
अंगियां फारैं निज हाथ बड़ी मद माती ॥
करकें मोसन बड़ी भ्रति बुला बैठारैं।
कहुं गालन गुलचा मार गले गर डारैं ॥
मोहि देखतही घर छांड बनही बन डोलैं।
मन मानीं करतीं करम हंसत दिल खोलैं ॥
कहां लौं कहते हरिदास बड़ी कहां नारी।
मैंई तो तेरो बाल मोह तू मारी ॥ २३ ॥

यशोदा बचन लाल जी प्रति

दोहा

लाल कुचाल न तजत तू, समझायौ बहु वार।
चोर कहावे आप को, है के राज कुमार ॥२४॥

लालजी वचन मैया प्रति

झंझोटी तीन ताला

मैया यह झूठही दोष लगावै ॥ आस्ताई ॥
बूझलै मेरे सखा संग के, जो तुहि सांच न आवै ॥
भवन रहूं तो तूही कहेगी , गौ चारन नहिं जावै ॥
जो जाऊं तो यह मग छैडे, फेर उराहनो लावै ॥
त्रिया चरित्र रचे ढिंग तेरे, तोर के हार दिखावै ॥
तू जननी मेरी अति भोरी , याके कहि पतिआवै ॥
कित गजराज कहा मृग छौना अनगढ़ मेल मिलावै ॥
नारायण मोहन मुख बातैं, सुनि जसुमति मुसुक्यावै ॥२५

यशोदा जी वचन सखी प्रति

राग मल्लार

देत उराहनो लाज न आई ॥ टेक ॥
मेरो लाल वृज भर में भोरो , नेक नहीं जानत चतुराई ॥
सुनि जसुमति के बचन हंसी सब, निज निज भवन चलीं हरषाई॥
नारायण लखि चरित श्याम के, वृम्हादिक की मति बौराई ॥२६

दोहा

नारायण जो प्रीति सों , यह लीला सुनि लेत ॥
ताको सुन्दर सांवरो , धाम आपनो देत ॥

इति श्री उरहन लीला सम्पूर्ण

अथ ऊखल बंधन यमुलार्जुन लीला

दोहा

एक समय उठि भोर हीं, कान्हा को पौढ़ाय।
जसुमति कर लै माथनी, मथन लगी दधि जाय॥१॥
चौंकि परे पलना परे, नन्दलाल खिसिआय।
भूक भूक रटि लायके, गही मथानी धाय॥२॥

लाल जी वचन

रेखता

पलना में भूखो प्यासो छाड़ि आई मात मोही।
दधि मांथवो भलो है मैया मोहु तें री तोही॥
हारों में कीक दै दै पुनि हिलक हिलक रोयो।
पर नेक ना मथानी छांड़ि मोरि ओर जोयो॥
गृह काज तोहि प्यारो वाही में बुद्धि तोरी।
मैं नहीं पूत तेरो तू नाहिं मात मोरी॥
खेलों मैं जा सखों में तो पास अब ना अइहौं।
हरिदास मोरे मन में चाहे जहां मैं जैहौं॥३॥

यशोदा बचन

वार्तिक

अरे प्यारे लाला भूक लागी हुई है, कछू खाय वाहिर जईयो, मैं तोहि सोवत छांडि आई रही॥४॥

पद

गोविंद दधि न बिलोवन देइ॥टेक॥
बार बार पांय परति जसोदा, कान्ह कलेऊ लेहु॥
बांधि केलि पट छुद्र घंटिका, मुदित नंद की रानी।
कंचन चीर हार उर मणिगण, वलय घोष मृदु वानी॥

एक एक होय देव दैत्य सब, कमठ मंद्राचल जानी ।
देखत देव लक्ष्मी कांपी, गहत गुपाल मथानी ॥
कृष्णचन्द्र वृजराज रमापति, भूतल भार उतारे ।
परमानंद दास को ठाकुर, वृजवसि जगत उधारे ॥ ५ ॥

पद

नंद जू के वारे कान्हा छांड़ि दे मथनीयां ।
बार बार कहे माता जसोमति रनियां ॥
नेकु रहो माखन देहों मेरे प्रान धनियां ।
आर जिन करौ बलि गई हौं त्यौं छनियां ॥
सुर नर मुनि जाको ध्यान धरैं जनियां ।
सूर श्याम देखि सबै भूली गोप धनियां ॥ ६ ॥

वार्तिक

नंदलाल जी खिसियाय के मट्टकियातें दधि माखन फेकवें लगे तब जसोदा क्रोध करि बोली ॥ ७ ॥

पद

मोहन काहे कही ना माने ॥ टेक ॥
देव पितर भोजन के काजे, मांग्यो माखन नंद बबाने ॥१॥
सोई लाल जुठार दियो सब, नेक न आन तिनहु की माने ॥२॥
आज भयो हरिदास तू है का, कोई नहीं तो मन की जाने ॥८॥

वार्तिक

या पीछे जसोमति रिसाय के लाल जी को मारवे धाई अरु वे भागि चले ॥ ६ ॥

दोहा

आगे सुंदर श्याम घन, पाछे यसुमति माय ।
दामिनि ज्यौं दौड़ी फिरे, हरि नाहिं पकड़यो जाय ॥१०॥
ब्रज वनितान बुलाय के, लीन्ह जसोमति साथ ।
पकरन को धाई फिरे, भाजत गोकुल नाथ ॥ १२ ॥

वार्तिक

भक्त वत्सल महाराज ने बहुत रिसानी अरु श्रमित देख आप खड़े हुई गये अरु पकराई दै दीन्ही तब सब बृज बाला उन्हें बांधवे लगीं ॥ १२ ॥

जसोदा बचन

दोहा।

अरे कान्ह तू अबहि लौं, तजत न अपनी चाल।
अब ऊखल सों बांधिके, करिहों तोहि बिहाल ॥१३॥

वार्तिक

जो रसरी मैया लाई सो छोटी पड़िगई और बृजवनिता जेती रसरी अपने २ घरते लाई सोहु छोटी ह्वै गई तब लालजी मुसकराय के कहिवे लगे ॥१४॥

पद

मैयारी रसरी जा छोटी ॥ टेक ॥
जुरमिल जावो घरन घर ढूंढो, रसरी लावो मोटी ॥
जे बृजबाला गुन की पुटरी, दीसत हैं अति खोटी ॥
जा दिन कोई तिन्हैं अस बांधै, फिरि हैं धरनी लोटी ॥
हरीदास इनहीने तो को, खूब पढाई पढोती ॥ १५

पद

जसुमति रिस करि रज्जु अकरषे ॥टेक॥
सुतही क्रोध देख माता के, मनही मन हरि हरषे।
उफनत छीर जननि करि दुचिती, यहि विधि भुजा छुड़ायो।
भाजन फोर दहिउ सब डारेऊ, माखन मुख लपटायो।
लै आई जेवरि अब बांधौ, मरम जानि न बंधावै।
आंगुर द्वै घट होत सबनि सों, पुनि पुनि और मंगावै।
नारद श्राप भये यमलार्जुन, इनको अवजू उधारो।
सूरदास प्रभु करत भक्त हित, जन्म जन्म तन धारो ।१६।

गोपी बचन

पद

जसोदा तेरो सुत हरि जोवे ॥टेक॥

कमल नयन हरि हिचकिन रोवे, बंधन छोरिन सोवे।
जो तेरो सुत खरो अचगरो, अपनी कोख को जायो।
कहा भयो जो घर को ढोटा, चोरी माखन खायो।
तुरत दोहनी दहेड़ जमायो, जावन पूज न पायो।
ता घर देव पितर काहे को, जा घर ऐसो जायो।
जाको नाम लेत भ्रम छूटे, कर्म फन्द सब काटे।
सो हरि प्रेम जेवरी बांधे, जननि साटि लये डांटे।
सूरदास प्रभु भक्त हेत तें, देह धरत ही आये।
दुखित जानि दोउ सुत कुवेर के, ताहित आपु बंधाये॥१७॥

पद

कहो तो माखन ल्याऊं घरतें ॥टेक॥

जा कारन तू छोरति नाहिन, लकुटि न डारति करतें॥
सुनरी महरि ऐसी न बूझिये, सकुच गयो सुख डरतें॥
मनहुं कमल दधि सुत समयोतिक, फूलत नाहिन सरतें॥
ऊखल लाय भुजा धरि बांधे, मोहनि मूरति बर तें॥
सूर श्याम लोचन जल वरसत, जनु मुक्ता हिम करतें॥

वार्तिक

अपर सखी आय बोली ॥१६॥

सखी बचन

पद

कबके बांधे ऊखल दाम ॥ टेक ॥

कमल नयन बाहर करि राखे, तू बैठी सुख धाम॥
हो निरदई दया कछु नाहीं, लागि रहे घर काम॥
देखि क्षुधा ते मुख कुम्हलानो, अति कोमल तनु श्याम॥

छोड़हुं वेगि बड़ी बिरिया भई, बीति गये युग याम ॥
तेरो त्रास निकट नहिं आवत, बोलि सकत नहीं राम ॥
जन कारन भुज आय बंधाई, वचन कियो रिषि नाम ॥
ताही तें यह प्रगट सूर प्रभु, दामोदर सो नाम ॥२०॥

पद

यशोदा तेरो भलो हियो है माई ॥टेक॥
कमल नयन माखन के कारन, बांधे ऊखल लाई ॥
जो सम्पदा देव मुनि दुर्लभ, सपनेहुं दे न दिखाई ॥
याही तें तू गर्भ भरी है, घर बैठे निधि पाई ॥
काहू को सुत रोवत सुनि के, दौरि लेत उर लाई ॥
अब काहे घरके लरका सों, करत इती जड़ताई ॥
बारम्बार सजल लोचन भरि, रोवत कुंवर कन्हाई ॥
कहा करों बलि जाउं छोरती, तेरी सोंह दिवाई ॥
जो सूरत जल थल में व्यापक, निगमन खोजत पाई ॥
सो यशुमति अपने आंगन में, देकर ताल नचाई ॥
सुर पालक अब असुर संहारक, त्रिभुवन जाइ डराई ॥
सूरदास प्रभु की यह लीला, निगम नेति नित गाई ॥२१॥

वार्तिक

यह हाल सुनके बलराम जी तहां आये ॥२२॥

पद

यह सुनके हलधर तहां आये ॥ टेक ॥
देखि श्याम ऊखल सों बांधे, तबहीं दोऊ लोचन भर आये ।
मैं बरजो कै बेर कन्हैया, भली करी दोऊ हाथ बंधाये ।
अजहूं छांड़हुगे लंगरायो, दोउ कर जोरि जननि पै आये ।
श्यामहि छोर मोहि वरु बांधो, निकसत सगुन भले नहिं पाये ।
मेरो प्राण जीवन धन कान्हा, तिनके भुज मोहि बंधे दिखाये ।
माता सों कहा करो ढिठाई, शेष रूप कहि नाम सुनाये ।

सूरदास तब कहति यशोदा, दोउ भैया तुम एक ह्वै आये ।२३

यशोदा वचन

वार्तिक

तुम्हारी दोउ जनों की एक सलाह है॥२४॥

पद

निरखि श्याम हलधर मुसक्याने ॥टेक॥
को बांधे को छोरे इनको, यह महिमा येही पै जाने।
उतपति प्रलय करतिहैं येई, शेष सहस मुख सुयश बखाने।
यमलार्जुन तोर उधारन कारन, करत आप मन माने।
असुर संवारन भक्तहि तारन, पावन पतित कहावत बाने।
सूरदास प्रभु भाव भक्ति के, अति मति यशुमति हाथ बिकाने २५

वार्तिक

जब वनिता ने फेर आयके छोरवे कही तब यशोदा बोली॥२६

पद

जाहु चलीं अपने अपने घर ॥टेक॥
तुमही सब मिल ढीट करायो, अब आईं बंधन छोरन वर॥
मोहि अपने बाबा की सौंहै, कान्हही अब न पतियाऊं॥
भवन जाहु अपने अपने सब, लागति हों मैं पाऊं॥
मोको जिन बरजो कोउ युवती, देखों हरि के ख्याल॥
सूर श्याम सों कहति यशोदा, बड़े नंद के लाल ॥२७॥

वार्तिक

वाही समय श्री भक्त वत्सल को नल कुवेर अरु मनिग्रीवा को शाप को स्मरण आयो ये दोई कुवेर के पुत्र धन में मदान्ध होइ नारद के शाप वस आंवले के पेड़ ह्वै गये रहे, अरु यमलार्जुन नाम से प्रख्यात यशोदा के आंगन में प्रगट भये रहे ॥२८॥

लालजी वचन

पद

हरि चितये यमलार्जुन तन ॥टेक॥

अवही आज इनहिं उद्धारो, येहँ मेरे निज जन ॥
इनके हेत भुजा बंधवाई, अब विलम्ब नहिं लाऊं ॥
परस करों तनु तरुहिं गिराऊं, मुनिवर शाप मिटाऊं ॥
ये सुकुमार वहुत दुख पायो, सनकादिक सुत चारों ॥
सूरदास प्रभु कहत मनहि मन, कर बंधन निरवारों ॥२६॥

पद

तबहीं श्याम एक बुद्धि उपाई ॥टेक॥

युवतीं गई घरनि सब अपने, गृह कारज जननी अटकाई।
आपु गयो यमलार्जुन तरुपर, परसत पात उठे फहराई।
दियो गिराय धरनि दोउ तरवर, द्वै कुबेर सुत प्रगटे आई।
द्वैकर जोरिकरत दोउ अस्तुति, चारि भुजा तिन प्रगट दिखाई।
सूर धन्य व्रजजन मिलियो हरि, धरनी की आपदा नशाई।३०।

वार्तिक

दोनों पेड़ में से दो सुन्दर युवा पुरुष निकसि के हाथ जोरि प्रभू के सनमुख खड़े होय बोले ।३१।

पद

धनि गोविंद धनि गोकुल आये ॥ टेक ॥

धनि धनि नन्द धन्य निशि वासर, धनि यसुमति जिन गोद खिलाये ॥ धनि वह बाल केलि जमुना तट, धनि वन सुरभी वृन्द चराये ॥ धनि वह समय धन्य वृजवासी, धनि धनि वेनु मधुर धुनि गाये ॥ धनि २ अनख अहिरनी धनि धनि, धनि माखन धनि मोहन खाये ॥ धन्य सूर ऊखल तरु गोविंद, हमहिं हेतु धनि भुजा बंधाये ॥ ३२ ॥

स्तुति यमुलार्जुन

पारब्रह्म परमेश्वर अवगति , भवन चतुर्दश नाथ हरी ।
जब जब भीर परी संतन पै , प्रगट होय प्रति पाल करी ॥ १ ॥
आदि अंत सब के तुम रक्षक , ब्रह्मादिक हैं अनुगामी ।
कृष्ण नमामि नमामि नमामी, दया सिंधु अंतरयामी ॥ २ ॥
जाको ध्यान धरत योगी जन , शेष जपत नित नाम नये ।
सो भव तारन दुष्ट निवारन , संतन कारन प्रगट भये ॥ ३ ॥
जिनको नाम सुनत यम डरपत, थर हर कांपत काल हियो ।
तिनको पकरि नंद की रानी , ऊखल सों लै बांधि दियो ॥४॥
जै दुख मोचन पंकज लोचन, उपमा जाय न कहत बनी ।
जै सुख सागर सब गुन आगर, शोभा अंग अनंग घनी ॥५॥
नारद को हम अति गुन मानै , शाप नहीं बरदान दियो ।
जा कारन ते प्रभू आपनो, दर्शन दियो सनाथ कियो ॥६॥
जो हरि हूके ध्यान न आवत , अपर अपर है केहि लखो ।
सो हरि प्रगट नंद के आंगन , ऊखल संग बंधे देखो ॥ ७ ॥
जिनकी पद रज को सुर तरसैं , अगम अगोचर दनुजारी ।
त्राहि त्राहि प्रणतारति भंजन, जन मन रंजन सुखकारी ॥८॥
तुम्हरी माया जीव भुलानो , केहि बिधि नाथ तुम्हे जाने ।
तुमही कृपा करौ जब स्वामी , तबहीं तुम को पहिचाने ॥९॥
हे मुकुन्द मधुसूदन श्रीपति , कृपा निवास कृपा कीजे ।
इन चरनन में सदा रहे मन , यह बरदान हमें दीजे ॥१०॥
जै केशव जै अधम उधारन , दयासिंधु हरि नित्त मगन ।
जै सुंदर बृजराज शशी मुख, सदा बसो मम हिये गगन ॥११॥
रसना नित तुम्हरे गुन गावै , श्रवन कथा सुनि मोद भरे ।
कर नित करैं तुम्हारी सेवा , नैन संत जन दरस करैं ॥११॥
नेम धर्म ब्रत जप तप संय्यम , योग यज्ञ आचार करैं ।
नारायन बिन भक्ति न रीझौ , वेद संत सब साख भरैं ॥१२॥

वार्तिक

श्याम सुन्दर की स्तुति करि नल कूवर अरु मनिग्रीवा अपने लोक को सिधार ता पीछे वृक्षों के गिरन को शब्द सुन नन्दादिक तहां दौरि आये ॥ ३४ ॥

पद

दोउ पेड़ धरनि गिरे महराय ॥ टेक ॥
जर सहित अर्राय के आहत शब्द सुनाय ॥
भये चकत लोग वृज के सकुच रहे डरवाय ॥
कोउ रहे आकाश देखत कोउ रहे सिर नाय ॥
घरी लौं तक गये जहं तहं गति विसराय ॥
निरखि यशुमति अजिर देख जहां बंधे सु कन्हाय ॥
वृक्ष दोऊ धरनिपरे देखे महरि कियो पुकार ॥
अवहि आंगन छाडि आई चप्यो तरु के डार ॥
मैं अभागिन बांधि राखे नन्द प्राण अधार ॥
सारे सुनि नन्द द्वार आये विकल गोपी ग्वाल ॥
देखि तरू मन अति डराने महिर के हैं भाग ॥
निरखि युवति अंग हरिके चोट जनि कहुं लागि ॥
कबहुं बांधति कबहुं मारति महिर बड़ी अभागि ॥
नयन जल भरि ढार यशुमति सुतहि कंठ दोऊ आय ॥
मैं मरूं तुम कुशल रहो दोउ श्याम हलधर भाय ॥
आय जो घर नंद देखे तरु गिरे दोऊ भारि ॥
बांधि राखत सुतहि मेरे देत महरि ही गारि ॥
तात हित बस श्याम दौरे महरि लियो अंकवार ॥
कैसे उवरे कृष्ण तरु ते सूर लेइ बलिहार ॥ ३५

वार्तिक

तब सब ने मिलके लालजी को बन्धन छोड़ के अंक में लायो अरु हाल पूछवे लगे तब श्याम सुन्दर बोले ॥३६॥

लालजी वचन

रेखता।

देखोरे लोगो देखो हुइ पेड़ ने बड़े,
आंधी सों हलके हलके परि आप सो पड़े।
दबि जातो इनमें मैंहू बड़े भाग से बचौं,
होवे है सांच वाही बिधना ने जो रचौं।
मैया तु बांध मोको भलि भौन में सिधारी,
मम दीन दशा देख केहूं होती तू दुखारी।
अब तो हुं मोको छोड़ दे तब पांव मैं परों,
हरिदास मेरी माता तू कैहै सो करों।३६।

बार्तिक

यह बचन सुनि माता ने गले लगाय लीन्हों, अरु सब लोग माया के बश होय श्रीकृष्णचंद्र की बलैयां लेवे लगे।३७

कबित्त

गायो ना गुपाल मन लायो ना रसाल।
लीला सुनी ना सुबोधनी न साधु संग पायो है॥
सेयो ना सवाद करि घरी आध घरी पुनि।
कबहूंना कृष्ण नाम रसना कढ़ायो है॥
वल्लभ श्री बिट्ठलेश प्रभु के शरन आय।
दीन ह्वै के मूढ़ छिन शीस न नवायो है॥
रसिक कहाय अब लाजहू न आवै तोहि।
मानुष्य शरीर धरि कहा धौं कमायो है॥३८॥

इति श्री ऊखल बंधन लीला सम्पूर्ण

श्रीगणेशायनमः

रास रत्नावली

दूसरा भाग बन लीला

वत्सासुर वध १

दोहा

गोकुल में नित नये नये, देखि असुर उतपात।
गांव छोड़वे को मतो, कियो सबै मिल तात ॥१॥
सघन लता वृंदा विपिन, बसे तहां सब जाय।
नंद गोप उपनंद सब, मन में अति हरषाय ॥२

वार्तिक

पांच वर्ष की अवस्था के श्याम और बलिराम बन में बछरा चरायवे को जान लगे तहां कंस ने वत्सासुर को पठायो वह बछरा को रूप होय गयो ॥३॥

दोहा

कपट रूप बछरा लग्यो, चरन सबन के साथ।
ताको जान्यो तुरहीं, मन में श्री बृज नाथ ॥४॥

पद

चले बन बछरु चरावन ग्वाल ॥टेक॥
वृंदाबन सब छांडि के, ले गये जहां बन ताल।
परम सुन्दर भूमि देखत, हरष मनहि बढाय।
आपुन लागे तहां खेलन, वच्छ दिये बगराय।
जानिके हलधर आये तहं, बाल बछरा पास।
रोहणी नंदहिं देखत, हरष भये हुलास।
ताल रस बलराम चाख्यो, नंद नंदन के भाय।

कहेउ बछरा हांक ल्यावहुं, चलहु जहां कन्हाय।
ताल रूख तरु दनुज आयो, धरे बछरा भेष।
फिरत ढूंढ़त श्याम को, अति प्रबल बल को देख।
सबै बछरू घेरि लाये, वह न घेरेउ जाय।
दाऊ कहेऊ बालकनि, टेरेउ वृषभसुर थराय।
कहेउ मन यह अवहि मारो, उठे बलहिं सम्हार।
टेरि लये सब ग्वाल बालक, आप गये प्रचार।
आगे ह्वै इतकों बिडारेउ, पूंछ हाथ लगाय।
पकरि के भुज सों फिरायो, ताल के तर आय।
असुर ल तरुसों पछारेउ, गिरेउ तरु भहराय।
ताल सों तरु लाग्यो, उठ्यो बन घहराय।
बच्छासुर को मारि हलधर, चले सबन लिवाय।
सूर प्रभु को बीर जाकी, तिहूं भुवन बड़ाय ॥५॥

वार्तिक

वाको मारि सब ग्वाल, एकत्र कर घर को चले ॥६॥

इति

अथ बकासुर बधन २

दोहा

जौन असुर जावे वहीं, हने श्याम बलराम।
यह सुन सुन थर थर कंपे, कंस कहे विधि बाम ।१।

वार्तिक

वत्सासुर को भैया वकासुर बोल्यो महाराज मैं अभी

जायके जैसे मछरी को बगुला उठाय लेय है तैसे दोऊ बालकों को मारिके अपने भैया वत्सासुर को बदलो लेउंगो या कहि बन में जहां श्याम अरु बलिराम सखों के संग धेनुचरायरहे तहां पहुंच्यो ॥२॥

पद सारंग

बन बन फिरत चरावत धेनु ॥ टेक ॥

श्याम हलधर संग संग, बहु संग बालक सेन।
तृषित भई सब जानि मोहन, सखिन टेरत बेन।
बोलि ल्यावहु सुरभि गन सब, चलें यमुन जल देन।
सुनतहीं सब हांकि ल्याये, गाय करी एक ठेन।
हेरि देदे ग्वाल बालक, कियो यमुन तट गेन।
बकासुर रचि रूप माया, रहेउ छल करि आय।
चोंच येक पुहमी लगाई, एक आकाश समाय।
आंगे बालक जात हैं, ते पाछे आये धाय।
श्याम सों वे कहन लागे, आगे येक बलाय।
नितहिं आवत सुरभि लीन्हें, ग्वाल गौ सुत संग।
कबहुं नहिं एहि भांति देख्यो, आजु कैसो रंग।
मनहि मन तब कृष्ण कहेउ, यह बकासुर जो विहंग।
चोंच चीरि विडारि डारों, पलक में करो भंग।
निदरि चले गोपाल आगे, बकासुर के पास।
सखा सब मिल कहन लागे, तुम न जियकी आस।
अजहुं नहीं डारत मोहन, बधे कितने गांस।
तब कहउ हरि चलो सब मिलि, मारि करहिं विनाश।
चले सब मिल जाय देख्यो, अगम तनु विकरार।
इत धरनि उत व्योम के बिच, गुहा के आकार।
पेट बदन बिदारि डारो, अति भये बिस्तार।
मरत असुर चिकार मारी, मारेउ नंद कुमार।

सुनत धुनि सब ग्वाल डरपे , अब न उबरे श्याम ।
हमहिं बरजत गये देखो , कियो ऐसे काम ।
देखि ग्वालनि बिकलताबन , कहि उठे बलराम ।
बकासुर को बदन फारेउ , अबहिं आवत श्याम ।
सखा तब हरि टेरि लीन्हें , सबै आवहु धाय ।
चोंच फारि बका संघारेउ , तुमहुं करत सहाय ।
निकट आये गोप बालक , देखि हरि सुख पाय ।
सूर प्रभु के चरित अगणित, नेति निगमनि गाय ।३

बार्तिक

यह आश्चर्य देख सखा कहिवे लगे, एतो वड़ो वगुला कहूं नांय देख्यो ॥४॥

पद

वृज में यह को उपज्यौ भैया ॥ टेक ॥
संग सखा सब कहत परस्पर, इनके गुण अगमैया ।
जब तें वृज अवतार धारेउ, इनको नहीं घात करैया ।
कितक बात यह वका विदारेउ, धनि यशुमति जिन जैय्या ।
तृणावर्त पूतना पछारी , तब अति रहे नन्हैया ।
सूरदास प्रभु की यह लीला , हम तक जिय पछतैया ।

पद

बका बिदारि चले वृज को हरि ॥टेक॥
सखा संग आनन्द करत सब, अंग अंग काम धातु चित्रकरि ।
बनमाला पहिरावत श्यामहि , वार बार अंकवारि धरत भरि ।
आपुस मांझ परस्पर भेंटत , और जात बलिहारी ।
सूरदास प्रभु तुम चिरजीवो , वृज जन के सुखकारी ।
ग्वाल धरत भरि कंस निपातक , गोकुल करिये उधारि ।

पद

संध्या समय गोपाल गोधन , संग वृज बन ते बनि आवत ।

गुंजा उरवन माल मुकुट सिर, बेनु रसाल बजावत ॥
कोटि किरनि मनि मुख परकाशित, उड़पति कोटि लजावत ।
गोप सखा सब बदन निहारत, उर आनन्द न समात ।
चंदन खोरि कांछनी काछे, देखत ही मन भावत ।
सूर श्याम नागर नारिन को, बासर बिरह नसावत ।७।

वार्तिक

सखों ने जसोदा पै आय के सब वृतांत सुनायो और मैया अधिक पूछवे लगीं तब बोले ॥८॥

पद

वृज बालक सब जाय तुरतहीं, महिर महिर के पांय परे ।
कैसे पूत जन्यो जग माहीं, धन्य कोंख जेहि श्याम धरे ।
गाय लिवाय गये वृंदावन, चरन चली यमुना तट हेरे ।
असुर एक खग रूप धरि बैठ्यो, तीर आय मुख धेरे ।
चोंच एक पुहुमी करि राखी, रहेउ तो गगन लगाय ।
हम बरजत पहिले हरि धायो, वदन चीर पल माहिं गिराय ।
सुनत नंद यशुमति चकृत चित, सुनत चकृत गोकुल नरनार ।
सूरदास प्रभु मन हर लीन्हों, तब जननी भरि लई अंकवार ।९।

जसोदा बचन लालजी प्रति

पद

तुम कत गाय चरावन जात ॥ टेक ॥
पिता तुम्हारो नंद महरसौ, हौं जसुमति सी मात ।
खेलत रहो आपने घर में, माखन दधि भावे सो खात ।
अमृत बचन कहो मुख अपने, कहुं आवत है युवती इतरात ।
सूर श्याम मेरे नैनन आगे, खेलत रहहु सदा तुम तात ।१०।

बार्तिक

यह सुन लालजी बोले ।११।

पद

मैया हौं न चरैहों गाय ॥ टेक ॥

सबरे ग्वाल खिजावत मोकों, मेरे पांय पिरात।
जो न पत्याय पूंछ बलरामहिं, अपनी सौंह दिवाय।
यह सुन माय यशोदा ग्वालन, गारी देत रिसाय।
मैं पठवत अपने लरका कों, आवे मन बहराय।
सूर श्याम मेरो अति बालक, मारत ताहि रिंगाय।१२।

वार्तिक

यह कहि लालजी को गले सों लगाय लीन्हों अरु बलै-या लेवे लगी ॥१३॥

इति
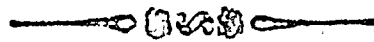
अथ प्रथम मिलन लीला ३

दोहा

असुरन के उतपात सुनि, गोपिन केर उरान।
लखि सुनि माता सुतन को, देत न बाहर जान ॥१॥

॥वार्तिक यशोदा बचन॥

भैया घरई में खेलऊ करो तुमारे बाहर गयेते नित नये उतपात होवे हैं ॥२॥

वार्तिक

यह सुन लालजी बोले ॥३॥

पद

दे मैया भंवरा चकडोरी ॥टेक॥

जाय लेहु आरे पर राख्यो, कालिह मोल लै राखी कोरी।

ले आये हंसि श्याम तुरतहीं, देखि रहे रंगरंग वहु ठौरी।
मइया बिना और को ल्यावे, बार बार हरि करत निहोरी।
बोलि लिये सब सखा संग के, खेलन कान्ह नंदकी पौरी।
तैसेहि हरि तैसई ब्रज बालक, कर भौंरा चकरिन की जोरी।
देखति जननि जशोदा यह सुख, बिहंसति बार बार मुख मोरी।
सूरदास प्रभु हंसि हंसि खेलत, बृज वनिता डारति तृण तोरी।४

पद

खेलत हरि निकसे बृज खोरि ॥टेक॥
कटि कछिनी पीताम्बर ओढ़ें, हांथ लिये भंवरा चकडोरि ॥
मोर मुकुट कुंडल श्रवननि वर, दसन दमक दामिनि छवि थोरि ॥
गये श्याम रवि तनयाके तट, अंग लसत चंदन की खोरि॥
औचक ही देखी तहँ राधा, नयन विशाल भाल दीये रोरि॥
नील वसन फरिया कटि पहिरे, बेनी पीठि रुरति झकझोरि॥
संग लरकनी चलीं इत आवति, दिन थोरी अति छवि तन गोरि
सूर श्याम देखतहीं रीझें, नयननि मिलि सिर परी ठगोरि ॥५

लाल जी बचन

रेखता

अबहीं में तोहि देखी तू कौन है नवेली ॥
जमुना अकेली आइ कोई संग ना सहेली ॥
लघु वैस तोरी भोरी बड़ गोप की कुमारी ॥
घन कुंज में चमंके जसु दामिनी उज्यारी ॥
सब भांत सों अनोखी देखी न अबलो ऐसी ॥
मुँहि देख क्यों लजावे चपला सी चमके कैसी ॥
मन मोर लुभा लीन्हों तूने जो नैन सैनो ॥
अब काहु संग तो बिन राखों न लेनों देनो ॥
नित याहि ठौर खेलन को आयबू करौ ॥
हरिदास हमहू आवेंगे करि हैं मन हरौ ॥६॥

पद

बूझत श्याम कौन तू गोरी॥
कहां रहति काकी है बेटी, देखी नहीं कहू बृज खोरी।
काहे को हम बृज तन आवत, खेलति रहति आपनी पोरी।
सुनति रहति श्रवननि नंद ढोटा, करत रहत माखन दधि चोरी।
तुमरो कहा चोरि हम लैहैं, खेलनि चलो संग मिलि जोरी।
सूरदास प्रभु रसिक शिरोमनि, बातनि भुरे राधिका भोरी॥७

प्रिया जी वचन

रेखता।

कीरत है मात मोरी बृषभान तात कहिये॥
हम लाड़ली दुहू के बाहर न जान पैये।
सुनियत है नंद ढोठो खोटो बड़ो कुचाली।
घर घुस के खावै माखन संग लेय गोप ग्वाली।
अब देखि रूप तुमरो सब बात झूटी मानो।
यह भेष देखे नटवर अब मोर मन लुभानो।
चित चाहे संग खेलन डोलन को सघन बन में।
नित आय याहि थल में बिहरें आनन्द मन में।
विधना भली बनायी जा हमरी तुमरी जोरी।
हरिदास आस पूजै संग डोलैं बृज की खोरी॥८॥

॥पद॥

प्रथम सनेह दुहुन मन मानो॥ टेक॥
नयन नयन बातें सब कीनी, गुप्त प्रीत शिशुता प्रगटानी॥
खेलन कबहुं हमारे आवहु, नंद सदन बृज गांव॥
द्वार आय टेरि मोहि लीजो, कान्हा है मो नाम।
जो कहिये घर दूरी तुम्हारो, बोलत सुनिये टेर॥
तुमहिं सोंह बृषभान बबा की, प्रात सांझ येक फेर।
सूधे निपट देखियत तुम को, ताते करियतु साथ॥

सूर श्याम नागर उत नागरि, राधा हरि दोऊ मिलि गाथ ॥९

वार्तिक

या प्रकार परस्पर मिलन होने उपरांत राधिका हू काहू बहाने से नित्य लालजी के पास खेलवे आवन लागी ॥१०॥

पद

नयो गेह नयो नेह नयो रस, नवल कुंवर वृषभान किशोरी ॥टेक॥
नयो पीतांबर नइ नइ चूनरी, नई नई बूंदन भींजत गोरी।
नये कुंज अति पुंज नये द्रुम, शुभग यमुन जल पवन हिलोरी।
सूर दास प्रभु नव रस बिलसत, नवल राधिका यौवन भोरी ॥११

पद

नवल किशोर नवल नागरिया ॥ टेक ॥
अपनी भुजा श्याम भुज ऊपर, श्याम भुजा अपने उर धरिया।
क्रीड़ा करत तमाल तरुण तर, श्यामा श्याम उमगि रस भरिया।
मिलि लपटाय रहे उर उर ज्यों, मरकत मणि कंचन माणि जरिया।
उपमा काहि देहुं की लायक, मन मथ कोटि बारने करिया।
सूर दास बलि बलि जोरी पर, नंद कुंवर वृषभान कुंवरिया ॥१२

आरती

आरति जुगल किशोर की कीजै, तन मन प्राण निछावरि कीजै।
गौर श्याम मुख निरखत नीरा, हरिको रूप देखि नैन भरि लीजै।
कोटि बदन जाको रवि शशि शोभा, ताहि देखि मेरो मन लोभा।
मोर मुकुट मुख मुरली सोहे, नटवर कला देखि मन मोहे।
फूलन की सेज फुलन बन माला, रतन सिंघासन बैठे नंदलाला।
ओढ़े नील पीत पट सारी, कुंज विहारि निकुंज बिहारी।
नवल कुंज में दोनो राजत, ललितादिक सब आरति साजत।
श्री पुरुषोतम गिरिवर धारी, आरति करति सकल वृजनारी।
नंद नंदन वृषभान किशोरी, परमानंद स्वामी अविचल जोरी ॥१३

इति

अथ गो दोहन लीला

रेखता राग देश

जमुन के जहं पुलिन पावन, मिले तहं दोऊ मन भावन।
तज्यो गौ लोक को जब ते, मिले हैं आय तहां तब ते।
रहे ना एक दूजे बिन, तजे जिमि मीन ना जल छिन।
पुरानी प्रीत अति बाढ़ी, दिनो दिन होत है गाढ़ी।
नहीं कुल कान मन भावे, दरश बिन जीव अकुलावे।
कबहुं श्री कृष्ण उठि धावे, कबहुं श्री राधिका आवे।
महरि कीरत लखे निश दिन, जुगल लीला मगन मन मन।
करै सब सों वही बरनन, पड़्यो हरिदास हूं चरनन ।१।

दोहा

येक समय श्री लाड़ली, मिलन श्याम मन कीन्ह।
गाय दुहावन मिस गई, जसुधा को घर चीन्ह ।।२।।
लेके कर में दोहनी, नंद पौरि पै जाय।
बाहर ठाड़ी द्वार पै, दरसन को अकुलाय ।।३।।

पद

उठी प्रातहीं राधिका दोहनी कर लाई ।।टेक।।
महरि सुता सों तब कहेउ, कहां चलीं अतुराई ।।
खरिक दुहावन जात हों, तुम्हरी सेवकाई ।।
तुम ठकुराइनि घर रहो, मोहिं चेरी पाई ।।
रीती देखी दोहनी, कत खीझत धाई ।।
काल्हि गई अबसेर के, व्हां उठे रिसाई ।।
गाय गई सब प्याय के, प्रातहिं नाहिं आई ।।
ता कारण मैं जाति हों, अति करन चँडाई ।।
यह कहि जननी सों, चली वृज को समुहाई ।।

सूर श्याम गृह द्वारहीं, गो करत दुहाई ।।४।।

वार्तिक

या प्रकार माता को भुलवा देके राधा चलीं ।५।

पद

सुता महर वृषभान की, नंद सदनहिं आई ।
गृह द्वारहीं अजिर में, गऊ दुहत कन्हाई ।
श्याम चितै मुख राधिका, मन हर्ष बढ़ाई ।
राधा हरि मुख देखिके, तन सुरति भुलाई ।।
महरि देखि कीरति सुता, तेहि लियो बुलाई ।।
दम्पति को सुख देखि के, सूरज बलि जाई ।।६।।

वार्तिक

यशोदा बोली प्यारी तनक हमारो दधि बिलोय दे ।।७।।

पद

आजु राधिका भोरहीं यशुमति के आई ।।टेक।।
महिर मुदित हंसि यों कहेउ मथिभान दुहाई ।।
आयसु लै ढाड़ी भई कर नेति सुहाई ।।
रीतो माठ बिलोवही चित जहां कन्हाई ।।
उन के मन की कहा कहों ज्यों दृष्टि लगाई ।।
लैया नोइ वृषभ सों गैया बिसराई ।।
नैननि में यशुमति लखी दुहु की चतुराई ।।
सूर दास दम्पति कथा कापै कहि जाई ।।८।।

वार्तिक

यशोदा मथानी लै राधिका को दधि बिलोयवो सिखायवे लगी ।।९।।

पद

महरि कहतिरी लाड़ली को तोहि मथन सिखायो ।।
कहुं मथनी कहुं माठ है चित कहां लगायो ।।

क्यों मेरे घर आयके तें सब बिसरायो ॥
मथन नहीं मोहि आवहीं तुम सोय दिवायो ॥
तिहि कारण में आय के तुव बोल रखायो ॥
तब नंद घरनी मथि देहेउ यहि भांति बतायो ॥
हंसि बोली तब राधिका कहेउ अब मोहि आयो ॥
सूर निरख मुख श्याम को तहां ध्यान लगायो ॥

वार्तिक

श्री राधा बोली अब मैं दधि बिलोयबो जान गई या कहि भांवते भांवते श्री कृष्ण को घूर घूर देखिवे लगी ताको देख श्री कृष्ण हू गाय दुहवो भूल गये ॥११॥

पद

दुहत श्याम गैया बिसराई ॥ टेक ॥
नैया लै पद बांधि वृषभ के दुहनी मांगत कुंवर कन्हाई ॥
ग्वाल येक दुहनी लै दीनी दुहो श्याम अब करो चँड़ाई ॥
हंसत परस्पर तारी दै दै आजु कहां तुम रहे लुभाई ॥
कहत सखा हरि सुनत नहीं सो प्यारी सों रहे चित अरुझाई ॥
सूर श्याम राधा तन चितवत बड़े चतुर की गई चतुराई ॥१२

वार्तिक

दुहुन की यह दशा देखि जसोदा बोली ॥१३॥

पद

राधा ढंग हैरी तेरे ॥टेक॥
कैसे हाल मथत दधि कीन्हे, हरि मनो लिखे चितेरे ॥
तेरो मुख देखत शशि लाजै, और कहो क्यों बाचै ॥
नयना तोरे जलज जीत है, खंजन ते अति नाचै ॥
चपला ते अति चमकति प्यारी, कहा करेगी श्यामहि ॥
सुनहु सूर ऐसेहि दिन खोवति काज नहीं तेरे धामहि ॥१४॥

वार्तिक

अरी अब अपने भवन को जावे ॥१५॥

पद

मेरो कहेउ नाहिं सुनति ॥टेक॥

तबही ते एक टक रहि है कहा मन धौं गुनति ॥
अबही ते तू करति ये ढंग तोहि है अब हौन ॥
श्याम को तू ऐसे ठगि लियो कछु न जानै जौन ॥
सुता है वृषभान की री बड़ो उनको नाउ ॥
सूर प्रभु नंद सुवन निरखत जननी कहति सुभाउ ॥१६

पद

प्रगट प्रीति ना रही छिपाई ॥टेक॥

परी दृष्टि वृषभान सुताकी, दोउ अरुझे सो निवारिन जाई।
बछरा छोरि खरिक को कीन्हो, आपु कान्ह तन सुधि बिसराई।
नोवत वृषभ निकस गइया गई, हंसत सखा कहा दुहत कन्हाई।
चारेउ नयन भये येक ठाहर, मन हीं मन दुहुं रुचि उपजाई।
सूर दास स्वामी रति नागर नागरि देखि गई नगराई ॥१७॥

जसोदा बचन

पद

चितैवो छांड़ि देरी राधा ॥टेक॥

हिल मिल खेलि श्याम सुन्दर सों, करति काम को बाधा ॥
की बैठी रहि भवन आपने, ह्यां काहे को आवै ॥
मृग नैयनी हरि को मन मोहित, जब तू देखि दुहावै ॥
कबहुंक कर सों गिरत दोहनी, कबहूं बिसरत नोई ॥
कबहूं वृषभ दुहुत है मोहन, ना जानो का होई ॥
कौन मंत्र जानति तू प्यारी, पढ़ि डारति हरि गात ॥
सूर श्याम को धेनु दुहन दे, कहति यशोदा मात ॥१८

राधिका बचन

पद

बार बार कहै जिनि ह्यां आवै ॥टेक॥
मैं कहा करों सुतहिं नहिं बरजति, घर तें मोहि बुलावै ॥
मोसों कहत तोहि बिनु देखे, रहत न मेरो प्राण ॥
छोई लगत मोको सुनि बानी, महरि तुम्हारी आन ॥
मुह पावती तबहि लो आवति, औरे लावति मोही ॥
सूर समझि यसुमति उर लाई, हंसति कहति मैं तोही ॥१६॥

जसोदा बचन

पद

हंसत कहेउ मैं तोसों प्यारी ॥टेक॥
मन में कछू बिलगु जिनि जानै, मैं तेरी महतारी ॥
बहुते द्योस आज तू आई, राधे मेरे धाम ॥
महरि बड़ी मैं सुघर सुनी है, कछु सिखवो गृह काम ॥
मैया जब मोहि टहल कहति कछु, खीजत बाबा वृषभान ॥
सूर महरि सों कहति राधिका, मैं तो अतिहि अजान ॥२१

वार्तिक

यह बचन कह राधिका घर को जायवे हेत बाहर निकसी तब श्याम सुन्दर अधीर होय बोले ॥२१॥

पद

दूध दोहनी लेरी मैया ॥ टेक ॥
दाऊ टेरत सुनि मैं आऊं, तब लों करि विधि वैया ॥
मुरली मुकुट पीतांवर दे मोहि, लै आई महतारी ॥
मुकुट धरेऊ सिर कटि पीतांवर, मुरली कर लियो धारी ॥
राधा राधा कहि मुरली में, खरिकहिं लई बुलाई ॥
सूर दास प्रभु चतुर शिरोमणि, ऐसी बुद्धि उपजाई ॥

वार्तिक

श्याम सुन्दर हू खरिका में पहुंचे अरु इतने में राधिका हू

वाही ठौर गई, परस्पर चौ नजरे होने उपरांत राधिका वाही आनन्द में मग्न होय गई तब सखी बोली ॥२३

पद

हरि से धेनु दुहावति प्यारी ॥टेक॥
करत मनोरथ पूरन मन वृषभान महर की वारी ।
दूध धार मुख पर छवि लागत सो उपमा अति भारी ।
मानो चंद कलंकहि धावत जहं तहं बूंद सुधारी ।
हाव भाव रस मगन है दोऊ छवि निरखति ललितारी ।
गो दोहन सुख करत सूर प्रभु तीनहु भवन कहारी ॥२४॥

दोहा

एक सखी निकसी उतै, तिन देखी मग माहि ।
निकट जाय बूझन लगी, बिरहन की गहि बाहि ॥२५

पद

सखी तू कैसी अचेत परी ॥टेक॥
चीर सम्हार निहार बावरी, टूट रही दुलरी ।
जा बिरिया तू गई नंद घर, जाने वो कैसी घरी ।
नारायन मग में कछु डरपी, यही बात सगरी ।२६ ।

बार्तिक

कछुक चेत में आय राधिका बोली ॥२७॥

पद

नैनोरे चित चोर बतावो ॥टेक॥
तुमहीं रहत भवन रखवारे वाके बीर कहावो ॥
तिहारे बीच गयो मन मेरो चाहे जितो सो खावो ॥
घर के भेदी बैठि द्वार पै दिन में घर लुटवावो ॥
अब क्यों रोवत हो दईमारे कहुं तो थांग लगावो ॥
नारायण तोहि वस्तु न चहिये लैने हार दिखावो ॥२८॥

वार्तिक

या उपरांत मोहन प्यारे को छोड़ि घरकी ओर सिधारी श्री कृष्ण हू बन को चले ॥२९॥

पद

सिर दोहनी चली लै प्यारी ॥टेक॥

फिरि चितवति हरि सों निरखि मुख, मोहन मोहनि डारी।
व्याकुल भई गई सखियनि लो, वृज को चले कन्हाई।
और अहीर सब कहां तुम्हारे, हरि सों धेनु दुहाई।
यह सुनके चकित भई प्यारी, धरनि परी मुरझाई।
सूर दास प्रभु तब सखियन उर, धरि करि कुंवरि उठाई।३०।

वार्तिक

पुनः बार बार बिरहनि सों सखियां पूंछवे लागीं।
तब राधिका बोली ॥ ३१ ॥

पद

मैं श्याम दिवानी मेरा दरद न जाने कोय॥
सूली ऊपर सेज पिया की किस विधि मिलना होय॥
घायल की गती घायल जाने जिस तन लागी होय॥
मीरा के प्रभु गिर धर नागर वैद समलिया होय॥

कवित्त

कोऊ कहो कुलटा कुलीन अकुलीन कोऊ, कोऊ कहो रंकन कलंकन कुनारी हू॥ कैसो देवलोक परलोक तिरलोक मैं तो, लीनो अलोक लोक लोकन तें न्यारी हू॥ तन जावो धन जावो देव गुरू जन जावो, जीव क्यों न जावो नेक टरत ना टारी हू॥ वृंदावन वारी गिरधारी के मुकुट वारी, पीतपट वारी वाकी मूरत पै वारी हू॥३२॥

कवित्त

मोर पंखा मुरली बनमाल, लगी हिये में हियरा उमग्योरी॥

ता दिन तें निज बैरन को, मैं बोल कुबोल सभी जु सह्योरी ॥ अबतो रसखान सो नेह लग्यो, कोऊ एक कहो कोउ लाख कहोरी ॥ और ते रंग रहो न रहो इक रंग रंगीले ते रंग रहोरी ॥३४॥

वार्तिक

ऐसी ऐसी विरह भरी वार्ता कहि अधिक अचेत होय गईं, तब सखियां घर को लै चलीं ॥३५॥

पद

सखियनि मिलि राधा घर ल्याई ॥टेक॥
देखहु महरि सुता अपनी को, कहुं एहि कारे खाई ॥
हम आगे आवति यह पाछे, धरनि परी भहराई ॥
शिर तें गई दोहनी धरिके, आपु रही मुरझाई ॥
श्याम भुवंग डसेउ हम देखत, लावहु गुनी बुलाई ॥
रोवत जननि कंठ लपटानी, सूर श्याम गुन राई ॥

वार्तिक

कीर्ति माता यह हाल देख विलाप कर कहिवे लगी ॥२७

लावनी

कैसी करूं कहां जाऊं कहूं अब, काकों जाय सुनाईरी ॥
मोरी प्यारी राधा, आज तू बाधा का संग लाईरी ॥
अबहिं दोहनी लै घर तें तू, नोनी नीकी आईरी ॥
अब को का कीन्हो, अबहिं जो तन की सुरत भुलाईरी ॥
धेनु दुहावन खिरक जात कत, हटकत हटकत हारीरी ॥
मैं कहा सुनावों, देख ना सकहुं तोर बिकलाईरी ॥
नित उठ भोर जात इकली तू, मानत नहीं मनाईरी ॥
भयो काह बिधाता, परी मोरी प्यारी मुरझाईरी ॥
दौरि दौरि कोऊ गुनी बुला, सखि याकों देउ झराईरी ॥
याको सुध नाहीं, कौन जादू टोना उरझाईरी ॥

एक अकेली कुंवरि मम बारी , सोई जात नसाईरी ॥
बड़ गुण मानोंगी, कोई जो याको देव जगाईरी ॥
छिन छिन छिजत जात अब याको, तन अरु जोवन माईरी ॥
मो प्रानन प्यारी, तनक तो बोल बात सुध लाईरी ॥
अरी लाड़िली नेक मोरतन , चितवत ना बलि जाईरी ॥
हरिदास बिसारी , निपट प्यारी अपनी महतारीरी ॥३८॥

पद

प्रात गई नीके उठि घरते ॥टेक॥

मैं बरजी कहां जातिरी प्यारी , तन खीझी रिस झरते ॥
शीतल अंग स्वेद सों बूड़ी , शोच परेउ मन डरते ॥
अतिहि हठीली कही नहिं मानति , करति आपने मनते ॥
औरे दशा भई छिन भीतर , बोले गुनी नगर ते ॥
सूर गारुड़ी गुन करि थाके , मंत्र न लागत थरते ॥३९॥

पद

चले सब गारुड़ी पछिताई । टेक॥

नेक न मंत्र लगत काहू को, समुझि नेकु नहिं जाई ॥
बात बूझति सखियन सों , कहौ हमहिं बुझाय ॥
कहा कहि राधा सुनायो , तुम सबनि सों आय ॥
महा बिशधर श्याम अहिबर , देख सबही धाय ॥
फूंक ज्वाला हमहुं लागी , कुंबारि डर पर खाय ॥
गिरी धरनी मुरछि तबहीं, लई तुरंत उठाय ॥
सूर प्रभु को वेगि ल्यावहु, बड़ो गारूडी राय ॥४०

इति
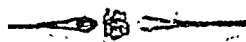
वैद्य लीला

गारुडी वचन

पद

गारुडी गुनीले हम हार मानबैठे, याको दरद न जान्यो जाय ॥
पढ़ पढ़ के पानी बहु मार्‌यो, मंतर फूंक लगाय ॥सखी याको॥१॥
तन में पीर कछू ना दीसे, नाड़ी बरोबर जाय ॥ सखी ॥२॥
विफल भयो गुण हमारो सारो, करें अब कौन उपाय ॥सखी॥३
काहू सुरत रंगी दीसे राधा, ताहि को लावो बुलाय ॥सखी॥ ४
हम हरिदास चले घर अपने, सांची बात सुनाय ॥५॥ ॥४१॥

सखी वचन

पद

नंद सुवन गारुडी बुलावहु ॥टेक॥
कहेउ हमारो सुनत न कोऊ, तुरत जाहु बृज अब लै आवहु।
ऐसो गुनी नहीं त्रिभुवन कहुं, हम जानति हे नीके।
आवहि जो तो तुरत जिवावहि, नेकु छुवतही उठिहै जीके।
देखो धौं यह बात हमारी, एकहि मंत्र जिवावै।
नंद महरि को सुत सूरज प्रभु, जो कैसेहु करि यहांलों आवै॥४२

पद

इते नइयां वैद्य को चारोरे ॥टेक॥
जाव बारि ललिता वैद लिवा लाव नंद को बारोरे ॥
वाहिके आये याकी पीर मिटेगी उनको पतयारोरे ॥
नंद सुवन हरिदास दासन आवे दुख न टरे टारोरे ॥४३॥

वार्तिक

रानी कीरत आपहीं बुलायबे को गई, अरु जसोदा से बोली ॥४४॥

पद

जसुमति तेरे पांव परोंरी ।।टेक।।

मो घरलो अपनो सुत पठवहु, वाहि बड़्यो गुनज्ञान सुन्योरी ।।
राधा को कारे की बाधा, सिगरे तन विष व्यापि गयोरी ।।
सक सकात तन भींज पसीना, उलटि पुलटि तन तोर रह्योरी ।।
मैं हरिदास फिरौं अकुलानी, कछु मो पर उपकार करोरी ।।४५

यशोदा बचन

रेखता

छोटो सो ढोटा मेरो कहा मंत्र तंत्र जाने ।
कोऊ और लावो गुनियां जो झार फूँक जाने ।।
नहिं जात मेरो बाहर दिन रैन घर में खेले ।
नहिं होवे यासें कछुहु तुम नाहिं लावो झेले ।
छिन मात्र नाहीं औसर यामें रानी कीजै ।
कोई गारुड़ी गुनीले बुलवाय जल्द लीजै ।
गभुवारो लाला मोरो डरपेगो देख कारो ।
हरिदास याहि छांड़ों तुम और को पुकारो ।४६।

बार्तिक

यह सुन रानी कीरति बड़ी दुखित भई अरु रोयवे लगी तब जसोदा ने श्याम सुन्दर को बुलायो अरु बोली अरे लाला तोइ कोऊ मंत्र आवे है ।।४७।।

श्याम सुन्दर बोले

पद

मैया येक मंत्र मोहे आवै ।।टेक।।

बिषहर खाय मरे जो कोऊ, मोसों मरन न पावै ।
एक दिवस राधा संग आई, खरिक बिटीनी और ।
तहां ताहि बिषहर ने खाई, गिरी धरनि वही ठौर ।।
यह बानी वृषभान घरनि कहि, यशुमति तब पतिआई ।।

सूर श्याम मेरो बड़ो गारुड़ी राधा ज्यावहु जाई ॥४८॥

पद

बन आये बैद श्याम गिरधारी ॥टेक॥

वृन्दाबन के कुंज गलिन में, डोलत हैं गिरधारी ॥
एक सखी तहां यों उठ बोली, देखत जईयो ब्रज हमारी ॥
छिंगरी पकरत पोंहचा गह लब , देखन लागो नारी ॥
हंसकर मोहन ऐसो बोलो, सरद गरम है गुजर नारि तुम्हारी॥
वाय बिरंग सोंप की पुरिया , राय कंचनी डारी ॥
येक दवा हम ऐसी देहैं, घट जात गूजिर कसक तुम्हारी ॥
जो तुम लाला अच्छी करिहो , खातर करौं तुम्हारी ॥
माखन मिसरी भोजन देहों.सोने की देहो लाला ऊंची अटारी॥४९

वार्तिक

वृषभान पोर पै पहुंचत हू रानी कीरति मोहन प्यारे को गारुडी रूप देख बोली ॥५०॥

कीरति को पद

कुंवरि हमारि वैदा देहु तो जुआई ॥टेक॥

इत उत महरि फिरत बिततानी, मुख सों ना कहि आवत बानी।
आतेहि शिथिल प्यारी को देखत, बार बार ताको कंठ लगाई।
नंद सुवन के पायन लागत , नयनन आंसू ढार बहावत ।
धीरज नेक न मन में धारे , अपनेहु तनकी सुधि बिसराई ।
वेगि लला तुम झोली खोलो, बूटी औषधि बांटो झोली ।
मंतर हूं कछु पढ़ के मारो , करो हरिदास हित वेगि उपाई ॥५१

वार्तिक

कीरति के ऐसे बिलाप भरे बचन सुनके लालजी बोले ।५२

लालजी रेखता

घबरात मात काहे को कौन विथा भारी ।
डरपी है नेक नाग कारो देखि तोरि बारी ।

अवही तो आज खिरका में लैके दोहनी।
आई थीं संग विटियों के रूप मोहनी।
उन बीच एक बिटनी को बन में कारे खाई।
तवहीं तो मैंने झार फूँक वाहि को जिवाई।
वाही भुवंग कारे को देखि सब डरानी।
याको मैं मंत्र फूँकों गडुवा लै ढारों पानी।
टुक धीर धरो रानी याको न सोच कीजै।
हरिदास मोरी बातों को सांच हू पतीजै ॥५३॥

वार्तिक

यह कहि लालजी तुरंत प्रिया जी के समीप जा बैठे ॥५४

पद

हरि गारुड़ी तहां तब आये ॥टेक॥
यह बानी वृषभान सुता सुनि, मन मन हरष बढाये ॥
धन्य धन्य आपुन को कीन्हो, अतिही गई मुरझाये ॥
तन पुलकित रोमांच प्रगट भयो, आनंद आंसु बहाये।
बिह्वल देखि जननी भई व्याकुल, अंग विष गयो समाये।
सूर श्याम प्यारी दोऊ जानत, अंतर गत को भाये ॥५५॥

दोहा

उझकि प्रिया के कान में, कही लाल यों बात।
वंशीवट जमुना निकट, तोहि मिलोंगो प्रात ॥५६॥

पद

लोचन दियो कुंवरि उघारि ॥ टेक ॥
कुंवरि देख्यो नंद को तब, सकुच अंग सम्हारि।
बात बूझति जननी सों री, कहा है यह आजु।
मरन ते जननी प्यारी, करति है कह लाजु।
तब कहति मोहि कारे खाई, कछु न रही सुधि गात।
सूर प्रभु तोहि ज्वाय लीन्ही, कही कुंवरि सों मात ॥५७॥

सखी वचन

वार्तिक

धन्य है लालजी महाराज याहि मिससों प्रिया जी के मिलवे अरु ताके अँग परसि आय गये, यह सुन लालजी अरु प्रियाजी दुहू जन मुसकाय उठे ॥५८॥

चौपाई

बिहंसि उठी तब बदन पखारेऊ, निरखि मोहन तन अंबरा संभारेऊ।
सुर बैठी मन भयो हुलासा, कीर्ति गई अपने पति पासा।

छंद

अपने जु पति पै गई कीरति प्रीति रीति बढ़ाईये।
मंत्र कीन्हों व्याह को, सब सखा मंगल गाईये।
वृन्दाबन में रच्यो स्वयम्बर, पुहुप मंडप छाईये।
सूर के प्रभु श्याम दूलह राधिका वर पाईये।५६।

दोहा

कारो सुत नन्दराय को, जाकी लीला नित्त।
उनही को यह डसत है, जिनके उज्वल चित्त ॥६०॥

सोरठा

धनि धनि वृज की वाल, धन्य धन्य वृज ग्वाल सब।
जिन के संग नंदलाल, दुहत चरावत धेनु नित ॥६१॥

सम्पूर्ण

अथ अघासुर लीला

दोहा

कागासुर अरु पूतना, तृणावर्त बलवान।
वत्स बका वृषभा तजे, अपने अपने प्रान॥१
सुनके अद्भुत चरित सब, नंद लाल के मित्त।
कंस रजा सिर धुनि कहे, चैन नहीं मो चित्त॥२

पद

अबतो गांठ परी भाइ भारी॥ टेक॥
जो जो दनुज भरोसो करिके, मैं पठये उन दीन्हें मारी.
भस उपहास भयो ब्रज मंडल, देखि हंसे सबरे नरनारी.
हौं अब जाय तजौं यह तनको, होय गयो हरिदास दुखारी.३

वार्तिक

यह सुन अघासुर बोल्यौ महाराज इतने सोच को कोई
काज नहीं अबहीं जाय आप को काम करूं हूं॥४॥

दोहा

कौन बात नंद तात की, घात करौं छिन माहिं।
घर बाहर वृज लोग सब, फरकत है मम बांहिं॥५

पद

नंद सुवन की कौन चलाई॥ टेक॥
बालक निपट अजान तनकसो, कहो मारो कहो लाऊं उठाई.
बकी बका को बदला लैके, अबही तो लौटहुं मैं आई.
काज किये बिन आज कहौ ना, मुखसों मैं हरिदास बड़ाई.६

कंस बचन

रेखता

उपकार नाहिं भूलोंगो भईया अघा तेरो।

जो काज आज करिहै तू जाय के जो मेरो।१।
बहु मान सभा मांही देहों तू नाम भारी।
जो कैहै सोई करिहों मम दुःख देहु टारी।२।
आंखो में गड़े मोरे जसुआ के पूत दोई।
नहिं चैन रैन दिन में बल बुद्धि सबै खोई।३।
कौनउ उपाय रचिके इनको जो मार आवै।
हरिदास तभी मोमन सुख पाय के फुलावै।

कंस बचन

वार्तिक

लेहु रन शूर बीरा लेहु शीघ्र जावो ॥ ८ ॥

अघासुर बोल्यो

महाराज जो आज्ञा ॥९॥

दोहा

चलो तुरत वा ठौर पै, जहाँ श्याम बलराय।
संग सखा लीन्हे तबै, रहे चरावत गाय ॥१०॥
अजगर बन बैठ्यो धरनि, छाड़न लागो स्वास।
एक चाम धरनी धरी, दूजी लाई अकाश ॥११॥

बार्तिक

श्याम बलराम गो चरावते २ वाही ठौर पहुंचे सारे सखा बोल्ये अरे भइया एक पर्वत की बड़ी भयानक कंदरा साम्हू दीसे है, चलो वामें घुस के कौतुक देखिये ।१२।

अपर सखा बचन

दोहा

जावो ना कोइ भीतरे, गुफा बड़ी गंभीर।
बन पर्वत अरु तरु लता, दीसे नदिया नीर ॥१३॥

अपर सखा बचन
दोहा

त्रिभुवन पति नंद नंदजू , सखा हमारे साथ ।
करत कौन को भय वृथा , क़वन छुवै हमें हाथ ॥१४॥

गजल

दहशत कहो तिनको कहां जिनको कन्हैया मीतहै ॥टेक॥
पहिले पठाई पूतना नृप खूब मंत्र पढ़ाइ कै ।
पय पीय प्रान छुटाय के हरि कीन्हि ताहि फजीत है ॥
तृणावर्त वक कागा गये अपनेहु तन तड़पाय के ।
केशी वृषा वत्साह ने हरि राखी अपनी जीत है ॥
कूंदे कालीदौ में कदम्ब से नाथ्यो है कालिय नागको ।
सब नागनी अरु नागको प्रभुता की दी परतीत है ॥
औरौ अनेक उपाधों को मथुरा से वृन्दाबन पठाय ।
गयो हार राजा कंसहू बैठ्यो घरे भय भीत है ॥
घन घोर बादल लाइकै जल डार्‌यो वृज पै सात दिन ।
गिरि राज नख पै धारिकै हरि मेटी इन्द्र अनीत है ॥
वृज वासियों के भाग ते हमको सखा ऐसे मिले ।
हरिदास कौन को ध्याइये इनही को दर्श पुनीत है ॥१५

बार्तिक

इनको सामने देख अघासुर ने ऐसी सांस खींची कि ग्वाल बाल बछड़ों समेत उस के पेट में चले गये यह देख श्री कृष्ण बोले ॥१६॥

दोहा

ग्वाल बाल बछड़ा सबै , पड़े असुर मुख आय ।
अब सबहिन की माय सों, कहा कहूंगो जाय ॥१७॥

वार्तिक

यह बिचार श्याम सुन्दर आपहू उस अजगर के मुख में

चले गये, अरु वा ने अति प्रसन्न होय अपनो मुख दवाय लीन्हो ॥१८॥

दोहा

माखन प्रभु कित होत थे, बाल स्वरूप बिशाल।
स्वास सांप की रोक के, खांस दियो ततकाल ॥१६

वार्तिक

इनके शरीर बढावने से अजगर के प्राण ब्रम्हांड होकर निकसि गये, अरु श्याम सुन्दर ग्वाल बाल बछड़ों समेत बाहर आय गये, वह राक्षस मुक्त होके बैकुंठ गयो ॥२०॥

इति

अथ वृषभासुर वध लीला

दोहा

जब प्यारे श्री कृष्ण जू, बत्स बका दोउ भाय १।
हने रजै बिस्यम भयो, शिर धुनि धुनि पछताय।

बार्तिक

सब सभासदों को बुलाय बिलापकर कहिवे लगौ, भैया अब तो मोरो शत्रु दिन दिन बढत जावेहै, कोई उपाय तो वाके मारवे को बतावो ॥२॥

पद

अब मोकों कोऊ लेहु बचाई ॥टेक॥
जगदंबा की बानी सांची, अब मोको हूं परत दिखाई ॥
वत्स बका बलवान पछारे, अपनी अपनी बहुत चलाई ॥

जो हरिदास न मारो मो रिपु, तौ तुम सब को देहुं बँधाई ॥३

बार्तिक

यह सुन एक बलवान राक्षस ललकार के बोल्यो, महाराज बीरा मिले अभी जाके नंद सुत को गेंद सो उठाय लाऊंगो ॥४॥

राजा बोलो

दोहा

धन्य तुम्हारो बुद्धि बल, धन्य तुमारो नेह ॥
स्वामी सेवा धन्य है, जाव धरौ कोउ देह ॥५॥

राजा बोलो

लेव बीरा शीघ्र जावो ॥६॥

बार्तिक.

बीरा लेइके वह राक्षस एक बड़े बैल को रूप होय चल्यो अरु जहां कृष्ण बलराम गोपों के संग धेनु चरायवे आवते रहे तहां जाय पहुंच्यो ॥७॥

पद

चले बन धेनु चरावन कान्ह ॥टेक॥
गोप बालक कछुक सयाने, नंद के सुत नान्ह ॥
हरष सों यशुमति पठायो, श्याम मनहिं आनन्द ॥
चले बलके साथ मोहन, संग बालक वृन्द ॥
सखा हरि को यह सिखावत, छांड़ि कहूं जिनि जाहु ॥
सघन वृंदाबन अगम अति, जाहु कहूं भुलाहु ॥
नेकहू जिनि संग छांड़ो, बनहिं बहुत डरात ॥
सूर के प्रभु हंसत मन में, सुनतही यह बात ॥८॥

पद

हेरी देत चले बन बालक ॥टेक॥
आनन्द सहित जात हरि खेलत, संग चले पशु पालक ॥
कोउ गावत कोउ बेनु बजावत, कोउ नाचत कोऊ धावत ।

किलकत कान्ह देखि यह कौतुक, हरषि सखा उर लावत॥
भली करी तुम मोको ल्याये, मैया हरषि पठाये।
गो धन वृंद लिये ब्रज बालक, यमुना तट पहुंचाये॥
चरति धेनु अपने अपने संग, अतिहि सघन बन चारो।
सूर संग मिलि गाय चरावत, यशुमति को सुत बारो॥९॥

वार्तिक

याही औसर में कंस को पठायो वृषभासुर राक्षस बैलरूप धरि गोवन के बीच आन मिल्यो॥१०॥

पद

यही अन्तर वृषभासुर आयो॥टेक॥
देख्यो नंद सुवन बालक संग, यहै घात है पायो॥
गये समीप धेनु पति ह्वैके, मन में दाव विचारे।
हरि तबहीं लखि लियो असुर को, डोलत धेनु बिडारे॥
गैया बिझकि चलीं जित-कितसों, सखा जहां तहं घेरे।
वृषभ शृंग सों धरनि उकासत, बल मोहन तन हेरे॥
आपहिं चलो श्याम के सन्मुख, निदरि आपु अगुसारी।
कूदि परेउ हरि ऊपर आयके, युद्ध कियो अति भारी॥
धाय परे सब सखा हांक दै, वृषभ श्याम को मारेउ।
पांय पकरि भुजसों गहि फेरेउ, भूतल मांहि पछारेउ॥
परेउ असुर पर्वत समान ह्वै, चकृत भये सब ग्वाल।
वृषभ जानि के हम सब धाये, यह तो कोउ विकराल॥
देखि चरित यशुमति के सुत को, मन में करत विचार।
सूर दास प्रभु असुर निकंदन, जसुमति प्राण अधार॥११

वार्तिक

वृषभासुर के मारने के उपरांत सब सखा आनन्द होय गायबे लगे॥१२॥

पद

धन्य कान्ह धनि धनि ब्रज आये ।।टेक।।
आजु सबनि धरिके यह खायो, धनि तुम हमहिं बचाये ।।
यह ऐसो तुम अतिहिं तनक से, कैसे भुजनि फिरायो ।
पलकहि मांझ सबनि के देखत, मारेउ धरनि गिरायो ।।
अबलों हम तुमको नहिं जान्यो, तुमहो जग प्रति पालक ।
सूरदास प्रभु दुष्ट निकंदन, ब्रज जनके दुख घालक ।। १६

श्री कृष्ण बचन सखों प्रति

रेखता

तुव संग में सदा ही नित नई उपाधें आवें ।।
अब नाहिं ऐहों वन में मुहि देवता बचावें ।।
छल छैल तुमने हैंसे था बैल के बड़े ।।
मो पास कोउ न आवें रहे देखते खड़े ।।
तुम्हरे भरोसे माता मुहि देखिवे पठावे ।।
मेवा मिठाई माखन सब संग में खवावे ।।
मुहि मारवे के काजे कंस असुर बहु पठाये ।।
पर नेकहू ना कोउ दिन तुम मोरे काम आये ।।
अब छांड़ि देहों भैया मैं धेनु को चरावो ।।
हरिदास संग छोड़ो तुम्हें भावे तहां जावो ।।१७

वार्तिक

या कहि सब मिलिके घर की ओर सिधारे ।।१५।।

पद

आवत मोहन धेनु चराये ।टेक।
कटि किंकिन धुनि मग में बाजत, चलत चरण नूपुर खराये ।
ग्वाल मंडली संग श्याम घन, पीत बसन दामिनहि लगाये ।
गोरज बदन बिराजत मानो, पंकज पर पराग उड़ि छाये ।
गोप सखा आवत गुण गावत, मध्य श्याम हलधर छवि छाये ।

सूरदास प्रभु असुर निकंदन, ब्रज आवत मन हरष बढाये।१६

पद

हंसि जननी सों बात कहत हरि, देख्यो मैं वृंदावन नीके।
अति रमणीक भूमि द्रुम बेली, कुंज सघन निरखत सुख जीके।
यमुना के तट धेनु चराई, कहत बात माता मन नीके।
भूख मिटी बन फल के खाये, मिटी प्यास यमुना जल पीके।
सुनति यशोमति सुतकी बातें, अति आनंद मगन तनहीके।
सूरदास प्रभु बिश्वभरन जे, चोर भये ब्रजजन कह हीके।१७

इति

अथ श्री वत्स हरण लीला

दोहा

अघा मार श्री कृश्ण जू, संग सखों की भीर।
लेके न्हावन को चले, पहुंचे जमुना तीर॥१
हरष भये नंद लाल जी, बैठे तरु की छांह।
बंसीबट अति सुगम थल, देखि मनहिं हरषांह॥२॥

लालजी बोले

श्लोक

अहोऽति रम्यं पुलिनं वयस्याः स्वकेलि सपन्मृदु लाच्छ वालुकम्।
स्फुटत्सरो गंध हृतालिपत्रिकध्वनि प्रति ध्वानल सद्रुमा कुलम्॥३

बार्तिक

अरे भैया जा भूमि बड़ी सुहावनी लागेहै, चलो सब मिलि कलेवा करें, याही समय जसुधा ने कलेवा पठवायो रहो, सो लेय

गोप पहुंचे ॥४॥

दोहा

तहां छांक सब घरन तें, आई भरि २ भार।
यशुमति पठये कान्ह को, व्यंजन विविधि प्रकार ॥५

छंद

कान्ह देखि मधु छांक पुलक अंग अंग पठायो।
हरि हंस बोलत बैन प्रेम जननी पहुंचायो ॥
नीके पहुंचे आय तुम चलयो बन्यो संयोग।
वार बार कहि सखन सो हो आज करें सुख भोग ॥
बन भोजी विधि करत कमल के पात मंगाये।
तोरे पान पलास सरस दोना बहु लाये ॥
भांति भांति भोजन करौं दधि लवनी मिष्टान।
बन फल लये मंगाय हो लागे रुचि करि खान ॥
बन भोजन हरि करत संग मिलि सुवल सुदामा।
श्याम कुंवर प्रसेन महर सुत अरु श्रीदामा ॥
कान्ह सबन मिलि खात हैं लैलै कौर छुड़ाय।
औरनि देत बुलाय के हो हहकि आप मुखनाय ॥६॥

बार्तिक

वा समय श्री लाल जी महाराज की शोभा या प्रकार से थी ।७।

श्लोक

बिभ्रद्वेणुं जठर पठयोः शृंग वेत्रेचकक्षे।
वामे पाणौ मसृण कवलं तत्फलान्यं गुलीषु।
तिष्ठन्मध्ये स्वपरि सुहृदो हासयन्नर्मभिः स्वैः।
स्वर्गे लोके मिषति बुभुजे यज्ञ भुग्बाल केलिः ।८।

पद

सखन संग हरि जेवत हैं छाक ।टेक।

प्रेम सहित मैया दे छठे, सबै बनाये हैं इक ताके।
सुबल सुदामा श्रीदामा संग, सब मिलि भोजन रुचिकरि खात।
ग्वालनि कर ते छाक छिड़ावत, मुख ले मेलि सराहत जात।
जो सुख कान्ह करत वृंदावन, सो सुख नहीं लोकहूं सात।
सूर श्याम भक्तन बस ऐसे, ब्रह्म कहावत हैं नंदलाल।६।

पद

ग्वालन कर ते कौर छुड़ावत।टेक।

जूठो लेत सबनि के मुख को, अपने मुख लै नावत।
षटरस के पकवान धरे सब, तामें नहिं रुचि पावत।
हा हा करि२ मांग लेत है, कहत मोहि अति भावत।
यह महिमा एई पे जानत, जा पै आपु बंधावत।
सूर श्याम सपने नहिं दरसत, मुनिजन ध्यान लगावत।१०

पद

शीतल छहियां श्याम बैठे, जान भोजन की बिरियां।
बाम भुजा सखा अंश दीन्हे, अरु दच्छिन कर द्रुम डरियां।
चलि जु नके घेरी गैया बलराम सो, कहत बोलिलेहु अपने अरियां।
सूर दास प्रभु बैठे कदम पर, पीवत मथि मथि धरियां ॥११॥

पद

बृजबासी पटतर कोउ नाहीं ॥टेक॥

ब्रह्म सनकशिव ध्यान न पावत, इनकी जूठन लै लै खाहीं॥
धन्य नंद धनि जननि जसोदा, धन्य जहां औतार कन्हाई॥
धन्य धन्य वृंदावन के तरु, जहां जु बिहरत त्रिभुवन साईं॥
हलधर कहत छाक जेवत संग, मीठो लगत सराहत जाई॥
सूर दास प्रभु विश्वंभर है, ग्वालिनि कर ते कौर अघाई॥१२॥

छंद

ब्रह्मा देखि बिचार सृष्टि कोउ नई चलाई॥
मुहि पठयो जिहि सौंपि ताहि कहि कैहों जाई॥

देखौं धौं यह कौन है बाल बच्छ हरि लेहुं ॥
ब्रह्म लोक ले जाउंगो हो यहि बुधि करि दुख देहुं ॥१३

पद

छलन चले हरि को चतुरानन ।टेक।
गोप सखा सबरे संग लीन्हे, जहां प्रभु धेनु चरावत कानन।
जो त्रिभुवन कर्ता संहर्ता, ताको भेद चह्यो विधि जानन।
वाकी मति हरिदास भुलानी, आपन हूं पटकत पग पाहन।१४

छंद

अन्तरयामी नाथ तुरत मनकी गति जानी॥
बालक दै दिये पठाय धेनु बन कहां हिरानी॥
जहां जहां बन ढूंढ़ि के फिरि आये हरि पास॥
सखन सबै बैठार के हो आपन गये उदास॥
हरि लै बालक बच्छ ब्रह्म लोकहि पहुंचायो॥
फिरि आवै जो कान्ह कहु को उनहिं बनायो॥
जान्यो यह मन में तबै बिधि लै गयो हराय॥
प्रभु तबहीं तेहि रंग रूप कहो बालक बच्छ बनाय।१५

रेखता

जबहीं बिरंचि बाल बच्छा लै गयो चुराई।
तहीं नंदलाल सारी रचना तबहि नई बनाई॥१
जितने सखा संगाती उतने नये बनाये।
वोहि बैस प्रकृति बुद्धि वोही रूप रंग लाये॥२
सब डील डौल वोही पुनि बोल चाल वैसो।
काहू न नेक जाने कहा हाल काको कैसो॥३
वहि नाम ठाम वाही वहि जात वाहि कांता।
वहि कामरी लकुटिया वही आपसी को नाता॥४॥
वहि धेनु वाहि बछरा जो जाहि को चरावै।
वहि गाय को बछेरू वहि भांति सो रम्हावै॥५॥

यहि भांति बारा महिना लौं लीला रूप कीन्हे ।
हरिदास कोउ बालक बछरा ना जात चीन्हे ॥६॥१६

श्लोक

या वद्धत्सप वत्सकाल्पक वपुर्या वत्करां ग्रयादिकं ।
या वद्यष्टि बिषाण वेणु दलाशिग्यावद्धि भूषां वरं ।
या वच्छील गुणा भिधा कृति वयो या वद्धि हारादिकं ।
सर्वं विष्णु मयं गिरोंऽ गवदजः सर्व स्वरूपो वभौ ॥१७॥

छंद

श्याम कहेऊ सब सखन सों लावहु गोधन फेर ।
संध्या को आगम भयो है वृज तनहां को घेर ।१८।
सुनत ग्वाल ले धेनु चले वृज वृंदावन ते ।
कान्हहि बालक जानि डरे सब ग्वाला मत ते ॥
मध्य किये लै श्याम को भये सखा चहुंपास ।
वच्छ धेनु आगे किये हो आवत करत बिलास ॥
बाजत वेणु विसान सबै अपने रंग गावत ।
मुरली धुनि गो रंभि चलत पग धूरि उड़ावत ॥
मोर मुकुट शिर सोहई मनहुं चंद कन शीत ।
आस पास नाचत सखा हो विच हरि गावत गीत ॥
देखि हरष वृजनार श्याम पर तन मन वारत ।
इक टक रूप निहार रही मेटन चित आरत ॥
गोकुल पहुंचे जाय गाय बालक अपने घर ।
गो सुत अरु नर नारि मिली अतिही कर आदर ॥
प्रेम सहित वे मिलत हैं जे उपजाये आजु ।
जसुमति मिलि सुत सों कहे हो रैन करत किहि काज ॥
वार वार उर लाय कै लै वलाय पछताय ।
कालहि तें वे हू सबै हो लावहिं गाय चराय ॥
यहि सुन के हरि हंसे काल मेरी जाय वलैया ।

भूख लगी मुहि बहुत तुरत कछु देरी मैया ॥
माखन दीन्हों हाथ में यह तबलौं तुम खाहु ।
तातो जल है घाम को हो तनक तेल लौं न्हाय ॥१६॥

पद

विधि मनही मन सोच परेऊ ॥टेक॥
गोकुल की रचना सब देखत, अति जिय माह डरेऊ ॥
मैं विरंचि बिरच्यो जग मेरो, यह कहि गर्व बढ़ायो ॥
बृज नर नारि ग्वाल बालक कहि, कौने ठाठ रचायो ॥
वृंदाबन बट सघन तरुवर तर, मोहन सखै बुलायो ॥
सखा संग मिलि करत बन भोजन, विधि मन भर्म उपायो ॥
यातें श्याम उतहिं अतुराने, तुरत तहां उठि धायो ॥
बालक वच्छा हो चतुरानन, ब्रह्मलोक पहुंचायो ॥
यह बिचारि तब भये आपुही, वयर प्रकृति करायो ॥
सूर दास प्रभु गर्व बिनासन, नव कृति फेर बनायो ॥२०॥

दोहा

एक बरस लौं याहि बिधि, राखे बच्छ छिपाय ।
उन देखत पुनि बृज लखै, विधि की मति बोराय ॥२१॥
तब जान्यो बृज में भये, प्रगट लोक के ईश ।
शरण गये शिव के चले, जाय नवायो शीश ॥
चारहु मुख अस्तुति करें, महिमा अगम अगाध ।
दीन बंधु करुणा निधि, छमहु मोर अपराध ॥२२॥

ब्रह्मा जी की स्तुति

लावनी

ज्योति रूप जग धाम जगत गुरु जगत तात कहलावोजू ।
जप तप व्रत दुर्लभ, सोई हरि गोकुल ईश कहावोजू ॥१॥
कौन सुकृत इन ब्रज बासिनकौ जिन हित मनुज कहावोजू ।
बालक ह्वै भूलो, गगन ते चन्द्र खिलौना मांगोजू ॥२॥

दाता भोक्ता कर्ता हर्ता विश्वंभर श्रुति भाख्योजू ।
करि माखन चोरी, जसोमति ऊखल सों धरि बांधोजू ॥३॥
कमला नायक त्रिभुवन दायक सुख दुख आप करावोजू ।
धरि कांध कमरिया, लकुटिया लै बछरान चरावोजू ॥४॥
वेद वेदान्ति उपनिषद पटरस अरपत ताहि सुलावोजू ।
ग्वालन के मंडलि, बैठ के हंस हंस जूठन खावोजू ॥५॥
अब जानत हों करी तुमहिं सों बरिजाइ रुचवावोजू ।
त्रिभुवन के स्वामी, छमहु अपराध चूक बिसरावोजू ॥६॥
बालक के अपराध हजारों मात समान संभारोजू ।
शरणागत तोरी, सकल मो गुण अरमान नसावोजू ॥७॥
एक लोक को ब्रह्मा हू मैं कोटि शंभु अज धारोजू ।
मिथ्या यह माया, जगत मिथ्या तुमही उपजावोजू ॥८॥
मिथ्या है यह देह भूलि के मैं तुमहूं बिसरावोजू ।
भ्रम तारन भंजन, मुनिन के मन रंजन सुख पावोजू ॥९॥
कीजे ब्रज की रेनु मोहि वृन्दावन वास दिखावोजू ।
ग्वालन को सेवक, लता द्रुम जो चाहे सो बनावोजू ॥१०॥
यह ब्रज पारस जान करो रज अज लोके न पठावोजू ।
दरशन नित पाऊं, अमर सुरपति जाको तरसावोजू ॥११॥
औरहि कोउ बनाय विधाता जग रचना करवावोजू ।
मांगों वर याही, सदा हरिदासहि पद रज लावोजू १२॥२३॥

वार्तिक

यह स्तुति सुनि के श्री महाराज प्रसन्न होय बोले ॥२४॥

रेखता

किहि को ब्रह्मा अब ठानो, तुम सम को और सयानो ।
तुम धर्म कर्म सब जानो, सबरो जग सुत सम मानो ।
अति अगम अहै मम माया, तोहौं करिहौं अब दाया ।
अब नेकु बिलम्ब ना लावो, ब्रज परिकरमा को जावो ।

मम माला को उर धारो, सब पाप पहार संघारो।
अब आपन लोक सिधारो, मुहि ना हरिदास विसारो ।२५।

छन्द

तुरत जाई वहि लोक को बिधि कीन्हीं मनुहार।
ब्रम्हा करि अस्तुति चले हो हरि दीन्हो उरहार ॥१॥
धनि बछरा धनि बाल जिन हो ते दरशन पाये।
उर मेरो भयो धन्य कृष्ण माला पहिराये ॥ २ ॥
धनि यशुमति जिन बस किये अविनाशी अवतार।
धनि गोपी तिन के सदन हो माखन खात मुरार ॥३॥ २६

॥ इति ॥

अथ काली दमन लीला प्रारम्भ

पद

नारद सो नृप करत बिचार, वृज में भए दोऊ कोऊ अवतार॥
नंद सुवन बलराम कन्हाई, इन की गति मैं कछु न पाई॥
तृणावर्त से दूत पठाये, ता पाछे केशी चढ़ धाये॥
सुनि सुनि मोहि आवत लाजा, अब मन में तुम येक बिचारो॥
सूरश्याम बलरामहि मारो ॥ १ ॥

पद

नारद मुनि नृप सों यह भाषत ॥ टेक ॥
वे हैं काल तुम्हारे प्रगट, काहे को उन को डरपावहु।
यह सुनिके वृज लोग डरेंगे, वे हू सुनि हैं यह बात॥
नंद यशोदा बहुत डरेंगे, इहै कहो उपघात ।

यह सुनि कंस बहुत सुख पायो, भली कही यह मोहि ॥
सूरदास प्रभु को सुनि जानत, ध्यान करत मन जोहि ॥ २ ॥

पद

कंस बुलाय दूत एक लीन्हों ॥ टेक ॥
काली दह के फूल मंगाये, पत्र लिखाय ताहि कर दीन्हो ॥
यह कहियो वृज जाय नंद सों, कंस राज अति काज मंगाये।
तुरत पठाय दिये ही बनि है, भली भांति कहि कहि समुझाये ॥
यह अंतरयामी जिय जानी, आपु रहे बन ग्वाल पठाये।
सूर श्याम वृज जन सुख दायक, कंस काल जिय हरष बढ़ाये ॥३॥

पद

यह सुन कंस मुदित मन कीन्हो ॥ टेक ॥
दूतहि प्रगट कही यह बानी, पत्र लिखाय नंद को दीन्हो ॥
काली दह के कमल पठावहु, तुरत देखि यह पाती ॥
जैसे कमल काली हां पहुंचे, तू कहियो यह भांती ॥
यह सुनि दूत तुरतही धायो, तब पहुंचो वृज जाई ॥
सूर नंद कर पाती दीन्ही, दूत कहेऊ समुझाई ॥ ४ ॥

दोहा

अबही फूल मंगाय के, पठवायो नृप गेह।
जो अपने बालकन को, राख्यौ चाहत नेह ॥ ५ ॥
बिलंब होतही सबन को, लैहै मंगा बंधाय।
रिझा है नृपराज जब, मारन राम कन्हाय ॥ ६ ॥

वार्तिक

यह कह पाती दीन्ही ॥ ७ ॥

पद

पाती बांचत नंद डराने ॥ टेक ॥
काली दह के फूल पठावहु, सुनी सबनि वृज लोग घराने ॥
जो मोको नहिं फूल पठावहु, तो वृज करौं उजारि ॥

महर गोप उपनन्द न राखौं, सबहिन डारौं मारि ॥
पुहुप देहु तौ बनै तुम्हारी, नातरु गये बिलाय ॥
सूरश्याम बल मोहन तेरे, मांगो उन हीं धराय ॥ ८ ॥

पद

नंद सुनत मुरझाय गये ॥ टेक ॥
पाती बांची सुनी दूत मुख, यह बानी सुनि चकृत भये ॥
बल मोहन खुटकत बाके मन, आजु कही यह बात ॥
सूर सुना नृप यहि ढंग आयो, बल मोहन पर घात ॥ ९ ॥

पद

नंद घरनि बृज नारि बिचारति ॥टेक॥
बृजहिं बसत सब जनम सिरानो, ऐसे कंस करी नहिं आरति ॥
काली दह के फूल मंगावत, को आनै धौं जाई ॥
बृज वासी नातरु सब मारौं, बांधौं बलहि कन्हाई ॥
यह कहतहि दोऊ नयन ढराने, नंद घरनी दुख पाई ॥
सूरश्याम चितवत माता मुख, बूझत बात बनाई ॥ १० ॥

रेखता

जसुधा सुन के पछतानी, निकसे मुख सों ना बानी ॥
बृज नारिन टेर बुलाई, नैनन जल धार बहाई ॥
नृप कमल फूल मंगवावे, काली दह में को जावे ॥
वाके बलराम कन्हाई, खटके निसदिन री माई ॥
इन्है कोई भगा ले जावौ, मम प्राण अधार बचावौ ॥
हरिदास हमें नृप मारे, पै बालक दोई उबारे ॥११॥

बार्तिक

माता को अति दुखित देख श्याम सुंदर बारंबार सोच को कारन पूछन लगे, अरु बोले, मैया आपने देव गोवर्धन को काहे ना सुमरो ॥ १२ ॥

लालजी वचन

पद

तुमहि कहत को करे सहाई ॥ टेक ॥

सो देवता मेरे संगही अब, वृज ते अनत कहूं नाहिं जाई ।
बड़ो देव गिरि गोवर्द्धन है, जो पुरवे आसा मन भाई ।
यह देवता मनावहु सब मिलि, तुरत कुसल जो देय पठाई ।
बाबा नंद झकत कहि कारन, यहि कहि माया मोह अरुझाई ।
सूरदास प्रभु मात पिता को, तुरतहिं दुख डारेउ बिसराई ॥१३॥

रेखता

काहे कौं सोचो बाबा रोवे है मात मोरी ।
तुव मुख मलीन देखैं घबरावै बड़ी भोरी ॥ १ ॥
कौने पठाई पाती को मारि है कन्हैया ।
कहौ बात मोसे सांची तुम्हें मोर है दुहैया ॥२॥
दुई माता सदा राखे हैं मोपे प्रेम गाढ़ो ।
उन्हे देख दुखी मोपे रहो जात नाहिं ठाढ़ो ॥३॥
बलदाऊ कहे कंस काली दह के फूल मांगे ।
कत सोच कीन्हे बैठे इतनी सी बात लागे ॥४॥
अपनो सो देव गोवर्द्धन गांव को रखावे ।
याही ते हम सबों पै कोई आपदा न आवे ॥५॥
सब काल संकटों में वोही करे सहाई ।
हरिदास वाके सुमिरतें होयगी भलाई ॥१४॥

पद

खेलन चले कुंवर कन्हाई ॥टेक॥

कहत घोष निकास जैये, जहां खेलें धाई ॥
गेंद खेलत बहुत बनि है, अभीनो कोउ जाई ॥
घरहि गये सखा श्रीदामा, गेंद तुरतहिं ल्याई ॥
अपने करले श्याम देख्यो, अतिहिं हरष बढ़ाय ॥

सूर के प्रभु सखा लीन्हे , करत खेल बनाय ॥१५॥

पद

खेलत श्याम सखा लिये संग ॥टेक॥
एक मारत एक रोकत गेंदहिं, एक मांगत करि नाना रंग।
मार परस्पर करत आपु में , अति आनंद भयो मनमाहिं।
खेलत ही में स्याम सबनि को, यमुना तट को लीन्हैं जाहिं।
मारि भजत जो जाहि ताहि सो, मारत लेत आपनो दाव।
सूर श्याम के गुण को जाने, कहत और कछु और उपाव॥१६

पद

श्याम सखा सो गेंद चलाई ॥टेक॥
श्री दामा मुरि अंग बचायो , गेंद परउ कालीदह जाय।
धाय गहेउ तब फेंट श्याम को, देव मेरी तुम गेंद मंगाय।
और सखा जिनि मोको जानहु, मोसों जिनि तुम करो ढिठाई।
जानि बूझ तुम गेंद गिरायो , अब दीन्हे ही बने कन्हाई।
सूर सखा सब हंसत परस्पर , भली करी हरि गेंद गवांई॥१७

पद

फेंट छांड़ि मोरी देहु श्रीदामा ॥टेक॥
काहे को तुम रारि बढ़ावत , तनक बात के कामा ॥
मेरी गेंद लेहु ता बदले , बाह कहत हौं धाई ॥
छोटो बड़ो न जानत काहू , करत बराबरि आई ॥
हम काहे के तुमरि बराबर , बड़े नंद के पूत ॥
सूर श्याम दीनेही बनि है, बहुत कहावत धूत ॥१८॥

पद

रिसि कर लीन्हो फेंट छिड़ाई ॥टेक॥
सखा सबै देखत हैं ठाड़े , आपुन चढ़े कदम पर धाई ॥
तारी दै दै हंसत सबै मिलि, श्याम गये तुम भागि डराई ॥
रोवत चले श्रीदामा घरको , यशुमति आगे कहि हौं जाई ॥

सखा सखा कहि श्याम पुकारेउ, गेंद आपुनी लेहु न आई ॥
सूर श्याम पीतांबर काछे, कूदि परे दह में भहराई ॥१६॥

पद

हाय हाय कहि सखन पुकारेउ॥टेक॥
गेंद काज यह करी श्रीदामा, नंद महर को ढोटा मारेउ ॥
यशुमति चली रसोई भीतर, तबहिं ग्वाल येक छींकी ॥
ठठुकि रही द्वारे पर ठाढ़ी, बात नहीं कछु नीकी ॥
आय अजिर निकसी नंदरानी, बहुरौं दोष मिटाई ॥
मंजारी आगे है निकसीं, पुनि फिर आंगन आई ॥
व्याकुल भई निकसि गई बाहर, कहां धौं गयो कन्हाई ॥
बायें काग दाहने खरसुर, व्याकुल घर फिरि आई ॥
खन भीतर खन बाहर आवति, खन आंगन यहि भांती ॥
सूर श्याम को टेरति जननी, नेक नहीं मन सांती ॥२०

पद

रेखता देश

चली जसुधा रसोई को, तभी इक ग्वाल ने छींको ।
ठठुकि रहि द्वार पै ठाढ़ी, चित्त चिंता बड़ी बाढ़ी ।
अजिर आई परी फीकी, कहै कछु बात ना जीकी ।
भई फिर सोच में भारी, दई मग काटि मंजारी ।
भई व्याकुल निकस बाहर, बायें कागा दहिन खरसुर ।
इन्हीं कुसगुन सों घबराई, कहै कान्हा कहां माई ।
खनै घर घर खनै अंगना, फिरे दौरी रहे पलना ।
पुकारे कान्ह कान्हैया, दुखी हरिदास भई मैया ॥२१॥

पद

देखे नंद चले घर आवत ॥टेक॥
पैठत पौरि छींक भई बायें, दाहिनि धाय सुनावत ।
फ़रकत श्रवन श्वान द्वार पर, गररी करत लराई ।

माथे पर ह्वै काग उड़ानो, कुसगुन बहुतिक जाई।
आये नंद घरहीं मन मारे, व्याकुल देखी नारी।
सूर नंद युवती सों बूझत, बिनु छवि बदन निहारी।२२।

पद

नंद घरनि सों बूझत बात ॥टेक॥
बदन झुराय गयो क्यों तेरो, कहां गयो बल मोहन तात ॥
भीतर चली रसोई कारण, छींक परी तब आंगन आय॥
पुनि आगे ह्वै गई मंजारी, और बहुत मैं कुसगुन पाय॥
मोहि भये कुसगुन घर पैठत, आजु कहा यह समुझि न जाय॥
सूर श्याम कहां गये आजु धौं, बार बार बूझत नंदराय॥२३

पद

महरि महर मन गये जनाय ॥टेक॥
खन भीतर खन आंगन ठाड़े, खन बाहर ह्वै देखत जाय।
यहि अवसर सब सखा पुकारत, रोवत आये बृज को धाय।
आतुर भये नंद घरही को, महरि महर सों बात सुनाय।
चकृत भये दोउ बूझन लागे, कहो बात हमको समुझाय।
सूरश्याम खेलतहिं कदम चढ़ि, कूदि परे कालीदह जाय।२४।

पद

धरनि परी मुरझाय यशोदा, नंद गये यमुना तट धाई॥
बालक सब नंदही संग धाये, बृज घर जहं तहं शोर मचाई।
त्राहि त्राहि करि नंद पुकारत, देखत ठौर गिरे महराई।
लोटत धरनि परत जल भीतर, सूर श्याम दुख दियो बुढ़ाई।२५

पद

बृज बासी यह सुनि सब आये॥टेक॥
कहां परेउ गिरि कुँवर कन्हाई, बालक लै सोई ठौर दिखाये॥
सूनो गोकुल कियो श्याम तुम, यह कहि लोग उठे सब रोई॥
नंद गिरत सबही धरि राख्यो, पोंछत बदन नीर लै धोई॥

बृजबासी तब कहत नंद सों, मरन भयो सबही को आई ॥
सूर श्याम बिनुको बसिहै बृज, धृग जीवन तिहुं भुवन कन्हाई॥२६

जसोदा वचन

लावनी

सखि कैसी करूं कहं ढूंढूं कन्हइया बारो।
जमुना में डूब्यो जाय नैन को तारो॥
कोउ जल में पैठो जाय खबर कहि आवो।
तोरी मैया माखन लाई वेग तुम खावो॥
सगरे बृज वासी आय खड़े जल तीरा।
तुम कहियौ बाहर वेग चलो बलबीरा॥
तुमरे संग खेलन काज सखा सब ठाढ़े।
तुम काहे न निकसत श्याम निठुर भये गाढ़े॥
तुमरी प्यारी सारी बृज बाला टेरें।
दधि दूध चुरावो आय बाट हम हेरें॥
तुमें राधा बाधा हरन पिया कर टेरे।
तुम धौरी धूमरि गाय न तृण तन हेरे॥
मह नंद नंद उपनंद नेह के छाके।
बल भैया भैया टेर रटे मुख वाके॥
इतने कठोर क्यों होत हो बारे कन्हैया।
हरिदास हरौ सब त्रास आस पुरवैया॥२७॥

दादरा

कैसी करूं कहां जाऊं सजनी, जमुना जी में कूद परे ॥टेक॥
खेलत खेलत संग सखा सब, आपस माहिं लरे॥
फेंकी गेंद जमुन जल माहीं, तनक न सोच करे॥
सब मिलके धरको मेरो बारो, आपन नाहीं डरे॥
अब हरिदास दुखी मुंहि करके, आपन काज सरे॥२८॥

पद

माखन खाहु लाल मेरे आई, खेलत आजु अवार लगाई।
बैठउ आय संग दोउ भाई, तुम जेवहु मैया बलि जाई।
सद माखन अतिहित मैं राख्यो, आजु नहीं नेकहु ते चाख्यो।
प्रातहि ते मैं दिये जगाई, दतवन करि जो गये दोउ भाई।
मैं बैठी तब पंथ निहारो, अबहूं तुम पर तनु मनु वारो।
बृज युवती सुनि सुनि यह बानी, रोवहिं धरनि परी अकुलानी।
शोक सिंधु बूड़ी नन्दरानी, सुधि बुधि तनकी सबै भुलानी।
सूरश्याम लीला यह कीन्हों, सुख के हेतु जननि दुख दीन्हों ॥२६॥

पद

बृजबासी सब उठे पुकारी, जल भीतर कह करत मुरारी ॥
संकट में तुम करत सहाई, अब क्यों नहीं बचावत आई ॥
माता पिता अतिहिं दुख पावत, रोय रोय सब कृष्ण बुलावत ॥
हलधर कहत सुनहु बृजवासी, वे अन्तरयामी अविनाशी ॥
सूरदास प्रभु आनंद रासी, रमा सहितु जलधी के बासी ॥२०॥

पद

बृजबासी सब भये बिहाल ॥टेक॥
कान्ह कान्ह कह २ टेरत हैं, व्याकुल गोपी ग्वाल ॥
अब को बसे जाय बृज हरि बिनु, धृग जीवन नर नारी ॥
तुम बिनु यह गति भई सबनि की, कहां गये बनवारी ॥
प्रातहिते जल भीतर पैठे, होन लगो युग याम ॥
कमल लिये सूरज प्रभु आवत, सब सों कहि बलराम ॥२१

दोहा

कोमल तन सुन्दर बदन, नील जलज घनश्याम।
जल भीतर पहुंचे तहां, जहं कालयि को धाम ॥२२
मोर मुकुट कटि काछनी, पीतांवर बन माल।
फेंट कसे ठाड़े भये, जहँ सोवत तो काल ॥२३॥

वार्तिक

इनको मनोहर रूप सुन्दर अनुपम देख नागनी बोली.३४

लावनी

कहु काको है तू बालक छोट विचारो।
पठयो यहां कौने तोह चहै को मारो ॥१॥
जगि है अबहीं जो कालिया लेइ जँभाई।
तोहे लागतही फुसकार छार जरजाई ॥२॥
तोहि देखत लागत छोह मोह उर माहीं।
जलदी जल सों बहराय जात कत नाहीं ॥३॥
नहिं जानत जग पितु मात कठिन मन कैसो।
जिन कालिय ढिंग पहुंचायो बालक ऐसो ॥४॥
इत आवत बरज्यो नाहिन पार परौसी।
मर जैयो सब परिवार मतारी मौसी ॥५॥
कहां भागे भईया संग सखा सब बारे।
तरसे मोमन तोहि देख यहां ललनारे ॥६॥
अब जाव जाव भग जावो प्राण ना खोवो।
बिनती इतनी हरिदास करे सुन लेवो ॥७॥३५॥

लालजी बचन

दोहा

अबहिं जगावो श्याम अहि, सुनो उरग की बाम।
फूल लाद बापे अभी, लै जैहों नृप धाम ॥
बालक बालक करत है, पति को क्यों न उठाव।
नेक न याको डरत हों, जानो बँधन उपाव ॥३६॥

नागनी बचन

छंद

कहां कंस कहां उरगरे बालक अबहि दिखाऊं तोहि।
येक फूँकहि में जर जैहै कहि है मोको द्रोहि ॥

छोटे मुख सों बात बड़ी तू कहत न नेक विचारे ।
खग पति की सरबर करि वपुरो अपने प्राण बिगारे ॥३७॥

लालजी बचन

छंद

मोसों वपुरो कहतरी नारी तोहि वपुरो करि डारों ।
येक लात सों चाप खसम तेरे को अवही मारों ॥
सोवत सें मारिय नहिं काहू जगकी याही धारा ।
यातें तोसों कहत जगावे खगपति मोर अधारा ॥
अरी बावरी नागिनयां जो पति को नाहिं जगै है ।
तौ तू अरु पति तेरो अबही करमन को फल लै है ॥३८॥

नागनी बचन

छंद

तुमहिं बिधाता हो गये जग के मानत औरन नाहीं ।
उरग छुवो नहिं बदन तनक सो तनक तनक सी बाहीं ॥
कहां कहां कछु कहत न आवे मो मन मोह अपारा ।
देती अवहिं जगाय नाग को ह्वै जातो जरि छारा ॥
मरो कंस निरवंस होय के जाने तोहि पठायो ।
मंत्री वाके जमुना डूबें बालक घात करायो ॥ ३९ ॥

लालजी बचन

छंद

तू घौं देहि जगारी पति कों तोकों दूषन नाहीं ।
तोकों कहा परीरी पापन हम अपने जरि जाहीं ॥
हम को बालक कहत आप बन बैठी बड़ी सयानी ।
बिना काज बकवाद करत है रार बतानी ठानी ॥
मारों कंस करोड़ धरनि में भू को भार उतारौं ।
अपने पति सों कहा डरावत छिन में याही मारौं ॥४०॥

नागनी वचन

दोहा

ऐसे जो तुम ढीट हो, आपुहिं लेव जगाय।
मात पिता भ्राता लला, मर जैहें पछताय ॥ ४१ ॥
पांच बरस को सात को, आगे तोकों होन।
अबहू ना फिर जाय तू, यह सुख भोगै कौन ॥ ४२ ॥

वार्तिक

यह सुन श्याम सुंदर ने क्रोधित होय कालिया को लात मार दबाय दीन्हो ॥ ४३ ॥

पद

झिरकि कै नारी दे गारी गिरधारी, तब पूंछ पर लात दे अहि जगायो।
उठयो अकुलाय डरपाय खिसराय, कै देखि बालक गर्व अति बढ़ायो ॥
पूंछ राखी चापि रिसनि काली कांपि, देखै सब सांपि औसान भूले।
पूंछलीनी झटकि धरनीसो गहिपटकि, फुंकरेउ लटकि धरि धरिक्रोधफूले
करत फन घात विष जात अतुरात, अति नीर जरिजात नहिं गात परसै।
सूरके प्रभु श्याम लोकाभिराम बिनु, जान अहिराज विषज्वाला बरसै ४४

लालजी वचन

पद

इन को लै बृज लोक दिखाऊं ॥ टेक ॥
कमल भार इनहीं पर लादौं, इन को आप जनाऊं।
मात पिता अतिहीं दुख पावत, कालिय लै बृज ऊपर धाऊं ॥
कमल पठाय देहुं अबही नृप, राजहि दाव दिखाऊं।
सूरदास प्रभु की यह बानी, बृज बासिन को दुख बिसराऊं ॥४५

पद

उरगनारि सब कहति परस्पर, देखहु बालक की बात ॥
विष ज्वाला जल जरत यमुनाको, याको तनलागत नहीं तात॥
यह कछु यंत्र मंत्र है जानत, अतिही सुन्दर कोमल गात॥

यहि अहिराज महाविष ज्वाला, कितने करत सहस्र फन घात॥
छुवत नहीं तन या के विष कहुं, अबलों बच्यो पुण्य पितु मात॥
सूर श्याम सो दाव बतावों, काली अंग में लपटत जात॥४६

पद

उरग लियो हरि को लपटाई ॥टेक॥
गर्व बचन कहि कहि मुख भाषत, मोको नहिं जानत अहिराई।
लियो लपेट चरन ते सिखलों, अति यह मोसों करी ढिठाई।
चांपी पूंछ लुकावत अपनी, युवतिन को नहिं सकत दिखाई।
प्रभु अन्तरयामी सब जानत, अबगारो यह सकुच मिटाई।
सूरदास प्रभु तन विस्तारेउ, काली विकल भयो तब जाई।४७

पद

जबहि श्याम तन अति विस्तारेउ ॥टेक॥
पटपटात टूटत अंग जान्यो, शरण २ अहिराज पुकारेउ।
यह बानी सुनतहि करुणा भये, तबही गये सकुचाई।
यहै बचन सुनि द्रुपद सुता सुख, दीनों बसन बढ़ाई।
यहै बचन गजराज सुनायो, गरुड़ छांड तहं धाये।
यहै बचन सुनि लाक्षा ग्रह में, पांडव जरत बचाये।
यह बानी सहि जात न प्रभु सों, ऐसे परम कृपाल।
सूरदास प्रभु अंग सकोरेउ, व्याकुल देख्यो व्याल ॥४८॥

पद

नाथत व्याल बिलंब न कीनो ॥टेक॥
फरसों चांपि छोचि बल तोरेउ, फोरि नाक करसों गहि लीनो।
कूदि चढ़े ताके माथे पर, काली करत बिचार।
श्रवणहि सुनी रही यह बानी, बृज ह्वै हैं अवतार।
तेई अवतरे आय गोकुल में, मैं जानी यह बात।
अस्तुति करन लाग्यो सहसहु मुख, धन्य धन्य जग तात।
बार बार कहि शरण पुकारे, राखि राखि गोपाल।

सूरदास प्रभु प्रगट भये जब , देखो व्याल बिहाल ॥४८॥

पद

देखि दरश मन हरष भयो ॥टेक॥

पूरन ब्रह्म सनातन तुमहि वृज, कृष्ण अवतार लयो ।
श्री मुख कहेउ अजहूं लो तुम नहिं जान्यो वृज अवतार ।
और कौन जो तुम सो बचि है, सहस फननि के भार ।
अन जानत अपराध किये बहु, राखि शरण मोहि लेहु ।
सूरदास प्रभु धनि मेरे फन , चरन कमल जे देहु ।४६।

अस्तुति काली नाग की

लावनी

जग अधम योनि मम जनम करम अति खोटे ।
धनि है अब श्री वृज नाथ जू मोहि अगोटे ॥
जिहिं पग सों पाहन रूप अहिल्या तारी ।
सोई पद परसन को आज नाथ ममवारी ॥
जिन हाथन दनुजन हते परम पद दीन्हो ।
सोइ कर कमलन सों नाथ नाथ मोहि लीन्हो ॥
जोइ नटवर रूप अनूप न सुनि मन आवे ।
सोई राजत मम सिर आज लोक सब ध्यावे ॥
जिन मिलन लागि वसुदेव देवकी धाये ।
जिनके हित जसुदा नंद कष्ट बहु पाये ॥
जिन लाग मुनी सब त्याग तपत तप गाढ़े ।
सोई आय आज अनयास सीस पर ठाढ़े ॥
नागिन अरु मोसौं चूक परी बिन जानै ।
अबही त्रिभुवन के नाथ तुम्हैं पहिचानै ॥
अब क्षमहु नाथ अपराध व्याध निरवारो ।
निज दास जान हरिदास त्रास सब सारो ॥५०॥

श्री कृष्ण बचन

दोहा

अरे उरग अब तोहि पै, करि हौं कृपा अनेक।
भक्त लागि संकट सहौं, यह है मेरी टेक ॥५१॥
छांड़ि जमुन जल जाहु अब, रमणक दीप मझार।
मो सुमरन ते होहिंगे, पाप तोर जरु छार ॥५२॥

वार्तिक

यह सुनि कालिया प्रसन्न भयो, तब नागनी बोली ॥५३॥

स्तुति नागनी की

पूर्वी

दुइ कर जोर भुजंगन नारी जय जय करत पुकार हो।
तुम दीनन के नाथ महा प्रभु हम अबला निरधार हो।
छमहु सकल अपराध हमारे सुन के दीन पुकार हो।
कृपा बड़ी या उरग पै कीन्ही सोध्यो सब परिवार हो।
योनि अधम हम सब बड़े पापी भूलहु चूक हमार हो।
कृपा करी प्रहलाद उबारेउ प्रगटे खंभ को फार हो।
कृपा करी गजराज छुड़ायो ग्राह तुरत ही मार हो।
कृपा करी तुम द्रुपद सुता पै अंबर कीन्ह पहार हो।
कृपा करी पांडू सुत राखे जर जाते वै छार हो।
कृपा करी नँद नंद कहाये किये दनुज उद्धार हो।
वाहि कृपा करो हमरे ऊपर सुन हरिदास गुहार हो ॥५४॥

वार्तिक

यह स्तुति सुन लालजी महाराज प्रसन्न होय बोले, अब मैं तुम्हारो सब अपराध क्षमा कीन्हो, यह कहि काली को नाथ के बाहर निकसे ॥५५॥

पद

आवत उरग नाथे श्याम ॥टेक॥
नंद यशोदा गोप गोपन, कहत हैं बलराम ॥

मोर मुकुट विशाल लोचन, श्रवन कुंडल लोल ॥
कटि पीताम्बर वेष नटवर, नटत फण प्रति डोल ॥
देव दिवि दुंदुभि बजावत, सुमन गन बरषाय ॥
सूर श्याम बिलोकि ब्रज जन, हरष मनहि बढ़ाय ॥५६॥

वार्तिक

जल से बाहर नाग के फन पर नृत्य करते करते श्री महाराज निकसे, उन की शोभा देख संपूर्ण बृज बासियों के चित्त हरे भरे हो गये ॥५७॥

राग काफी

काली के फनन ऊपर निर्तत गोपाल लाल अद्भुत छवि कही न जाय त्रिभुवन मन मोहे ॥ तताथेई २ करत हरत सब के चित्त जात गात सुर नर मुनि जन चित्र लिखे सोहे ॥ रुनक झुनक नूपुर धुन उठत २ पैजनी पग ठुमक ठुमक किंकिनी कटि बाजत चित्त करखे ॥ विद्याधर किन्नर गधर्व जहां उछटत गत जय जय जय भाषत सुख धू पुष्प बरखे ॥ ज्यों ज्यों फन ऊंचे करत त्यों त्यों कृष्ण मारे लात देत न अवकाश प्रभु नाचत गति धीमें ॥ तरुन वदन गरल वमन सरल किये या विधि कर लटक लटक लटकत पग ललित रंग भीने ॥ नारदादि शिव विरंच तज प्रपंच धरत ध्यान ताको पग दुर्लभ सोई उरग सीस धारे ॥ विद्याधर प्रभु दयाल तन विवाद कियो निहाल काली तेरे धन्य भाग बिसरत न बिसारे ॥५८॥

पद

ताडं गति मुंडन पर निर्तत बन माली ॥
पं पं पं पग पटकत फं फं फं फनन ऊपर, विं विं विं बिनती करत नाग बधू आली ॥ सं सं सं सनकादिक नं नं नं नारदादि गं गं गं गंधर्व सभी देत ताली ॥ सूरदास प्रभु की बानी किं किं किं किहु न जानी, चं चं चं चरन धरत अभय भयो काली ॥५९॥

पद

सब बृज यमुना के तीर ।।टेक।।
काली नाग के फन पर निर्तत , संकर्षन को बीर ।
लाग गात थेई थेई कर उघटत , ताल मृदंग गंभीर ।।
प्रेम मगन गावत गन गंधर्व, व्योम विमाननि भीर ।।
उरग नारि आगे भइ ठाड़ी , नैननि ढारति नीर ।।
हम को दान देहु पति छांड़हु, सुन्दर श्याम शरीर ।।
आये निकस पहिर मनि भूषण , पीत वसन कटि चीर ।।
सूर श्याम को भुज भरि भेटत, अंकम देत अहीर ।।६०।।

पद

जै २ धुनि अमरन नभ कीनो ।।टेक।।
धन्य धन्य जगदीश गुसांई , अपनो करि अहि लीनो ।।
अभय कियो फन चिन्ह चरन धरि, जानि अपनो दास ।।
जलते काढ़ि कृपा करि पठयो , मेटि गरुड़ को त्रास ।।
अस्तुति करि अहिपति कुटुम्ब लै , चल्यो आपने लोक ।।
सूर श्याम मिलि मात पिता को, दूरि कियो तन शोक ।।६१।।

पद

लीन्हो जननी कंठ लगाई ॥ टेक ॥
अंग पुलकित रोम गद गद, सुखद आंसु बहाई ।।
मैं तुमहि बरजति रहों हरि , यमुन तट जिन जाय ॥
कंस कमल मंगाइ पठये , तात गये डराय ॥
मैं कहेउ निशि सपन तोसों, प्रगट भई सुआय ।।
तात तू असुगुन जो देखे , सोउ प्रगट लखाय ॥
ग्वाल संग मिलि गेंद खेलत, आये यमुना तीर ॥
काहु लै मोहि डार दीन्हो , कालिया दह नीर ।।
यह कही तब उरग मोसों, किनि पठायो तोहि ।।
मैं कही नृप कंस पठयो, कमल कारन मोहि ।।६२।।

यह सुनत डरि कमल दीनो, मोहि लियो चढ़ाय ॥
सूर यह कहि जननि बोधो, देख्यों तुमही आय ॥६२॥

पद

वृज वासिन सों कहत कन्हाई ॥टेक॥
यमुना तीर आजु सुख कीजे, यह मेरे मन आई॥
गोपनि सुनि अति हरष बढ़ायो, सुख पाई नंदराई।
घर घर ते पकवान मंगाये, ग्वालनि दियो पठाई ॥
दधि माखन षट रस के भोजन, तुरतहिं ल्याये जाई॥
मात पिता गोपी ग्वालनि को, सूरज प्रभु सुखदाई॥६३॥

इति

अथ धुंधक राक्षस वध

दोहा

कालिंदी जल सों हरी, कियो कालिया दूर।
वृजवासी तट जमुन के, भये प्रेम के चूर॥१॥
गावत खेलत हंसतहीं, दीन्हो दिवस बिताय।
निशि को वाही ठौर पै, दीन्हो बास कराय॥२॥

वार्तिक

यह वृत्तान्त सुन कंस ने विचार कियो, जा समय सिगरे वृजवासी श्याम बलराम समेत मारो चाहिये, निद्रा सों उठि राक्षस बुलाय बोल्यो ॥३॥

पद

दनुज दया करि कारज सारो ॥टेक॥

या बिरियां सिगरे बृज बासी, जमुना तट पै लीन्ह उतारो ॥
कौनहु भांति अबहीं तहां जाके, नंद सुत सहित सबन को मारो।
मानहुंगो हरिदास बड़ो जस, जो करिहौ जो काज हमारो ॥४॥

वार्तिक

यह सुन धुंधक राक्षस बोल्यो ॥५॥

पद

जो कारज राजा मो लायक ॥टेक॥
सकल सुलभ है स्वामी तुम को, जिसके हैं हम सिगरे पायक॥
अबहीं जाय जराउं सबन को, देखो तिनको कौन सहायक॥
वाही करूं हरिदास छिनक में, जो होवें मम प्रभु सुखदायक॥

वार्तिक

यह कहि तुरंत जमुना तट जाय जहां बृजवासी सोये थे वाके चहुंओर आग जलाय दीन्हीं ॥७॥

दोहा

दावानल अति क्रोधकर, लियो चहूंदिस घेर।
उठी अनल ज्वाला प्रबल, मानो अचल सुमेर ॥८॥
जरन लगे तरु पशु विहंग, धुंध मची चहुंओर।
आंधी अंबर लो बड़ी, दिसे न काहुय छोर ॥९॥
घबराने सुध बुध उठी, सब मिल कीन्ह पुकार।
दुख भंजन श्री कृष्ण जी, अब सुध लेहु हमार ॥१०॥

रेखता

अब राख लेहु लाला, बृजबाला गोप ग्वाला।
तुव मात पिता भाई, बन्धु होत हैं बिहाला ॥१॥
यह आग फैली चारों दिस, राह ना दिखावे॥
तुव बिन कृपाल प्यारे, अब को हमैं बचावे ॥२॥
सब जीव जंतु बन के, ज्वाला में जरे जावें।
धुंवा धार अंधकार, मोहि कोऊ ना दिखावें ॥३॥

हरिदास ह्वै हैं तुम्हरी सब शरण लाज राखो ।
कीन्ही सदा सों सांची जो गर्ग मुनी भाखो ॥४॥११॥

लाल जी वचन

दोहा

आंख मूंदि बैठो सबै, कुसै आनल क्षण मांह ।
मैं हूं तो पकरत हूं, लेहु पकर मोहि बांह ॥

वार्तिक

यह सुन सबने आंख मूंदि लीन्ही, तब लाल जी सब अग्नि को अपने मुख में पान करि अरु राक्षस को मार डाल्यो ॥१३॥

दोहा

अब सब आंखें खोल के, देखहु जमुना नीर ।
वाही में सगरी अगन, गई समाय अधीर ॥१४॥

वार्तिक

यह देख सब बृजवासी अति प्रसन्न भये ॥१५॥

लावनी

कबलों बहु शोक समूह लोभ लपटावै ।
भव को दृढ़ बंधन मोह मती भरमावै ॥
धरि मेरो तेरो ध्यान कुमारग गामी ।
नित सेवत हैं संसार मलिन खल कामी ॥
नहिं नेक विषय विष बास आस तजि आवै ।
अपनो अपनो करि आपुहिं आपु नसावै ॥
घर संपति मित्र बिनाशहु को भय जोलौं ।
भय हरण प्रभू के चरण शरण नहिं जोलौं ॥
प्रभु के पद पंकज प्रेम करो चित देई ।
कलि के मल को बिनसाइ परम फल लेई ॥
वह है सब तीरथ रूप जगत के पावन ।

निज सेवक को दुख मेटि त्रिताप नसावन ॥
वहि प्रणत पाल संसार समुद्र की तरनी ।
जिहि शिव शंकर अज सेइ करैं बड़ि करनी ॥
नहिं कोनउ भांति अराम जगत में जोलौ ।
भय हरण प्रभू के चरण शरण नहिं जोलौ ॥
जिन धार विविध अवतार भार भुवि हारो ।
नृप दशरथ के सुत होइ दशानन मारो ॥
मृग माया को मारीच लख्यो रघु केतू ।
पछया धनु को संधान फिरे तिय हेतू ॥
अपने पितु को पन राखत जो बिनु सोचू ।
निज काज राज परिवार लखै निज सोंचू ॥
भव भ्रमना सो अनमना रहैगो जोलौ ।
भव हरण प्रभू के चरण शरण नहिं जोलौ ॥
भये भक्त हेत बृज प्रगट होय नंद नंदन ।
दीन्हो नृप कंस पछार सकल सुर बंदन ॥
राधा संग कीन्हो रास त्रिया गउ जोरी ।
दधि माखन के मिस गोपिन के चित चोरी ॥
नख गिरि गोवर्धन धार नाग नल नाथ्यो ।
सुर राज त्यागि सब काज नवायो माथो ॥
भव त्रास नास हरिदास होय नहिं जोलौ ।
भव हरण प्रभू के चरण शरन नहिं जोलौ ॥१६॥

इति

अथ केशी वध लीला

दोहा

तृनावर्त अरु पूतना , सकटासुर बलवान ।
कागासुर को मार के , छार किये भगवान ॥१॥

पद

जो जो जाय मार तेहि डारे, कंस रजा मन विस्मय भारी ।।टेक।।
सभा जोरि सब बीरन की नृप , हाथ उठाय कहै ललकारी ॥
कहो कौन योधा अबजाई, नंद सुवन धरि लावे मारी ॥
मान करों धन देहों वाको , करि देहों हरिदास सुखारी ॥ २

वार्तिक

यह वचन सुन केशी दैत्य उठि बोलो ॥३

पद

गोकुल जाऊं मिले मोहि बीरा ॥ टेक ॥
कहो मारों जीवत धरि लाऊं , पूत जसोदा अरु बलबीरा ॥
बिन कीन्हे कारज नहि लौटों , श्री महाराज धरो तुम धीरा॥
प्रण करि के हरिदास चलो यह, जा पहुंचो जमुना के तीरा॥४

वार्तिक

जहां नंदलाल अरु बलदाऊ सखों के संग खेलि रहे, तहां पहुंच के बालक रूप होय खेलिवे लग्यो, लालजी ताको आगमन जानि गये अरु ताको अपनी जोड़ी बनायो ॥५॥

छंद

धाय मिल्यो कोई रूप निशाचर , हलधर सेन बताय ।
मन मोहन मन ही मुसकाने , खेलत फूल जनाय।
द्वै बालक बैठारि सामने , खेल रच्यो बृज खोरि ।
और सखा सब छोरि२ ठाढ़े, आप दनुज संग जोरि।६

वार्तिक

दोनों सयाने बालकों के सामने फूल चिन्हायवे लगे अरु यह प्रण ठहरायो, जो हारे सो अपने सखा को पीठ चढ़ावे ॥७॥

छंद

फूल को नाव जनावन लागे, हरि कहि दियो अंभोर.
कंध चढ्यो जिमि सिंह महाबल , तुरतहिं बीच निहोर॥८॥

वार्तिक

राक्षस रूप बालक को हराय लाल जी ताके ऊपर तीनों लोक को भार देय चढ़ि बैठे॥९॥

छंद

तब केसी हयवर वपु काटो , ले गयो पीठ चढाय।
उतर हरि ता ऊपर ते , कीन्हो युद्ध अघाय।
दाव घाव सब भांति करतु है, तब हरि कान मरोरी।
धरके पीठ असुर की कर तें, दीन्हो धरनि पछोरी।
बहुरि फेर असुर गहि पटक्यो, शब्द उठो आघात।
चौंकि परो कंसासुर सुनि के , भीतर चलो परात।१०।

रेखता

केसी के केश धरिके हरि ताहि को पछारो।
धरनी पै धरिके पटक्यो जिमि गरुड़ सांप कारो।
घन घोर शब्द करके छोड़े है ताने प्राना।
नहिं काम कोई आवे छल बल प्रकार नाना।
सुनके डरानो भूपति पत जान सबै खोई।
नहिं चैन रैन दिन में मन माहिं उठ्यो रोई।
समझावे सभा वारे कहि कहि कथा पुरानी।
तिनकी सलाह भूपति उर नेक न समानी।
बोल्यो अधीर होके दुई नंद के जे बारे।
हरिदास मोहि दीसे जनु ब्याल छौना कारे।११।

पद

और सखा सब रोवत धाये ॥टेक॥

धाये नंद यशोदा धाई, नित प्रति करत गुहार बनाये ॥
ग्वाल रूप संग खेलत हो इक, ता ऊपर चढ़ि श्याम पराये ॥
कौन आहि सो हम ना जाने, खेलत रहो बड़ो सुख पाये ॥
सुनि हरिदास डरे बृजबासी, अपने अपने देव मनाये ॥१२॥

वार्तिक

राक्षस को मारवे पीछे श्याम अरु बलराम को साथ छोड़ सब सखा बृज की ओर भगे.

इतने में श्री कृष्ण हू खेलते खेलते आय पहुंचे उन्हे देखि सब के शरीर डह डहे होइ आय माता गोद में लाय पूछवे लगी, तब लाल जी बोले ॥१३॥

रेखता

इक ग्वाल आइ बन में फूल जानिवो खिलावो ।
वह हारि गयो मोको तब पीठ पै चढ़ायो ॥
मुहि लेइ के अकेलो आकाश को उड़ानो ।
तहं काहू ताने कीन्हो मैं नाहिं मात जानो ॥
पुनि आपही उतारि मोहि आय पड़ो धरनी ।
डरप्यो मैं आज भारी लखि वा सखा की करनी ॥
कुल देव कीन्ही दाया तिहिं पास ते उबारो ।
हरिदास हो हुलास मात उर लगायो प्यारो ॥१४॥

पद

यशुमति बूझति है गोपालहि ॥टेक॥

सांझहि की बिरिया भई सबिरी, मैं डरपति जंजालहि ॥
जब ते तृनावर्त बृज आयो, तब ते मो जिय शंक ॥
नैननि ओट होय पलकों में, मन मन करति अशंक ॥
यहि अंतर बालक सब आये, नंदहिं करत गोहारि ॥

सूर श्याम को आय कवन धौं, लै गयौ कांधे डारि ॥१५॥

जसोदा वचन

पद

खेलन दूरि जात कत प्यारे ॥टेक॥

जब ते जन्म भयो है तेरो, तबही ते यहि भांति ललारे ॥
कोउ आवत युवति मिस करिके, कोऊ लेजात बताम कलारे ॥
अब लग बचे कृपा देवनि की, बहुत गये मरि शत्रु तुम्हारे ॥
हा हा करति पाय तेरे लागति, अब जनिदूरि जाहु मेरेबारे ॥
सुनहु सूर यशुमति सुत बोधति, विधि के चरित सबै हैं न्यारे ॥१६

पद

आजु कन्हैया बहुत बच्योरी ॥टेक॥

खेलत रहेउ घोष के बाहर, कोऊ आयो शिशु रूप रच्योरी ॥
धर्म सहाय होत है जहं तहं, श्रम कोर पूरब पुराय बच्योरी ॥
सूर श्याम अब के बचि आये, वृज घर घर सुख सिंधु मच्योरी ।१७

छंद

कोई विवेकि बड़े बसि के बन अंबुज लोचन ध्यान धरे ॥
धाम वही सिगरे सत को, अस जानि नहीं मन दूर करे ॥
नाव बना तिनके पग की, नहिं काहुय जानत तार परे ॥
ताहि गहै हरिदास ह्वै सम, गो पद के भव सिंधु तरे ॥१८

छंद

जे जग के उपकारक ते तुम्हरे पद पंकज की तरनी ।
धाय चढ़े भव दुस्तर सिंधु तरे फल भूत करी करनी ॥
छांडि गये वहि को सब के हित या कलि के मल की हरनी ।
भक्त हितू प्रभु के चरनों हरिदास धरे सिरको धरनी ॥ १९ ॥
ध्वज वज्र सरोरुह अंकुश अंकित है अति कोमल रंग सनै ।
अरुनाइ लसै अंगुली मुख पै नख की द्युति मानहु लाल कनै ॥
इनकी जु प्रभा प्रविसे उर में तबही तुम भीरु अंधेर हनै ।

अस वैभव जानि प्रभु पद को नितही सुमिरो हरिदास भनै ॥२०॥

॥इति॥

अथ पनघट लीला

दोहा

एक समय ब्रज गोपिका, जल जमुना के काज।
गई सीस घागर धरे, पट भूषन बहु साज ॥ १ ॥
देखे नँद नन्दन तहां, ठाड़े जमुना तीर।
नटवर रूप विशाल है, सुन्दर बरन शरीर ॥ २ ॥

वार्तिक

उनकी छबि देख दूर से ही परस्पर कहिवे लगीं ॥ ३ ॥

रेखता

चटकीलो पीलो पटको लपटाय अपने कट में।
जमुना के तट पै नागर नट ठाड़ो बंसी बट में ॥ १ ॥
भुंव की मरोर मटकन कुंडल की कानों चटकन।
कर लीन्हे लकुट कंचन माथे पै मुकुट लटकन ॥ २ ॥
द्रुम डार टेक ठाड़े बनमाल गरे डारे।
मुसक्यान माधुरी सी चित को चुराय मारे ॥ ३ ॥
खौरी सुरंग केशर कुसुमन की माल सोहै।
अभिराम कंठ कंचन की दुलरी मन को मोहै ॥ ४ ॥
सब भांति सों मनोहर मुरली में मीठि तानें।
गावैं सुनावैं ग्वालन हरिदास रस में सानें ॥ ५ ॥

रेखता

कान्हा मुरली टेर लगावे, इहि विधि ब्रज वाल रिझावै ॥१

वह नटवर भेष बनाये, जमुना के पुलिन सुहाये ॥ २ ॥
बंसी की टेर लगावे, नित बन मृग निकट बुलावे ॥३
ब्रस को जो जमुना जावे, इनकी छवि जो न भुलावे ॥४
जल के मिस धावत नारी, हरि दास टरें ना टारी ॥५ ॥५॥

सखी वचन

पद

पनघट रोकहि रहत कन्हाई ॥टेक॥
यमुना जल कोउ भरन न पावत, देखत ही फिर जाई।
तबहि श्याम एक बुद्धि उपाई, आपुन रहे छिपाई।
तट ठाढ़े जे सखा संग के, तिनको लिये बुलाई।
बैठारे ग्वालिनि को द्रुम तर, आपुन फिर फिर देखत।
बड़ी बेर भई कोउ न आई, सूर श्याम मन लेखत।६।

पद

युवति इक आवत देखी श्याम ॥टेक॥
द्रुम की ओट रहे हैं आपुन, यमुना तट गई बाम।
जल हिलोर गागरि भरि नागरि, जबही शीश उठायो।
घर को चली जाय ता पीछे, सिर ते घट ढरकायो।
चतुर ग्वालि कर गहेउ श्याम को, कनक लकुटिया पाई।
औरनि सों करि रहे अचगरी, मोसों लगत कन्हाई।
गागरि ले हँसि देत ग्वालि कर, रीतो घट नहिं लैहौं।
सूर श्याम ह्यां आनि देहु भरि, तबहि लकुट कर देहौं ॥७

घट भरि देहु लकुट तब देहौं ॥टेक॥
हमहूं बड़े महिर की बेटी, तुम को नहीं डरैहौं।
मेरी कनक लकुटिया हेरी, मैं भरि देहौं नीर।
बिसरि गई सुधि तादिन की तोहिं, हरे सबन के चीर।
यह बानी सुन ग्वारि बिबस भई, तनकी सुधि बिसराई।
सूर लकुट कर गिरत न जानी, श्याम ठगोरी लाई ॥८॥

पद

घट भरि दियो श्याम उठाई ॥ टेक ॥
नेकु तनकी सुधि न ताही , चली ब्रज समुहाई ॥
श्याम सुन्दर नयन भीतर , रहे आनि समाई ॥
जहं जहां भरि दृष्टि देखे , तहां तहां कन्हाई ॥
उतहि तें इक सखी आई , कहत कहा भुलाई ॥
सूर अबही हंसत आई , चली कहां गवांई ॥९॥

ग्वालिनी वचन

पद

अरी हो श्याम मोहनी घालीरी ॥टेक॥
अबहि गई जल भरन अकेली, नन्द नन्दन दृष्टि मेरी परे आली, फिरि चितवनि उर सालीरी ॥ कहारी कहों कहुं कहत न बनि आवै, लगी मरम की भालीरी ॥ सूरदास प्रभु मन हर लीन्हो, बिबस भई हों कासों कहों यह आवेरी ॥१०॥

पद

सुनत बात यह सखि अतुरानी॥टेक॥
वाहि बांह गहि घर पहुंचाई, आपु चली जमुना के पानी।
देखे आय तहां हरि नाहीं , चितवत जहां तहां बितरानी।
जल भरि ठिठुकत चली घरहि तन, बारबार हरि को पछितानी।
ग्वालिनि विकल देख प्रभु प्रगटे, हरषि भयो तन तपति बुझानी।
सूरदास अंकम भरि लीन्ही , गोपी अंतरगति की जानी॥११॥

अपर सखी बचन

पद

मिलि हरि सुख दियो तेहि बाला ॥टेक॥
तपति मिट गई प्रेम छाकी , भई सबे बेहाला।
मग नाहीं डग भरत नागरी , भवन गई भुलाई।
जल भरने ब्रज नारि आवत , देखि ताहि बुलाई।

जात कित है डगर छांड़े, कहेउ इत को आई।
सूर प्रभु के रंग राची, चितै हरि चितलाई।१२।

वार्तिक

याको हाल देख अपर सखी पूछवे लगी।१३।

पद

काहू तोहि ठगोरी लाई॥टेक॥
बूझत सखी सुनत नहि नेकहु, तुही किधौं ठग भूरी खाई॥
चौंकि परी सपने जनु जागी, तब बानी कहि सखिन सुनाई॥
श्याम बरन इक मिल्यो ढिटौना, तेहि मोको मोहनी लगाई॥
मैं जल भरे इतहि को आवत, आनि अचानक अंकम लाई॥
सूर ग्वालि सखियन के आगे, बात कहत सब लाज गंवाई॥१४

पद

नेक न मन ते टरत कन्हाई॥टेक॥
इक ऐसेहि थकि रही श्याम रस, ता पर यहि यहि बात सुनाई॥
याको सावधान करि पठिवो, चली आपु जलको अतुराई॥
मोर मुकुट पीताम्बर काछे, देख्यो कुंवर नन्द को जाई॥
कुंडल झलकत ललित कपोलन, सुन्दर नयन कपोल सुहाई॥
कहेऊ सूर प्रभु य ढंग सीखे, ठगत फिरत हो नारि पराई॥१५

पद

कहा ठगो तुम्हरो ठगि लीन्हो॥टेक॥
क्यों नहिं ठग्यो और को ठगिहौं, औरहि के ठग तुमको चीन्हो।
कहौ नाम धरि कहा ठगायो, सुनि सखी यह बात।
ठग के लच्छण मोहि बतावहु, कैसे ठग की घात।
ठग लच्छण हम सों जू सुनिये, मृदु मुसकनि मन चोरत।
नैन सैन दे चलत सूर प्रभु, अंग त्रिभंग करि मोरत॥१६॥

वार्तिक

इतने में लालजी हू तहां आन पहुंचे, अरु सखी बचन

सुन के बोले ॥१७॥

सखी को उत्तर

रेखता

अतिही करोहो कान्हा तुम आय अचगरी।
जमुना पै नितहि आके रोको हमारी डगरी॥
काहू की छिपके छिपके छीनोहो छल सों गिंडरी।
काहू के पीछे परके डारो हो फोरि गगरी।
भरने जु देहु जमुना जल छांड़ो लाल लंगरी।
सब घाट बाट देख तुम्हे आवें बाला सगरी॥
पैंडे न चलन पावे कोई बार भीत डगरी।
हरिदास दीजो गारी जब आवे तुम्हरी बगरी॥१८॥

वार्तिक

यह सुन श्याम सुन्दर ने खिसिआय के इंडरी छीन लीन्ही तब सखी बोली॥१९॥

पद

नीके देहु न मेरी इंडुरी॥टेक॥
लै जैहैं धरि यशुमति आगे, आवहुरी सब मिलि इक झुंडरी।
काहुय नहीं डरात कन्हाई, बाट घाट नित करत अचगरी।
जमुना पर इंडुरी फटकारी, फोरी सब मटुकी अरु गगरी।
भली करी यह कुंवर कन्हाई, आजु मेटि हैं तुमरी लंगरी।
चली सूर यसुमति के आगे, उरहन ले तरुनी वृज सगरी।२०

पद

आनि न देहु ढिटोना ढोटा इंडुरी पराई॥टेक॥
तेरो कोऊ कहा करेगो, लरिहैं हम सों बहिनी भाई।
मेरे संग की और गई ते, जल भरि धरि घरतें फिरि आई।
सूर श्याम इंडुरी दीजे न तो, जसुमति सों हम कैहैं जाई॥२१

वार्तिक

यह सुन लालजी कदम पर चढ़ि गये ॥२२॥

पद

आपुन चढे कदम पर धाई ॥टेक॥

बदन सकोर भौंह मोरत है, हांक देत करि नन्द दुहाई ।
जाय कहो मैया के आगे, लेहु सबै मिलि मोहि बंधाई ।
मोको ज्वरि मारन जब आई, तब दीन्ही इंडुरी फटकाई ।
ऐसे करि मोको तुम पायो, मानो इनकी मैं करों चराई ।
सूर श्याम वो दिन बिसराये, गंव बांध ते ऊखल लाई ।२३।

वार्तिक

यह हाल देख सखी बोली ॥२४॥

पद

यहांई रहो तो बदौं कन्हाई ॥टेक॥

आपु गई जसुमतिहि सुनावन, दै गई श्यामहि नन्द दुहाई ।
महरि मथत दधि सदन आपने, यहि अन्तर युवती सब आई ।
चितै रही युवतिन को आवत, कहां आवती भीर लगाई ।
मैं जानत इनको हरि खिझई, तातें सब उरहिन लै धाई ।
सूरदास रिस भरी ग्वालनी, ऐसो ढीट कियो सुत माई ॥२५॥

उराहनो

सुनहु महरि तेरो लाड़लो, अति करत अचगरी ॥
जमुन भरन जल हम गई, तहां रोकत डगरी ॥
सिर में नीर ढराय दे, फोरी सब गगरी ॥
गिंडरी दई फटकार के, हरि करत है लंगरी ॥
नित प्रत ऐसेहि ढंग करे, हम सों कहै धगरी ॥
अब बस बास नहीं बने, यह तुव ब्रज नगरी ॥
आपु गयो चढ़ि कदम पै, चितवत रहीं सगरी ॥
सूर श्याम ऐसी सदा, हम से करै झगरो ॥२६॥

रेखता।

सुत कों जो बरज राखो, तुम महरि बात मानो।
हम सों कहो खिझावो तुम वाके गुण न जानो॥
नित गोप गाय लेके, रोके हैं हमरी डगरी।
कहुं अंत जा बसेगें, अब छांड़ तोरी नगरी।
अबहीं जू जाय देखे, जमुना के तीर ठाड़ो।
तुम सों बतात सकुचे, जो काम करे बाड़ो।
घट सीस सों पटक के, अटकावे बीच मग में।
चोली के बंध टोरे, नहिं लाज वाहि जग में।
अब कोई भांति जसुधा, हमरो निबाह नाहीं।
हरिदास हारे हम सब, बिन मोल जा बिकाहीं।२७।

जसोदा बचन

पद

कहा कहों मोसौं कहौ तुमहीं॥टेक॥
जो पाऊं तो तुमहिं दिखाऊं, हा हा करें तबहीं।
तुमहू गुन जानत हो हरि के, ऊखल बांधे जबहीं।
साठी ले मारन जब धाई, तब बर्जो तुम सबहीं।
सूर श्याम के हाल करों सो, देखोगी तुम अबहीं।२८।

दोहा

इहि बिधि युवतिन बोध दे, पहुंचाई निज गेह।
बार बार सुत गुनन को, सुमरै सुकुच सनेह।२९।
इत तें युवती जात में, मिल गये आवत श्याम।
देखि देखि मुख लाल को, मुसकुरात सब बाम॥३०॥

सखी बचन

दोहा।

जाव लाल जल्दी घरै, टेरत है तुव माय।
अबहीं हम कर आइ सब, तुमरी बहुत बड़ाय॥३१॥

पद

सकुचत गये घर को श्याम ॥टेक॥
द्वारही ते निरख देखो, जननि लागी काम।
यहै बानी कहत मुख तें, कहां गये कन्हाई।
आपु ठाड़ जननि पाछे, सुने हैं चित लाई।
जल भरन युवती न पावै, घाट रोकत जाय।
सूर सब की फोर गागर, श्याम गयो पराय।२२।

दोहा

अरी रोहनी श्याम को, नेक न आवे लाज।
सिखवत सिखवत मैं थकी, नित प्रति करत अकाज॥२३

लालजी बचन मैया प्रति

रेखता

अति भोरी एरी मैया तू मोहि मार जाने।
नहिं देखे चरित उन के उनही की कही माने॥
गठ गठ के नई बातें मोहि कदम ते बुलावे।
झटकत में घट गिरावे पुनि खोर मोहि लगावे।
अपनी न देखें करनी नित लाइ के उराने।
अपनी कहै बनावे नित नई बुद्धि ठाने।
घर २ की बने रानी मोहि जाने अपनो चेरो।
कछु दोष नेकहू ना हरिदास मान मेरो॥२४॥

जसोदा बचन

पद

झूठे सुतहि लगावत खोर ॥टेक॥
जानत हौ उनके ढंगनिको, बातें मिलवत जोर।
वे योवन मद सब मदमाती, कहां मेरो तनक कन्हाई।
आपुहि फोर गागरी सिर तें, उरहन लै लै आई।
तू उन के ढंग जात कहति है, वे पापिनि सब नार।

सूर श्याम तू कहेउ मान अब, हैं सब ढीठ गंवार ॥३५॥

वार्तिक

यह सुन लालजी प्रसन्न होय फेरि खेलवे चले गये, अरु जमुना तट आय कदम्ब पर बैठे यह बात घर घर प्रगट भई। तब प्रियाजी हूं ने अपने प्राण प्यारे के मिलवे की इच्छा कीन्ही ॥३६॥

पद

राधा सखिन लई बुलाय ॥टेक॥
चलहु जमुना जलहि जैये, चलीं सब सुख पाय।
सखनि मिल इक कलश लीन्हो, तुरत पहुंची जाय।
तहां देखो श्याम सुन्दर, सुन्दरि मन हरखाय।
नन्द नन्दन देखि रीझे, चितै रहे चित लाय।
सूर प्रभु की प्रिया राधा, भरत जल मुसकाय ॥३७॥

पद

घरहि चलीं जमुना जल भरके ॥टेक॥
सखिन बीच नागरी बिराजत, भई प्रीत उर हरिके।
मंद मंद गति चलन अधिक छबि, अंचल रहेउ फहरिके।
मोहन को मोहनी लगाई, संगहि चले डगरिके।
बेनी की छवि कहत न आवे, रही नितंबनि ढरके।
सूर श्याम प्यारी के बश भये, रोम रोम रस भरके ॥३८॥

रेखता

गागर को सीस धारे पनघट तें नागर आवे।
ग्रीवा डुलाय मग में मोहन को मन चुरावे॥
गति है गयंद कैसी नैनों की सैन लावे।
छुटके चले रु मटके मुह मोरै भों चलावे॥
अंग अंग काम सेना फहरात जात अंचल।
कटि किंकिनी बजावे जब चालै चाल चंचल ॥३९॥

चंदन की भाल खौरी गल मोतियों की माला।
वेंदी जड़ाऊ सिर पै कानों में डोले बाला॥
पग पायजेब पायल जंजीर झुनक बाजे।
घट छलके मुख पै जल के बिन्दु शशी शोभा छाजै।
सखियों के बीच राधा रानी ऐसी शोभा धारे।
हरिदास लाल रीझै तृण तोर तोर डारे॥४०॥

प्रिया जी बचन सखी प्रति

पद

आली आन परो मेरी आंखन में ब्रजराज॥ टेक॥
वा छलिया छलि गो छण ही में, छोड़ दई सब लाज॥
गागरि सिर धर जात बने नहिं, अब जमुना जल काज॥
हाय दई कुल मान गई मेरो, काह करों रघुराज॥४१॥

सखी बचन प्रिया जी प्रति

पद

लागत चोर अली हठि राहन॥ टेक
मति जैयो सखि भरन जमुन जल, चोरत चित्त छोर गटि आहन॥ रहत सम्हार नेकु नहिं तनकी, नँद नन्दन चितवत चख चाहन॥ कहौं कहा रघुराज आपनी, वहि पेखत पिघलत है पाहन॥४२॥

प्रिया बचन

पद

आज करत पग अलिहि उमाहन॥ टेक
तनको तन में सुरत अहे नाहिं इक छण युग सौं मिलन उछाहन। कौन घरी ऐसी अली ऐहै, जामें हों पसारि दोउ बाहन।
श्री रघुराज श्याम को मिलिहों, कालहि कूंद कदम्ब की छांहन॥४३॥

वार्तिक

यह कहि सखियन के संग प्रिया जी लालजी के दर्शनों की अभिलाषा में आगे बढ़ीं, तहां लालजी दिखाई दीन्हीं॥ ४४

पद

सखियन बीच नागरी आवे, टेक।
छवि निरखत रीझे नंद नंदन, प्यारी मनहिं रिझावै।
कबहुंक आगे कबहुंक पाछे, नाना भाव बतावै।
राधा यह अनुमान कियो हरि, मेरे चितहि चुरावै।
आगे जाय कनक लकुटी लै, पंथ संवारि बतावै।
निरखत जहां छांह प्यारी की, तहं लै छांह छुवावै।
छवि निरखत तन वारि आपनो, नागरि जियहि जनावै।
ओढ़े उढ़नियां चलन दिखावत, इहि मिस निकटहि आवै।
बार बार सिरपर कर धरि धरि, अति अधीन ह्वै जावै।
सूर स्याम हंसे भावनि सों, राधा मनहि रिझावै। ४५।

पद

मेरी गैल न छांडो सांवरे, मैं क्यों करि पनघट जाऊंरी।
यहि सकुचनि डरपति रहो, मोहि धेरे न कोऊ नामरी॥
जित देखि तित देखियेरी, रसिया नंद कुमार।
इतउत नयन चुराय के, मोहि पलकनि करत जोहाररी॥
लकुट लिये आगे चलेहो, पंथ सवांरत जाय।
मोहि निहोरो लायके यह, फिरि चितवे मुसकायरी॥
यमुना जल भरि घागरी लै, जब सिर चली उचाय।
सो कंचुकी अंचरा उचै, मेरो हियरा ताकि ललचायरी॥
गागरि मारै कांकरि, सो लागे मेरे गात।
गैल मांझ ठाो रहे, मोहि पूछत आवत जातरी॥
हों सकुचनि बोलों नहीं, लोक लाज की संक।
मोतन छुइवै हरि चले, वह ताहि भरत है अकंरी॥

निकट आय मुख निरखि के, चितवै बहुरि निहारि ।
अब ढंग ओढी ओढ़नी, पीतांबर मो पर वारी ॥
जब कहुं लग लागे नहीं, तब वाकी ज्यों अकुलाय ।
तब हठि मेरी छांहसों, वह राखे छांह छुवावरी ॥
को जाने कित होत हैरी, घरन गुरजन सोर ।
मेरो ज्यौं गांठी बांध्यो, वा पीतांवर की छोररी ॥
अब लों सकुच अटक रही, अब प्रगट करो अनुरागरी ।
हिल मिल के संग खेलि हों, मान आपनो भागरी ।
घर घर ब्रजवासी सबे, कोऊ किन कहे पुकारि ।
गुप्त प्रीति प्रगट करो, कुल की कानि निवारिरी ।
जब लग मन मिलयो नहीं, नच्यो चोंप को नाच
सूर दास प्रभु मिलि रहे, सब करो मनोरथ सांचरी ।

वार्तिक

यह कहि रूपट के गृह की ओर सिधारी तब लालजी ने धर लीन्हों प्रिया बोली

पद

छोड़ देहु मेरी लट मोहन ॥ टेक ॥
कच परसत पुनि पुनि सकुचत नहीं, कत आई तजि गोहन ।
युवती आनि देख है कोऊ, कहति बंक करि भोहन ।
वार वार कहि वीर दोहाई, तुम मानत नहिं सोहन ।
इतने ही को सोह दिखावत, मैं आयो मुख जोहन ।
सूरश्याम नागरि बस कीन्हो, बिवस चली घर कोहन ।

पद

चली भवन मन हरि हर लीन्हों । टेक ।
पग द्वै जात ठठकि फिरि हेरति, जिय यह कहति कहा हरि कीन्हों ।
ग भूलि गई जेहि आई, आवत को नहिं पावत चीन्हों ।
सिर सिर करि खिझि खिझिके, लट झटकती श्याम भुजनि छु-

टकाय इन्हों । प्रेम सिंधु में मगन भई त्रिय, हरिके रंग भई अति लीन्हों । सूरदास प्रभु सों चित अटक्यो, आवतही इत उतहि पतीन्हों ॥

वार्तिक

या उपरांत लालजी ने प्रियाजी को गले लगाय लीन्हों, दूहू जन मग्न होय वन की ओर सिधारे, सखियां लौट घर को आई ॥

इति

चीर हरन लीला

पद

गौरी पति पूजत ब्रज नारि ॥टेक॥

नेम धर्म सो रहत क्रिया जित, बहुति करति मनुहारि ।
यहै कहति पति देउ उमापति, गिरिधर नंद कुमार ।
शरण राख लीजै शिव शंकर, तन तरसावत मार ।
कमल पहुप मातूल पत्र फल, नाना सुमन सुवास ।
महादेव पूजति मन बच करि, सूर श्याम की आस ।२

पद

शिव सों बिनय करति कुमारि ॥टेक॥

शीत भीतर जोरि कर मुख, अस्तुति करति त्रिपुरारि ।
वृत संयम करति सुंदरि, कृश भई सकुमार ।
छहू ऋतु तप करति नीके, गृह को नेह बिसार ।
ध्यान धरिकर जोरि लोचन, मूंदि एक एक याम ।
बिनय अंचल छोरि रवि सों, करति हैं सब बाम ।
हमहि होइ कृपाल दिनमनि, तुम बिदित संसार ।
काम अति तन दहत दीजै, सूर श्याम भर्तार ।२

पद

अति तप देखि कृपा हरि कीन्हो ॥टेक॥

तनकी जरनि दूर भई सबकी, मिलि तरुनिन सुख दीन्हो।
नवल किशोर ध्यान युवती मन, मींजत पीठ जनायो।
बिवस भई कछु सुधि न समारति, भयो सबनि मन आयो।
मन मन कहति भयो तप पूरन, आनन्द उर न समाई।
सूरदास प्रभु लाज न आवति, युवतिन मांझ कन्हाई।३।

युवती बचन

रेखता।

धरे ध्यान नंद नंदन को जल में जुवती ठाड़ी।
चित अंत ना लगावें वृत नेम माहिं गाड़ी ॥१॥
जब आहू के पिछारी पीठ मींजी नंदलाला।
तप आज भयो पूरन मन में अनंद बाला ॥२॥
हंस हंस के लागीं कहने सब लाज कान्ह खोई।
जुवतिन के बीच जल में उन आय पीठ धोई ॥३॥
लंगराई करौ जल में हम न्हान नाहीं पावें।
अबहीं ढिठाई तुमरी जसोदा को जा बतावें ॥४॥
बड़ गोप के हो बेटा चाहिये न ऐसी बातें।
हरिदास हमहू जानी नंदलाल तुमरी घातें ॥५॥४॥

वार्तिक

जब लाला हम सब अबहीं जाइ जसुधा से तुम्हारों हाल कहोंगीं क्या ऊखल को बांधवो अबहीं भूल गये हमहूं बचायो रह्यो ॥६॥

पद

हंसत श्याम बृज घर को भागै ॥टेक॥

लोगन को यह कहत सुनावत, मोहन करन लंगरई लागै॥
हम अस्नान करति जल भीतर, आपुन मींजत पीठ कन्हाई॥

कहा भयो जो नन्द महर सुत, हम सों करत अधिक ढिठाई ॥
लरकाई तबहीं लौं नीकी, चार बरष की पांच ॥
सूर श्याम जाय कहैं यशुमति सों, श्याम करत ये नाच ॥७

राग सारंग पद

प्रेम बिवस सब ग्वालिन भईं ॥टेक॥

उरहन देन चलीं यशुमति को, मन मोहन के रूप रईं ।
पुलक अंग अंगिया उर दरकी, हार तोरि कर आपु लईं ।
अंचल चीरि घात नख उर करि, यह मिस करि नंद सदन गईं ।
यसुमति माइ कहा सुत सिखयो, हम को जैसे हाल किये ।
चोली फार हार गहि तोरे, देखो उर नख घात दिये ।
अंचर चीरि अभूषन तोरे, फेरि धरत उठि भागि गये ।
सूर महरि मन कहति श्याम धों, ऐसे लायक कबहिं भये ॥८

पद

महरि श्याम को बरजत काहेन ॥टेक॥

ऐसे हाल किये हरि हमको, भई न कछु जग में आहेन ॥
और बात येक सुनहु श्याम की, अतिहीं भये हैं ढीठ ॥
बसन बिन अस्नान करति हम, आपुन मींजत पीठ ॥
आपु कहति मेरो सुत बारो, हिय उघारि दिखाऊं ॥
सुनेहुं न कहूं कहतिहु न आवै, तुमको कहा लजाऊं ॥
यह बानी युवतिन मुख सुनि कै, हंसि बोली नंदरानी ॥
सूर श्याम तुम लायक नाहीं, बात तुम्हारी जानी ॥९॥

पद

बात कहो सो लहै वहैरी ॥टेक॥

बिना भीति तुम चित्र लिखति हौ, सो कैसे निबहैरी ॥
तुम चाहत हो गगन तरैयां, मांगे कैसहु पावहु ॥
आवत ही मैं तुम लखि लीन्ही, कहि मोहि कहा सुनावहु ॥
चोरी रही छिनारौ अब भई, जानो जान तुम्हारी ॥

और गोप सुत तिनही न देख्यो, सूर श्याम है वारी ॥१०

पद

यहि अन्तर हरि आय गये ॥ टेक
मोर मुकट पीताम्बर काछें, अति कोमल छबि अंग भये
जननि बुलाय बांह गहि लीनी, देखहुरी मद माती ॥
इनही को अपराध लगावति, कहा फिरहु इतराती ॥
सुनि हैं लोग मष्ट अब हूं रहु, तुमहि कहां की लाज ॥
सूर श्याम मेरो माखन भोगी, तुम आवति बे काज ॥ ११

पद

अबहीं देखे नवल किशोर ॥ टेक
घर आवत ही तनक भये हैं, ऐसे तन के चोर ॥
कछु दिन करी दधि माखन चोरी, अब चोरत मन मोर ॥
विवस भई तन सुधि न संभारी, कहति बात भई भोर ॥
यह बानी तू कहत लजानी, समुझि भई जिय बोर ॥
सूर श्याम मुख निरखि चलीं घर, आनंद लोचन लोर ॥१२

वार्तिक

जसोदा के बचन सुन ब्रजबाला लजाय के घर को गईं परन्तु श्याम सुन्दर के प्रेम में गृह कारज कछु नहीं सूझे, वाही प्रेम में बिहल होय दूसरे दिन फिर जमुना पहुंची ॥ १२ ॥

पद

जमुना तट देखे नद नंदन ॥ टेक
मोर मुकट मकराकृत कुंडल, पीत वसन तन चंदन ॥
लोचन तृपति भये दरशन ते, उर की तपनि बुझानी ॥
प्रेम मगन तब भई ग्वालि सब, तन की दशा हिरानी ॥
कमल नयन तट पर हैं ठाड़े, सकुच मिलीं ब्रजनारी ॥
सूरदास प्रभु अंतरयामी, वृत पूरण पन धारी ॥

सखी वचन परस्पर ॥

पद

बनत नहीं नदी यमुना को ऐबो ॥ टेक
सुन्दर श्याम घाट पर ठाड़े, कहो कौन विधि जैबो ॥
कैसे बसन उतार धरें हम, कैसे जलहि समैबो ॥
नन्द नदन हमको देखहिंगे, कैसे करहु नहैबो ॥
चोली चीर हार ले भाजत, सो कैसे परि पैबो ॥
अंक में भरि भरि लेत सूर प्रभु, कालि न यहि पथ ऐबो ॥१४

रेखता।

जमुना को न्हायबोरी अब नाहिं बने आली ।
नंद नंद तीर बैठ्यो नित नई करे कुचाली ॥
बन के सुजान याही थल चातुरी दिखावे ।
युवती के बीच जल में नहीं नेकहू लजावे ॥
गल हीर हार तोरे बड़ मोल चीर फारे ।
बहियां पकर मरोरे पति नाम लै पुकारे ॥
धोखे में पीठ मींजे वह घुस के जल के अंदर ।
लै चीरों को कदंब डारों डोले जानो बंदर ॥
सब भांति सों सखीरी अब हम तो यासों हारी ।
हरिदास याके मिलवे को नेम करो भारी ॥ १५

वार्तिक

ऊपर ऊपर ऐसी बातें करे हैं परंतु मन में श्याम सुन्दर के मिलवे की चाह दिन दिन बढ़ती जावे है ॥१६

पद

अति तप करत घोष कुमारि ॥ टेक
कृष्ण पति हम तुरत पावें काम आतुर नारि ।
नयन मूंदति दरश कारन श्रवन शब्द विचारि ॥
भुजा जोरति अंक भरि हरि ध्यान उर अंक वारि ॥

शरद ग्रीषम डरति नाहीं करति तप तनु गारि ॥
सूर प्रभु सर्वज्ञ स्वामी देखि रीझे नारि ॥ १७

पद

व्रज ललना रवि को कर जोरें ॥ टेक
शीत भीत नहिं करत छहों ऋतु त्रिविध काल यमुना जल खोरें ॥
गौरी पति पूजति तप साधति करति रहति नित नेम ॥
भाग रहित निशि जागि चतुर्दशि पशुपति सुत के प्रेम ॥
हम को देहु कृष्ण पति ईश्वर और नहीं मन आन ॥
मनसि बाचसि कर्मना हमारे सूर श्याम को ध्यान ॥१८

वार्तिक

व्रज वालों को तप देखि श्री नंद नंदन ने दया की राह मन में बिचार कियो ॥ १९

पद

नीके तपु कीन्हो तनु गारि ॥ टेक
आप देखत कदम पर चढ़ि मानि लेय मुरारि ॥
बरष भरि व्रत नेम संयम, इमि कियो मोहि काज ॥
कैसेहु मोहि भजे कोऊ, मोहि विरद की लाज ॥
धन्य व्रत इन कियो पूरन, शीत तपति निवारि ॥
काम आतुर भजो मोको, नव तरुनी व्रज नारि ॥
कृपानाथ कृपाल भये तब, जानी जन की पीर ॥
सूर प्रभू अनमान कीन्हो, हरो इन को चीर ॥२०

वार्तिक

यह बिचार सबन के चीर चुराय कदम पर जाके बैठे ॥२१

पद

बसन हरे सब कदम चढ़ाये ॥ टेक
सूर हंस हंस गोप कन्यनि के, अंग अभूषन के सहित चुराये ॥
अति विस्तार नीप तरु तामें, लै लै जहां तहां लटकाये ॥

सनि अभरनि डार डार प्रति, देखत छवि मनही अटकायो ॥
नीलांबर पाटंबर सारी, सेत पीत चुनरी अति नायो ॥
सूर श्याम युवतिन वृत पूरन, को फल डार फल लायो ॥२२॥

वार्तिक

या समय वृज बाला जल में बैठि नयन मूंदि नंद नंदन को ध्यान करति रही जब आंख खोल देख्यो तब बसन आभूषण कछू ना देख चकृत भई॥२३॥

पद

आपु कदम चढ़ि देखत श्याम ॥टेक॥
बसन अभूषण सब हरि लीने, बिना बसन जल भीतर बाम ॥
मूंदि नयन ध्यान धरि हरि को, अंतरयामी लीन्हीं जानि ॥
बार बार सविता सों मांगत, हम पावें पति सारंग पानि ॥
जल सें निकसि आय तट देख्यो, भूषन चीर तहां कछु नाहिं ॥
इत उत हेरि चकृत भई सुन्दरि, सकुचगई फिर जलही माहिं ॥
नाभि प्रयंत नीर में ठाढ़ी, थर थर अंग कपत सुकुमारि ॥
को लै गयो वसन आभूषण, सूर श्याम उर प्रीति विचारि ॥२४

वार्तिक

इन में से एक सखी कदम की ओर देख बोली ॥२५॥

पद दादरो

देखो री देखो चीर को चुरैया ॥टेक॥
जमुना तीर कदम के ऊपर, चीरों को लटकैया ॥
डारन डारन कूदत डोलै, माखन दूध खवैया ॥
तनक न डर काहू को न मानै, ऐसो ढीट कन्हैया॥
वह खेलै हम जल में कांपैं, काहू कगे अब दैया ॥
हे हरिदास उमापति हमरी, आसा को पुरैया ॥२६॥

यह सुन नंदलाल जी बोले

लावनी।

जल छांड़ आहु थल मांझ घोष सुकुमारी।
मोरे मिलबे के हेतु कियो तप भारी ॥१॥
तुम्हरे वृत को फल आजहु प्रगट दिखाऊं ॥
तरुनीय डार पै बैठि रूप प्रगटाऊं ॥२॥
अब माघ शीत कत होत विकल जल माहीं ॥
आवो वृत को फल लेहु कदम की छांहीं ॥३॥
तुम्हरे सब चोली चीर हार लै जावो ॥
दुई कर जोरो यहां आइ न नेक लजावो ॥४॥
तुम्हरे कृश गौर शरीर अतिहि सुकुमारा ॥
पहिरो पट भूषन आय यहां विस्तारा ॥५॥
मुहि अंतर यामी जान कछू न छिपावो ॥
अपनौ तप पूरन मान मगन मन धावो ॥६॥
सब करो सुभग सिंगार सयानी बामा ॥
करिहों तब पूरन काम शरद निशि यामा ॥७॥
मुहि भजे कौनही भाव लहे मन भाई ॥
हरिदास हरौ तन ताप चलो हरषाई ॥८ ॥२७॥

यह सुन वृजबाला बोली

पद

हमरो अंबर देहु मुरारी ॥टेक॥

लै सब चीर कदम चढ़ि बैठे, हम जल मांझ उघारी।
तट पर बिना बसन क्यों आवें, लाज लगत है भारी।
चोली हार तुमही को दीन्हो, चीर हमहि देहु डारी।
सुन्दर श्याम कमल दल लोचन, हम हैं दास तुम्हारी।
जो कछु कहो सोई हम करिहैं, चरन कमल परवारी।
अंग अंग कंपत मन मोहन, बिन्ती सुनहु हमारी।
सूर श्याम कछु छोह करोजू, शीत गई तन मारी।२८।

पद

हा हा कहति घोष कुमारी ॥टेक॥
शीत तें तनु कंपत थर थर , वसन देहु मुरारि ॥
सन्हीं मन अति ही भयो, सुख देख के गिरधारि ॥
पुरुष सों अंग देखें , कहत दोष न मारि ॥
नेक नहिं तुम छोह आवत , गई हम सब मारि ॥
सूर प्रभु अतिहि निठुर हो , नंद सुत वनवारि ॥२६॥

लालजी बचन

पद

लाज ओट यह दूरि करो ॥टेक॥
जोइ में कहो करहु तुम सोई, सकुच बापुरेहि कहा करो ।
जल तें तीर आय कर जोरहु, मैं देखत हूं तुम बिनय करो ।
पूरन व्रत अब भयो तुम्हारो , गुरु जन शंका दूरि करो ।
अब अंतर मोसों जनि राखहु , बार बार हठ वृथा करो ।
सूर श्याम कहेउ चीर देत हों, मो आगे शृंगार करो ॥३०॥

बृजबाला बचन

पूर्वी

जल से कैसे कढें हम बाहर , हम नव तरुनी नार हो ।
कर जोरत हमरे अंग दीसै , अब बिन बसन उघार हो ।
तुम कत नारि नगन देखोजी , राखहु लाज हमार हो ।
जल के भीतर ही हम प्यारे , रहि हैं हाथ पसार हो ।
करुना निधि बिनती यह मानो, तुम भागन रिझवार हो ।
थर थर कांपत अंग हमारे , पावत दुख अपार हो ।
हठि तजि अब हरिदास निवाजो, करुना सिंधु मुरार हो ।

लालजी बचन

दोहा

ऐसे में रीझों नहीं , तट पै बांह उठाव ।

मोर कहीं मानो सबै, चीर हार लै जाव ॥२२॥

वार्तिक

बृजबाला अतिशय अधीर होय बोलीं ॥२३॥

पद

हमारो देहु मनोहर चीर ॥ टेक
कांपत दशन शीत तन व्यापत, हम अति यमुना तीर ॥
मानहिंगीं उपकार रावरो, करहु कृपा बल बीर ॥
अतिहि दुखित वपु परसत मोहन, प्रबल प्रचंड शरीर ॥
हम दासी तुम नाथ हमारे, बिनति करत जल भीतर ठाढ़ीं ॥
मानहु विकसि कमोदन शशि सों, अधिक प्रीति उर बाढ़ी ॥
जो तुम हमहिं नाथ कर मानहु, यह मांगे हम देहु ॥
जल ते निकस आय बाहर ह्वै, बसन आपने लेहु ॥
कर धर शीश गईं सन्मुख हरि, मन महँ करि आनंद ॥
होय कृपाल सूर प्रभु सब विधि, अंबर दीनो नंद नंद ॥२४॥

पद

तरुनी निकसि निकसि तट आईं ॥ टेक
पुनि पुनि कहत लेहु पट भूषण, युवती श्याम बुलाईं ॥
जल से निकसि भईं सब ठाढ़ी, कर अँग उर पर दीने ॥
बसन देहु आभूषण राखहु, हा हा पुनि पुनि कीने ॥
ऐसे कहा बतावत हौ मोहि, बांह उठाय निहोरो ॥
कर सों कर अंग उर नहिं मूंदो, मेरे कहे उघारो ॥
सूर श्याम सोई सोई हम करिहैं, जोई जोई तुम सब कैहौ ॥
लागैं दाउ कबहुं तुम सों हम, बहुरि कहां तुम जैहो ॥२५॥

पद

बृत पूरन कियो नंद कुमार, युवतिन के मेटे जंजाल ॥
जप तप करि तन जिनि अब गारो, तुम घरनी मैं स्वामि तुम्हारो ॥
अंतर शोच दूरि करि जारहु, मेरो कहो सत्य उर धारहु ॥

सूर दास तुम आस पुराऊं, अंकम भरि सब को उर लाऊं ॥
यह सुनि सब मन हरष बढ़ायो, वृत को फल पायौ मन भायौ ॥
सूर श्याम प्रगट गिरिधारी, आनंद सहित गईं घर नारी ॥३६॥

इति

अथ चौरे लीला

रेखता

श्री श्याम राम दोई सुन्दर सुरूप साजे ।
बन बन में नित्य डोलें गौवें चरावे काजें ॥
तिलमें घनसी छैयों कालिन्द्री के किनारें ।
वंशी में नाम लेके गौ ग्वाल को पुकारें ॥
तरुपात हरे टोरें पातर बनावें दोनों ।
सखा संग करें कलेऊ संग साथरी पै सोनों ॥
जिन लाग त्याग संपत सुर राज यज्ञ ठाने ।
सोइ ग्वाल बाल जूंठन प्रसाद महा माने ॥
ऐसे हैं भक्त वत्सल दुई नंद के दुलारे ।
हरिदास इन को तजि के किन पर विश्वास धारे ॥

दोहा

अज शंकर जाकों नवहिं, ध्यान धरें मुनि वृंद ।
सो जूंठन बन बालकन, मांगत आनंद कंद ॥
एक समय बोले सखा, गयो कलेउ बढ़ाय ।
बन में अन्न ब्रजनाथ जू, दीजे कछू खवाय ॥
खाय लियो जो कछु हुतो, भूख न रोकी जाय ।
हमहि करो हैरान जिन, मोहन बन में लाय ॥

कृष्ण वचन

दोहा

दरश भोर की लालसा, विप्र वधुन मन माहिं।
ताके पूरण करन को, यहि सम औसर नाहिं॥ १

वार्तिक

यह विचारि नंदलाल जी बोले॥

दोहा

कंस रजा के डर इते, निर्जन बन में आय।
देखो माथुर विप्र सब, रच्यो यज्ञ ठहराय॥ १

पद

सखा मैंने एक उपाय विचारो॥ टेक
विविधि भाँति के भोजन पैहो, जो कहो मानो हमारो॥
या दिश में जो धूम दिसत है. वाही ठौर सिधारो॥
कहियो तुम से मांगत भोजन, भूखो नंददुलारो॥
वे हरिदास सबै तुम्हें देहैं, मांगहु जाय सबारो॥

वार्तिक

माथुर ब्राह्मणों प्रति सखा बचन॥

दोहा

हाथ जोड़ ठाढ़े भये, ग्वाल बाल इक साथ।
भोजन मांगन है कह्यो, माखन प्रभु वृजनाथ॥ १
गाय चरावत थक गये, बैठे छांह बिहाल।
देव शीघ्र भोजन कछू, भूखे हैं नँदलाल॥ २

माथुर विप्र बचन

पद

ग्वाल भये सबरे तुम बौरे॥ टेक
देवन हेत बनाये भोजन, सोई तुम मागन को दौरे॥
होय अहीर सुवन वे दोई, जिनको तुम सब देव कहौरे॥

हम माथुर द्विज कुल के ऊंचे, जानत हो हमें तुम सब भोरे ॥
कनिका एक नहीं यहां पैहो, चाहे रहो जबलों कर जोरे ॥
हैं हरिदास नहीं हम मूरख, वादि करो तुम आय निहोरे ॥

वार्तिक

मथुरियों के ऐसे कठोर वचन सुनि ग्वाल बाल निराश होय लौट आये अरु श्याम सुंदर से बोले ॥

दोहा

अहो श्याम बलिराम तुम, घर के नृप कुलवान ।
नेक तिहारी बात को, विप्र करें नहिं कान ॥ १
कहि अहीर तुम्हरी करें, निंदा विप्र समाज ॥
बने रहो घर के बड़े, बन में तुम बनराज ॥ २

श्याम सुंदर के वचन सखा प्रति ॥

पद

द्विज माथुरिया मूरख भारी ॥ टेक
करमन के मद में सब माते, नेक न बोलत बात विचारी ॥
करमन के फल के दाता को, नहिं जानें सब बुद्धि बिसारी ॥
इनकी भामिनि हैं बड़ भागिन, जानत हैं सब बात हमारी ॥
उन से जाके भोजन मांगो, वे सुनि हैं हरिदास तुम्हारी ॥

यह सुन गोप सखा चौबायनों से बोले

पद

देवरी भोजन चौबाइन ॥ टेक
श्याम और बलिराम सखों संग, आये आज चराबन गायन ॥
बन बन फिरत श्रमित भे भारी, बैठे ताल तरुन की छायन ॥
भूख सबन हरिदास सताई, पुरवहु आस लगें तुव पायन ॥

वार्तिक

यह सुन चौबायनें बड़ी प्रसन्न होय बोलीं ।

दोहा

धन्य भाग्य कुल धन्य है, धन्य हमारो नाम ।
जिनसों माग्यो खान को, श्याम और बलिराम ॥ १
कहां प्रबल माया फंसी, अबला निपट अजान ।
कहां ईश त्रैलोक के, भोजन मांगे आन ॥ २

वार्तिक

यह विचार उत्तम २ पदार्थ थारों में भर कर बड़े हर्ष से ग्वालों के साथ चलीं उनके पति बोले ।

पद

अपने पति तजि जात कहां री ॥ टेक
गोप सुतन के कारण सब बलि, काहे चलीं ले भर भर थारी ॥
धेनु चरैया नीचे कुल के, वे सब ग्वाल गवांई भारी ॥
सब मिलि तुम्हें खिजै हैं वे सब, देखत पंथ अकेली नारी ॥
हटकत हूं हरिदास हठीली, हुई हौ जाय फजीत वृथारी ॥

वार्तिक

श्री कृष्णचंद आनंद कंद के प्रेम में मग्न अबलाओं ने काहू की बात न मानी सीधी बन की ओर सिधारीं अरु ग्वालों से बोलीं ॥

चौपाई

तब ग्वालन सों पूंछत बाला, केतिक दूर अहें नंदलाला ॥
चलें आज हम दर्शन देखें, जीवन जन्म सुफल कर लेखें ॥

वार्तिक

ऐसी बातें करते२ श्याम सुन्दर के समीप जाय इनके रूप अनूप देखि मोहित होय गईं अरु थार सामने धर बोलीं ॥

दोहा

अहो नाथ बृजनाथ जू, तुम दीनन के नाथ ।
भोजन कीजे कर कृपा, हम को करहु सनाथ ॥

अबला निपट अजान हम, तुम सर्वज्ञ सुजान।
दर्शन दे हमरे किये, जन्म सुफल हम जान॥

वार्तिक

यह दीन वचन सुन श्याम सुन्दर बोले॥

दोहा

चौवायन बड़ भागिनी, दया हृदय भर पूर।
हम को भोजन लाय कें, आईं इतनी दूर॥१॥
कबहूं ना मैं भूलि हों, यह तुम्हरो उपकार।
सुखी रहहु घर जाव अब, सुमरन करहु हमार॥२॥

वार्तिक

चौवायनें आपस में परस्पर कहने लगीं॥

दोहा

अरी सखी तुहि धन्य है, पायो रूप अनूप।
आय शरण बृज नाथ के, तू तर गई भव कूप॥
जाने मन वच से करे, माखन प्रभु सों हेत।
चार पदारथ देत हैं, पाप दुःख हर लेत॥३॥

वार्तिक

श्याम सुन्दर को नटवर रूप अपने हृदय में राख सब बाला वा ठौर तें चलीं, उनको तेज देख ब्राह्मण बहुत पछितावे लगे, अरु मन में श्याम सुन्दर को ध्यान धारि बोले॥

रेखता

जगदीश देव ईश कृपासिंधु दया सागर।
अपराध क्षमा हैं करे हम औगुणों के आगर॥१॥
महिमा न तुम्हरी जानी मन समझ नंद छौना।
हमरे तुम्हारी दाया बिन कौन हाल होना॥२॥
हम विप्र वेद पाठी निज नेम में भुलाने।
सब कर्म फल के दाता, तुम को नहीं पिछाने॥३॥

टुक मिहिर की नजर को, हमरी जु ओर कीजे।
हरिदास जान अपने कबहूं तो दरश दीजे ॥४॥

वार्तिक

या ठौर नंदलाल ने मुरली की टेर से सब ग्वालों को एकत्र कर सब सखा संग लीन्हें घर को सिधारे ॥

इति चौवेलीला सम्पूर्ण

अथ गोवर्धन लीला

दोहा

गर्व प्रहारी हरि सदा, करत भक्त कल्यान।
एक समय सुर राज को, हरो गर्व मन आन ॥

वार्तिक

उनकी प्रेरना अनुसार जसोदाजी ने इन्द्र की वार्षिक पूजा करवे की सुरत कीन्ही और नंद जी सों बोली ॥

पद

नंद महर सों कहत यशोमति, सुरपति की पूजा बिसराई।
जाकी कृपा बसत ब्रज भीतर, जाकी दीन्ही भई बड़ाई।
जाकी कृपा अपे धन मेरे, जाकी कृपा नवे निधि पाई।
जाकी कृपा दूध दहि पूरण, सहस मथानी मथत सदाई।
जिनकी कृपा पुत्र भयो मेरे, कुशल रहें बलराम कन्हाई।
सूर नंद सों कहत यशोमति, दिन आयो अब करो चढ़ाई।

पद

येई हैं कुल देव हमारे ॥टेक॥
काहू नहीं और मैं जानत, गोधन हैं वृज के रखवारे।

दीप मालिका के दिन पांचक, गोपिन कहो बुलाई।
बलि सामग्री करहिं चढ़ाई, अबही कहो सुनाई।
लेइ बुलाय महर महरानी, सुनतई आई धाई।
नंद घरन तब कहत सखिन सों, कत हो रही भुलाई।
भूली कहा कहो सो हमसों, कहत कहां कर पाई।
सूरदास सुरपति की पूजा, तुम सबहिन बिसराई।

वार्तिक

अरे भैया बृजवासी चलो आज इन्द्र की पूजा करें दीवारी हो गई, परंतु तुमने ऐसी पूजा की खबर नाहीं कीन्हीं यह सुन सब गोपी ग्वाल तैयारी करवे लगे ॥

पद

चौंक परीं सब गोकुल नारी॥टेक॥
भली कही सब ही सुध भूली, तुमही करी सुधारी॥
कहेउ महर सों करो चढ़ाई, हम अपने घर जाति॥
तुमहू करौ भोग सामग्री, कुल देवता अमाति॥
यशुमति कहेउ अकेली हौं मैं, तुमहूं संग मोहि दीजो॥
सूर हंसत बृजनारि महर सों, ऐहैं सांच पतीजो॥

पद

कहि मोहि भली कीन्ही महरि॥
राज काजहिं रहेऊं डोलत, लोभ हीके लहरि॥

पद

क्षमा कीजे मोहि हो प्रभु तुमही गयो भुलाय॥
ग्वाल सों कहि तुरत पठयो ल्याऊं महर बुलाय॥
नंद कहेउ उपनंद बृज के अरू महर ब्रषभान॥
अबहि जाय बुलाय ल्यावहिं करत दिन अनुमान॥
आय गये दिन अबहीं नेरे करत मन यह छान॥
सूर नंद विनय करत कर जोर सुरपति ध्यान॥

पद

नंद महर उपनंद बुलाये ॥ टेक ॥

बहु आदर कर बैठक दीन्ही, महर२ कर शीश नवाये ॥
मनही मन सब सोच करत हैं, कंस नृपति कछु मांग पठाये ॥
राज अंस धन जो कुछ उनको, बिनु मांगे सो दे हम आये ॥
बूझत महर बात नंदजी सों, कौन काज हम सबनि बुलाये ॥
सूर नंद यह कहि गोपिन सों, सुरपति पूजा के दिन आये ॥

वार्तिक

जब सिगरे बृजबासी नंद द्वार पर एकत्र भये, तब मिलके मंगलाचार करने लगे ॥

पद

गावत मंगलचार महर घर ॥टेक॥

यशुमति भोजन करत चढ़ाई, नेवज करि करि धरत श्याम डर ॥
देखे रहो छुवै न कन्हैया, कहा जात वह देव काज पर ॥
और नहीं कुल देव हमारे, कै गोधन के ये सुरपति वर ॥
कहत बिनय कर जोर यशोदा, कान्हहि कृपा करो करुणाकर ॥
और देव कोऊ तुमसन नाहीं, सूर करे सेवा चरणन तर ॥

पद

बाजत नंद दुवारे बधाई॥टेक॥

बैठे खेलत द्वार आपने, सात बर्ष के कुंवर कन्हाई ॥
बैठे नंद सहित वृषभानहि, और गोप बैठे सब आई ॥
देत असीस नंद के द्वारे, गावत मंगल नारि बधाई ॥
पूजा करति इन्द्र की जानो, आये श्याम तहां अतुराई ॥
बार बार बूझत हरि नंदहि, कौन देव की करत पुजाई ॥
इन्द्र बड़े कुल देव हमारे, उन ते यह सब होत बड़ाई ॥
सूर श्याम तुम्हरे हित कारन, यह पूजा की करत सदाई ॥

वार्तिक

यह कौतुक देख के नंदलाल जी खेलते खेलते आय के नंदजू से पूछने लगे, बाबा आज काहे को उत्सव हो रह्योहै, तब नंद बोले भैया आज अपने कुलदेव इन्द्र की पूजा है, तुम जाय सोय रहो ॥

पद

नंद कहेउ घर जाउ कन्हाई ॥ टेक
ऐसे में तुम जाहु जिन कहूं, अहो महिर सुत लेउ बुलाई ॥
सोय रहो मेरे पलका पर, कहत महरि हरि सों समुझाई ॥
बरस दिवस को महा महोत्सव, आवेगो को कौन सुभाई ॥
और महिर ढिंग श्याम बैठ के, कीनो एक बिचार बनाई ॥
सपनो मोको मिलो आज इक, बड़ो पुरुष अवतार जनाई ॥
कहन लगो मोसों ये बातें, पूजत हो तुम काहे मनाई ॥
गिर गोवरधन देव को मन से, सेबहु ताको भोग चढ़ाई ॥
भोजन करे सबन के आगे, देखहु ब्रज जन सब सुख पाई ॥
सूरदास प्रभु गोपन आगे, कहत श्याम यह मन उपजाई ॥

कृष्ण बचन

वार्तिक

अरे भैया सखा हो आज मोको सपने में एक देवता ने कही जो गोवरधन पर्वत की पूजा करो, बृज में यो देव बड़ो प्रसिद्ध है ॥

पद

सुनी ग्वाल यह कहत कन्हाई ॥ टेक
सुरपति की पूजा को मेटत, गोवरधन की करत बड़ाई ॥
फैल गई यह बात घरन घर, हरि कहा जाने देव पुजाई ॥
हलधर कहत सुनो बृजवासी, यह महिमा तुम काहु न पाई ॥
कोउ २ कहत करो ऐसोऊ, कोउ एक कहत कहे को भाई ॥

सूरदास कोउ सुनि सुख पावत, कोउ बरजत सुरपतिहि डराई ॥

वार्तिक

बहुत वृजवासी आय आय के श्याम सुंदर से पूंछने लगे तब वे बोले ॥

पद

मेरो कहेउ सत्य के जानो ॥ टेक

जो चाहो वृज की कुशलाई, तो तुम गिरि गोवरधन मानो ॥
दूध दही तुम कितनो लैहो, गौ सुत बढ़े अनेक ॥
कहा पूज सुरपति सो पायो, छांड़ि देहु यह टेक ॥
मुह मांगे फल जो तुम पावहु, तो तुम मानो मोहि ॥
सूरदास प्रभु कहत बाल सों, सत्य बचन कर दोहि ॥

रेखता

तुम मोरी बात मानो गिर गोधनाहि पूजो ।
वृज की भलाई काजे नहिं देव और दूजो ॥
सुरराज कौन काज को है देखो नेक वही ।
गिरिराज आज खात देख मोद लेहु सबही ॥
सपने में मैंने देखो सुंदर सलोनो देवा ।
लखि रूप वाको नटवर वाही की करो सेवा ॥
इन्दर जो तुम पै कोपे मारेगो वही वाको ।
हरिदास चलो पूजो बलवान देवता को ॥

वार्तिक

श्याम सुंदर की प्रेरणा से उन सब को उनकी बातों को निश्चय भयो, तब अपने २ गौवें बछरे साज के कातिक सुदी परिवा को पकवान मिठाई गाड़ों में लाद के गोवरधन को सिधारे.

दोहा

नंद महर उपनंद सब, श्याम राम दोउ भाय ।
पहुंचे गोवरधन निकट, निरख शिखर सुख पाय ॥

वार्तिक

सब ने सामग्री तयार कीन्ही और श्याम सुन्दर अपनो दूसरो चतुर्भुज रूप धार के गिरिराज पै पैठि दर्शन दे हाथ पसारि २ खाय के बोले ॥

सोरठा

लेऊ नंद वरदान, अब जो तुम हम से चहो।
मैं लीन्हों सुख मान, बहुत करी तुम पर कृपा ॥

वार्तिक

यह देखि इन्द्र कोप्यो अरु मन में कहिवे लगे ॥

पद

ब्रजवासिन मोको बिसरायो ॥ टेक
भली करी मेरी बलि जो कछु, सो सब लै पर्वतहिं चढ़ायो ॥
मोसों गर्व कियो लघु प्रतिमा, ना जानिये कहा मन आयो ॥
त्रिदश कोटि देवन को नायक, जानि बूझि के इनन भुलायो ॥
अब गोपन भूतल रखवायो, मेरी बलि मोको न चढ़ायो ॥
सुनहु सूर मेरे मारत धौं, पर्वत कैसे होत सहायो ॥

पद

प्रथमहिं देहों गिरिहिं बहाय ॥ टेक
ब्रज बहाय हू करौं चिरूकुठ, देऊं धरनि मिलाय ॥
मेरी इन महिमा ना जानी, प्रकट देऊं दिखाय ॥
जल वरषि बृज धोइ डार हैं, लोग देव बहाय ॥
ग्वाल खेलत रहे नीके, करि उपाधि बनाय ॥
बरष दिन मोहि देत पूजा, सोई देय मिटाय ॥
रिस सहित सुरपति कहत पुनि, परौ सब बृज धाय ॥
सुनहु सूर कहत है मघवा, बेगि परो भहराय ॥

वार्तिक

मूसल धार पानी अरु घन की घोर गर्जना देख बृजवासी

घबराय उठे ॥

पद

बृज के लोग फिरत बिललाने ॥ टेक
गैयनि लै बन ग्वाल गये ते, धावत आवत बृजहि पराने ॥
कोउ चितवत नभ तन चकृत ह्वैकै कोउ गिरपरत धरनि अकुलाने
कोउ लै रहत ओट वृच्छन की, अंध धुंध दिशि विदिशि भुलाने ॥
कोउ पहुंचे जैसे तैसे घर, कोउ ढूंढ़त घर नहिं पहिचाने ॥
सूरदास गोवर्धन पूजा, कीनी करि फल लहेउ बिहाने ॥

ग्वाल बाल बचन

पद

राखि लेहु अब नंद किशोर ॥ टेक ॥
तुम जो इन्द्र की पूजा मेटी, बरषत है अति जोर ॥
ब्रजबासी सब यों चितवत हैं, ज्यों करि चंद्र चकोर ॥
जिनि जिय करहु नयन जिनि मूंदहु, धरिहौं नख की कोर ॥
कर अभिमान इन्द्र चढ़ि आयो, करत घटा घन घोर ॥
सूर श्याम कहि तुम सब राखे, बूंद न आवे जोर ॥

वार्तिक

श्याम सुन्दर ने सब को धीर धरायो ॥

पद

श्याम लियो गिरि राज उठाय ॥
धीर धरि हरि कहत सबनि सों, गिरि गोवरधन किये सहाय ॥
नंद गोप ग्वालिन के आगे, देउ कहेउ यश प्रगट सुनाय ॥
काहे को व्याकुल भये डोलत, रक्षा करेउ देवता आय ॥
सत्य बचन गिरि देव कहत हैं, कान्ह मोहि कर लेहि बनाय ॥
सूरदास नारी नर ब्रज के, कहत धन्य तुम कुंवर कन्हाय ॥

पद

बाम करज टेक्यो गिरिराज ॥ टेक ॥

गोपी ग्वाल गाय गौ सुत को, दुख बिसरेउ सुख करत समाज ॥
आनँद करत सबै गिरिवर तर, दुख डारेऊ सबै बिसराय ॥
चकित भये देखत यह लीला, परत सबै हरि चरणन धाय ॥
गिरिवर टेकि रहे बांये कर, दच्छिण कर लिये सखन उठाय ॥
कान्ह कहत ऐसो गोवर्धन, देखो कैसे किये सहाय ॥
गोप ग्वाल नंदादिक जहँ लों, नंद सुवन लिये निकट बुलाय ॥
सूरदास प्रभु कहत सबनि सों, तुमहू मिलि टेको गिरि आय ॥

वार्तिक

यशोदा घबराय के बोली ॥

दादरा

उठाव भैयारे सब मिल गोपी ग्वाल ॥टेक॥
गिरि गोवरधन है अति भारी, छोटो सो नंदलाल ॥
सात दिवस अब ढांके लीने, थकि गयो बारो लाल ॥
गरजत मेघ खंदत ना बूंदें, कोप्यो है सुरपाल ॥
बृजबासी गायें अरु बछड़ा, हो गये सकल बिहाल ॥
सुरपति को हरिदास बिसारो, वाहुने कीन्ही कुचाल ॥

जसोदा बचन सखी प्रति

वार्तिक

अरी वीर चलो अपन हू मिल कछू सहाय करें बारो लाल कहुं पर्वत गिराय ना देवे, यह सुन सब बृज बाला टेका लगाय खड़ीं भईं, लालजी हू तिनको प्रेम देख उनको सुनाय के सखों से बोले.

कृष्ण बचन

मांड

गिरराज बड़ो भारी भैया टेक लीजो जी ॥टेक॥
लागे पांय पिरान अब, कांपत है कर मोर ॥
जो गिरि गिर धरनी परे, मोह ना दीजे खोर॥

तुम्हरेहि भाव भरोस ते, मैंने लियो उठाय ॥
अब तो लकुट लगाय के, सब मिल करो सहाय ॥
जो मैं ऐसो जान तो, सात दिवस को काम ॥
छूतो ना हरिदास गिरि, लेतो ना वाको नाम ॥

वार्तिक

सब वृजवासी बालकों ने अपनी २ लकुट लगाय के गिरिराज को सम्हार लीन्हो, इतने में प्रियाजी को वृजबालों के संग देख लालजी प्रेम में मग्न होय बोले॥

दादरो

दौरो दौरो कोई सम्हार लो, मेरे लागे पांय पिरान ॥टेक॥
धरा धरन मुहि कठिन नहीं, जो भूधर लेत पिरान ॥
नाहक याहि उठाय लियो मैं तो, बालक निपट अजान ॥
सुमरो गोवर्द्धन देव को, जिन खाये मिठाई पकवान ॥
उनहीं को हरिदास भरोसो, बातो है सब से बलवान ॥

वार्तिक

यह सुन राधिका हू लकुट लेइ लालजी के सनमुख ठाड़ी हो गई अरु जसोदा अरु नंदादिक श्री गोवर्द्धन देवको मनायवे लगे.

वार्तिक

बरषत बरषत मेघ हारि गये, तब इन्द्र को बड़ो संकट भयो, अरु देवतों ने आय ताहि प्रबोध्यो, इन्द्र हू लज्जित होय शरण आये

पद

प्रगट भये वृज त्रिभुवन राई ॥टेक॥
युग गुण बीति त्रिगुन बुधि ब्यापी, शरण चलो सुरपति अकुलाई ॥
सपने को धन जागि परे ज्यों, त्यों जानी अपनी ठकुराई ॥
कहत चल्यो यह कहा कियो मैं, जगत पिता सों करी ढिठाई ॥
शिव बिरंचि रवि चन्द बरुण यम, लिये अमर सब संग लगाई ॥

बार बार सिर धुनत जात मग, कैहों कहा वदन दिखराई ॥
ने हैं परम कृपाल महा प्रभु, रहों शीश चरणन पै नाई ॥
सूरदास प्रभु पितु माता सों मैं, श्रोछी बुद्धि करी लरकाई ॥

इन्द्र की स्तुति

लावनी

तुम्हरो गुण गोविंद वेद निगम नित गावें।
सनकादिक शारद शेष अंत ना पावें ॥
तुम भक्तन के हित जक्त धरो अवतारा।
योगी जन धरि धरि ध्यान न पावत पारा ॥
तुम दीनन के दुख दलन हरन भव पीरा।
तुम्हरो ही एक भरोस रोस तजो बीरा ॥
मैं महा मूढ़ अनजान तुमहिं नहिं जान्यो।
बृज बालक नंद कुमार अबै लों मान्यो ॥
बनितन संग क्रीड़ा देख मोरि मति खोई।
तुव अतुल पराक्रम ढूंढ़ न पायो कोई ॥
पितु मात जानि निज तात तुम्हैं ना चीन्हो।
बलदाऊ जान्यो भ्रात सखा संग लीन्हो ॥
ब्रजबाला ने पति जान तुम्है भरमायो।
मथुरा पति ने रिपु मान गरब परदायो ॥
प्रभु छमहु मोर अपराध व्याध सब टारो।
निज चरणन में रति दे हरिदास उबारो ॥

वार्तिक

यह बृत्तान्त देख बृजवासी परस्पर कहिबे लगे ॥

गजल

दहशत कहां तिनको कहां जिनको कन्हैया मीतहै ।टेक॥
पहिले पठाई पूतना नृप खूब मंत्र पढ़ाइके।
पय पीय प्रान छुटाय के हरि कीन्ही ताहि फजीत है॥

तृणावर्त बक कागा गये अपनेहु तन तड़पाय के।
केशी वृषा वत्साह ने हरि राखि अपनी जीत है॥
कूदे काली दौ में कदम्ब से नाथ्यो है कालिय नागको।
सब नागनी अरु नागको प्रभुता की दी परतीत है॥
औरौ अनेक उपाधों को मथुरा से वृन्दाबन पठाय।
गयो हार राजा कंसहू बैठ्यो घरे भय भीत है॥
घन घोर बादल लाइके जल ढारयो वृज पै सात दिन।
गिरिराज नख पै धारिकै हरि मेटी इन्द्र अनीत है॥
वृज वासियों के भाग ते हमको सखा ऐसे मिले।
हरिदास कौन को ध्याइये इनही को दर्श पुनीत है॥

वार्तिक

लालजी ने पर्वत को भूमि पर उतार दीन्हो, अरु सब ब्रजवासी मिलके अपने २ घर आनंद होय आये॥

इति

॥ अथ दान लीला॥

पद

नाना रंग उपजावत श्याम। कोउ रीझत कोउ खीझत बाम॥
काहू के निशि बसत कन्हाई, काहू मुख ह्वै आवत जाई॥
बहु नायक ह्वै बिलसत आप. जाको शिव पावे नहिं जाप॥
ताको ब्रजनारी पति जाने, कोउ आदर कोऊ अपमाने॥
काहू सों कहि आवत सांझ, रहत्र और नागरि घर मांझ॥
कबहुं रैन सब संग विहात, सुनहु सूर ऐसे नन्द तात॥१॥

पद

अब युवतिन सों प्रगटे श्याम ॥टेक॥

अरस परस सबहिन यह जानी, हरि लुब्धे सबहिन के धाम ॥
जा दिन जाके भवन न आवत, सो मन में यह करत विचार ॥
आजु गये औरहि काहू के, रिस पावति कह बड़े लबार ॥
यह लीला हरि के मन भावति, खंडित बचन कहत सुख होत ॥
सांझ बोल दै जात सूर प्रभु, ताके आवत होत उदोत ॥१॥

दोहा

यह विधि युवती श्याम को, नित प्रति देत उरान ।
तिन के झूठे करन हित, हरि मांग्यो दधि दान ॥
नटवर भेष बनाय के, ठाढ़े जमुना तीर ।
कर मुरली कटि काछनी, संग सखन की भीर ॥२॥

वार्तिक

नंदलाल के देखवे के बहाने से बृजवाला हूं मिलके वाही ठौर सिधारीं ॥

पद

सुनि तमचर को शोर घोस भयो जागरी ।
नवसत साजि शृंगार चलीं नव नागरी ॥ ध्रुव ॥
नव सत साजि शृंगार अंग पाटम्बर सोहै ।
एकते एक विचित्र रूप त्रिभुवन मन मोहै ॥
इंद्रा वृंदा राधिका श्यामा कामा नारि ।
ललिता अरु चंद्रावली हो, सखिन मध्य सुकुमारि ॥
कोउ दूध कोउ दहेड़ महेड़ लै चलीं सयानी ।
कोउ मटकी कोउ माट भरी नवनीत मथानी ॥
गृह गृह ते सब निकसि चलीं जुरि जमुना तट जाय ।
सबनि हरष मन में हो उठीं श्याम गुण गाय ॥५॥

पद

रीती मटुकी शीश धरैं ॥टेक॥

बनकी घरकी सुरति न काहू, लेहु दही यह कहति फिरैं ॥
कबहुंक जाति कुंज भीतर को, तहां श्याम की सुरति करैं ॥
चौंक परति तब कछु सुधि आवत, जहां तहां सखि सुनत ररैं॥
तब यह कहति कहों मैं इन सों, भ्रमि भ्रमि बन में वृथा मरैं ॥
सूर श्याम के रस पुनि छाकति, वैसेहि ढंग बहुरि न डरैं ॥६॥

राग रास कली

गोरस लेहुरी कोउ आय ॥ टेक ॥

द्रुमनि सों यह कहति डोलत, कौन लेहु बुलाय ॥
कबहूं बंसीबट निकट जुरि, होत ठाढ़ीं धाय ॥
लेहु गोरस दान मोहन, कहां रहे छिपाय ॥
डरनि तुमरे जात नाहिन, लेत दहिउ छुड़ाय ॥
मांग लीजे दान अपनो, कहति हैं समुझाय ॥
आईं हों पुनि रिस करत हरि, दहिउ देत बहाय ॥
एक एक ही बात बूझति, कहां गये कन्हाय ॥
भईं रति उन्मत्त गोपी, तन की सुधि बिसराय ॥
सूर प्रभु के रंग राचीं, जिय गयो भरमाय ॥७॥

बार्तिक

गोपियां मन मथ हो कहति डोलें ॥

राग मल्लार

कोउ माई लेहुरी गोपालहिं ॥ टेक ॥

दधि को नाम श्याम सुंदर रस, बिसर गयो वृज बालहिं ॥
मटुकी शीश फिरत वृज बीथिन, बोलत बचन रसालहिं ॥
हँसनि रिसानि बुलावति बरजति, देखहु उलटी चालहिं ॥
सूर श्याम बिन अवर न भावत, या बिरहिन बेहालहिं ॥८॥

छंद

यह सुनि नंदकुमार सैन दै सखा बुलाये ॥

मन हर्षित भये आप और सब ग्वाल जगाये ॥
सैन बैन दे सांवरे राखे द्रुमनि चढाय ॥
और सखा कुछ संग लै हो रोकि रहे मग जाय॥१०॥

॥ सखी बचन ॥

छंद

एक सखी अवलोकि तबहिं सब अली बुलाई ।
यह बानि में एक बार हमें लूट लई कन्हाई ॥
तनक फेरि फिरि आईये अपने सुखहिं बिलास ।
यह झगरो सुनि होयगो हो गोकुल में उपहास ॥
उलट चलीं सब सखी तहां कोउ जान न पावें ।
रोकि रहे सब सखा और बातिन बिरमावें ॥
सुबल सखा उठ बोलियो तुम ग्वालिनी हरि जोग ।
कैसे बात दुराति है हो तुम उनके संजोग ॥
किनहु शृंग कोउ बेनु कोउ बन पत्र बजाये ।
छांडि छांडि द्रुम डारि कूदि धरनी धसि धाये ॥
सखियन मध्य इत राधिका सखा मध्य बलबीर ।
झगरो ठान्यो दान को हो कालिन्द्री के तीर ॥११॥

॥कहत नन्दलाड़िले॥

दै नागरि दधि दान कान्ह ठाड़े वृन्दाबन ।
और सखा हरि संग बच्छ चारत अरु गोधन ॥
वे बड़े नन्द के लाड़िले तुम वृषभान दुलारि ।
दही मही के कारणे हो कताहि बढावत रारि ॥१२॥

पद

हमरो दान देहु ब्रजनारी ॥टेक॥
मद माती गज गामिन डोलति, दधि बेचन हारी ॥
रूप तोहि बिधना ने दीन्हो, गयो चंदा उजयारी ॥
मटुकी सीस कटीले नयना, मोतिन मांग संवारी ॥

हार हमेल गले में राजै, अलकैं घूंघर वारी ॥
या वृज में जेती सुन्दरि हैं, सब हम देखीं भारी ॥
नारायण तेरी या छवि पर, नंद नंदन बलिहारी ॥१३॥

कहत वृज नागरी

मांगे गोरस लेहु कान्ह हम सों लै खाहू ।
ऐसे ढीठे ग्वाल कान्ह बरजत नहिं काहू ॥
यह मग गोरस बेचते दिन प्रति आवन जान ।
हमहिं छाप दिखरावहु तुम कापर पहिरेउ दान ॥१४॥

कहत नन्द लाड़िले

इते मान सत राति ग्वारि हम जानि न पाये ।
अन उत्तर की खोरी बैन कत कहति कठाये ॥
इतनी हम सों को कहै या वृन्दाबन बीच ।
पुहमि माट ढरकाय हों तो मचै दही की कीच ॥१५॥

राग मल्हार

जोवन की मदमाती डोलेरी गुजरिया ॥टेक॥
अंग अंग जोवन के उठत तरंग नये नयना कजरारे भुहैं तिरछी नजरिया ॥ हांथन में चूरी नकवेसर करनफूल मुंदरी ललित छवि देत अंगुरिया ॥ अवलों तोसी नहिं देखी नारायण दधि की वेचन हारी नंद की नगरिया ॥१६॥

राग भैरव

देखत की सुख ऊजरी गुजरी शीश विराजत बासन कोरो ॥
दान त्रिगार कहो कैसे जान देउं, तू इत भोरी की मैं उत भोरो ॥
गोरस की सोंह सो रस छांड़ि देहु, तनक चखाय घनो है के थोरो ॥
जैसे तुम लाय हो याहि निहोरो कर, तैसे इक मान लेहु मेरो निहोरो ॥

कहति वृज नागरी
अहो कन्हैया ढीट आहि तुम अजहूं बारे ॥
गाय चरावन जात भये कबते अधिकारे ॥
मात पिता जैसे चले तैसे चलिये आपु ॥
कठिन कंस मथुरा बसे हो को कहि लेय संतापु ॥१८॥

राग सोरठ

कांकड़ली ना घालो म्हारी फूटे गागड़ली ।
तू तो ठानो घर में ठाकड़ हों भी ठाकड़ली ॥
आकड़ आकड़ बोलो कान्हा मैं भी आकड़ली ।
ओढ़े थानो कारी कामर हांथ में लाकड़ली ॥
नौ लख धेनु नंद घर दुहिया एक ना बाखड़ली ।
माखन माखन आपन खायो रहगई छाछड़ली ॥
जाय पुकारूं कंस के आगे मारे थापड़ली ।
वृन्दावन में रास रच्यो है मोर की पाखड़ली ॥
नरसी के स्वामी सामलिया दूध में साकड़ली ॥१६॥

राग परज

तुम टेढ़ो मारी टेढ़ी गागरिया ।
टेढ़ी२ चाल चलो त्रिभंगी, काहे को दिखाये लाला टेढ़ी पागरिया ।
टेढ़ी अलक में कया बांधूगी, कछु ना सुहावे मोंहि थारी सागरिया ।
टेढ़ो श्री वृन्दावन गोकुल टेढ़ी बाहू से टेढ़ी वृषभानु नागरिया ।
टेढ़ो श्री नंद बाबा मात यसोदा, और टेढ़ी वृषभानु दुलारिया ।
सूरदास टेढ़े की संगति, टेढ़ होकर पार उतारिया ॥२०॥

कहत नन्द लाड़िले ॥
लियो उपरैना छीन दूर डारनि अटकायो ॥
दयो सखनि दधि बांट माट पुहुमी ढरकायो ॥
पट पीतांबर सांवरे कर पलास के पात ॥
हंसत परस्पर ग्वाल सब हो विमल२ दधि खात ॥२१

कहत वृज नारी

कान्ह बहेरी देहु भई जोबन के माते ।
बसिये येकहि गांव कानि राखति हो ताते ॥
तब न कछू बन आइ हैहो कैहो विरचि निहारि ॥
इन ग्वालिन को बल देख हो जब धरिहैं ताइ उतारि ॥२२॥

कहत नन्द लाड़िले

गहि अंचल झकझोरि तोरि हारा बलि डारी ।
मटुकी लइ उतारि मारि भुज कंचुकि फारी ।
गुप्त सैन दे सांवरे हो कामरि धरी दुराय ।
वा कामरि के कारने हो अभरन लियो छुड़ाय ।२३।

कहत वृज नागरी

झीनी कामरि काज कान्ह ऐसी नहिं लीजे ॥
कांध प..गिरि जाय नंद घर गयो न पूजे ॥
तिनही लीन्हे आप ऐसो कामरि को तोल ॥
शंख मुरारथा जाय गिरे हो का ह तुम्हारो मोल ॥२४॥

राग गुजरी

गिरिवर धरयो आपने घर को ॥
ताही के बलदान लेत हो रोक रहत हो हम को ॥
अपन हो सब बड़े कहावत हमहूं जानत तुमको ॥
यह जानत पुनि गाय चरावत नित प्रति जात हो बनको ॥
मोर मुकुट मुरली पीतांवर देखे आभूषण को ॥
सूर कांध कमरी हू जानत हाथ लकुटिया कर को ॥२५

कहत नंद लाड़िले

अविगत अगम अपार आदि नाहीं अविनासी ॥
परम पुरुष अवतार है माया जाकी दासी ॥
तुमहि मिले आछे भये कहा रही करि मौन ॥
तुम्हराह आगे न्याव है हो द्वै महँ ओछे कौन ॥२६

राग बिलावल

यह कमरी कमरी कर जानत ॥
जाके जितनी बुद्धि हृदय में सो तितनी अनुमानत ॥
या कमरी के येक रोम पर वारों कोटिन अम्बर ॥
सो कमरी तुम निंदति गोपी तीन लोक आडंबर ॥
कमरी के बल असुर संहारे कमरी के सब भोग ॥
जात पात कमरी है मेरी सूर सबहिं यह योग ॥२७॥

कहत बृज नागरी

अब तुम सांची बात कही ॥
येत पर युबतिन को रोकत मांगत दान दही ॥
जो हम तुमहिं कह्यो चाहतही सो श्री मुख प्रकटायो ॥
नीके जात उघारी अपनी युबतिन भले हंसायो ॥
तुम कमरी के ओढन हारे पीतांबर नहीं छाजत ॥
सूर श्याम कारे तन ऊपर कारी कमरी भ्राजत ॥२८॥
हमहिं ओढाई भई जबहिं तुमको पति पालयो ॥
तुम पूर सब भांति मातु पितु संकट घालयो ॥
कहा चलत उपरा बढ़े अजहूं लिसीन गात ॥
कंस सोंह द पूजि जेहो जनि जग पटके है सात ॥२९॥

कहत नंद लाड़िले

कंस केश पुनि गहों पहुमि को भार उतारौं ॥
उग्रसेन सिर छत्र चमर अपने कर ढारों ॥
मथुरा सुरनि बसाय हों असुर करों यम हाथ ॥
दनुज दमन बिंदावली हौं सांची त्रिभुवन नाथ ॥३०॥
मोसों बात सुनो बृज नारी ॥
येक उपख्यान चलत त्रिभुवन में सो तुम आज उघारी ।
कबहूं बालक मोंह न दीजे मोंह न दीजे नारी ॥
जो मन आवे सोई कर डारे मूड चढ़त है भारी ॥

बात कहत अठिलात जात सब हँसत देत कर तारी ॥
सूर कहा ये हम को जाने छांछ की बेंचन हारी ॥३१॥
कहत बृज नागरी
यह जानत तुम नंद महर सुत
धेनु दुहात तुमको हम देखत जबहीं जात खरकहीं उत ॥
चोरी करत यही पुनि जानत घर घर ढूंढत भांड़े ॥
मारग रोक भये अब दानी वे ढंग कबने छांड़े ॥
और सुनो यशुमति जब बांधे तब हम करी सहाय ॥
सूर श्याम प्रभु यह जानत हम तुम बृज रहत कन्हाय ॥३२॥
तब न कंस निगृह्यो पहुमि को भार उतारेउ ॥
चोरी जाये मातु गोद गोकुल पगु धारेउ ॥
अबै बहुत बने आवते दूध दही के मात ॥
जो ऐसे बलवन्त हो मथुरा काहे न जात ॥
कहत नंद लाड़िले
जो जैहों मधुपुरी बहुरि गोकुल नाहिं ऐहों ॥
यह अपनो परताप नंद यशुमतिहिं सुनैहों ॥
वचन लागि मैंहू कियो यशुमति को पय पान ॥
मोहि ग्वाल जिनि जानहू ग्वालिनी सुनहु निदान ॥३९
राग आसावरी
को माता को पिता हमारे ॥
कब जनमत हमको तुम देख्यो हंसी लगत सुन बात तुम्हारे ॥
कब माखन चोरी कर खायो कब बांधे महतारी ॥
दुहुत कौन गैया को चारत बात कही तुम भारी ॥
तुम जानत मोहि नंद को ढिटौना नंद कहां ते आये ॥
मैं पूरण अविगति अविनाशी माया सबन भुलाये ॥
यह सुन ग्वालि सभी मुसक्यानी ऐसेही गुन जानत ॥
सूर श्याम जो निदर्यो सबही मात पिता नहिं मानत ॥३५॥

भक्त हेतु अवतार धरो मैं॥
कर्म धर्म के वश में नाहीं, योग यज्ञ मन में न करों मैं॥
दीन गुहार सुनों श्रवणन भर, गर्व वचन सुन हृदय जरों मैं॥
भावाधीन रहों सबही के, और न काहु ते नेक डरों मैं॥
ब्रम्हा आदि कीटलों व्यापक, सब को सुख दे दुखहि हरों मैं॥
सूर श्याम सब कह्यो प्रगट हो, जहां भाव तहां ते न टरों मैं॥

कहत बृज नागरी

तब दधि आगे धरेउ, कान्ह लीजे जो भावे॥
खाय जाय मंजार, काज एको नहिं आवे॥
हम अनखोया बात को, लेत दान का नांव॥
सहज भाव नित लाड़िले हो, बसत एकही गांव॥२७

कहत नंद लाडिले

अभरन दिये मँगाय, कियो गोपन मन भायो।
हिल मिल बढ़ो विलास, आपु हरि माट उठायो।
नंद नन्दन छबि देखि के, गोपन वारेउ प्रान।
कुंज केलि मन में वसी हो, अति गाई सूर सुजान।२८।

लालजी वचन

पद पूर्वी

सब मिलि कंचन थार लै बाला, मेने मारग जाहुरी ॥टेक॥
मही दही दिखरायरी प्यारी, कैसे होत निबाहरी॥
जोबन दान बिना नहिं छांडो, देहु तुरत फिर जाहुरी॥१॥
तुम्हरे अंग अंग दानहिं लेकें, मन्न को लेहूं लाहुरी॥
मटुकी फोर धरनि में डारों, अंकम भरि गहों बांहरी॥२॥
दूध दही घरही मेरे बहुतो, नेक ना वाकी चाहरी॥
तुम सों छीन अबही दधि माखन, ग्वालन देहु खवायरी॥३॥
मानहु मोर कही सब सुन्दरि, प्रीति की रीत निवाहरी॥
देहु हरिदास मोर मन भायो, नासहु तनकी दाहरी॥४॥३६

सखी बचन

पद पूर्वी

ऐसो दान न मांगिये जैतो, हम पै दियो न जाय हो।
बन में पाय अकेली युवतिन, मारग रोकत धाय हो।
बाट घाट औघट यमुना तट, बात कहत बनाय हो।
कोउ ऐसो दान लेत है मोहन कौने सिखये पठाय हो।
हम जानत तुम यों नहीं रैहो, रैहो गारी खाय हो।
जो रस चाहो सो रस नाहीं, गोरस पीओ अघाय हो।
औरनि सों लै लीजे गिरधर, तब हम देहैं बुलाय हो।
सूर श्याम कत करत अजगरी, हम सों कुंवर कन्हाइ हो।४०

राग नट

दान लेहु देउ जान काहे को कान्ह देत हो गारी॥
जो कोउ कहेउ करे हट याही मारग आवे दे गारी॥
भली करी दधि माखन खायो चोलि हार तोरि डारी॥
जोवन दान कहू कोई मांगत यह सुनके अति लाज न भारी॥
होत अबार देहु घर जानहौं पैया लाग करति हैं भारी॥
हमही तुमहीं कैसो है झगरा सूर श्याम हम ग्वारि गंवारी॥

राग भैरों

मोरहीं सों कान्ह करत मोसों झगरो॥
औरन छांडि परे हट हम सों, नित प्रति कलह करत गहि डगरो॥
बिन बोहनी तनक नहिं दैहों, ऐसेहि छीन लेहु किन सिगरो॥
सब कोउ जात मधुपुरी बेचन, कौन देहुं दिखराऊ कगरो॥
मुख चूंबति हँस कंठ लगावति, आपहिं कहहि न लाल अचगरो॥
सूर सनेह ग्वारि मन अटक्यो, छांड़हु दियो परत नहीं पगरो॥४२

लालजी बचन

रेखता

दे देउ दान प्यारी निज अंग अंग को।

फल लाल से उरोज सीस हुई उतंग को ॥१॥
सिंदूर लाल गोरे भाल मूंगा मांग को।
कटि किंकनी रतन की घंटा अनंग को ॥२॥
नथनी बुलाक बेसर गलहार रंग को।
श्री कंठ दुलरी तिलरी गले माल लौंग को ॥३॥
भुज बाजू बंद बोंहटा अंगिया के बन्द को।
जेहर पगन में मंद मद गति मतंग को ॥४॥
दधि दान को मगावो मम है प्रसंग को।
हरिदास कछु न लेहौं विन दान अंग को ॥५॥ ४३

राग पूर्वी

जोबन दान लेहुंगो तुम सों॥
जाके बल तुम बदति न काहू, कहा दुरवति हो हम सों।
ऐसो धन तुम लिये फिरति हो, दान देति सतराति।
अतिहीं गर्व ते कहे उन मोसों, नित प्रति आवति जाति।
कंचन कलस महारस भरे, हमहूं तनक अखाहु।
सूर सुनहु कत भार भरति हो हमहिं न मोल दिखावहु॥४४

कहा कहत तू नन्द ढुटौना।
सखी सुनहु य बातैं जैसी, करत अतिहिं अचमौना।
बदन सकोरत भूंह मरोरत, नयनन में कछु टौना।
जोवन दान कहां धौं मांगत, भई कहुहु नहिं हौना।
हम कहें बात सुनो बृज नारी, मोहन काल रहे तुम छौना।
सूर श्याम गारी कहा दीजे, यह बुधि है घर खोना॥४५

सखी बचन पद

ऐसे जिन बोलो नन्द के लाला।
छाड़ि देहु तुम अचरा मेरो, जानत औरसी वाला।
वार वार मैं तुमहिं कहतहों, परिहो बहुरि जंजाला।
जोवन रूप देखि ललचाने, अबही तें ये ख्याला।

तरुणाई तन आवन दीजे, कत तें हो बेहाला।
सूर श्याम उरतें कर टारहु, टूटेगी मोतिन की माला ॥४६।

कन्हैया हार हमारो देव।
दधि लवनी घृत जो कछु चाहो, सो ऐसहिं तुम लेहु।
कहा करें दधि दूध तुमारो, मासों नाहीं काम।
जोवन रूप दुराय धरो हो, तेहिं को लेत न नाम।
नांके मानहुं मांगत तुमसों, बैर नहीं उर नाखति।
सूर सुनहुरी ग्वारि अयानी, अन्तर हम सों राखति।४७।

हार तोरि बिथुराय दयो।
मैया पै तुम कहन चलीं कत, दधि माखन सब छीन लियो।
रिस करि धाय कंचुकी काटी, अब तो मेरो नाम भयो।
सूरदास मुख रिस पुलकित डर, उर अन्तर अति काम जयो।४८

पद

सुनहु श्याम अब हम चलीं, यशुमति के आगे।
तो बांदियो हम को अबहिं, तुम को घर लागे।
एक एक करि बिथुराय के, मोतिन की लर तोड़ी।
हँस भेटी कुच परस के, गहि अंग झंझोड़ी।
चली महर पै सुन्दरी, उरहन लै हरि को।
अबहीं बोल बंधाइये, लंगर यह लरको।
गई नन्द यशुमति, जहं भीतर।
देख महिर कह उठी सुत कान्ही इतर।
मारग चलन ना पायेरी हरि के आगे।
सूरदास प्रभु त्रास ते बृज तजि हम भागे ॥४६

जसोदा बचन

पद

मैं तुम्हरे मन की अब जानी।
आपुस में इतरांति करत हो, दोष देत हो श्याम को आनी।

मेरो हरि कहां दसहीं बरष को, तुमरी जोबन उमदानी ॥
लाज नहीं आवति इन लंगरिन, कैसे धौं कहि आवत बानी॥
आपुहि हार तोरि चोली बंद, उर नख घात बनाय निसानी॥
कहँ कान्हा की तनक अंगुरिया, यह कहँ नार बार पछितानी॥
देखहु जाय और काहू को, हरि पर रहत सबहिं इंडरानी ॥
सूर दास प्रभु मोरो नान्हो, तुम तरुणी डोलत अठिलानी॥५०

वार्तिक

इतने में नंदलाल हू आप पहुंचे अरु बोले

पद

जाय सबै कंसहि गोहरावहु॥
दधि माखन घृत लेत छिड़ाये, आजहिं मोहु बुलावहु ॥
ऐसे को कहा मोहि बतावति, पल भीतर गहि मारों ॥
मथुरापतिहिं सुनहुंगी तुमही, जब वाके धरि केस पछारों॥
बार बार दिन हमहिं बतावति, अपनो दिन न बिचारो॥
सूर इन्द्र बृज तबहीं बहावत, कर गिरि राखि उबारो ॥५१

लावनी

मैं ही तो हूं नन्दको लाला मात यशोदा को कन्हैया मैं ही तो हूं॥
धर धर कें अवतार भूमि को भार हरैया मैं ही तो हूं ॥
मथुरा में लियो जन्म बृज मंडल को बसैया मैं ही तो हूं ॥
प्रथम पूतना तृणावर्त सकटा को हनैया मैं ही तो हूं ॥
मथुरा में लियो जन्म बृज मंडल को बसैया मैं ही तो हूं ॥
कागा को मार के चोंच को फार करैया मैं ही तो हूं ॥
बृज बासिन को प्रेम देख माखन को खवैया मैं ही तो हूं ॥
यमलार्जुन हेतु ऊखल सों हांत बंधैया मैं ही तो हूं ॥
नौलख धेनु खिरक भरे में तिन को दुहैया मैं ही तो हूं॥
पकरूं कंस के केस देख ऐसो तो लरैया मैं ही तो हूं ॥
उग्रसेन को राज मथुरा को दिवैया मैं ही तो हूं ॥

भक्तन हितकारी बलदेव को भैया मैंही तोहूं ॥
कुन्दन बिप्र यह कहत नाम राधा को रटैया मैंही तोहूं ॥५२

वार्तिक

बाहर जाइ फेर लालजी राधा जी से बोले ।

राग रामकली

राधा सों माखन हरि मांगत ॥
औरन की मटुकी को चाख्यो, तुमरो कैसो लागत ॥
लै आई वृषभान नंदिनी, सद लोनी है मेरो ॥
लै दीनो अपने कर हरि मुख, खात अल्प हंस हेरो ॥
सबहिन ते मीठो दधि है यह, मधुरे कह्यो कन्हाई ॥
सूरदास प्रभु सुख उपजायो, बृज ललनाभृत माई ॥५३

प्रियाजी बचन

पद

श्यामहिं बोल लिये ढिग प्यारी ॥
ऐसी बात प्रगट कहुं कहिये, सखिन मांझ कहति लाजन मारी॥
एक ऐसहि उपहास करत सब, तापर तुम यह बात पसारी ॥
जात पांति के लोग हंसेंगे, प्रगट जानि हैं स्याम भतारी ॥
लाजन मारत कत हो हमको, हाहा करति जाति बलिहारी ॥
सूर श्याम सर्बज्ञ कहावत, मात पिता सों पावत गारी ॥५४

लालजी बचन

पद

सुनहु बात युवती येक मेरी ॥
तुम तें दूर होत नाहिं कतहूं, तुम राख्यो मोहि घेरी ॥
तुम कारन बैकुंठ तजति हों, जन्म लेत बृज आय ॥
वृन्दाबन राधा संग गोपी, गृह न बिसारेउ जाय ॥
तुम अन्तर अन्तर कहँ भाषति, एक प्रान द्वै देह ॥
क्यों राधा अब बृजे बिसारी, सुमिर पुरातन नेह ॥

अब घर जाहु दान मैं पायो, लेख्यो कियो न जाय ॥
सूर स्याम हँसि २ युवतिन सों: ऐसी कहत बनाय ॥५५॥

पद

मन भीतर है बास हमारो ॥
हमको लेकरि तुमहि छिपायो, कहा कहति यह दोष तुम्हारो ॥
आजहुं कहो रहे हरि अंतहि, तुम अपनो मन लेहु ॥
अब पछितानी लोक लाज डर, हमहिं छांडि तो देहु ॥
घटती होय जाहिते अपनी, ताको कीजे त्याग ॥
धोखे दियो बास मन भीतर, अब समझे भई लाज ॥
मन दीन्हों सोको तब लीन्हो, मन लैहो मैं जाय ॥
सूर स्याम ऐसे जिनि कहिये, हम यह कही सुभाय ॥५६॥

प्रियाजी वचन

पद

तुमहिं बिना मन धिग अरु धिग घर ॥
तुमहीं बिना धिग धिग माता पितु, धिग धिग कुलकी लाज कानि भर ॥
धिग सुत पति धिग जीवन जगको, तुम बिनु धिग संसार ॥
धिग निशि बासर पहर घरी पल, धिग यह कहिये नन्द कुमार ॥
धिग धिग श्रवन कथा बिन हरि की, धिग लोचन बिन रूप ॥
सूरदास प्रभु तुम बिनु घर ज्यों, बन भीतर धिग कूप ॥५७॥

वार्तिक

या उपरांत प्रिया जी अपने भवन को सिधारीं ॥

इति

समाप्त
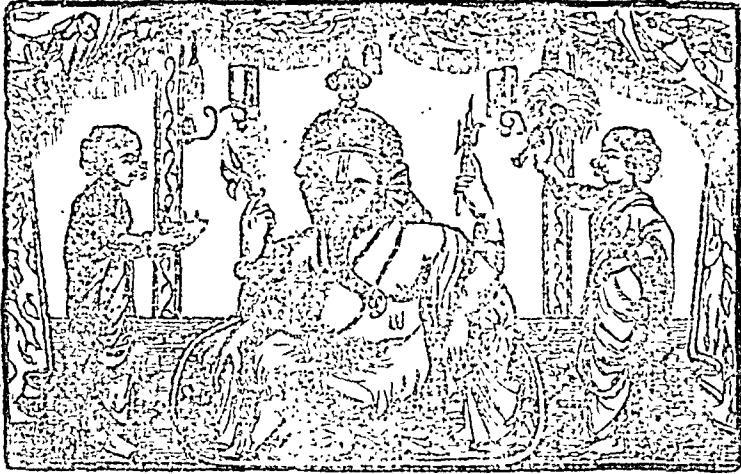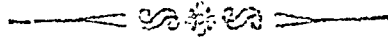
श्री गणेशायनमः

रास रत्नावली

तीसरा भाग निकुँज लीला

श्री राधा वल्लभो जयति

श्लोक

भद्राय भवतां भूयात्कृष्णः सद्भक्ति भावितः ।
कालिन्दी जल संसर्ग मेघ श्यामोति सुन्दरः ॥१॥
मेघै मेंदुरमं वरं वन भुवः श्यामास्त माल द्रुमै ।
नँक्तं भीरू रयं त्वमेव तदिमं राधे गृहं पापय ॥
इत्थं नंद निदेशत श्चलितयोः प्रत्यध्व कुंज द्रुमं ।
राधा माधव योर्जयंति यमुना कूले रहः केलयः ॥२॥
ब्रम्हादि जय संरूढ मूढ कंदर्प दर्पहा ।
जयति श्री पति गोपी रास मंडल मंडनः ॥३॥

श्री रासलीला

दोहा

वृज बन और निकुंज की, लीला त्रिविधि प्रकार ।
मानव वपु श्री कृष्ण ने, कीन्ही सब सुखसार ॥४॥
तीनहु में अति सरस लखि, युगुल केलि बन कुंज ।
कही पांच अध्याय में, श्री शुकमुनि तप पुंज ॥५॥
चीर हरण लीला समय, गोपिन सों पन कीन्ह ।
ताके पूरन करन हित, उर इच्छा धरि लीन्ह ॥६॥
आश्विन शुक्ला पूर्णिमा, शरद रात मन जान ।
खिली चमेली मालती, बन शोभा की खान ॥७॥

बन की शोभा निरखि के, केलि कला परवीन।
बंसीबट में जाय के, कृष्ण बजाई बीन ॥८॥

वार्तिक

बंसी में सब बृजवालों के नाम लेइ लेइ बुलाईं, यह सुन बृजबाला बोलीं ॥९॥

दोहा

अरी सखी बन में बजी, बंसी चित की चोर।
मो मन खींचत आप को, ज्यों चकरी कों डोर ॥१०॥

कवित्त

एक उठि दौरी एक भूल गई पौरी, एक राख सर कौरी सुध रही ना तन में ॥ एक खुले बार एक छतियां उघार, एक भूषण डार चली दामिनी ज्यों घन में ॥ एक उज्यारी गोपी नाथ ने निहारी एक भई बौरी डोले मदन के उमंग में ॥ उद्धव भयो है परी चार बृज मंडल में, बांसुरी बजाई कान्ह जभी बृन्दाबन में ॥११॥

कवित्त

बाजी घर आंईं बाजी देखवे को धाईं, बाजी मुरझांईं तान सुनि गिरिधर की ॥ बाजी हंस बोलें बाजी करत कलोलें, बाजी संग लागि डोलें सुध बिसरी सब घरकी ॥ बाजी ना धरें धीर बाजी ना समारें चीर, बाजिन के उठी पीर दाबानल भरकी ॥ बाजी कहैं बाजी२ बाजी कहैं कहां बाजी, बाजी कहैं बाजी बंसी सांवरे सुघर की ॥१२॥

दोहा

बांसुरिया बिष भरी बाजी ॥टेक॥
बंसी २ नाम है, कान्हू धरयो प्रवीन।
तान तान की डोर सों, खैंचत है मन मीन ॥१॥
अहो बांस की बंसुरिया, तैं तप कीयो कौन।
अधर सुधा पिय को पिये हम तरसत बिच भौन ॥२

अरी क्षमा कर मुरलिया, परहैं तेरे पांय ॥
और सुखी सुन होत हैं, महा दुखी हम हाय॥२
अहो बांस की बसुरिया, निकसी पर्वत फोर।
जो मैं ऐसी जानती, डारति तोर मरोर॥
ये अभिमानी मुरलिया, करी सुहागिन श्याम।
अरी चलाये सबन पै, भले चाम के दाम॥५॥
तू है बृज की मुरलिया, हम हैं ब्रज की नार।
तीन लोक में गाइये, बंसी अरु ब्रज नार॥६
नयनन के चल तीर तन, रह्यो परति नहिं भौन।
ता पर बंसी बाजि मत, देत कटे पर लोन॥७॥१२॥

पद

मुरली श्याम कहां ते पाई॥
करत नहीं अधरन तें न्यारी, कहा ठगौरी लाई॥
ऐसी ढीठ मिलत ही ह्वै गई, उनके मनही भाई॥
हम देखत यह पिवति सुधारस, देख्यौरी अधिकाई॥
कहा भयो मुंह लागी हरिके, बचनन लियो रिझाई॥
सूर श्याम को बिवस करावति, कहा सौति सी आई॥१४

पद

मुरली दूरि कराये बनि है॥
अबही तें ऐसे ढंग याके, बहुरि काहि वह गनि है॥
लागी हरि कर पल्लव बैठन, दिन२ बाढ़ति जाति॥
अबही तें तुम सजग होहुरी, मैं जु कहति अकुलाति॥
यहि ब्रज में नाहिं भली बतानी, देख्यो हृदय बिचारी॥
सूर श्याम वाही के ह्वै गये, सब ब्रज नारि बिसारी॥१५

पद

मुरली हम को सौति भई॥
नेक न होति अधर तें न्यारी, जैसे तृषा दई॥

यहां चवाति यहां डरति लै लै, जल थल बनानि बई ॥
पुनि पुनि लेइ सकुच नाहिं मानति, कैसी भई दई ॥
जा रस को मत करि तनु गारेउ, कीन्हीं रई रई ॥
कहा धरे वह बांस बांस को, आस निरास गई ॥
ऐसी कहूं भई नहिं देखी, जैसी भई नई ॥
सूर बचन वाके टोना से, सूर मनोज जई ॥ १६

पद

सुरली हम सों बैरु बढ़ायो ॥
चली निपट इतराय नेकहीं, हरि अधरन परसायो ॥
फूली फिरति श्याम कर बैठी, योंही गर्व बढ़ायो ॥
जो निधनी धन पाय अचानक, नयन अकाश चढ़ायो ॥
सूर श्याम देखत सिहात है, ताको जाय रिझायो ॥
त्रिभुवनपति श्रीपति जे कहावत, तिन मुरली बस पायो ॥१७

पद

मुरलिया श्यामहिं और कियो ॥
और दशा औरे है मति गई, और विवेक हियो ॥
तब तें निठुर भये हरि, हम सों जब तेहि हाथ लई ॥
निशि दिन हम उन के संग, रहती मनो है गई नई ॥
यहि औरै करि डारे भार, हम को दूरि करी ॥
घर की बन बन की घर कीन्ही, सूर सुजान हरी ॥१८

पद

अब मुरली पति क्यों न कहावत ॥
राधा पति काहे को कहिये, सुनत लाज जिय आवत ॥
वह अनखाति नाम सुनि हमरो, इत हमको नहिं भावत ॥
मैं मिलि चलै फोरि हमहीं को, कै बन हरि किन छावत ॥
का ओछे की नाव चढ़त है, अपनी बिपति करावत ॥
सुनहुं सूर यह कौन भलाई, हंसि हंसि बैरु बढ़ावत ॥१६॥

पद सारंग

यह हम को बिधना लिख राखी ।
नाम गांव कहां ते आई, श्याम अधर रस चाखी ।
यह दुख काहि कहों को जाने, ऐसी कौन निवारे ।
जो रस धरेउ कृपण की नाई, सो सब ऐसेहि डारे ।
यह दूषण वाही को कहिये, कै हरि हू लों दीजे ।
सुनहु सूर कछु बच्यो अधर रस, सो कैसे करि लीजे ।२०

यह सुन एक सखी बोली

पद

सुनहु एक बात हो ब्रज नारि ।
रिस किये पावति कहा हो, कहा दीन्हे गारि ।
जातिउ घटति पांतिउ घटति, लेति हों सब मान ।
तुम कहति मैं हूं कहति सोई, सोहि बनि तें आनि ।
कर्म को यह बहुत नाहीं, श्याम अधरनि धारि ।
सूर प्रभु जो कृपा कीन्ही, कहा रही बिचारि ।२१।

वार्तिक

यह बचन सुनि एक सखी बोली ।

लावनी

सखी काह कहों कछु बोलो ना बात बिचारी ।
बंसी ने बन में जाय कियो तप भारी ॥
तुम पूंछहु तो यह बात श्याम सों जाके ।
क ते दुख पाके बैठि अधर पे आके ॥
जनमत हीं जप तप योग जरी ना डोली ।
ठाड़ी इक पांव कुठांव न काहुय बोली ॥
षट ऋतू सहे संताप आपु ही सूखी ।
नहिं काटन फाड़न देह नेह की भूखी ॥
छिनहू में माया छोड़ मोह की फांसी ।

तजि लेन देन सुख देन भजे अविनाशी ।
तजि गेह द्वार परिवार सार को चीन्हों ।
तन छीलत छेदत नाहिं मलिन मन कीन्हों ॥
तुमहूं किन तन को गार प्यार दिखराओ ।
हरिदास करो बकवाद न श्याम रिझाओ ।२२।

अपर सखी वचन

कवित्त

वे मगदा पद अंधनि को, इन चालिशे आछिनिहूं को वियार्‍यो ।
सूरति थाह दिखावति वे, इन प्रेम अथाह के वारिधि डार्‍यो ।
वे बस वास बसावत है, इन बास छड़ाइ उज्यार निवार्‍यो ।
देखो अहो हरि की बसुरी, इन कैसे सुबंस को नाम बिगार्‍यो २३।

दूसरी सखी बोली

पद

रिझै लेहु तुमहूं किनि श्यामहिं ।
काहे को बकबाद बढ़ावति, सतर होति बिन कामहि ।
मैं अनेक तप को फलु भुगवति, तुमहूं करो फलु लीजे ।
तब जो बीच बोलि है कोई, ताहि दूरि करि कीजे ।
अपनो भाग नहीं काहू सों, आप आपने पास ।
जो कछु कहो सूर के प्रभु को, मोपर होत उदास ।२४।

अपर सखी बोली

पद

हम से तपु मुरली न करो री ॥
कहा सुलाक सहेउ एक पल जो, नित प्रति बिरह जरौ री ॥
किरिया से करिकै भय ठाड़ी, तुरत अधर तट लागी ॥
हम को दिन दिन मदन जरावत, वाही रस अनुरागी ॥
यहै बात कर्महु ते मोटी, ताते हम सरि नाहीं ॥
सूर श्याम की महिमा न्यारी, कृपा करी ता माहीं ॥२५

पद

तुम अपनी तपु की सुध नाही, बारे ते तनु गार कियो।
संबत पांच पांच की सब ये, अजहूं लौं भयो प्रगट हियो।
वह तुसार वह तपनि तपस्या, वह पावस झकझोरनि।
वह लरकई मातु पितु को हित; वैसी प्रीतिहि तोरनि।
तबही ते तनु बिरह जरात है, निशि वासर यों जात।
कैसे फलनि फलहिं जागैगो, सुनहु सूर यह बात।२६।

वार्तिक

अपर सखी बोली

चलो प्यारी नंदलाल जी वाही मुरली में अपने नाम टेर २ बुलाय रहे हैं ॥२७॥

पद

मुरलिया मोकों लागति प्यारी ॥
मिली अचानक आय कहूं ते, ऐसी रही कहां री ॥
धनि याके माता पितु धनि २, धनि यह मृदु २ बोलनि ॥
धन्य श्याम गुण गुणि के ल्याये, नागर चतुर अमोलनि ॥
यह निरमोल मोल नहिं याको, भली न याते कोई ॥
सूर दास याके पटतर को, तौ दीजे जो होई ॥२८

यह वार्ता करते करते एक सखी आगे बढी

कवित्त

एक ओर बीजना डुरावति चतुर नारि, एक ओर झारी लिये कर जल पान की ॥ पाछेते खवासिनी खवावे पान खोलि २, राधे मुख लाली मानो तमकर तानकी ॥ ताहीं क्षण बांसुरी बजाई नंद नंदन जू, आई सुधि वाही ब्रज कुंज की लतान की॥ बायें गिरी नीर वारी दाहिने समीर वारी, पीछे पानदान वारी आगे वृषभानकी२६

पद

सुनिये हो धरि ध्यान, सुधारस मुरली बाजे ॥

श्याम अधर पर बैठि बिराजत, सप्त सुरनि साजै ॥टेक॥
बिसरी सुधि बुधि गति सबहिन की, सुन बेनु मधुर कल गान॥
मन गति पंगु भई ब्रज युवती, गंधर्व मोहे गान॥
खग मृग थके फलनि तृण तजि के, बछरा न पीवत छीर॥
सिद्ध समाधि थक्यो चतुराननं, लोचन बहे सब नीर॥
महादेव की तारी छूटी, अति ह्वै रहे अचेत॥
ध्यान टरेउ धुनि हो मन लाग्यो, सुर मुनि भये अचेत॥
यमुना उलटि बही अति व्याकुल, मीन भये बलहीन॥
पशु पक्षी सब थकित भये हैं, रहे इक टक लौ लीन॥
इन्द्रादिक सनकादिक नारद, सुनि २ के आवेश॥
घोस तरुणि आतुर ह्वै धाईं, तजि पति पुत्र आदेश॥
श्री वृन्दावन कुंज कुंज प्रति, अति बिशाल आनंद॥
अनुरागी पिय प्यारी के संग, रस सब रचे सानंद॥
तिहूं भुवन भरि नाद प्रकाश्यो, गँगन धरनि पाताल॥
थकित भये ता रागनि सुनिके, चंद भयो बेहाल॥
नटवर भेष धरे नंद नंदन, निरखि वश्य भयो काम॥
उर बनमाल अरुण पंकज लो, नील जलद तन श्याम॥
जटित जराव मकर कुंडल छवि, पीत बसन सो भाय॥
वृन्दावन रस रास माधुरी, निरखि सूर बलि जाय॥३०

वार्तिक

ऐसे२ बचन बोलती चालती सिगरी ब्रजवाला बनकी ओर सिधारीं॥३१॥

पद

बंशी श्रवण सुनि गोप कुमारी ॥टेक॥
अति आतुर ह्वै चलति श्याम पै, तन मन की सब सुरति बिसारी॥
गल को हार पहिर निज कटि में, कटि की किंकिनि गल में डारी॥
पग पायल लै धारत कर में, कर की पहुंचिया पगन मझारी॥

कान बुलाक कपोल पै बेंदी, नाक में पहिरी कान की बारी ॥
एक नैन अंजन बिन सोहै, एक नैन में काजर धारी ॥
कोउ भोजन पति परसत दौरी, कोउ जेंवत कर ग्रास सिधारी ॥
नारायण जो जैसे हुती घर, तैसेहीं उठि बिपिन सिधारी ॥३२

वार्तिक

इन को बन में आवते देख लालजी बोले ॥

लालजी को बचन

पद

या बिरियां तुम यहां क्यों आई ॥टेक॥
अर्ध रैन अति सघनि बिपिन में, डोलत हैं बन मृग समुदाई ॥
कै बृज प्रबल भूप चढ़ि आयो, कै तुम सों घर भई लराई ॥
कै कहुं त्याग दई पतियन ने, कै बन बिहरन कों उठि धाई ॥
जो तुम कहो तुम्हारे दरशन, येहु हमें नहिं बात सुहाई ॥
नारायन निज निज गृह जाओ, याही में कुल धर्म बड़ाई ॥३३॥

समाजी बचन

दोहा

निठुर बचन सुनि श्याम के, है ब्रजबाल निरास ॥
पग नख सों धरती लिखत, लै लै ठंडी स्वास ॥३४

गोपिका बचन लालजी प्रति

कवित्त

शूकर ह्वै कब रास रच्यो, अरु बावन हो कब गोपि नचाई ॥
मीन हो कौन के चीर हरे, कछुआ होय के कब बीन बजाई ॥
हो नरसिंह कहो हरिजू, तुम कौन की छतियन रेख लगाई ॥
वृषभानु सुता प्रगटी जब ते, तब ते तुम केल कलानिधि पाई ॥ ३५

कुंडलिया

जब बोली इक चतुर सुनो तुम नंद दुलारे ॥
श्रवन करत यह बचन कढ़त हैं प्राण हमारे ॥

कहत प्राण हमारे दया करि इन कों राखो ॥
ऐसे बचन कठोर लाल मति हम सों भाखो ॥
अति व्याकुल घर द्वार तजि हम आईं या बेर तब ॥
नारायन तुम नाम लै , बंशी में दई टेर जब ॥३६

गोपिका बचन

पद [राग परज]

ऐसी न चाहिये तुम्हें चित चोर ॥टेक॥
नैक समझि के बात कहो तुम , सांवरे नंद किशोर ॥
प्रथम बुलाय लई हम बन में, करि मुरली की घोर ॥
अब हम सों कहो जाओ भवन में, प्रीतम निपट कठोर ॥
तात मात पति भ्रात जगत में, जहां लग नाते और ॥
अब उन सों कहा काज हमारो, हम आईं तृण तोर ॥
नारायण अब तुम्हें त्याग पग, परत न घर की ओर ॥३७॥

सांड

बन बांसुरी बजाय कान्हा काम कीन्हो रे ॥टेक॥
जानि निबल अबलान को, सबल भई जा बीन ॥
घाल घनेरे घरन को, तन सों मन को छीन ॥१॥
हम सब निज २ भवन में, करत रहे गृह काज ॥
भनक परत हीं कान में, भाजी तजि सब लाज ॥२॥
पूत पतोहू प्रिय पती, करत रहे बक बाद ॥
तनक न काहू की सुनी, सुनि बंसी को नाद ॥३
इतने हूं पै कहन अब, लागे तुमहू ग्यान ॥
तनक दया नहिं हृदय में, पीर पराई जान ॥४॥
हम अनाथ अबला सकल, भोरी निपट अजान ॥
हरि दासों हरि दास लखि, देवहु जीवन दान ॥३८॥

लालजी बचन

पद

अब तुम मानो बात हमारी ॥
घर में जाय करो पति सेवा, परखत हैंगे बाट तिहारी ॥
सोई पतिव्रत वेद बिदित है, सुनि लीजे नव गोप कुमारी ॥
नारायण अपने भर्ता बिन, सकल जगत को जाने नारी ॥ ३९

मांड

बन में बिहाल बाला वारी लोट जाऊंरी ॥टेक॥
घोर निशा निर्जन बिपिन, फिरत भयानक जंत ॥
तुम अबला सुकुमार अति, डोलहु नाहिं इकंत ॥
मो मुरली की टेर सुनि, जो तुम आई धाय॥
सुखी भयउ सुनि वचन अब, सेवहु निज पति जाय ॥
कानो लूलो कूबड़ो, कुटिल कुचाली कूर ॥
जदपि सहस औगुण भरौ, पति न करै सति दूर ॥
तुम्हरो गुण मानो सदा, मो ढिग आवन केर ॥
मोर खबर हरिदास घर, करत रहहु हर बेर ॥४०

दोहा

हम तुम सों हित की कहैं, सुनो सकल बृज वाम ॥
अब इतनो हठ जनि करो, जाओ अपने धाम ॥४१

गोपिका वचन

दोहा

प्राण नाथ या जगत में, सो अभागिनी नार ॥
तुम्हें त्याग पुनि चहै जो, सुख कुटुंब परिवार ॥४२

पद

प्रीतम जाओ जाओ मति भाखो ॥टेक॥
यह जो नेम धर्म की पोथी, बांधि निकट धरि राखो ॥
कहो किसी सों अमी त्याग के, तुम अरिंड फल चाखो ॥
नारायण वह कब मानत है, लोभ दिखाओ लाखो ॥४३

लालजी बचन

वार्तिक

हे गोपियो या समय हमारे पास तिहारो आयवे को कछू प्रयोजन नहीं ॥४४॥

गोपिका बचन

पद

प्रीतम ऐसे निठुर जिन बोलौ ॥टेक॥
श्रवण करायक बचन सुधारस, अब कहां विष सो घोलौ॥
तजि परिवार शरन लई तुम्हरी, नेक तो मन में तोलौ ॥४५
नारायण तजि प्रीति डगर कूं, क्यों अनीति मग डोलौ॥

लालजी बचन

पद

नारी कौ निज पति ही देवा॥ टेक॥
मूरख वृद्ध रंक अति रोगी, ताही की कीजे रुचि सेवा॥
स्वपने हूं पर पुरुष न ध्यावें, मन में धर्म बिचारै॥
तनक विषय रस भोग कारणे, परमारथ न बिगारै॥
तातें तुम अपने गृह जाओ, करो जो वेद बखाने॥
नारायण नहिं झूठ कहैं हम, धर्म भली विधि जाने॥ ४६

गोपिका बचन

पद

हम बन आय कें धर्म कमायो ॥ टेक ॥
सो तौ पति झूठे या जग में, सांचो पति तुम ही को पायो।
प्रान जाओ पै भवन न जैहैं, यह जिय माहिं समायो॥
नारायन ऐसो को मूरख, मणि को पाय पुनि चहत गिरायो।४७।

सखी बचन

दोहा

सुनो लाल ऐसे बचन, फिर जनि करो बखान ॥

नतु सबरी ब्रज गोपिका, अबहिं तजेंगी मान ॥ ४८

समाजी बचन

दोहा

जब जानी निज हिये में, अति व्याकुल ब्रज बाम ॥
हंस बोले तब प्रेम वश, परम कौतुकी श्याम ॥ १ ॥४९

लालजी बचन

पद

यह बात बड़े अचरज की भई ॥ टेक ॥
हम तौ सहज सुभाव कही हंस, तुम सांची जिय मान लई
आओ गोपियो रास करें अब. सरद रैन अति मोद मई ॥
नारायन तातत्थेई कहि, लैन लगे गति श्याम नई ॥ ५०

पद

लाल को नचन सिखावत प्यारी ॥ टेक
वृन्दावन में रास रच्यो है, शरद रैन उजयारी ॥
मान गुमान लकुट लिये ठाड़ी. डरपत कुंज बिहारी ॥
थेइ २ करत लाल मन मोहन, उरप तुरप गति न्यारी ॥
कोउ मृदंग झांझ कोउ बीन बजावत, रोम २ बलिहारी ॥
देख २ ब्रम्हादिक नारद, अचरज सोच बिचारी ॥
व्यास स्वामिनी सो छवि निरखत, रीझ देत कर तारी ॥५१

पद

देखो री या मुकुट की लटकन ॥
निरतत रास लिये राधा संग, वैजंती बेसर की अटकन ॥
पीताम्बर छुट जात छिन २, नुपुर शब्द पगन की पटकन ॥
सूर श्याम की याछवि ऊपर, झूठो ज्ञान योग को भटकन ॥

रेखता

नाचत है छैल छबीला नंद का कुमार है ॥
गल बांहि दे प्रिया के सुंदर श्रृंगार है ॥

इत मंद २ झीनी नूपुर अवाज है ॥
उत पायजेब पायल घन कीसी गाज है ॥
पगिया लसी कुंवर के शिर पेंच लाल है ॥
भृकुटी लगी ललोई प्यारी के भाल है ॥
कटि काछनी सुचोली, पटुका किनार का ॥
दामन सुरंगी सला, कीरति कुमार का ॥
कानों जड़ाऊ झुमका गल हीर हार है ॥
मोतिन की माल सुन्दर शोभा अपार है ॥
गुंजा गले गुनी के तर गुंज माल है ॥
छतियां लगी ललासों बंसी रसाल है ॥
नासा बुलाक बेसर माथे पै मुकुट सोहै ॥
प्यारी के नख छटा पर रवि चंद कोटि मोहै ॥
दोनों झुके परस्पर छबि बे शुमार है ॥
केशव खड़ा बिलोके प्राणन अधार है ॥५२

वार्तिक

या उपरांत सखियांन ने प्रिया प्रीतम को बिवाह करिवो मन में बिचारो अरु ईश्वर इच्छानुसार रत्न जटित मंडप वाही ठौर तैयार हुई गयो ॥५३॥

इति

अथ बिवाह का समारंभ

पद

मनो पानि पानि सों जोरि, युवति दुंहु २ बिच श्याम बिराजै ॥
कंचन खम्भ खचित मरकत मणि, यह उपमा कुछ छाजै ॥
अंग २ प्रति कोटि काम छवि, लज्जित मधि नायक गिरधारी ॥

निर्त करत रस वस भये दोऊ, राधा मोहन प्यारी ॥
ब्रज वनिता मंडली वनी यों, शोभा अधिक बिराजै ॥
नूपुर कटि किंकिनी चलन गति, अरस परस्पर बाजे ॥
मोर चन्द्रिका सिर पर सोहै, जब हरि रूप झुणं नाचो ॥
अंग अंग प्रति और और गति, कोटि मदन छवि राच्यो ॥
यमुना जल उलटी बहि धारा, चंद्रा रथ न चलावे ॥
वानिक अतिहिं बने मन मोहन, मनमथ पकरि नचावे ॥
निर्त करत रीझत मन मोहन, राधा कंठ लगाई ॥
रास विलास करत सुख उपज्यो, सब वस किये कन्हाई ॥
अंतर्ध्यान करत दुख बाढ़यो, राधा बर सुखकारी ॥
सूरदास प्रभु भक्त वश्यता, प्रगट करी गिरधारी ॥५४॥

पद

अति रस रंग रास में बाढ़यो, पिया पीयमन आनंद गाढ़ो ॥
सखियन मिल अनुपम छवि देखी, दूलह दुलहिन कहत बिशेखी ॥
वृत धरि देवी पूजी, जाके मन अभिलाष न दूजी ॥
दीजे नंद पूत पति मेरे, जोपै होय अनुग्रह तेरे ॥
तब करि अनुग्रह बर दियो, जब बरष भरि लों तपु कियो ॥
त्रै लोक सुन्दर पुरुष भूषन, रूप गुण नाहिन बियो ॥
इत उबटि खोरि सिंगारी, सखियनि कुंवरि चोरी आनी ॥
जा हित किये वृत नेम संयम, सो घरी विधिना ठनी ॥
मुकुट रचि मोर बनायो, माथे धरि हरि दरु आयो ॥
तन श्यामल पीत दूकूले, देखत दामिनि घन भूले ॥
दामिनी घन कोटि वारो, जब निहारे सुख छवी ॥
कुंडल विराजत गंड मंडल, नहीं शोभा शशि रवी ॥
और कौन समान त्रिभुवन, सकल गुण जामाहिं ॥
मनो मोर निर्तत संग डोलत, मुकुट की परछांहिं ॥
गोपी सब न्योतें आईं, मुरली धुनि पठे बुलाई ॥

विधि आनंद मंगल गाये, नव फूलन मंडप छाये ॥
छाये जु फूल निकुंज मंडल, पुलिन में बेंदी रची ॥
बैठे जु श्यामा श्यामवर, त्रै लोक की शोभा खची ॥
उत कोकिला गण करें कुलाहल, इते सकल ब्रज नारि॥
आई ज न्योंते दुहूं दिशा तें, देति आनंद गारि ॥
रास मंडल भुज जोरी, श्याम सांवरे राधा गोरी ॥
पानि ग्रहन बिधि कीनी, तव मंडल भ्रमि भांवरि दीनी ॥
गाए जु गीत पुनीत बहु बिध, वेद रुचि सुन्दर धुनी ॥
नंद सुत वृषभान तन या, रास में जोरी बनी ॥
भये मन मथ सैन बराती, द्रुम फूले नाना भांती ॥
सुर बंदी जन यश गाए, तहं मघवा वाजे बजाये ॥
बाजहिं जे बाजन सकल नभ, सुर पुहुप अंजुल वरषही ॥
दिव्य विमान वैठे, शब्द जै करि हरषही ॥
सूरदास ही भयो आनंद, पूजी मनकी साधा ॥
मदन मोहन लाल दूलह, दुलहिनी श्री राधा ॥ ५५

पद

दुलहिनी श्री राधा प्यारी, विपिन में दूलह नंद कुमार ॥टेक॥
हरे हरे वांसन मंडप छायो, रचना बिबिध प्रकार ॥
नूतन किशलय जाल बिराजत, बिच बिच फूल बहार ॥
कंचन कलश कदली के खम्भा, चौक पुराये चार ॥
वर दुलहिन अंग २ अभूषन, माथे मौर संवार ॥
पियरे पट जरतारी जामा, दोउ अनुपम छवि धार ॥
मृग मद तिलक भाल दृग कज्जल, कुंडल कान मझार ॥
लखि लखि छबि सुरगण मन मोहे, हरिदासहुं बलिहार ॥५६

वार्तिक

याहि समय गंधर्वों ने गान कियो अरु अप्सरा गणोंने नाना प्रकार सों नृत्य दिखायो, दूलह दुलहिन की अनुपम छवि

देखि गोपी गण मग्न होय के बानरा गायवे लगीं ॥५७॥

पद

या बनरे पै मैं जाऊं बलिहारी ॥टेक॥
ज्याहि मिल्यो ऐसो वर सुन्दर, सो बनरी बड़ भागिनी वारी ॥
गौर वरन केसरिया बागो, कटि पटका बांधै जरतारी ॥
सीस मोर माथे पर सहरा, कानन में मुतियन छवि न्यारी ॥
हाथन मेहँदी रची कर कंकन, जाहि निरख रति पति मतिहारी ॥
नारायण लखि रूप मनोहर, सुफल भई अब आंख हमारी ॥

पद

दोऊ राजत श्यामा श्याम ॥ टेक ॥
ब्रज युवती मंडली बिराजत, देखत सुर नर बाम ॥
धन्य धन्य वृन्दाबन को सुख, सुर पुर कौने काम ॥
धनि वृषभान सुता धनि मोहन, धनि गोपन को नाम ॥
इन की को दासी सर ह्वै हैं, धन्य शरद की याम ॥
कैसेहु सूर जन्म बृज पावै, यह सुख नहिं तिहुं धाम ॥५८॥

आरती राग मांड

श्री लाड़ली लला की आली कीजे आरती।
भई सांझ बनके मांझ चलो हेली धावती ॥टेक॥
निविड़ कुंज तम पुंज में कालिंदी के कूल ॥
नवल लता नव तरुन में नव पल्लव नव फूल ॥
आली रतन सिंघासन पै लसत दोई रूप बिशाल ॥
नीलांवर शोभा घनी पीताम्बर वन माल ॥
आली वृन्दाबन बानिक बन्यो भ्रमर करत गुंजार ॥
दुलहिन प्यारी राधिका दूलह नंद कुमार ॥
आली युगल छबीली छवि छकी सखियन आरती साज ॥
किमि हरिदास बरन सकै, वह सुख रास समाज ॥

पद

चहूं दिशि मानहुं मीन तरे ॥
दशन कुन्द दाडिम दुति दामिनि प्रकटित अरु दुति जात ॥
अधर बिंब मधुर अर्मकिण प्रीतम बदन समात ॥
सुन्दर बदन बिलोल बिलोचन अति गहि रंग रंगे ॥
पुष्कर पुंडरीक पर मानहुं खंजन युगल खगे ॥
बिपुल पुलक कंचुकि बंद टूटे हृदय आनंद भये ॥
कुच युग चक्रवाक करुना मिटि अंतर रैनि गये ॥
ताल मृदंग उपंग बांसुरी उपजति ताल तरंग ॥
निकट विटप द्विज कुल को नित मनों पैवल बटत अनंग॥
सूर बिनोद सहित सुर ललना मोहे खग नर नाग ॥
बिथरयो उडपति व्योम बिंब गति श्री गोपाल अनुराग ॥

अन्तर ध्यान लीला श्रीकृष्ण जी की

पद

जब हरि मुरली नाद प्रकाश्यो ॥
जंगम जड़ थावर चर कीन्हे, पाहन जलज बिकाश्यो ॥
स्वर्ग पताल दशौ दिशि पूरन, धुनि आच्छादित कीन्हो ॥
निशिवर कल्प समान बढाई , गोपन को सुख दीन्हो ॥
मैं मत भए जीव जल थल के, तनकी सुधि न समार॥
सूर श्याम मुख बेनु मधुर सुनि, उलटे सब ब्यौहार ॥६२॥

पद

मुरली गति बिपरीत करायं॥
तिहूं भवन भरि नाद समान्यो, राधा रवन वजाय॥
बछरा थन नाहीं मुख परसत, चरति नहिं तृण धेनु ॥
यमुना उलटी धार चली बहि, पवन थकित सुन बेनु ॥

विह्वल भये नहीं सुधि काहू, सुर गन्धर्व नर नारि ॥
सूरदास सब चकृत जहां तहां, बृज युवतिन सुखकारि ॥

वार्तिक

बंसी श्रवन करते ही वृज वाला एकत्र होय प्रिया प्रीतम के समीप जाय ॥ उनको दूलह दुलहिन बनाय गायवे लगीं ॥

पद

दूलह दुलहिन श्यामा श्याम ॥
कोक कला व्युतपन्न परस्पर, देखत लज्जित काम ॥
जाफल को वृज नारि किये वृत, सो फल सबनि दियो ॥
मन कामना भयो परि पूरण, सबहीं मानि लियो ॥
राग रागिनी प्रगट दिखाये, गाये जो जेहि रूप ॥
सप्त सुरन के भेद बतावति, नागर रूप अनूप ॥
अतिहीं सुघरि पियको मन मोहति, अपवस करति रिझावति
सूर श्याम मोहनि मूरति को, बार बार उर लावति ॥६५

पद

श्यामा श्याम रिझावति भारी ।
मनमन कहति और नहीं मोसी, पिय के कोउ प्यारी ।
धुंवा बिंद घुर पद जश हरिके, हरि ही गाय सुनावति ।
आपुन रीझत कंत को रिझावती, यह जिय गर्व बढ़ावति ।
नीतीति उघटति गति संगति पद, सुनत कोकला लाजति ।
सूर स्याम प्रभु नागर नागरि, ललना मंडलि राजति ।६६।

पद

रिझवत पिय हीं बारंबार ।
निरखि नयन लजाति हरि हैं नहीं शोभा पार ।
चालि सुलप गज हँस मोहति कोककला प्रवीन ।
हंसि परस्पर तान गावति करति पियहि अधीन ।
सुनत बन मृग होत व्याकुल रहति चकृति आय ।

सूर प्रभु बस किये नागरि मह, जानिन राय ।६७

पद

प्यारी श्याम लई उर लाय ।
उरज उरसों परस को सुख, बरणि कापै जाय ॥
कनक छवि तनु मलय लेपन, निरखि भासिन अंग ॥
नाशिका शुभ बास लै लै, पुलक स्याम अनंग ॥
देत चुंवन लेत सुख को, मानि पूरण भाग ॥
सूर प्रभु वस किये नागरि, वदति धन्य सुहाग ॥६८

पद

रीझे परस्पर वर नारि ।टेक॥
कंठ भुज भुज धरे दोऊ, सकति नहीं निरवारि ॥
गौर स्याम कपोल सु ललित, अधर अमृत सार ॥
परस्पर दोऊ पियरु प्यारी, रीझि लेत उगार ॥
प्राण एक द्वै देह कीन्हे, भक्ति प्रीति प्रकास ॥
सूर स्वामी स्वामिनी मिलि, करत रंग बिलास ॥६६

पद

नंद कुमार रास रस कीन्हो, वृज तरुनिन मिली सुख दीन्हो।
अद्भुत कौतुक प्रगट दिखायो, कियो स्याम सबहिन मन भायो।
बिच गोपी बिच मिलि गोपाला, मणि कंचन सोहति शुभमाला।
राधा मोहन मध्य बिराजे, त्रिभुवन की शोभा ये भाजे।
रास रंग रस राख्यो भारी, हाव भाव नाना गति न्यारी।
निर्तत अंग थकित भई नागरि, रूप गुणन की परम उजागरि।
उमगि श्याम श्यामा उर लाई, वारंबार कहेउ श्रम पाई।
कंठ कंठ भुज दोऊ जोरे, घन दामिनि छूटत नहिं छोरे।
सूर श्याम युवतिन सुखदाई, राधा जिय प्रति गर्व बढ़ाई ।७०

पद

तब नागरि जिय गर्व बढ़ायो ॥टेक॥

तो समान तिय और नहीं कोउ, गिरिधर मैंही बसकर पायो।
जोइ जोइ कहति करत सोइ सोई, पिय मेरेहिं हित रास उपायो।
सुन्दरि चतुर और नहीं मोसी, देह धरे को भाव जनायो।
कबहुंक बैठ जाति हरि कर धरि, कबहुं कहति मैं अति श्रम पायो।
सूर श्याम गहि कंठ रहो तिय, कन्ध चढ़ौं यह बचन सुनायो।

वार्तिक

राधा अरु गोपियों को गर्व देख लालजी प्रगट में अन्तर ध्यान होय छुप के उनकी दशा देखवे लगे ॥७२

पद

तब हरि भये अन्तर्ध्यान ॥टेक॥
जब कियो मन गर्व प्यारी, कौन मोसी आन ॥
अति थकित भई चलत मोहन, चलिन मोपे जाय ॥
कंठ भुज गहि रहो यह कहि, लेहु जबहि चढ़ाय ॥
गये संग बिसारि रस में, बिरस कीन्ही बाल ॥
सूर प्रभु हरि चरित देखत, तुरत भई बेहाल ॥७३

पद– श्याम गये युवती सब त्यागी।
चकित भई तरुनी सबै निशि जागी ॥
प्यारी संग ले गये बिहारी।
कुंज लता सब तरुनी डारी ॥
संग नहीं तहं गिरवर धारी।
चहुंदिश संग न ले गये बिहारी ॥
कुंज लता सब तरुनी नारी।
चहुंदिशा तन दृष्टि पसारी ॥
परी मुरछि तब सकल कुमारी।
काम बैर लीन्हो शर मारी ॥
कहि कहि कहां गये बनवारी।
भई व्याकुल सब सुरत बिसारी ॥

नयन सलिल भीनी सब नारी ।
सूर संग तजि गये मुरारी ॥७४

पद

व्याकुल भई घोस कुमारि,
श्याम तजि संग तें कहां गये, यह कहति वृज नारि ।
दशों दिशा नभ द्रुमनि देखत, चकित भई बेहाल ।
राधिका नहीं तहां देखी , कहहुं वाके ख्याल ।
कछुक दुख कछु हरष कीन्हों, कुंज लै गये श्याम ।
सूर प्रभु संग दाखि हमको, करे ऐसे काम ।७५

लावनी

आज सखी वृज राज सुखःको साज रास तजि आयो जी।
बन व्याकुल डोलें नंद को लाल हमें बतलावो जी ।
अर्ध रात्रि सुत पती त्याग बन्सी के नांद सें टेरोरी । बन॥१
कदम छांह रहे होंगे बिलस तुम फूले फले दिखावोजी ।२। बन
आम नाम तुम्हरो रसाल रस देतहु लाल भुलाबोजी ।३। बन
चंदन तू कोमल अंगन में लेप लगाय लुभायोजी ।४। बन
चंपा तो वरुनी तरुनी संग लिये लाल इत आवोजी ।५। बन
कहो सेव कचनार कौन सों कीन प्यार लहरावोजी ।६। बन
हेली हो द्रुम वेली तुम सब हमें नवेली दिखावोजी ।७। बन
तुलसीरी तू प्यारी हरिकी काहे हमें तरसावोजी ।८। बन
विकलाई लखि अबलन की हरिदास आस पुजवावोजी ।९।७६

वार्तिक

ढूंढ़ते ढूंढ़ते सखियों को प्रियाजी दिखापरीं ॥७७॥

पद

जो देखे द्रुम के तरे मुरछी सुखुमारी ।
चकृत भई सब सुंदरी, यह तो राधारी ।
याही को खोजति सबै, यह रही कहांरी ।

धाय परीं सब सुन्दरी, जो जहां तहांरी।
तनु तनकहुं सुधि नहिं, व्याकुल भई बाल।
यह तो अति वेहाल है, कहां गये गोपाल।
बार बार बूझति सबै, नहिं बोलति बानी।
सूर श्याम काहे तजी, कहि सब पछितानी।७८।

सखी बचन

पद

क्यों राधा नहिं बोलति है॥टेक॥
काहे धरनि परी व्याकुल है, काहे नयन न खोलति है।
कनक बेलिसी क्यों मुरझानी, क्यों बन मांझ अकेली है।
कहां गये मन मोहन तजि के, काहे बिरह दहेनी है।
श्याम नाम श्रवणनि धुनि सुनि के, सखियन कंठ लगावति है।
सूर श्याम आये यह कहि कहि, ऐसे मन हरषावति है।७६

प्रिया जी बचन

पद

मै अपने मन गर्व बढ़ायो॥टेक॥
इहै कहो मैं कंध चढ़ोंगी, तब मैं भेद न पायो॥
यह बानी सुनि हंसे कंठ भरि, भुजन उछंग लई॥
तब मैं कहेउ कौन है मोसी, अन्तर जान लई॥
कहां गये गिरधर मोको तजि, ह्यां कैसे मैं आई॥
सूर श्याम अन्तर भये मोतें, अपनी चूक सुनाई॥

पद

रुदन करति वृषभान कुमारी।
बार बार सखियन उर लावति, कहां गये गिरधारी॥
कबहुं गिरत धरनी पर व्याकुल, देखि दशा वृजनारी॥
भरि अंकवारि धरति मुख पोंछति, देति नयन जल धारी॥
प्रिया पुरुष सों भाव करति है, जाने निठुर मुरारी।

सूर स्याम कुल धर्म आपनो, लये रहत बनवारी ॥

सखी बचन

पद

नंद नँदन उनको हम जानति ॥
ग्वालनि संग रहत जो माई, यह कहि२ गुण गावति ॥
बन बन धेनु चरावत बासर, त्रिया वचत द२ नाहीं ॥
देख दशा वृषभानु सुता की, बृज तरुनी पछिताहीं ॥
कहा भयो त्रिय हठ जो कीन्हो, यह न बूझही स्यामहि ॥
सूरदास प्रभु मिलहु कृपा करि, दूरि करि मन तामहि ॥८२

मांड

वृषभान लली बोली लाला वेगि ऐओरे ॥
बैठी सेवा कुंज में, धर तेरोई ध्यान ॥
तो बिन बिकल बिहाल अति, भूल गई सब मान॥
शिथिल बदन आंसू नयन, कहत बिसूर बिसूर ॥
दर्शन मोहन लाल के, मोर सजीवन मूर ॥
त्यागि सकल भूषन बसन, तजो खान अरु पान ॥
तुम्हरोहि चित्र बनायती, तुम्हरो ही गुण गान ॥
मोहन तुम बिन बिरहनी, बिलपत बिपिन अधीर ॥
चलहु हरी हरिदास लखि, मेटहु उर की पीर ॥८३॥

सखी बचन

पद

राधिका सों कहेउ धीर मन धरि री ॥
मिलेंगे श्याम व्याकुल दशा जानि करे हरष जिये करो दुखदूरकरि री॥
आप जहां तहां गई बिरह सब पागिगई कुवरि सों कहिगई श्याम ल्यावै
फिरत बन२ बिकल सहस सोरह सकल ब्रम्ह पूरन अकल नाहिं पावै
कहां गये यह कहति सबै मग जो वही काम तनु दहति ब्रजनारी भारी
सूर प्रभु श्यामा श्याम चरित देखहि गर्व अन्तर हदै हेत नारी ॥

वार्तिक

सब बृज बाला प्रिया जी को संग लेइ श्याम सुन्दर को ढूंढ़वे लगीं ॥८५॥

पद

कहि धों री बन बेलि कहूं, तें देखे हैं नन्द नंदन ॥
बूझहु धौं मालती कहूं, तें पाये हैं तुनु चंदन ॥
कही धौं कई कदम्ब बकुल बट, चम्पक ताल तमाल॥
कहि धौं कमल कहां कमला पति, सुन्दर नयन बिशाल ॥
मुरली अधर सुधा लै तरु तर, रहे यमुन के तीर ॥
कहि तुलसी तुम सब जानति हो, कहं घनश्याम शरीर ॥
कहि धौं मृगी मया करि हम को, कहि धौं मधुप मराल ॥
सूरदास प्रभु के तुम संगी, हैं कहँ परम दयाल ॥

पद

कहुं न देखो री मधुवन में माधो ॥

कहां धौ गवन कियो कहां धौ बिलमि रहे, नयन मरत दरशन की साधो ॥ जब ते बिछुरे श्याम तब ते रहो न जाय, सुनहु सखी मेरोई अपराधो ॥ सूरदास प्रभु बिन कैसे मै जिऊं माई, घटत २ रहेऊ प्रान आधो ॥८७

पद

कोऊ कहुं देखेरी नन्दलाल ॥
सांवरो सलोनो ढोटा नयन रसाल ॥
मोर मुकुट बन माल बिशाल ॥
पीताम्बर सोहे मोहै मन गोपाल ॥
निशि बन गई जहां सबै ब्रज बाल ॥
अन्तर ध्यान भये रचि ख्याल ॥
द्रुम द्रुम ढूढत भई बेहाल ॥
सूर श्याम बिन बाला परी बिरह जंजाल ॥ ८८

प्रिया जी बोलीं

मांड

श्री श्याम सों संदेसो मेरो जाय कहियोरे ॥ टेक ॥
बैठी नियत निकुंज में विरहिन राधा बाल ।
मंत्र तुम्हारे नाम को जपत रहत नंदलाल ॥ १ ॥
पल पल जोवत पीय मग पुहुमी परत अधीर ।
बचन बंधी नहीं उठत जिमि परो पींजरा कीर ॥ २ ॥
रात द्यौसहूं में रहे मान न टिक ठहराय ।
जेते औगुन ढूंढती गुनै हात परि जाय ॥ ३ ॥
एरे कठिन अहीर के नेक पीर पहिचान ।
ता मुख दर्शन कारने छांडदई कुल कान ॥ ४ ॥
कीनेउ कोटिक जतन में अब कहि काटे कौन ।
मो मन मोहन रूप मिलि पानी में को लौन ॥ ५ ॥
नई लगन कुल की सकुच विकल भई अकुलाय ।
दहूं ओर ऐंची फिरे फिरकी लौ दिन जाय ॥ ६ ॥
विरह विथा पीड़ित सखी सोचत अरु बिलखात ।
हरी भई हरिदास लखि पीय लगाये गात ॥ ७ ॥ ८६ ॥

पद

केहि मारग में जांउ सखीरी मारग बिसरेउ ॥ टेक ॥
ना जानो कितहू गये मोहि जात न जान परेउ ॥
अपनो पिय ढूंढत फिरोंरी मोहि मिलवे को चाव ॥
कांटा लाग्यो प्रेम को पिय यह पायो दाव ॥
बन डोंगर ढूंढत फिरी घर मारग तजि गांउ ॥
बूझै द्रुम प्रति रूखरा कोउ कहे ना पिय को नांउ ॥
चकित भई चितवत फिरों व्याकुल अतिहि अनाथ ॥
अब के जो कैसहु मिलै तो पलक न तजिहौं साथ ॥
हृदय मांझ पिय घर करोंरी नयनि बैठक देउं ॥

सूर दास प्रभु संग मिलौरी बहुरि रास रस लेऊं ॥ ९० ॥

पद

कान्ह प्यारी कहुं पायोरी ॥ टेक ॥
श्याम श्याम कहि कहति फिरति यह धुनि बृंदावन छायोरी ॥
गर्व जानि पिय अन्तर ह्वै रहे सो मैं बृथा बढायोरी ॥
अब बिनु देखे कल न परत क्षण श्याम सुन्दर गुन गायोरी ॥
मृगी मृगनि द्रुम खग रस सारस पिक नहिं काहु बतायो री ॥
सूरदास प्रभु मिलहु कृपा करि युवतिन टेर सुनायोरी ॥९१॥

पद

सखि मोहि मोहन लाल मिलावै ॥ टेक ॥
ज्यों चकोर चन्दा की एक टक मृगी ध्यान लगावे ॥
बिन देखें मोहि कल न परैरी यह कहि सबनि सुनावे ॥
बिन कारन मैं मान कियोरी अपनेही मन दुख पावै ॥
हा हा करि २ पायन परि परि हरि हरि टेर लगावै ॥
सूर श्याम बिन कोटि करौं जो, और नहीं जिय आवे ॥९२॥

पद

हौं तो ढूंड फिरि आई माईरी सिगरो वृन्दावन कहूं नहीं पाये नन्द नंदना ॥ टेक ॥ अनतहि रहे जाय कौनधौं राखे छिपाय मोको न कछु सोहाय कहां जाय रहे काम कन्दना ॥ मोहि ते परीरी चूक अन्तर भये है जाते तुमसों कहति बातै मैं ही दन्दना ॥ सूर दास प्रभु बिन भई हौं विकल आली कहां रहे वनमाली सुर नर मुनि जन बन्दना ॥ ९३ ॥

पद

अति व्याकुल भई गोपिका ढूंढति गिरि धारी बूझति है बन वेलि सो देखे बनवारी ॥ टेक ॥ जाही जुही सेवती कसुना कनिआ-री बेली चमेली मालती बूझति द्रुम डारी ॥ खूझा मरूआ कुन्द सो कहे गोद पसारी ॥ बकुल वदरि बट कदम पै ठाड़ी बृज-

नारी ॥ बार बार हाहा करैं कहूं हो गिरिधारी ॥ सूर श्याम को नाम लै लोचन जल ढारी ॥ ६४ ॥

पद पूरवी

अबला अजान अनाथ अकेली वन में विकल बिहाल हो ॥ टेक ॥
अबहीं हमारे संग हुते प्रभु बोलत बचन रसाल हो ॥
अबहि गये कहां उन बिन तन में करत मदन जंजाल हो ॥
रीवन बेली द्रिसकुन नवेली देखे है दीन दयाल हो ॥
चंपक बकुल बिहारी चित के चोर बताव कृपाल हो ॥
बन्सी बजा के बुलाई हमें बन में आधी रात कराल हो ॥
अब कैसे निठुर भये नहीं बोलो कहां लो गये नंदलाल हो ॥
सुत पति गेह तजे तुम कारन हम हैं अभागी बाल हो ॥
बिरह व्यथा हरिदास जरत अब देखो आय हवाल हो ॥ ६५ ॥

बार्तिक

अति बिरह में व्याकुल होय सब श्याम सुन्दर की लीला करवे लगीं ॥ ६६ ॥

दोहा

या बिधि मतवारी सदृश, बचन कहत बृजनार ।
खोजत हरि कातर भई, तिनहीं में चित धार ॥ ६७ ॥
जो जो लीला कृष्ण ने कीन्ही हो बृजराज ।
लागीं सोई सोई करन सब, तिनहीं मनावत काज ॥ ६८ ॥

छन्द

कोई पूतना रूप को धार लियो, कोई कृष्ण बनी स्तन धाय पियो ।
कोई बालक हो रोई धावत हैं, सकटासुर को पग मारत हैं ॥
इकरूप त्रणासुर को धरि कें, हरि बालक रूप बनी हरकें ।
जसुदा सुत होइ के एक जनी, चलतौ न बने घसटै अपनी ॥
पग घुंगरू मोहनी रूप बनो, झनकारत जात लचे घुटनो ।
कोइ गोपिका राम वो कृष्ण बनी, कोइ गोपिका ग्वाल को रूप ठनी ॥

फिरतीं सब लीला रूप लिये, पुनि वत्स बकासुर मार दिये।
कोई कृष्ण सी टेर लगावति है, गई दूर की गाय बुलावति है।
कोई वेनु बजाय सुगावत है, कहि के धनि अन्य प्रशंसत है।
कोई हांथ को अन्य के कांधे धरें, फिरतीं डुलती मन कृष्ण भरें।
कहि आय कहें मन मोहन जू, गति मोर करो अवलोकनजू।
कोई ओढ़नी छोर को ऊंचो कियो, जनु कृष्ण गोवर्धन धार लियो।
कहैं और से याके तलें पधरो, बरखा अरु बात सों नाहिं डरो।
इक गोपिका आन के कांधे चढ़ी, यतरान लगी इमि बात बड़ी।
खल मारिवे जन्म लियो हमहीं, तुम दुष्ट हो नाग भजो अबहीं।
पुनि एक कहे सब गोपिन सों, अवलोकहु गोप सखा चित सों।
बनकूं भय कारि दवारि दहे, अति दुष्कर छेम तुम्हारो अहे।
तुम मूंद के नयन सोइ रहो, हमरो अब एक भरोस गहो।
कोई कोमल गोपिको मालन सों, धरि बांध दियो तंह ऊखल सों।
सोई ढांकि सुनेत्र के आनन को, डरपीसी दिखे सब गोपन को।

दोहा

या बिधि वृन्दा विपिन के, विटप लता पंह आय।
पूंछत २ कृष्ण को, रहीं सकल बिलखाय ॥१००
वन के वाहि बिभाग में, डोलत पहुंची जाय।
जहां परमात्मा के चरण, उछरे परे दिखाय ॥१०१
मन सब लागे कृष्ण में, तिन के ही गुण गान।
तिनहूं की चेष्टा करें, तिनही आतम जान ॥१०२
चलत चलत करतीं सबै, उनही की बतरान।
गईं भूलि सब देह की, सब की बुधि बिसरान ॥१०३

सोरठा

कृष्ण भाव भर पूर, जमुन पुलनि विच आइ के।
तिन मग जोवन धूरि, लागीं गुण गावन सबै ॥१०४

पद

कृपा सिन्धु हरि छमा करौ हो ॥
अन जाने मन गर्व बढ़ायो, सो अपने जिनि हृदय धरो हो ।
सोरह सहस पीर तनु एकै, राधा जिव सब देह ।
ऐसी दशा देखि करुणामय, प्रगटयो हृदय सनेह ।
गर्व हत्यो तनु विरह प्रकारयो, प्यारी व्याकुल जानि ।
सुनहुं सूर अब दर्शन दीजे , चूक लई इन मानि ॥१०५

पद

राधे भूली रही अनुराग ॥
तरु तर रुदन करति अलसानी, ढूंढ़ि फिरी बन बाग ॥
कबरी असित सिखंडी यहि भ्रम, चरण शिली मुख लाग ॥
बानी मधुर जानि पिक बोलन, कदम करोरत काग ॥
कर पल्लव किशलै कुसुमा कर , जानि असित भए कीर ॥
राका चन्द्र चकोर जानि के , पिवत मैन को नीर ॥
विह्वल बिकल जानि नन्द नन्दन , प्रगट भये तिहीं काल ।
सूर श्याम हित प्रेमांकुर उर, लाय लई भुज माल ॥१०६

पद

नंद नंदन उर लाय लई ॥
नागरि प्रेम प्रगट तनु व्याकुल, तब करुणा हरि हृदय भई ॥
देखि नारि तरु तर मुरझानी , देह दशा सब भूलि गई ॥
प्रिया जानि अंकम भरि लीन्हो, कहि कहि ऐसी काम हई ॥
बदन बिलोक कंठ उठि लागी, कनक बेलि आनंद जई ॥
सूर श्याम फल कृपा दृष्टि भये, अतिही भई आनंद भई ॥१०७

बार्तिक

या उपरांत सब मिलके फेर रास करवे लगे ॥१०८॥

पद

बहुरि श्याम सुख रास कियो ॥

भुज भुज जोरि जुरी बृजबाला, वैसेहि रास उमंगहियो ॥
वैसेहि मुरली नांद प्रकाश्यो, वैसेहि सुर नर वस्य भयो ॥
वैसेहि उड़गन सहित निशापति, वैसहि मारग भूल गयो ॥
वैसहि दशा भई यमुना की, वैसहि गति तजि पवन थक्यो ॥
वैसहि निरतति रंग बढ़ायो, वैसहि वहुरेऊ काम जक्यो ॥
वाहि निसा वैसहि मन युवती, वैसेही हरि सवनि भजे ॥
सूर श्याम वैसही मन मोहन, वैसेही प्यारी निरखि लजे ॥

पद

श्याम छवि निरखत नागरि नारि ॥
प्यारी छवि निरखति मन मोहन, सकत न नयन पसारि ॥
पिय सकुचत नहीं दृष्टि मिलावत. सनमुख होत लजात ॥
श्री राधिका निन्दरि अब लोकति, अतिहिं हृदय हरखात ॥
अरस परस मोहन मोहनि मिलि, संग गोपी गोपाल ॥
सूरदास प्रभु सब गुण लायक, दुष्टनि के उर साल ॥११०॥

पद

मोहन रचेउ अद्भुत रास ॥
संग मिली वृषभान तनया, गोपिका चहुं पास ॥
एकही सुर सकल मोहे, मुरली सुधा प्रकास ॥
जलहुं थल के जीव थकि रहे, मुनिन मनहिं उदास ॥
थकित भयो समीर सुनिके, यमुन उलटी धार ॥
सूर प्रभु वृज बाम मिली बन, निशा करति बिहार ॥१११

रेखता

आई जु शरद रैन बैन बंसी बट बाजी ।
हरिदास रच्यो अद्भुत बिच बीच गोपी साजी ॥
सुर असुर सकल मोहे सुनके जु बंसी ताने ।
आकाश भू पाताल ख्याल आपनो भुलाने ॥
सोई समीर चंचल चले अचल चल थकाने ।

उलटी है धार जमुना शशि सूर्य हूं थराने ॥
अतिहीं समुद्र बाढ़्यो जल थल के जीव सारे।
मुरली बजाई मोहन मुनि जन के ध्यान टारे ॥
यहि रास रस में सानी इन्द्रानी देव तानी।
वृज वासो को सरा हैं निज भाग्य हीन जानी ॥
नभ देव फूल बरसै धुनि जै पुकार बोलें।
हरिदास रास मंडल लखि अंत नांहिं डोलें ॥११२॥

इति

अथ अन्तर ध्यान लीला प्रियाजी की

बार्तिक

प्रिया जी अरु गोपकाओं को गर्व देखि ठाकुर जी अंतर ध्यान होइ गये रहे फेर सब ने मिलिके प्रार्थना करी, बन बन ढूंड़्यो तब आय मिले अरु रास कियो ॥११३॥

रेखता

आई जु शरद रैन बैन वंसी बट बाजी ॥
हरि रास रच्यो अद्भुत बिच बीच गोपी साजी ॥
सुर असुर सकल मोहे सुनके जु बंसी ताने।
आकाश भू पताल ख्याल आपनो भुलाने ॥
चलती समीर चंचल चल अचल सब थकाने।
उलटी है धार जमुना शशि सूर्य हूं थिराने ॥
अतहूं समुद्र बाढ़्यौ जल थल के जीव सारे।
अपनी दशा भुलाने मुनि जन के ध्यान टारे ॥
इहि रास रस में सानी इंद्रानी देव यानी।

वृज वासों को सरी है तनकी सुरत भुलानी ॥
नभ देव फूल बरसे धुनि जै पुकार बोले ।
हरिदास रास मंडल लखि अंत नाहिं डोले॥११४

वार्तिक

रास नृत्य करते समय प्रिया जी को यह शंका उत्पन्न भई कि ठाकुर जी सब के साथ बिहार करिके हमारे ऊपर कोई विशेष प्रेम नाहिं राखे हैं, सब वृजवालों संग बिहार करते हैं– यह बिचार रास नृत्य करते समय प्रिया जी एकांत बन में जाय बैठीं परन्तु वाहीं थल उनको विरह को शोक भयो तब सखी सों बोलीं ॥११५

प्रिया जी वचन

दोहा

आपन सम सब सखिन संग, बिहरत लखि नंदलाल ।
भाग्य हीन मन जानके, ईर्षा बस भई वाल ॥११६
अलिकुल गुंजित कुंज में, गई मुख कीन मलीन ।
ले बुलाय प्रिय सहचरी, कहत राधिका दीन ॥११७॥

दोहा

रास केलि बिलसन समय, जब हंस चितवे लाल ।
नहिं बिसरत यह छवि घटा, मो मन कीन्ह निहाल ॥११८

चौपाई

अधरा मृत मधु पान छकीरी, बंसी ध्वनि मन मोह सखीरी ।
ग्रीव डुलानि चितवन तिरछीरी, कुंडल हिलानि कपोलनि धीरी ।
घुंगरारी अलकें मुख साजें, तिन पर मोर चन्द्रिका राजें ।
मनहुं मेघ मंडल बिच आई, इन्द्र धनुष शोभित अधिकाई ।
गोप नितंबिनि निकर सुहाई, प्रभु मुख चूमत लोभ बड़ाई ।
बंधु जीव सम अधर रसाला, मधुर हंसत मोहत वृजवाला ।
बिपुल पुलक युत भुज फैलाई, भर अकवार बधूटिनि लाई ।
मणि भूषण पगकर उरमाहीं, बिकिरत किर नहिं तिमिर नसाहीं ।

जलद पटल बिच जिमिशशि राजैं, भाल तिलक तिमि अति छबिछाजैं
पीन पयोधर मर्दन काजा, हृदय कठोर करत बृज राजा।
मणि मय कुंडल मकरा कारा, युग गंडनि पर हुलसि बिहारा।
पीत बसन कटि तट पर सोहे, मनुज सुरासुर मुनि मन मोहे।
बिशद कदम्ब तले मिलि ठाड़े, नाशत कलि मल बहु दुख गाढ़े।
चितवन मदन बढ़ावन हारी, मोसम दीन जनन सुखकारी।।११६

छन्द

सुख मोहन के गुन गान करे, उर से वह शामरो नांहिं टरे।।
निज दोषन की गणना न चहों, उन भेंटिवे में परितोष लहों।।
वह अन्य वधूटिन संग रहे, मुहि त्याग वियोग की पीरदहे।।
सखि मो मनवा मन नेक खसै, पिय प्यारेहि के तन जाय बसै।।

दोह

मदन पीर मुहि मथत सखि, तन मन करत अधीर।
अति आदर नंदलाल को, वेग मिला बहु वीर।।१२१

बार्तिक

या ठौर लालजी हू प्रिया विरह में मग्न होय बोले।।१२२

दोहा

रही अन्य थल जाय के, निज अपमान बिचार।
हा हा प्यारी कुपित अति, मम जीवन आधार।।१२३

पद दादरा

कहुं खोजो सखि बीथिन वन ढूंढ़ो तुम जाय।
राधा हिराय गई कुंजन में।।टेक।।
अबहीं तो प्यारी ठाड़ी हती ढिंग।
अवहीं अबै कहां गइरी बिलाय।।१।।
वा बिन कुंजैं ज्वाला पुंजैं।
खग मृग बोल केहरि ठहराय।।२।।
जुग सम बीतत जाम सखी अब।

कोऊ तो देव मोरी प्यारी बताय ॥
भूलौं ना हरिदास तुमारो गुण ।
जो तुम देहु मोरी लाड़ली मिलाय ॥ ४ ॥१२४॥

चौपाई

वधुन बीच लखि के मोहि प्यारी, रहु खेदित मन कतहुं पधारी ॥
निज अपराध जान मन भारी, होंहू ताहि न सक्यों निवारी ॥
विरह व्यथा पीड़ित सुकुमारी, का करिहैं कहिहैं का वारी ॥
तोबिन जन धन मन अरु प्राना, भये दुखद घर विपिन समाना ॥
कोप कुटिल भोंहें तिरछीरी, नहिं भूलहुं मुख चंद्र ललीरी ॥
मानहुं रक्त कमल वन माहीं, भ्रमर निकर वसि सुख उपजाहीं
ममउर बसत सदा जो प्यारी, ताहि वृथा अब फिरहु पुकारी॥
किमि बन खोजत खोजत डोलूं, विरह व्यथा बिलपहुं नहिं बोलूं॥
तुव वियोग अति हृदय दुखारी, सो जानहु तुम राधा प्यारी ॥
बिदित नाहिं पर तब गति मोही, तिहि कारन नहिं पावो तोही ॥
आवत जात दिखात सदारी, दृगसों कबहुं टरत नहिं टारी ॥
किमि अब पूर्व समान दुलारी, मिलत न गर लग अचरज भारी ॥
अबके करु अपराध क्षमारी, इहि बिधि चूक न करब तुम्हारी ॥
मदन पीर मुहि करत दुखारी, वेगि दरस देवहु बलहारी ॥

छंद

यह हार मृणाल धरों उरमें नहिं, ता कह नाग ठनो जियमें ॥
नव नीरज नील के पात सही, तिन को मत जान हलाहलही ॥
यह चंदन लेप है भस्म नहीं, ममऊपर क्रोधन कीजै कहीं ॥
हर जान हमें मत मारहु जू, बिन प्यारी अनंग भये हम जू ॥ १२६॥

बार्तिक

लाल जी को विरह सागर में मग्न देखि सखी प्रिया जी पै जाय बोली ॥ १२७

पद

सुनि मेरो बचन छबीली राधा, तें पायो रस सिंधु अगाधा ॥
तू वृषभान गोप की बेटी, मोहन लाल रसिक हंस भेटी ॥
जाहि विरंचि उमा पति नाये, तापै तें बन फूल विनाये ॥
जो रस नेति २ श्रुति भाष्यो, ताको तें अधर सुधारस चाख्यौ ॥
तेरो रूप कहत नहिं आवे जैश्री, हित हरिवंश कछुक जस गावे ॥१२८

पद

चलहि कि न मानिनी कुंज कुटीर ॥ टेक ॥
तो बिन कुवंरि कोटि बनिता जुत, मथत मदन की पीर ॥
गद गद सुर विरहा कुल पुलकित, श्रवत विलोचन नीर ॥
क्वासि २ वृषभान नंदनी, विलपत विपिन अधीर ॥
बंशी विशिष व्याल माला बलि, पंचानन पिककीर ॥
मलयज गरल हुताशन मारतु, साषा मृग रिपुचीर ॥
जै श्री हित हरि वंश परम कोमल चित, चपल चली पियतीर ॥
सुनि भय भीत ब्रज कौपिंजर, सुरत सूर रन वीर ॥१२९॥

पद

वेग चलहि उठि गहरु करति कत, तोहि निकुंज बुलावत लाल ॥
हा राधा राधिका पुकारत, निरषि मदन गज ठाल ॥
करत सहाय शरद शशि मारत, फूलि मिली उर माल ॥
दुर्गम तकत समर अति कातर, करहिन पिया प्रति पाल ॥
जै श्री हित हरि वंश चली अति, आतुर श्रवन सुनत तेहि काल ॥
लै राखे गिर कुच बिच सुन्दर, सुरत सूर ब्रज बाल १३०

वार्तिक

यह सुन प्रियाजी आन मिली ॥१३१

वर्तिक

दुहूं जन गल बहियां देइ फेर सखियों के साथ नृत्य करिबे लगे ।१३२।

खेलत रास रसिक ब्रज मंडन, युवतिन अंस दिये भुज दंडन।
सरद विमल नभ चंद विराजे, मधुर मधुर मुरली कल वाजै।
अति राजत घनश्याम तमाला, कंचन वेलि वनी वृजबाला।
वाजत ताल मृदंग उपंगा, गान मथत मन कोटि अनंगा।
भूषण बहुत विविध रंग सारी, अंग सुगंध दिखावत नारी।
बरखत कुसुम मुदित सुर जोषा, सुनियत दिवि दुंदुभि कल घोषा।
जैश्री हित हरिवंस मगन मन श्यामा, राधा रमन सकल सुखधामा।

पद

आज वन राजत जुगल किशोर॥
नंद नंदन वृषभानु नंदनी, उठे उनींदे भोर॥
डग मगात पग परत शिथिल, गत परसत नख भसि छोर॥
दशन वसन खंडित मुषि मंडित, गंड तिलक कछु थोर॥
दुरतन कच कर जनक रोके, अरुण नैन अलि चोर॥
जैश्री हित हरिवंश सभा रन, तन मन सुरत समुद्र भकोर॥१६७

पद

नयो नेह नव रंग नयो रस, नवल श्याम वृषभानु किशोरी॥
नव पीताम्बर नवल चूनरी, नई नई बूंदन भींजत गोरी॥
नव वृंदाबन हरित मनोहर, नव चातक बोलत मोरा मोरी॥
नव मुरली जु मलार नई गति, श्रवन सुनत आए घन घोरी॥
नव भूषण नव मुकुट बिराजत, नई नई उरप लेत थोरी थोरी॥
जैश्री हित हरिवंश असीस देत मुख, चिरजीवो भूतल यह जोरी॥

पद

आजु दोऊ दामिन मिल बिहंसी॥
बिच लै श्याम घटा अति नौं तन, ताके रंग रसी॥
एक चमक चहुंओर सखी री, अपने सुभाय लसी॥
आइ एक सरस गहनी में, दुहु भुज बीच बसी॥
अंबुज नील उभय विधु राजति, तिनकी चलन खसी॥

जैश्री हित हरिवंश लोभ भेदन मन, पूरन सरद ससी ॥१३५॥

इति

अथ परस्पर विरह लीला
गीत गोविंद
दोहा।

निरतत युवतिन संग, सखि हरि कुंसन के मांह।
बिहरत वृंदा बिपिन मिलि, जहँ बिरही गत नांह ॥१॥
तिनहिं निरख राधा सखी, दूरहीं ते दिखराय।
बोली राधहिं प्रेम भरि, निज उर अति हरखाय ॥२॥

सखी बचन प्रियाजी प्रति
दोहा।

क्रीड़ा तत्पर कामिनी, निकर संग वृज बाल।
चलु देखो श्री राधिके, बिलसत मोहन लाल ॥

चतुर्थ प्रबंध
मूल

हरि रिह मुग्ध वधू निकरे बिलासिनि विलसती केलि परे॥
चंदन चर्चित नील कलेवर पीत वसन बन माली॥
केलि चलन मणि कुंडल मंडित गंड युगस्मित शाली ॥१॥

अर्थ

चंदन चर्चित श्याम शरीरा, गल बन माल धरे पट पीरा॥
चंचल कुंडल लोल कपोला, मृदु मुसक्यान लेत मन मोला॥१

मूल

पीन पयोधर भार भरेण हरिं परि रम्य सरागम्॥

गोप वधू रनु गायति काचिदु दंचित पंचम रागम् ॥२

अर्थ

पीन पयोधर भार झुकाई, भेंटत बृजनाथहिं गरलाई ॥
कोई एक गाये वधू मिलि संगा, गावत पंचम राग तरंगा ॥

मूल

कापि विलास विलोल विलोचन, खेलन जनित मनोजम् ॥
ध्यायति मुग्ध वधू रधिकं, मधु सूदन बदन सरोजम् ॥३

अर्थ

मोहन नैन चपल अनियारे, चितवन काम बढ़ावन हारे ॥
बदन सरोज करन जग छेमा, मुग्ध वधू निरखहि भरि प्रेमा ॥४

मूल

कापि कपोल ते ले मिलिता, लपितुं किमपि श्रुति मूले ॥
चारु चुचुंब नितंबवती, दयितं पुलके रनु कूले ॥४॥

अर्थ

कोउ सखि निज मुख नवल सुहाई, राखत प्रिय कपोल ढिंगलाई ॥

मूल

केलि कला कुतुके नच काचि दसुं यमुना जल कूले ॥
मंजुल बंजुल कुंज गतं विच कर्ष करेण दुकूले ॥५॥

अर्थ

जमुना तीर कदम्ब की छांही, मंजुल बंजुल कुंजन मांहीं ॥
केलि कला कौतुक कोऊ करहीं, प्रिय पीतांबर खैंचन चहहीं ॥

मूल

कर तल ताल तरल बलैया वलि कलित कल स्वन वंशे ॥
रासः रसे सह नृत्य परा हरिण युवति प्रशशंसे ॥६॥

अर्थ

ताल देत बृज बनिता सैना, कंकन ध्वनि मिलि बाजत बैना ॥
नचत परस्पर दे गल बाहीं, मोहन युवति सराहत जांहीं ॥६

मूल

श्लिष्यति कामपि चुंबति, कामपि रमयति कामपि रामां ॥
पश्यति सस्मित चारु परामपरामनु गच्छति वामां ॥७॥

अर्थ

काहू अलिंगित चूमत काहू, काहू संग क्रीड़त ब्रज नाहू ॥
कोऊ मुख निरखि हंसत नंदलाला, डोलत संग ले कोऊ बृजबाला।

दोहा

आपन सम सब सखिन संग, बिहरत लखि नंदलाल।
भाग्य हीन मन जान के, ईर्षा बश भई बाल ॥५॥
अलि कुल गुंजत कुंज मैं, गई सुख कीन मलीन।
ले बुलाय प्रिय सहचरी, कहत राधिका दीन ॥६॥

प्रिया जी बचन

दोहा

रास केलि बिलसन समय, जब हंस चितवे लाल।
नहिं बिसरत वह छवि छटा मोमन कीन्ह निहाल ॥

पांचवा प्रबन्ध

मूल

संचर दधर सुधा मधुर ध्वनि, मुखरित मोहन बशंम्।
चलित द्रगं चल चंचल, मौलि कपोल विलोल बतंसं ॥१॥

अर्थ

अधरा मृत मधु पान छकीरी, बंशी धुनि मन मोह सखीरी।
ग्रीव डुलनि चितवन तिरछीरी, कुंडल हिलन कपोलन धीरी ॥

मूल

चँद्रक चारु मयूर शिखंडक, मंडल बलयित केशं।
प्रचुर पुरंदर धनु रनु रांजित, मेदुर मुदित सुवेशं ॥२

अर्थ

घुंघरारीं अलकें सुख साजें, तिन पर मोर चन्द्रिका राजें ॥

मनहुं मेघ मंडल विच आई, इन्द्र धनुप शोभित अधिकाई॥

मूल

गोप कंदव नितंववती सुख चुवन लंभित लोभं॥
वंधु जीव मधुरा धर पल्लव मुल्लसित स्मित शोभं॥

अर्थ

गोपि नितंविनि निकर सुहाई, प्रभु सुख चूमत लोभ बड़ाई॥
वंधु जीव सम अधर रसाला, मधुर हँसन मोहत वृजवाला॥

मूल

विपुल पुलक भुज पल्लव वलायित वल्लव युवति सहस्त्रं।
कर चरणो रसि मणि गण भूषण किरण विभिन्न तमिस्त्रं॥

अर्थ

विपुल पुलक युत भुज फैलाई, भर अकवार वधूटिन लाई॥
मणि भूषण पग कर उर माहीं; विकिरत किरणहिं तिमिर नसाहीं॥

मूल

जलद पटल चलदिंदु विनिंदक चंदन तिलक ललाटं।
पीन पयोधर परिसर मर्दन निर्दय हृदय कपाटं॥५॥

अर्थ

जलद पटल विच जिमि शशि राजै, भाल तिलक तिमि अति छवि छाजे॥ पीन पयोधर मर्दन काजा, हृदय कठोर करत वृजराजा॥

मूल

मणि मय मकर मनोहर कुंडल मंडित गंड सुदारं॥
पीत वसन मनु गत मुनि मनुज सुरासुर वर परिवारं॥६॥

अर्थ

मणिमय कुंडल मकरा कारा, युग गंडनि वर हुलसि बिहारा॥
पीत वसन कटि तट पर सोहे, मनुज सुरासुर मुनि मन मोहे॥

मूल

बिशद कदंव तले मिलितं, कलि कलुष भयं शमयंतं॥

आमपि कि मपि तरंग दनंग दशा मनसा रम यंतं ॥

अर्थ

विशद कंदव तले मिलि ठाढ़े, नाशन कलि मल बहु दुख गाढ़े ॥
चितवन मदन बढ़ावन हारी, मो सम दीन जनन सुखकारी ॥

छन्द

मुख मोहन के गुण गान करै, उर से वह शामरो नाहिं टरै ॥
निज दोषन के गणनान चहै, उन भेटिवे में परितोष लहै ॥
वह अन्य वधूटिन संग रहै, मुहि त्याग बियोग की पीर दहै ॥
सखि मो मन बास न नेक लसै, पिय प्यारेहि के ढिंग जाय बसै ॥६

रेखता।

मन हर लियो है मेरो वा नंद के दुलारे।
मुसकाय के अदासौं नैनौ के कर इशारे ॥ १
इक दृष्टि ही में वाने जाने कहा किया है।
नाहिं चैन रैन दिन में जाके विना निहारे ॥ २ ॥
चीर के पेंच बांके शिर मुकुट झुक रहा है।
कटि किंकिनी रतन की नूपुर बजत हैं प्यारे ॥ ३॥
वेसरि बुलाक सोहे गल मोतियन की माला।
कंकन जड़ाऊ कर में नख चंद सा उजारे ॥ ४ ॥
छवि देत आरसी से सुन्दर कपोल दोऊ।
बरछी समाँनि लोचन नई सान पै समारे ॥ ५ ॥
फूलन के हांत गजरे मुख पान की ललाई।
कानो में मोती बाले कुण्डलहु झलके न्यारे ॥ ६॥
लखि शाम की निकाई सुधि बुधि सकल गंवाई।
बौरी बनाय मोकों कित गयो बंसी वारे ॥ ७॥
जन्तर अनेक मन्तर गंडा तवीज टोना।
स्याने तवीब पंडित करि कोटि जतन हारे ॥८॥१०॥

कवित्त

घर तजों बन तजों नागर नगर तजों, बंसी वट बास तजों काहू पै न लजहों ॥ देह तजों गेह तजों नेह कहो कैसे तजों, आज काज राज बीच ऐसे साज सजहों ॥ बावरो भयो है लोक बावरी कहत मोको, बावरी कहेते मैं काहू न बरज हों ॥ कहैया सुनैया तजों बाप और भैया तजों, दैया तजों मैया पै कन्हईया नाहिं तज हों ॥ ११॥

गले तबक पहिरायो पांव बेड़ी ले भरावो, गाढ़े बंधन बंधावो वा खिंचावो काची खाल सों ॥ विष ले पिलावो तापर मूठ भी चलावो, मांझी धार में बहावो बांध पत्थर कमाल सों ॥ बिच्छू लै बिछायो तापै मोहि ले सुलावो, फेर आग भी लगावो बांध कापर दुसाल सों ॥ गिरि से गिरावो काली नाग सों डसावो, हा हा प्रीत ना छुड़ावो गिरधारी नंदलाल सों ॥१२॥

मोर पखा मुरली बन माल, लगी हिय में हियरा उमग्योरी ॥
ता दिन ते निज बैरन को मैं, बोल कुबोल सभी जो सह्योरी ॥
अबतो रस खानसों नेह लग्यो, कोउ एक कहो कोऊ लाख कह्योरी ॥
और ते रंग रहो न रहो, इक रंग रंगीले ते रंग रह्यो री ॥१३॥

जिन जानो वेद ते तो बाद करि विदित होय, जिन जानो लोक लोक लोकन पर लड़ मरो ॥ जिन जानो जप तीनों तापन सों तप तप, तिन पंच अगन समाधि धरधर मरो ॥ जिन जानो योग ते तो योगी युग युग जियें, जिन जानो जोत सोऊ जोत लै जर मरो ॥ हौं तो देवनंद के कुमार तेरी चेरी भई, मेरो उपहास कोउ कोटि कर कर मरो ॥१४॥

सुन्दर सूरति दृष्टि परी, तब तें जिय चंचल होय रहा है ॥
सोच सकोच सभी जो मिटे, और बोल कुबोल सभी जो सहा है ॥
रैन दिना मोहि चैन न आवत, नैनन ते जल जात बहा है ॥
तापै कहे सखी लाज करो अब, लाग गई तब लाज कहा है ॥१५॥

राग भैरवी

लाग गई तब लाज कहांरी ॥

जे दृग लगे नंद नंदन सों, औरन सों फिर काज कहांरी ॥

भर भर पिये प्रेम रस प्याले, होंछे अमल को स्वाद कहांरी ॥

ब्रज निधि वृत रस चाख्यो चाहे, या सुख आगे राज कहांरी ॥१६

दोहा

मदन पीर मोहि मथत सखि, तन मन करत अधीर ।
अति उदार नंदलाल कों, बेगि मिलावहु बीर ॥१७॥

वार्तिक

ऐसे बिलाप भरे बचन प्रियाजी के सुन सखी जाय नंदलाल सों बोली ॥१८॥

दोहा

प्यारे तुम बिन बिरहनी, व्याकुल है अति दीन ।
मदन बान भय भीत है, भई तुमहि लव लीन ॥१९॥

अष्टम प्रबन्ध

मूल

निंदति चंदन मिन्दु किरण मनु निंदित खेद मधीरं ।
व्याल निलय मिल नेन गरल मिव कलयति मलय समीरं ॥
माधव सावि रहे तव दीना ।
मनसिज बिसख भयादिव भावन यात्वयि लीना ॥

अर्थ

अति अधीर कहुं सुख नहिं पावे, ताहिन चन्दन चांदिनि भावे ॥
व्याल निले मिलि मलय समीरा, देत गरल इमि तां कह पीरा ॥

मूल

अविरत निपतित मदन शरादिव भव दव नाय बिशालं ।
स्व हृदय मर्म्माणि बर्म्म करोति सजल नलिनी दल जालं ॥२॥

अर्थ

अविरल गिरत मदन सर साजा, तिन सों तुमहिं बचावन काजा।
सजल कमल दल कवच बनाई, तुमहिं लेत निज उरहिं दुराई ॥२

मूल

कुसुम विशिख शर तल्प मनल्प विलास कला कमनीयं॥
व्रत मिव तव परिरंभ सुखाय करोति कुसुम शयनीयं॥३॥

अर्थ

बाण शयन दारुण व्रत धारी, मन सिज शर रचि सेज संवारी॥
बहुतर केलि कला सुखकारी, तुव परिरंभण काज बिहारी॥३॥

मूल

वहतिच गलित विलोचन जलधर, मानन कमल सुदारं।
विधु मिव विकट विधुं तुद दंत दलन लगितामृत धारं॥४॥

अर्थ

युगुल नैन जलधार बहाई, कमल कपोलन पर छवि छाई॥
राहू ग्रसित जिमि शशि कदराई, बरसत अमृत धारि भरिलाई॥४

मूल

विलिखत रहसि कुरंग मेदन भवं तम सम सर भूतं॥
प्रण मति मकर मधो विनिधाय करेच शर नव चूतं॥५॥

अर्थ

तुमहिं मदन मूरति सम जानी, मृग मद चित्र बनाय सयानी॥
नव पल्लव शर देकर वामा, मकरासन धरि करत प्रणामा॥५

मूल

प्रति पद मिद मपि निगदति माधव तव चरणे पति ताहं॥
त्वयि विमुखे मयि सपदि सुधा निधि रपि तनु ते तनु दाहं॥६॥

अर्थ

पुनि पुनि कहत अहो पिय प्यारे, तुव पद सहस प्रणाम हमारे॥
तुम बिन प्राण नाथ गिरधारी, दहत सुधा निधि मम तन भारी॥

सूल

ध्यान लयेन पुरः परि कल्प भवं तम तीय दुरापं ॥
बिलपति हंसति बिषीदति रोदति चंचति मुंचति तापं ॥७॥

अर्थ

जान तुमहिं दुर्लभ बृजनाथा, ध्यान धरत मन करत सनाथा॥
हंसि रोवति अति करत बिलापा, इत उत चलि मेटत उर तापा॥

सूल

श्री जय देव भणित मिद मधिकं यदि मनसा नटनीयं॥
हरि बिरहा कुल बल्लव युवति सखी बचन पटनीयं ॥८॥२०

बार्तिक

सखी के ऐसे वचन सुन लालजी को बडो खेद भयो तब प्रिया बिरह में कातर होय बोले ॥२१॥

सोरठा

वसहुं मैं याही ठौर, तुम राधा पहं जाऊ सखि॥
सब सखियन सिर मौर, आनहु ताहि प्रसन्न करि ॥२२॥

सखी बचन प्रिया जी प्रति

दशम प्रबंध

दोहा

प्यारी जू के बिरह में दुखित देख नंदलाल ॥
जाइ लाड़ली के निकट सखि इमि कहत हवाल ॥२३॥

गीत गोबिंद

सूल

वहति मलय समीरे मदन मुप निघाय ॥
स्फुटति कुसमानि करे बिरहि हृदय दल नाय॥
तब बिरहे बनमाली सखि सीदति ॥१॥

अर्थ

शीतल चंचल मलय समीरा, मदन देत मोहन मन पीरा ॥

कुसुम निकर बिकसे चहुँओरा, लगत विरहि उर बज्र कठोरा ॥

मूल

दहति शिशिर मयूखे मरण मनु करोति ॥
पतति मदन विशिखे बिलपति बिकल तरोति ॥२

अर्थ

चन्द्र किरण सिगरो तन जारै, तुम बिछुड़त पिय प्राण न धारै ॥
मदन शरासन बिंधि बन बनवारी, बिलपत बिकल पुकार पुकारी ॥

मूल

ध्वनति मधुप समूहे श्रवण मपि दधाति ॥
मनसि बलित बिरहे निशी, निशी रूज मुप याति ॥३

अर्थ

मधुर मधुप ध्वनि सुनियन जाई, मूँदि श्रवण हरि चलहिं पराई ॥
बिरह व्यथा खेदित मन दीना, निशि२ मन्मथ पीर नवीना ॥

मूल

वसति विपिन बिताने त्यजति ललित मपि धाम ॥
लुठति धरनि शयने वहु बिलपति तव नाम ॥

अर्थ

तजि निज गृह सुख देवन हारे, बिपिन बितान बसत नित प्यारे ॥
धरणी शयन लोटन गिरधारी, रटत निरंतर राधा प्यारी ॥४॥

मूल

रणति पिक सम वाये प्रति दिश मनुयाति ॥
हंसति मनु जनि चये निज बिरह मपल पति नेति ॥५॥

अर्थ

कोकिल धुनि सुनि चहुंदिश धावे, तब रति बिकल कष्ट बहु पावे ॥
युव जन हंसत देख कह राई, काहु न होय बिरह दुख आई ॥ ५

मूल

स्फुरति कल रव राबे स्मरति भणित मेव ॥

तव रति सुख विभवे बहु गणपति सुगुण मतीव ॥६

अर्थ

सुनि २ कलरव खग गण केरो, मृदु भाषण सुमिरत तुव चेरो॥
तब क्रीड़ा सुख उत्पति जानी, आपुहिं बड़ मानत सुख दानी॥

मूल

त्वद् मिथ शुभद मासं वदति नरि शृणोति॥
तमपि जपति सरसं पर युवति पुनरति सुपयेति॥

अर्थ

शुभद मास बैसाख दुलारी, तिहिं मिस जो कहै राधा प्यारी॥
सुनतहिं नाम जपन मन लागे, परतिय प्रीत तुरत सब त्यागे॥

छन्द

पहिले तुम से जहं भेंट भई, जहं मार की पीर मिटाय दई।
वहि कुंज है मन्मथ तीर्थ वहां, फिर मोहन जाय के बैठ तहां॥
तुम नाम को मंत्र बनाय लियो, दिन रैन जपे कर शुद्ध हियो॥
तुव गाढ़ आलिंगन अमृत को, फिर चाहत ताप बुझावन को॥

बार्तिक

सखी के बचन सुन प्रिया जी को कछुक तो दुख भयो फिर प्यारे के कपट को मन में आन धीरज धारयो अरु सखी सों कहीं जा तू लालजी को यही ठौर लिवाय ला सखी को बचन सुन मोहन प्यारे बोले॥२६॥

दोहा

रही अन्य थल आय के, निज अपमान बिचार।
हा हा प्यारी कुपित अति, मम जीवन आधार॥

सातवां प्रबंध

मूल

मामियं चलिता बिलोक्य वृतं वधू निचयेन॥
साप राध तया मयापि न बारितातिं भयेन॥

हरि हरि हता दरतया गता सा कुपि तेन॥१॥

अर्थ

बधुन बीच लखि मोह पियारी, बहु खेदित मन कतहुं पधारी॥
निज अपराध जान मन भारी, होहूं ताहिन सक्यों निवारी॥१

मूल

किंकरिष्यति किं वदिष्यति साचिरं विरहेण॥
किं जनेन धनेन किं मम जीवि तेन ग्रहण॥२॥

अर्थ

बिरह व्यथा पीड़ित सुकुमारी, का करिहै कहिहै का बारी॥
तो बिन धन अरु जन मन प्राना, भय दुखद घर,बिपिन समाना॥

मूल

चिंतयामी सदाननं कुटिल भ्रूरोश भरेण॥
शोण पद्म मिवो परि भ्रमता कुलं भ्रमरेण॥३

अर्थ

कोप कुटिल भोंहे तिरछी री, नाहिं भूलहुं सुख चंद लली री॥
मानहुं रक्त कमल बन मांही, भ्रमर निकर बासि सुख उपजांही॥

मूल

ता महं हृदि संगिता मनीषं भृशं रम यामि॥
किं वनेनु सरामि तामिह किं वृथा बिल पामि॥४॥

अर्थ

मम उर बसत सदा जो प्यारी, ताहि वृथा अबै फिरहुं पुकारी॥
किमि बन खोजत२ डोलूं, बिरह व्यथा बिलपहुं नहिं बोलूं॥४

मूल

तन्वि खिन्नमं सू यया हृदयं तवा कल यामि॥
तन्नं वेध्मि कुतो गतासि न तेन ते नुन यामि॥

अर्थ

तव वियोग अति हृदय दुखारी, सो जानहुं तुम राधा प्यारी॥

बिदित नाहिं परतल गति मोही, तेहि कारण पायो नहिं तोही ॥

मूल

हृद्य से पुरतो गता गत मे वमे बिदधासि ॥
किं पुरेव ससं भ्रमं परिरंभ न ददासि ॥६॥

अर्थ

आवत जात दिखात सदारी, दृग सों कबहूं टरत न टारी ॥
किमि अब पूर्व समान दुलारी, मिलत न गरलग अचरज भारी ॥

मूल

क्षम्यताम परं कदापि तवे हृशं करोमि ॥
देहि सुन्दरि दर्शनं मम मन्मथे न दुनोमि ॥७॥

अर्थ

अबके करूं अपराध क्षमारी, इहि बिधि चूक न करव तुमारी ॥
मदन पीर मोहि करत दुखारी, वेगि दरश देवहुं बलिहारी ॥

बार्तिक

या बिधि बिलाप करि श्री महाराज से वियोग नहीं सहो गयो तब जाय के प्रिया भवन में पहुचे अरु प्रियाजी को दुखी देख मनायवे लगे ॥

इति

मान लीला

दोहा

एक समय श्री राधिका, सखि संग ले वृज खोर ।
चलीं जमुन अस्नान को, प्रात उठीं बड़ि भोर ॥१॥
नंद सुवन जा गृह बसे, गईं बुलाबन ताह ।

जाय भई द्वारे खड़ीं, जब निकसे बृज नाह॥
औचक होतहु भेंट के, चित चकृत भे दोइ।
ये इत चितयें वे उतै, मर्म न जान्यो कोइ॥३॥

वार्तिक

प्रियाजी क्रोध वश होय बिना कछू बोले गृह को पधारीं॥

दोहा

अति बिरहा कुल होय के, श्याम गये मुरझाय।
ठाड़े जहं के तहं रहे, रहीं सखी समुझाय॥४॥
इतने ही के ह्वै रहे, बांह पकरि के लाय।
ले प्रभु कों हरिदास सखि, राधहिं दई दिखाय॥५॥

पद

राधहिं श्याम देखी आय॥
महा मानु दृढ़ाय बैठी चितै कांपे जाय॥
रिसहिं रिसभई मगन सुन्दरि श्याम अति अकुलात॥
चकृत ह्वै जकि रहे ठाड़े कहि न आवे बात॥
देखि व्याकुल नंद नंदन सखी करत बिचार॥
सूर दोई मिलें जैसे करों सो उपचार॥६

पद

सखी एक गई मानिनी पास॥
लखति नहिं कछु भाव ताको, मिटी न मन की आस॥
कहों कासों कौन सुनि है, रिसानि नारि अचेत॥
बुद्धि शोचति त्रिया ठाड़ी, नेक नहीं सुचेत॥
श्याम व्याकुल अतिहि आतुर, यहि किया दृढ़ मान॥
सूर सहचरि कहति राधा, बड़ी चतुर सुजान॥७॥

सखी बचन प्रियाजी प्रति

बार्तिक

अरी सुजान इतने ही में मान ठान लीन्हों देखो तो नंद-

लाल कैसे दुखी होय रहे हैं ॥८॥

पद

नाही हेरी अति हठ नीको ॥
मोसों कहेऊ सुनहू ब्रज सुन्दरि मान मनावो नागर पीको ॥
सोइ अति रूप सुलक्षण नारि, रीझे जाहि भाव तो जीको ॥
प्यासे प्राण जांय जो जल बिनु पुनि कहा कीजै सिंधु अमीको॥
तो जो मान तजहुगी भामिनि, रविकी रश्मि काम फल फीको ॥
कीजे कहा समय बिनु सुन्दरि, भोजन पीछे अचवन घीको ॥
सूर स्वरूप गरब यौवन के जानति हो अपने सिर टीको ॥

दोहा

अनियारे शर मदन के, दीन्हो पियहिं झकोर ।
गिरे धरनि मुरझाय जिमि, बिटप पवन के जोर ॥१०
कहुं मुरली कहुं लकुट पट, कहूं चंद्रिका मोर ।
खन बूड़त उतरत खनहिं, बिरह समुद्र झकोर ॥११॥
अरी हटीली मानिनी, नेक चितै मुसकाय ।
मेटौ मूर्छा लाल की, अधर सुधारस प्याय ॥ १२

पद

यह ऋतु रूसिवे की नाहीं ॥ टेक ॥
बरषत मेघ मेदिनी के हित प्रीतम हरषि मिलाहीं ॥
जे तमाल ग्रीषम ऋतु डाही ते तरुवर लपटाहीं ॥
जल बिन सरिता पय पूरन हुई मिलन समुद्रहिं जाहीं ॥
यौवन धन है चार दिवस को समुझ चतुरि मन माहीं ॥
सूर सुनत उठि चलतु राधिका दे दूती कहैं बांहीं ॥ १३ ॥

राधे यामें कहा तिहारो ॥ टेक ॥
मुख हिमकर तनु हाटक वेनी सो पन्नग अंग कारो ॥
गति मराल केहरि कटि कदली युगल जंघ अनुहारो ॥
नयन कुरंग बचन कोकिल के नासा शुक कह गारो ॥

विद्रुम अधर दशन दाडिम कण करौ ना तुम निरवारौ ॥
सूर दास प्रभु त्रिभुवन पति को एक न उनहिं उवारौ ॥१४

रसिक राध बोली नंद कुमार ॥
दर्शन को तरसे हरि लोचन तू शोभा की धार ॥
खंजरीट मृग मीन मधुप मिलि रंभा रचि अनुसार ॥
गौर सकोचे शशि विरथ किये रथ मेरु लुख्यो पडितार ॥
कौन हेत तें भिज्यो सितासित बिथुरी कौन विचार ॥
मंदाकिन मानो शिर धरिकै रुद्रनि करी पुकार ॥
राख्यो मेलि पर्दा ते परधन हरनु कियो विनहार ॥
सूरदास प्रभु सों हठ कीनों उठ चलि क्यों न सवार॥१५

वार्तिक

यहि अन्तर दूसरी सखी आय पहुंची ॥१६॥

पद

और सखी एक स्याम पठाई ॥
हरि को विरह देखि भई व्याकुल मानु मनावन आई ॥
बैठी आई चतुरई काछे, तहं कछु नहीं लगार ॥
देखति हौं कछु और दशा तब बूझति बारंबार ॥
मन२ खिजति मानिनी याको कौन यहां पठाई ॥
सूर सखनि कछु मान मनायो सो सुनि कें यह आई ॥१७

वार्तिक

दूजी सखी प्रिया जी को हाल देखि तिन सों बोली ॥१८

कबित्त

सुनरी सयानी त्रिय रूसवे को नेम लियो, पावस दिवस कोऊ ऐसे है करतरी ॥ दिशि २ घटा उठी मिलरी पिया सों रुचि, निडर हियो है तेरो नेक ना डरतरी ॥ चलु एरी मेरी प्यारी मोको मान देने हारी, प्रानहुं तें प्यारी पति धीर न धरतरी ॥ सूर दास प्रभु ताहि दियो चाहै हित चित, काहे ना मिलत तेरो नेम

का टरतरी ॥१६॥
सेज रचि पचि साज्यौ सघन निकुंज कुंज, चित चरननि लाग्यो छतियां धरकि रही ॥ हा हा चलु प्यारी तेरो प्यारो चौंकि चौंकि परे, पातकी खरक पिया हिय में खरकि रही॥ बात ना धरति कान तानत है भौंह बान; उत ना चलत नाम अखियां फरकि रही ॥ सूरदास मदन दहत पिय प्यारी सुनि, जिमि २ कहां तिमि उतकों सरकि रही ॥२०॥

वार्तिक

जब प्रिया जी कछूई ना बोली तब सखी मोहन पै जाय बोली ॥२१॥

दोहा

इत तें तुम पठवत उतै वा नहिं बोलत बात।
चक्र डोर सम मोहि तुम इतते उत टरकात ॥२२
लोचन लाल डरावने, प्रिया पलक ना टार।
राय शिरोमणि आपुहीं, विनवहु नंद कुमार ॥२३॥
अबहीं मैं छांड़्यो दुहुन, खेलत हंसत सुजान।
का कारण अन बाल है, न्यारे बैठे आन ॥२४॥
गिरधर तुम रूसे भये, भई अनमनी बाम।
चलु अंकम भरि मिलि रहो, इहि बिधि सरै न काम ॥२५

लालजी बचन

वार्तिक

अरी सखी तूहीं जाय के मनाय ला तोसों बड़ो गुण मानूंगो ॥२६॥

सखी प्रिया पैं जाय बोली

लावनी

छिन २ जामिनि घट जात मान अब लीजै।
रस में रिस की कह बात प्रिया अब कीजै॥

करकें आई मैं पैज सेज चल प्यारी।
पिय कों कछु नाहिं सुहात वेगि चलो वारी॥
पायन पर हा हा करों धरों शिर धरनी।
टुक आंख उठा के देख मान मम करनी॥
कैसी तू मोहनी नार मौन है अटकी।
सुन म्हारी सारी बात नैकु ना मटकी॥
अबधौ कब चलि है वाम चली सब रजनी।
रहि गई धरि पानि कपोल बोल तो सजनी॥
भुव लिखत नखन सों नार न तिलभर अटकी।
री मुग्ध वधू हट छोड़ कहा दिल खटकी॥
तू सदा पियारी नारि है नागर नटकी।
उठि चलो बेल अब होत पखेरू रटकी॥
पीरी पुह प्रफुलित कमल होन चहैं नीके।
सुन के बिनती हरिदास लगो गले पीके॥२७

वार्तिक

जब प्रिया जी इतने हू पै नेक ना मुरकी तब हार मान के वा सखी ने फेर दूजी सखी को नंदलाल जी के निकट पठायो वह जाय बोली॥२८॥

दोहा

कछू नहीं लखि परत है, प्यारी मन को भेव।
तुमहीं अब नंदलाल जी, जाय मना किन लेव॥
तुमरे ही चलि हैं बने, अब तो नंद किशोर।
वाके जी में कपट की, गांठी बंधी कठोर॥
जरति वहां बैठी अनखि, तुम इत बैठे आय।
भये अनमने ना बनें, वेगहि चलिये धाय॥
जाय ताहि के ढिग बसो, तजहु तीन अरु पांच।
जैसौ काछौ तुम कछो, नाचो बैसहु नांच॥

पद

सुनि यह श्याम बिरह भरे ॥
बार बार गगन निहारत कबहूं होत खरे ॥
मानिनी नहिं मान मेट्यो दूसरी निज आज ॥
तब परे मुरछाय धरनी काम करेऊ अकाज ॥
सखिन तब भुज गहि पचाये कहा वीर होत॥
सूर प्रभु तुम चतुर मोहन मिलो अपने गोत॥ २३

सखी बचन

पद

श्याम चतुराई कहां गंवाई ॥
अब जाने घर के बाड़े हो तुम ऐसे कह रहे मुरझाई ॥
बिना जोर अपनी आंखन के कैसे सुख कियो चाहत ॥
आपुन दहत अचेत भये क्यों उत मानिनि मन काहे दाहत ॥
वह ही रहौ करैगी कतहूं जाय रहे बहु नायक ॥
सूर श्याम मन मोहन कहियत तुमहो सबही गुन के लायक २४

पद

तब हरि रच्यो दूती रूप ॥
गये जहां मानिनि राधा त्रिय स्वांग अनूप ॥
जाय बैठ कहत सुख यह तू यहां घनश्याम ॥
मैं सकुचत तहं गई नाहीं फेरि कहियत वाम ॥
सहज बातें कहत मानौ अब भई कछु और ॥
तू यहां वे वहां बैठे रहत एकहि ठौर ॥
कहो मोसों कहां उपजी वे रटत तुव नाम ॥
सुनति है कछु बचन राधा सूर प्रभु बन धाम ॥२५

राधे तें अतिमान करेऊ ॥
यह कहि हरि पछतात मनहि मन पूरब पाप परेऊ॥
पहिली अपनी कथा बताई जब त्रिय रूप धरेऊ ॥

तब तेहि रूप अनूप सुमुखि सुनि त्रिभुवन चित्त हरेऊ॥
मोहे असुर महा मद माते सुर सुख अमृत भरेऊ॥
शिव गन सहित समेत महा मुनिको प्रण नेम टरेऊ॥
तो तनकी छवि निरखि सूर शिव छत ज्यों जात जरेऊ॥
जेहि जारो जग काम सो माधव तेरे हट जात जरेऊ॥३६

इतो श्रम नाहिन तबहुं भयो॥

सुन राधिका जितो श्रम मोकों तैं करि मान दयो।
धरनी धरि बिधि वेद उधारे मधु सो शत्रु हयो।
द्विज नृप कियो दुसह दुख मेट्यो बलि को राज लयो।
तोरेउ धनुष स्वयम्बर कीन्हो रावण अजित जयो।
अघ बक बच्छ अरिष्ट केशि मथि दावानल अंचयो।
त्रिय वपु धरेउ असुर सुर मोहे को जग जो न द्रयो।
जानो नहीं कहा या रस में जिहिं शिर सहज नयो।
गुरु सुत मृतक काज निज आये सागर सोधि लयो।
सूर-सुवन अप तोहि मनावत सुहि सब बिसरि गयो।३७

प्रियाजी बचन पद

श्याम चतुरई जानति हौ।

ये गुण तुम अजहूं नाहिं छांडे इन छंदन में मानति हौ।
तुम रस वाद करन अब लागे जे सब तेऊ पहिचानत हो।
ये बातें अब दूरि गईंज ते गुन गनि२ गानति हो।
यह कहि बहुरि मानकरि बैठी जियकी जिय अनमानति हो
सूर करौ जोई मन भावे इहै बात कहि आनति हो।३८

दोहा।

यह कहि ठानो मान गुरु, अब नहिं करो बिलास।
ध्यान करत बिधि को मनहि, खींचत ऊरध श्वास॥३९॥
त्रिया जन्म अब ना धरों, होउं न पति की नार।
याही वर बिधि देहु मोहि, मांगों गोद पसार॥४०॥

वार्तिक

यह देखि नंदलाल अधीर होय फेरि चले ॥४१॥

स्याम चलै पछिताय के, अति कीन्हों मान ।
ब्याकुल रिस तनु देखि के, सब गयो सयान ॥
बैठ शीस नवाय के, बिनु धीरज प्रान ।
दूती तुरत बुलायके, पठई दे आन ॥
बिरहा के बस हरि परे, त्रिय कियो अनुमान ।
धीर धरो मैं जाति हों, करिये कछु ज्ञान ॥
सावधान करिके गई, दूतिका सुजान ।
सूर महा वह माननी, मानो पाषान ॥४२॥

वार्तिक

प्रिया पै जाय दूतिका बोली ॥४३॥

राग मांड

मन मोहना मनावे प्यारी मान लीजो जी ॥टेक
राधे तू बड़ि भागिनी कौन तपस्या कीन ॥
तीन लोक के नाथ हरि सो तेरे आधीन ॥
शिव बिरंच नारद निगम जाकी लहत न डीठ ॥
ता हरि सोंरी राधिके दै दै बैठत पीठ ॥
अहो लड़ैते दृग किये परे लाल बेहाल ॥
कहुं मुरली कहुं पीत पट कहूं मुकट बनमाल ॥
बिछुरे होय सो फिर मिले रूसे लेहि मिलाय ॥
मिल्यो रहै अरु ना मिले तासों कहा बसाय ॥
तनक सुहागो डार के जड़ कंचन पिघलाय ॥
सदा सुहागिन राधिके क्यों न कृष्ण ललचाय ॥
कहवो काहू को सदा यहि बिधि दिये न टार ॥
सुन बिनती हरिदास की मिलिये नंद कुमार ॥४४॥

रेखता

अब मान मोरि बातें प्यारी जू ऐसो कीजे ॥
माधो से मिलिये चलके चाहे सो दंड लीजे ॥
उर उर सों चापि प्यारी भुज बंध बांधि लीजे ॥
नख तीखे से नाराच मार मरम ताड़ दीजे ॥
भौंहे चढ़ाय रिस सों दशनौं से काट कीजे ॥
मुख सों लगाय मुख सोरी अधर सुधा पीजे ॥
अब लावो ना विलम्ब बाला गात को पसीजे ॥
चलु कपट गांठ खोल श्रम के जल सों जाय भींजे ॥
सुनु सुमुखि पांय लागों पति तनकौ आय छीजे ॥
हरिदास स्याम संग बिलासि जन्म सुफल कीजे ॥४५

दोहा

इतनी बिनती हूं किये, प्रिया न बोली बात ।
हार मान दूती चली, शिथिल किये सब गात ॥४६

छंद

तब दूती फिरि गई श्याम पै, श्याम वहां पग धरिये ॥
जिमि हठ तजे मान प्यारी, सों जतन सवारो करिये ॥
वे वैसे तुम ऐसे वैसे, कहो काज कह सरिये ॥
कीजे कहा चाउ अपनी कत, यहां ससूसनि मरिये ॥
अपनी चोप आप उठि आये, ह्वै रहे आगे ठाड़े ॥
भूलि गये सब चतुर सयानप हुते जु बहु गुन गाड़े ॥
डोलत नाहिं बुलै ना बुलाये, मनहुं चित्र लिख काढ़े ॥
पड़ो न काम नारि नागर सों, हैं घर ही के बाढ़े ॥
निबहेऊ सदा औरही को हठ, यह पर कीर्ति तुम्हारी ॥
आपुनहीं अधीन ह्वै टाड़े देखि गोवर्धन धारी ॥४७

दूतिका बचन प्रिया जी प्रति

छंद

मानहि प्रियहि रूसिबो कैसो, सुनु वृषभान दुलारी ॥
कहुं न भई सुनी नहिं देखी, रह तरंग जल न्यारी ॥
रिस रूसिबो मिलन पलकन को, अति कुसंब रंग जैसो ॥
रहै न सदा छुटत छिन भीतर, प्रात ओस पिया तैसो ॥
वहैं परम मलीन किये मन, उठि काहि मोहन वैसो ॥
घर आये आदर न बूझिये, बैठी दुध अचै सो ॥
वेतो भंवर भावने बन के, और वेलि को तैसी ॥
कीजे मान मदन मोहन सौं, बात कहै हंसिनैसी ॥
तुम जानहु को लाल तुम्हारे, तुमहि उनहिं है जैसी ॥
वाही ते तुम गरव भरी हो, वे ठाड़े तुम बैसी ॥
जो बल जल वरषा की नदी ज्यों, चार दिना को आवै ॥
अंत अवध ही लौं ना तौजो, कोटिक लहर उठावे ॥
वल्लभ सौं वल्लभ को मिलिबो, तुमहिं कौन समझावै ॥
ले चल भवन भाव तोहि भुज गहि, को कहि गारि दिवावै ॥१८

प्रिया जी बचन दूती प्रति

छंद

झुकि ठेलो ह्यांते सारि ह्यांती कौने सिखै पठाई ।
लै फिन जाइ भवन अपने ह्यां लरन कौनु सों आई ॥
कांपति रिसति पीठ दे बैठी सहचरि और बुलाई ॥
कछु सीरी कछु तानी बातन कान्हहिं देत दुहाई ॥१९

दोहा

दरपन कर ले लाल जी, आगे ठाड़े जाय ।
तलफत धीरज ना धरें, बिरह बदन जरो आय ॥

छंद

इत नागरि उत नागर ठाड़े बात न कोई बोले ।
चितवन पलकन मारे परस्पर मन की गांठ न खोले ॥

लालजी वचन

छंद

बड़ो बड़ाई को प्रतिपालो बड़ो बड़ाई छीजे ॥
ताको बड़ो बड़ो शरणागत बैर बड़े सों कीजे ॥
तू वृषभान बड़े की बेटी तेरे ज्याये जीजे ॥
राखहु बैर हिये गहि मोसों बैरहि पीठ न दीजे ॥
भामिनि और भुजंगनि कारी इन के बिषहि डरैये ॥
राचेहू बिरचे सुख नाहीं भूलि न कबहु पत्यैये ॥५२

दोहा— इन के वश में मन परै, सुरझो ना सुरझाय।
कामी आतुर काम के, कैसे कै समुझाय ॥५३॥

छंद

जे जे प्रेम छके मैं देखे तिनहिं न आतुरताई।
तेरे मान सयान सखी तुहि कैसे के समझाई ॥
कबहु न भयो सुन्यो नहिं देख्यो तन तें प्राण अबोले।
होत कहां है आलसहू मिस छिन घूंघट पट खोले ॥
पावत कहा मान में प्यारी कहा गंवावत हो हंसि बोले ॥
कालहिं प्राणनाथ तुम प्यारी फिरहौ कुंजन डोले ॥५४

दोहा

घूंघट पट को टारि के, चितई प्रिया सुजान।
देखे प्रीतम बिकल अति, तजी मान की बान ॥ ५५

चौपाई

तब बोले हरि दोई कर जोरी, तेरी सों वृषभान किशोरी ॥
तूही हित चित जीवन मोकों, सदा करत आराधन तोकों ॥
तू मम तिलक तूहि आभूषण, पोषन तेरोई बचन पियूषण ॥
तेरोई गुण में निशि दिन गाऊं, अब तजु मान हृदय सुखपाऊं ॥
कर जोर बिनती करि भाख्यो, कहत शीस चरनन पर राख्यो ॥
यह सुनके प्यारी मुसकानी, मन मन सकुचि हृदय हरषानी ॥

दूती वचन

सुनहु श्याम तुम हो रस नागर, रूप शील गुण प्रीति उजागर ॥
तुम ते प्रिया नेकु नहिं न्यारी, एक प्राण द्वै देह तुम्हारी ॥
प्यारी में तुम तुम में प्यारी, जैसे दर्पण छांह बिहारी ॥
रस में परै बिरस जहं आई, होय परत तहं अति कठिनाई ॥
याके हम सब देत मनाई, परसो प्यारी चरण कन्हाई ॥
अब रुठायहौ जो गिरधारी, रास २ तो बहुरि हमारी ॥५७॥

दोहा

जब परसे प्यारी चरण, परम प्रीत नद नंद ॥
छुट्यो मान हरषी प्रिया, मिट्यो बिरह दुख द्वंद ॥५८
प्रेम कसोटी कसि पिया, उर आनंद बढ़ाय ॥
मिली प्रिया उठि श्याम सों, अवगुण मन बिसराय ॥५९

चौपाई

हरषि मिले दोई प्रीतम प्यारी, भई सखी सब निरखि सुखारी ॥
तब दोउ उबटि सखी अन्हवाये, रुचिर सिंगार सिंगार बनाये ॥
मधुर मिष्ट भोजन मन भाये, दोइन एकै थार जिमाये ॥
दिये पान अचवन करवाये, सुमन सुगन्ध माल पहिराये ॥
ले बीरा अपने कर प्यारी, दीन्हों बिहंसि बदन गिरधारी ॥
तबहिं सुफल हरि जीवन जान्यो, परम हरष उर अन्तर आन्यो ॥
मिलि बैठे दोउ प्रीतम प्यारी, तब सखियन आरती उतारी ।६०

आरती

आरती सखी साजलाई, प्रिया प्रीतम की सुखदाई ।
फुली कुंजन बिच फुलबारी, बिपिन सब शोभा बिस्तारी ॥
सकल नूतन पट पहिराये, अंगन आभूषण सजवाये ॥
दुहन सिंहासन बैठारे,
सकल सखि वृंद, परम आनंद, निरखि सुख कंद ॥
करत अस्तुति सब मन लाई, बजावत घंटा सहनाई ॥१

रही धुनि नव निकुंज छाई, सुनत आवत गोपी धाई ॥
लखें अनुपम छबि कर जोरी, बिबुध जन तिरयन मति भोरी ॥
बड़ाई करत नहीं थोरी ॥
मुकुट छबि लटक रहे दृग अटक, छवी उर खटक ॥
स्रवन की बानी बौराई, रहे तन मन सुधि बिसराई ॥२
बिपिन बिच भौंरा गुंजारैं, बिरद जनु बंदी उच्चारैं ॥
धरयो कर्पूर कनक थारी, उतारी आरति सखिसारी ॥
भरयो मन में प्रमोद भारी ॥
थके पग हाथ, नवावहिं माथ, पढ़ गुन गाथ।
कहें किमि हरीदास गाई, अमित प्रिया प्रीतम प्रभुताई ।

चौपाई

अति आनंद भरे दोउ राजें, आरस परस निरखत छबि छाजें ॥
पाये वश करि कुंज बिहारी, बिहंस कह्यो प्रीतमसौं प्यारी ॥
सुनहु श्याम बरषा ऋतु आई, रचहु हिंडोरा शुभ सुखदाई ॥
है मन पिय यह साद हमारे, सब मिलि झूलहिं संग तुम्हारे ॥
सुनि तिय बचन श्याम सुख पायो, ऐसे कहि हरि मान छुड़ायो ॥

इति
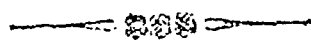
अथ निकुंज लीला

दोहा

एक समय नंद लाड़ले, संग वृषभान कुमार ।
बन बिहरन के कारणे, गवने कुंज मझार ॥१
नवल लता नव पल्लवन, देखि मनहि हरषहिं ।
कुंजन बिच डोलत फिरैं, दोइ जन दे गलबांहिं ॥२
तहं बिचरत अथयौ दिवस, प्यारी मन मुसकाय ।
नंदलाल कर पकरि के, ले गई कुंज लिवाय ॥३

वार्तिक— प्रात समय ढूंढ़ते ढूंढ़ते सखी वाही ठौर पहुंची

अरु परस्पर कहिवे लगीं ॥४॥

पद

आज अति राजत दंपति भोर ॥ टेक ॥
सुरत रंग के रस में भीने, नागरि नवल किशोर ॥
अंसन पर भुज दिये विलोकत, इन्दु वदन विधि ओर ॥
करत पान रस मत्त परस्पर, लोचन तृषित चकोर ॥
छूटी लटनि लाल मन करष्यो, ये याके चित चोर ॥
परि रंभण चुंबन मिलि गावत, सुर मंदिर कल घोर ॥
जै श्री हित हरिवंश लाल ललना मिल, हियो सिरावत मोर ५

वार्तिक

सखी वचन अपर सखी प्रति
चलो सखी बन की कुंजों में कैसो बिहार होय रह्यो है ६

पद

बन की कुंजन कुंजन डोलनि ॥ टेक
निकसत निपट सांकरी बीथिन, परसत नाहिं निचोलनि ॥
प्रात काल रजनी सब जागे, सूचत सुख दृग लोलनि ॥
आलसवंत अरुण अति व्याकुल, कछु उपजत गति गोलनि ॥
निर्तनि भृकुटि वदन अंबुज मृदु, सरस हास मृदु बोलनि ॥
अति आशक्त लाल अति लंपट, वस कीन्हे बिन मोलनि ॥
बिलुलित शिथिल श्याम छूटी लट, राजत रुचिर कपोलनि ॥
रति बिपरीत चुंबन परि रंभण, चिबुक चारु टक टोलनि ॥
कबहुं श्रमित किशलय शैया पर, मुख अंचल झक झोलनि ॥
हित हरिवंश दास हिय सींचत, वारिधि केलि कलोलनि ॥७

वार्तिक— अपर सखी बोल उठी ॥८

पद

आज बन राजत युगल किशोर ॥ टेक
नंद नंदन वृषभानु नंदिनी उठे नींद ते भोर ॥

डग मगात पग परत, शिथिल गत, परसत नख भ्रसि छोर ॥
दशन वसन खंडित मुख मंडित, गंड तिलक कछु थोर ॥
दुरत न कच करजन के रोके, अरुन नैन अलि चोर ॥
जै श्री हित हरिवंश संभारन तन मन, सुरत समुद्र झकोर ॥६

वार्तिक

इनको देखि प्रिया प्रीतम निकुंज से बाहर निकसि आये अरु सखी हंसवे लगीं ॥१०

श्लोक

भ्रात नील निचोल मच्युत मुदः संवीत पीतां शुकम् ॥
राधायाश्चा कितं बिलोक्य हसितं स्वैरं सखी मंडले ॥
श्रीड़ा चंचल मंचलं नय नयों राधाय राधा नने ॥
स्वादुस्मेरे मुख्यो मस्तु जगदा नंदाय नंदात्मजः ॥११॥

वार्तिक

सखियों के ऐसे कटाक्ष भरे वचन सुनि लालजी उनको प्रबोध करिवे लगे यह देख प्रियाजी को बड़ो विषाद भयो अरु रिसाय के अन्य स्थल चलीं गई, सखियों के बीच उनको न देख लालजी बिरह में पीडित होय बोले ॥१२

सप्तम प्रबंध

मूल

सा मियं चलिता विलोक्य वृतं वधू निचयेत ॥
सापराध तया भयापि न बारितातिभयेन ॥
हरि हरि हता दर तया गता सा कुपि तेव ॥१॥

अर्थ

वधुन बीच लखि मोह प्यारी, बहु खेदित मन कतहुं पधारी ॥
निज अपराध जान मन भारी, हौंहूं ताहि न सक्यों निवारी ॥१

मूल

किं करि ष्यति किं वदिष्यति साचिरं विरहेण ॥

किं जनेन धनेन किं मम किं गृहेण सुखेन ॥२

अर्थ

बिरह बिथा पीड़ित सुकुमारी, का करिहै कहि है का बारी ॥
तो बिन जन अरु धन मन माना, भये दुखद घर बिपिन समाना

मूल

चिंतयामी तदाननं कुटिल भ्रु रोष भरेण ॥
शोण पद्म मिवो परि भ्रमता कुल भ्रमरेण ॥ ३

अर्थ

कोप कुटिल भौंहैं तिरछीरी, नहिं भूलहुं मुखचंद ललीरी ॥
मानहुं रक्त कमल बन माहीं, भ्रमर निकर बसि सुख उपजाहीं ३

मूल

ता महं हृदि संगिता म निशं भ्रशं रमयामि ॥
किं वनेनु सरामि ता मिह किं वृथा विलपामि ॥४

अर्थ

मम उर बसत सदा जो प्यारी, ताहि वृथा अब फिरहुं पुकारी ।
किमि वन खोजत खोजत डोलूं, विरह व्यथा बिलपहुं नहिं बोलूं ४

मूल

तन्विखिन्नम सू य या हृदयं तवा कलयामि ।
त न्न वेभ्रि कुतो गतासि न तेन तेज्नु नयामि ॥५

अर्थ

तुव बियोग अति हृदय दुखारी, सो जानहु तुम राधा प्यारी ॥
बिदित नाहिं पर तव गति मोहीं, तिहि कारण नहिं पायो तोहीं ॥

मूल

दृश्य से पुर तो गता गत मेव मेवि दधासि ।
किं पुरेव ससं भ्रमं परिरंभण न ददासि ॥६॥

अर्थ

आवत जात दिखात सदारी, दृग सौं कबहूं टरत न टारी ॥

किमि अब पूर्व समान दुलारी, मिलत न गर लग अचरज भारी ॥

मूल

क्षम्यतांम परं कदापि तवे दृशं न करोमि ॥
देहि सुन्दरि दर्शनं मम मन्मथेन दुनोमि ॥७॥

अर्थ

अबके करु अपराध छमारी, इहि बिधि चूक न करब तुम्हारी ॥
मदन पीर मोहि करति दुखारी, बेगि दरस देवहु बलिहारी ॥७

मूल

वर्णितं जयदेव केन हरे रिदं प्रण तेंन ॥
किंदु बिल्व समुद्र सम्भव रोहिणी रमणेन ॥

दोहा

किन्दु विल्व कुल समुद शशि, श्री जयदेव सुजान ॥
कृष्ण कथा रस सार को गीतन कीन्ह बखान ॥१॥१३

पद

राग परज

कोऊ लावो मनाय मनाय, रिसानी राधा रानी आज ।
राज दुलारी मो प्राणन प्यारी रति रस केलि जहाज ।
बीतत युग सम जाम हैं वा बिन छिन छीजत तन साज ॥
चंद न चांदिनि मोहि न भावे अशन बसन बे काज ।
कोकिल कूक मयूर काकिला बोलत जनु मृगराज ॥
मम जीवन अब कठिन दिखावे बिन वा प्रेम निवाज ।
हों हरिदास भयो हूं वाकी मुहब्बत को मुहताज ॥ १४

रेखता

रिसानी राधिका रानी, रही गृह मौन को ठानी ॥
दिये बिखराय कच भारे, तजे भूषण बसन सारे ॥
कहै नहिं काहु सों बाता, तजो मन जगत को नाता ॥
सखी सब देखतीं ठाढ़ीं, विविध विधि वेदना बाढ़ीं ॥

भरै वह सांस अति जूड़ी, मनो विष की पिई पूड़ी॥
बनी सब क्रोध की मूरत, बिगाड़ी आपनी सूरत ॥
जलावे क्रोध में तन को, बड़ो हरिदास दुख मनको ॥ १५

लालजी वचन

पद

कहुं खोजो सखि वीथिन बन ढूंढ़ो तुम जाय राधा हिराय गई कुंजन में ।।टेक।। अबही तो प्यारी ठाड़ी हती ढिग अबही अब कहां गई विलाय ॥ वा बिन कुंजै ज्वाला पुंजै खग मृग डोल केहरि डहराय ॥ जुग सम बीतत जाम सखी अब कोई तो देव मोरी प्यारी बताय ॥ भूलों ना सखि मैं तेरो गुन जो तुम देहु मेरी लाड़ली मिलाय ॥ १६

कृष्ण सों सखी बोली

दोहा

वही सखी लागी कहन, पुनि निज रानी हाल।
प्राणनाथ तुव विरह में, पीड़ित राधा बाल ॥ १

मूल

स्तन बिन हित मपि हार मुदारं ।
सा मनु ते कृश तनु रिव भारं ॥१
राधिका बिरहे तव केशव ॥ १

अर्थ

कुच पर लटकत कोमल हारा, कृश तनु मानत ताहि पहारा ॥

मूल

सरसम शृण मपि मलयज पंकं, पश्यति विषमिव वपुषि सशंकं २

अर्थ

शीतल चंदन लेप शरीरा, गरल समान देत तिहिं पीरा ॥

मूल

श्वसित पवन मनु पम परिणाहं । मदन दहन मिव बहति सदाहं ३

अर्थ

अनुपम दीरघ श्वास समीरा, मदन दहन सम करत अधीरा ॥

मूल

दिशि दिशि किरति सजल कण जालं ।
नयन नलिन मिव विग लित नालं ॥ ४

अर्थ

विगलित नाल कमल मनुहारी, सजल नयन चहुंदिशि लखि प्यारी

मूल

नयन विषय मपि किशलय तल्पं, कलयति विहित हुताश विकल्पं

अर्थ

तुम विन किशलय शयन विहारी, मानत अनल समान दुखारी

मूल

त्यजति न पाणि तलेन कपोलं, वाल शशिन मिव सायम लोलं

अर्थ

गोल कपोलनि कर धर थाकी, जिमि छबि सांझ नवल चंदाकी

मूल

हरि रिति हरि रिति जयति सकामं, विरह विहित मरणेव निकामं

अर्थ

विरह सिंधु धंसि मरण विचारी : जपत निरंतर हरि गिरधारी ॥

मूल

श्री जयदेव भणित मिति गीतं , सुखयतु केशव पद मुपनीतं ॥

अर्थ दोहा

श्री जयदेव को गीत यह, श्रवत प्रिया दुख नीर ।
देत भक्ति पद युगल में , हरत विषय भव पीर ॥१७॥

पद राग सोरठ

कौन समय रूठन को, प्यारी झूलो ललित हिंडोरे ।टेक।
रंग विरंग घटा नभ छाई, बिच बिच चपला चमक सुहाई .

परत फुहार परम सुखदाई , चलत समीर झकोरे .
बिबिध भाँति पच्छी वन बोलें, मृगिन हित मृग बिहरत डोलें.
जल जंतू मिलि करत किलोलें, यहि अचरज मन मोरे.
कुसुम चीर पहिरे बृजनारी, साज समाज आज है भारी .
नारायण बलि जांऊ तिहारी , प्रीतम करत निहोरे ॥१८॥

पद राग मल्हार

या ऋतु रूस रहन की नाहीं ।
बरषत मेघ मेदनी के हित, प्रीतम हरष बढ़ाहीं ।
जे बेली ग्रीषम ऋतु जरहीं, ते तरुवर लपटाहीं ।
उमड़ी नदी प्रेम रस माती, सिंधु मिलन को जांहीं ।
यह संपदा दिवस चार की, शोच समझ मनमांही।
सूर सुनत उठ चली राधिका , दे दूती गरबांही ॥

मूल प्रबंध एकादशे

रति सुख सारे गत मभि सारे मदन मनोहर वेषं ।
न कुरु नितंबिनि गमन बिलंबनि मनु सरतं हृदयेशं ॥१॥
धीर समीरे यमुना तीरे , बसति बने बन माली ।
गोपी पीन पयोधर मर्द्दन , चंचल कर युग शाली ॥१॥

अर्थ

रति सुख केर नियत थल राजे , मदन मनोहर वेष बिराजे ।
न कुरु बिलंब निर्तिबिनि वारी, धाय मिलहु मन पति वनबारी ॥

मूल

नाम समेतं कृत संकेतं वादयते मृदु वेणुं ।
बहु मनुते ननुते तनु संगं पवन चालित मपि रेणुं ॥२॥

अर्थ

धर अधरन मृदु बैन बजावे , नाम लेत तोहि टेर बुलावे ।
तुव दिशि तेजु रैन उड़ि आवे , ताहि प्रेम कर हृदय लगावे ॥२॥

मूल

पतति पतत्रे विचलित पत्रे, शंकित भवदु पयानं।
रचयति शयनं सचकित नयनं, पश्यति तव पंथानं ॥३॥

अर्थ

पात डुलानि खग उड़नि निहारी, करत शंक जनु आवन प्यारी।
सचकित नयन शयन रचि नीकी, जोवन मग तुव मदन छकीकी।

मूल

मुखर मधीरं त्यज मंजीरं रिपु मिव केलि सुलोलं।
चल सखि कुंजं सतिमिर पुंजं, शीलय नील निचोलं ॥४॥

अर्थ

नूपुर मुखर अधीर तुम्हारी, बजति केलि मंह चलहुं उतारी
तिमिर पुंज कुंजनहिं सिधारो, नीलाम्बर सुन्दर तन धारो ।४

मूल

उरसि मुरारे रुपहित हारे घन इव तरल बलाके।
तडि दिव पीते रति बिपरीते राजस सुकृत बिपाके ॥

अर्थ

रति बिपरीत पियहिं उर लाई, कुसुम माल घन लटकहुं जाई।
चपल बलाका जिमि छवि छाई, पीत बरण चपला होइ जाई ॥

मूल

विगलित वसनं परिहृत रशनं घट यजघन मपि धानं।
किशलय शयने पंकज नयने निधि मिव हर्ष निधानं ॥६॥

अर्थ

किंकिनि तजि निज बसन उतारो, सहित विधान जघन बिस्तारो।
किशलय शयन वेगि चढु वारी, होहु सुखकर उर लगु गिरधारी

मूल

हरि रभ मानी रजनि रिदानी, मिय मपि याति बिरामं।
कुरु मम वचनं सत्वर रचनं, पूरय मधु रिपु कामं ॥७॥

अर्थ

राधे रैन जात सब बीती, प्रभु अभिमानी मन करु प्रीती।
चलहु वेगि मम वचन प्रमाना, पूरहु मधु रिपु के सब कामा॥

मूल

श्री जय देवे कृत हरि सेवे, भणति परम रमणीयं।
प्रमुदित हृदयं हरिमति सदयं, नमत सुकृत कमनीयं॥८

अर्थ दोहा

सेवक श्री जयदेव कृत, गीत मनोहर गाव।
अति उदार युगवर चरन, मुदित होय सिर नाव॥२१॥

वार्तिक

सखियों ने या प्रकार दोउ जनों को मिलाप कियो, अरु वन की शोभा दिखाय दिखाय बोलीं॥२२

पद

भींजत कुंजन में दोऊ आवत॥टेक॥
ज्यों२ बूंद परी चूनरि पर, त्यों २ हरि उर लावत॥
अधिक झकोर होत मेघन की, द्रुम तर छण बिलमावत।
वे हंस ओट करत पीतांबर, वे चुनरी ओढ़ावत॥
तैसेहि मोर कोकिला बोलत, पवन बीच घन धावत।
ले मुरली कर मंद घोर स्वर, राग मल्हार बजावत॥
भींजे राग रागनी दोऊ, भींजे तनु छबि पावत।
सूरदास हरि मिलत परस्पर, प्रीत अधिक उपजावत॥२३॥

पद

आज कछु कुंजन में वरषासी॥ टेक॥
बादर गण में देख सखी री, चमकत है चपलासी॥
भान्ही २ बूंदन कछु धुरवासी, पवन बहुत सुखरासी।
मंद मंद गर्जनसी सुनि मन, नाचत मोर सभासी॥
इन्द्र धनुष में वगपित डोलत, बोलत हैं कोकिलासी।

इन्द्र वधू छबि छाय रही हैं, गिर पर स्याम घटासी
उमंग मही रहु से महि कंपय, फूली भृग मालासी
रटत प्यास चातक की रसना, रस पीवत हो प्यासी ॥२४॥

पद राग मल्हार

देखि युगल छबि सामन लाजै ॥ टेक

उत घन इत घनश्याम लाड़लो, उत दामिनि इत पिया संग राजै.
उत वर्षत बूंदन की लरियां, इत गल मोतिन हार विराजै.
उत दादुर इत बजत बांसुरी, उत गरजत इत नूपुर बाजै.
उत रंग के बादर इत वागे, उते धनुष वनमाल इत साजै.
उत घन घुमंड़ इते द्रग घूमत, नारायण वर्षा सुख आजै. २५

वार्तिक

वाहि समय कदंब पै झूला डार प्रियाजी को झूलवे के काज लालजी बोले। २६

रेखता

आयो है मास सामन इक मान कहियो प्यारी।
चल झूलिये हिंडोरे वृषभान की दुलारी ॥ टेक ॥
यमुना के तीर वंसीवट कैसी छबि छाई।
शीतल सुगंध मंद पवन चलत अति सुहाई ॥
करती है शोर यमुना उठते हैं तरंग भारी।
प्रति कुंज १ छाय रह्यो है परागरी ॥
लागत है परम सुहाई अविलोक नागरी।
फूली लता द्रुमन की धरनी झुकी हैं डारी ॥
जापै अलिंद घूमैं मकरंद हेत छाये।
नाचत है मोर बन में लागत परम सुहाये ॥
भाती कोयल पुकारे बैठी कदम की डारी।
कालिंद्रीया के तट पर ठाडीं परम सहेली ॥
नवसत सिंगार साजै येक येक ते नवेली।

तुमहूं पिया सिधारो कीजे ना अब अबारी ॥
झूले निकुंज अपनी अबहीं चलो पियारे ।
कीजे बिहार हम सों तुम नंद के दुलारे ॥
तब संग ले पिया को सुनि कुंज में सिधारी ।
बैठो कुंवर हिंडोरे अब मैं तुम्हें झुलाऊं ॥
गाऊं तुम्हें रिझाउं छवि देखि द्रग सराऊं ।
बैठो सुरंग पटली डोरी गहो संभारी ॥
बाढ न रमक मोहन टुक मंदरी झुलावो ॥
डरपै हियो हमारो पिया रमक न बढ़ावो ॥
इहि बात सुन प्रिया की उर से लई लगारी ।
भींजेंगी लाल सारी कारी घटा जो आई ॥
लीजे उढ़ाय मोको कामर कुंवर कन्हाई ।
तब हंसि रसिक बिहारी कामर उठाई कारी ॥२७॥

पद

झूलो प्यारी आज निकुंज हिंडोरना ॥ टेक
बोलत चातक मोर पवन झक झोरना ॥
सघन लता निधि बन की आज सुहाई है ।
श्याम घटन सों परत बूंद सुखदाई है ॥
तैसेही दामिनी चमक चमक छबि छाई है ।
मनो डरत तुव आगम जानके ॥
मनो बिछौना कियो मदन मद मानके ॥ २८

पद

चल झूलिये हिंडोरे श्री वृषभानु की लली ॥ टेक
तिहारे काज आज इक मैंने विरंची कुंजे भली ॥
रत्न जड़ित को बनो हिंडोरो कैसी झला झली ॥
वृज बनिता झूलत अनेक तहां एक एक नवेली ॥
शब्द करत जहां कीर कोकिला गुंजत मोर बली ॥

रसिक बिहारी की सुन बानी, तुरतहिं कुंवरि चली ॥ २६

पद

चलो अकेले झूलें प्यारी, बन में मेरे प्रान ॥ टेक
तुम नई नागर रूप उजागर, सुख सागर छवि खानि॥
बरण २ के बादर छाये, झालर शोभावान ॥
बोलत खग मृग डोलत इत उत, सो नहिं जात बखान ॥
रंग रंग के फूल खिले हैं, भ्रमर करत रस पान ॥
ऐसे समय विपिन सुख विलसे, ऐरी परम सुजान ॥
नारायण उठ बेगि पधारो, कुल दीपक वृषभान ॥ ३०

॥ पद राग खेमटा ॥

झूलन चलो हिंडोरने वृषभानु नंदिनी ॥ टेक ॥
सावन की तीज आई नभ घोर घटा छाई ॥
मेघन की झरी लगाई परे बूंद मंदिनी ॥
सुंदर कदम की डारी झूला पर्यो है प्यारी ॥
देख्यो कुंवर हाहारी सब दुख निकंदनी ॥
मम मान सखि लीजे सुन्दर न देर कीजे ॥
हम तो विलोक जीजे तू है गति गयंदिनी ॥
शोभा लखो विपिन की फूली लता द्रुमन की ॥
सुन अरज रसिक जनकी करो चरण वंदनी ॥ ३१ ॥

पिया जी बचन

पद राग पीलू

चलो सखि वाही कदम तरे झूलें ॥ टेक
झुकी है लता अति सघन, प्रफुल्लित कालिंदी के कूलें।
बोलत मोर चकोर कोकिला, अलिगण गुंजत भूलें ।
ललित किशोरी मग बतरावें, कह कह बतियां फूलें ।३२

गज़ल

कालिंदी के कछारों में लांबी कदंम डारें ।

छाके जुगल छबीले भूले हैं भूला डोरैं ॥ १
चंदन जड़ाऊ पटली रेशम की लागी डोरैं ।
शीतल सुगंध मंद वायु दे रही झकोरैं ॥ २
झुक झुक के भूला देतीं सखियां सबहि झुलावें ।
अति मंद मधुर सुरसों मिलके मलार गावें ॥ ३
घन घोर देख मोर करैं शोर बन में भारी ।
नाचैं प्रसन्न होयके कोयल की कूक प्यारी ॥४
गल बांह दोउ दकें आनंद पिया प्यारी ।
हरिदास सखी निरखें मन में प्रमोद भारी ॥ ३३

लावनी

बन सघन कदम द्रुम लतन जमुन जल कूलें ।
श्री भानु लली नंदलाल हिंडोरा झूलें ॥ टेक
मद माती कोयल कूक रही कुंजन में ।
सुनि मोर मचावें शोर घोर सुर घन में ।
बन बरन बरन खग मृगा कलोलें डोलें ।
गिरि गहिवर भीर गंभीर निकुंजन डोलें ।
दंपति रति प्रीति बढ़ाय मगन मन माहीं ।
अति सघन लतन लखि धाय अनंद बढ़ाहीं ।
चढ़ि चढ़ि तरु डारन बीच झुलावें झूलें ।
श्री भानु लली नंदलाल हिंडोरा झूलें ॥ १
घन घुमंड़ घुमंड़ चहुंओर मधुर सुर गरजे ।
परसतहूं शीत समीर लता सब लरजे ।
बरसत रुम झुम झुम मेहेल तन में लागे ।
बदला बहु रंग विरंग बिपिन सब साजें ।
तरु लतन समीर झकोर जोर अति भारी ।
चपला चमकें चहुंओर बदलिया कारी ।
सब ठौर छयो आनन्द दुखे निरमूलें ।

श्री भानु लली नंदलाल हिंडोरा झूलें ॥२
जब से सावन को मास लग्यो मन भावन।
घन गरजत अति सुर घोर मेह बरसावन।
सब सखियां सज सज जान लगीं कुंजन में।
मिलि गावें राग मलार फिरें गलियन में।
सुन सुन बंसी धुन बोले विहंग बहु वानी।
गिरि कंदर में झनकार परे सुख दानी॥
वन वीथन में सब जीव खिलें तन भूलें।
श्री भानु लली नंदलाल हिंडोरा झूलें॥
सुर वनिता बैठीं बिमान लखें सब शोभा।
यह झूलन को आनंद सबन मन लोभा॥
कहुं प्रीतम प्रियहीं झुलाये प्रमोद बढ़ावें।
कहुं प्यारी सखि संग लेइ पिया को झुलावें॥
कहुं वनिता भेष पिया प्यारी संग डोलें।
अनुपम छवि लखि लखि सखी मगन मन बोलें॥
अस अवसर आनंद में हरिदास मनहीं मन फूलें।
श्री भानु लली नंदलाल हिंडोरा झूलें॥४॥३४॥

गजल

चंदन की चौकी रतन जड़ी रंगीन रेशम डोरना।
बन ठन लड़ेती श्री लाडली झूलें निकुंज हिंडोरना॥१॥
जमुना के कूल कदंब की झुक रहीं डगारें सुहावनी।
तापै पड़े हैं हिंडोरना बहे वायु मन की भावनी॥२॥
कबहूं झुलावें श्री लाडिले प्यारी प्रिया को बैठाल कें।
कबहूं प्रिया सखि संग लै प्रीतम झुलावें धाय कें॥३॥
झुक झुक झुलावें झकोर दे रमके रंगीली बसवहीं।
मधुर स्वरों से मिलाय के मल्हार राग जु गावहीं॥४॥
उत घोर सोर अकाश में बदला में बीजुली वहरही।

इत लाड़ली नंदलाल छवि हरिदास नैनन छयरहीं ॥२५॥

माँड

चलो झूलिये हिंडोरा आली नव निकुंज में ॥टेक॥
सघन विपिन यमुना पुलिन वंशीवट की डार।
वरन वरन वाने साजै झूलत नंद कुमार॥
घन गरजन मधुरे सुरन पवन झकोर फुहार।
दामिन दमकन सखि चलन नूपुर की झनकार॥
सज सज के सखियां सवै डोलें कुंजन मांह।
इक उतरत इक चढ़त पुनि झूलत दे गल वाहिं॥
सावन मास सुहावनो दंपति संपति फूल।
रूठन को औसर नहीं ललित हिंडोरा झूल॥
साजि सिंगार सुंदर वदन आनहु हीय हुलास।
हरि हि जान निजदास कछु हरहु पीर हरिदास॥२६

पद राग मल्हार

ऐहो लाल झूलिये तनक धीरे धीरे।
काहे को इतनी रमक वढ़ावत द्रुम उरझत चीरे चीरे॥
जो तुम झुक झुक झूलन के मिस आवतहो नीरे नीरे।
नागर कान्ह डरात न काहू लेत भुजन भीरे भीरे॥२७

पद

झूका दीजो सम्हार मेरी सारी न लटके ॥टेक॥
सघन कुंज द्रुम डार कटीली काहू छोर जिन अटके॥
उन वातन अब भेंट नहीं कछु और धोखे जिन भटके।
ललित किशोरीलाल नावो घर काहू को चट मटके॥२८

पद मल्हार

हिंडोरना मैं कांइछे झूलों राज, म्हारा झूलत हिया लरजै॥
रतन जड़ित के खंभ जड़ाये, अगर चंदन के पटा॥
रेशम डोर पवन पुरवैया, जुर आईं सावन की घटा॥

श्यामा झूलें श्याम झुलावैं कालिंद्री के तटा ॥
उड़ उड़ अंचरा परत सुजन पर निरखत नागर नटा ॥३६

वार्तिक

या उपरांत प्रिया प्यारी मगन होय, सखियों के साथ अपने अपने भवन को सिधारे ॥४०॥

इति

अथ परस्पर मानलीला

दोहा

जेतो श्रम मोहन करें, मान मिटावन काज ।
ताही को जानन चह्यो, प्रिया सखी सिरताज ॥१॥

प्रिया वचन

वार्तिक

हे प्रीतम प्यारे आप कहूं करो जो मोकों मनायबे में बड़ो श्रम होय है मैं याकी परीक्षा लेवो चाहौं सो चलो परस्पर रूप पलटि के लीला करें, लाल जी बोले जो आज्ञा ॥२॥

प्रिया वचन

दोहा

यातें जो मैं जानि हौं, तुमहिं बड़ो श्रम होय ।
नगर ढिंढोरा देऊंगी, मान करो ना कोय ॥३॥

पद

श्याम भये राधा वस ऐसे ॥टेक॥
चात्रिक स्वांति चकोर रहत ज्यों चक चाक रवि जैसे ।

नाद कुरंग मीन जलकी गति, ज्यों तनु के बस छाया ॥
एक टक नयन अंग छवि पोहे थकित भये पति जाया ॥
उठे उठत बैठे बैठत दोऊ चले चलत सुधि नाहीं ॥
सूरदास बड़ भागिनि राधा समुझ मनहिं मुसकाहीं ॥ ४

पद

निरखि श्याम प्यारी अंग शोभा, मन अभिलाष बढ़ावति है ॥
प्रिया आभूषण मांगत पुनि पुनि, अपने अंग बनावत है ॥
कुंडल तट कानन लै साजत, नासा बेसरि धारत है ॥
बेंदी भाल मांग सिर पारत, बेनी गूंथ सवांरत है ॥
प्यारी नयनानि को अंजन लै, अपने लोचन आंजत है ॥
पीताम्बर ओढ़नी शीश दे, राधा को मन रंजत है ॥
कंचुकि भुजिन भरत उर धारत, कंठ हमेल भ्रजावत है ॥
सूर श्याम लालच त्रिय तनु पर, करि सिंगार सुख पावत है ॥५

बार्तिक

श्याम सुन्दर ने त्रिया भेष कियो तब प्रिया जी ने श्याम बनिवो चह्यो ॥६॥

पद

श्यामा श्याम छबि की साध ॥टेक॥
मुकुट कुंडल पीत पट छवि देखि रूप अगाध ॥
प्रिया हा हा करत पुनि पुनि देहु मीतम मोहि ॥
अंग अंग सम्हारि भूषण रहति वह छबि जोहि ॥
काछि कछनी पीत पटकटि किंकनी अति सोभ ॥
हृदय बन माल बनावति देखि छवि मन लोभ ॥
श्रवन कुंडल धारि शोभा शीश रचि श्री खंड ॥
सूर श्याम सुह्यगनी रुचि कनक कर लै दंड ॥७

बार्तिक

जब परस्पर रूप साजे तब प्रिया बोली ॥८॥

पद

तिहारी लाल मुरली नेक बजाऊं ।।टेक।।
जैसी तान तुम्हारे मुख की तैसिय मधुर सुनाऊं ।।
जैसे फिरत रंध्र मग अंगुरी तैसे सहूं फिराऊं ।।
जैसेहि आपु अधर धरि फूंकत मैं अधरन परसाऊं ।।
हा हा करति पांव है लागत बांस बसुरिया पाऊं ।।
सारंग नट पूर्वी में लैके राग अनूप उपाऊं ।।
अपने भूषन मोको दीजे अपने तुमहिं बनाऊं ।।
तुम बैठो दृढ़ मान साजि के मैं गहि चरण मनाऊं ।।
यह अभिलाष बहुत मेरे जिय नयननि यहै दिखाऊं ।।
सूर श्याम गिरि धरन छबीले भुज धरि कंठ लगाऊं ।।९

पद

मुरली लइ करते छीनि ।।टेक।।
ता समय छवि कही जा तिन चतुरि नारि नवीन ।।
कहति पुन२ श्याम आगे मोहि देहु सिखाय ।।
मुरली पर मुख जोरि दोऊ अरस परस बजाय ।।
कृष्ण पुरति नाद उछरति प्यारी रिस करि गात ।।
बार बारहि अधर धरि धुनि बजत नहीं अकुलात ।।
प्रिया भूषण श्याम पहिरत श्याम भूषण नारि ।।
सूर प्रभु करि मान बैठे त्रिय करति मनुहारि ।।१०

वार्तिक

श्याम सखी मान करि बैठी तब प्रिया रूप श्याम मनायबे लगे ।।११।।

पद

कहति नागर श्याम सों तजो मान हठीली ।।
हमते चूक कहा परी त्रिय गर्व गहीली ।।
हंस तहि में तुम रिस कियो कहा प्रकृति तुम्हारी ।।

बार बार कर धरति है कहि कहि सुकुमारी ॥
वृथा मानु नाहिं कीजिये सिर चरणनि धारति ॥
आनन आनन जोरिके प्रिय मुखहिं निहारति ॥
निठुर भई हो लाडिली कबके हम ठाढ़े ॥
तुम हम पर रिस करति हो हम हे तुम चाढ़े ॥
श्याम कियो हठ जानिकै एक चरित बनाऊं ॥
सुनहु सूर प्यारी हृदय रस बिरह उपाऊं ॥१२॥

पद

लाल निठुर ह्वै बैठि रहे ॥ टेक ॥
प्यारी हाहा करति न मानत पुनि २ चरण गहे ।
नहिं बोलत नहिं चितवत मुख तन धरनी नखनि करोवत ।
आपु हंसति पुनि २ उर लागति, चकृत होत मुख जोवति ।
कहा करत ये बोलत नाहीं, पिय यह खेल मिटावहु ।
सूरश्याम मुखचन्द कोटि छबि, हंसि के मोहि दिखावहु ॥ १३

पद

निरखि त्रिय रूप पिया चकित भारी ॥ टेक
किधौं वे पुरुष मैं नारि कि वे नारि मही हौ पुरुष तनु धरि बिसारी । आप तन चितै सिर मुकुट कुंडल श्रवन, अधर मुरली माल बन बिराजैं । उतहिं पिय रूप सिर मांग बेनी, सुभग भाल बैंदी महा बिन्द छाजैं । नागरी हठ तजो कृपा करि मोहि भजो परिकहा चूक सो कहो प्यारी । सूर प्रभु नागरी रस बिरह मगन भई, देखि छबि हंसत गिरि राजधारी ॥ १४

रेखता

त्रिया रूप देखि पिय को प्रिया होत चकित भारी ।
कहे नारि वे मैं पुरुष किधौं वे पुरुष मैं नारी ।
निज शीश मुकुट कान कुंडल अधर मुरली राजे ।
उत मांग बेनी भाल बेंदी सहर बिन्दु छाजे ।

बनमाल कंठ अपने उत हीर हार राजै ।
इत पीत कमर पटका उत नीली सारी भ्राजै ।
परै पाय चरण कबहूं भुज अंग भरै कबहूं ।
कहुं प्यारी प्यारी टेरें पिया प्यारे कहै कबहूं ।
उठै बैठे कबहुं आगे कबहुं पीछे बिकल बाला ।
कहै मान कि यो कहे जात प्राण विरह ज्वाला ।
बिन जाने चूक परी मोसों असहु पीय प्यारे ।
बिन बोले तुम्हें हरीदास जात प्राण म्हारे । १५

पद

नीके श्याम मान तुम्ह धारेउ ॥ टेक ॥
तुम बैठे हठ मानु ठानि मैं मेटयो मानु तुम्हारेउ ।
यह मन साध बहुत ही मेरे तुम बिनु कौन निदारै ।
नागरि पिय तन अपनी सोभा बारहिं बार निहारै ।
वेनी मांग भाल बेंदी छवि नैननि अंजन रंग ।
सूर निरखि पिय घूंघट की छवि पुलक नचावति अंग ।१६।

लाल जी बचन

दोहा

कह्यो तुमहिं तिय बचन को, जब किन लेहु मनाय ।
खेल खेल में बिबस ह्वै, अबहिं गई मुरझाय । १७ ।

वार्तिक

यह सुन प्रिया रूप कृष्ण मनायबे लगे । १८ ।

पद

कैसी रूठ रही प्यारी मुखड़ा मरोर मनमथ माती गुजरिया । टेक ।
कब से सीखी मान करन को एरी गरूरी जोवन जोर ।
अंकुर कपट जम्यो जिय जन त्यों डरत्यों प्रीत की डोरहिं टोर ।
कीजतु कपट भटूकारे सों हौंहू सुन्दर गौर किशोर ।
तुव दर्शन नित मोमन चाहे जिमि चात्रक चाहे घनघोर ।

कारो काजर रूप तिहारो राखिहौं री नैनन की कोर ।
नेक दया की दृष्टि निहारो अब सुनके हरिदास निहोर । १९ ।

वार्तिक

कृष्ण रूप प्रिया को उत्तर प्रिया जी प्रति । २० ।

पद

जिय जरत जरत भयो छार छार अस जियबो जरि जइयो ।टेक।
जब सों प्रीत में पांव पधारो, तब सों तपत तपत तन गारो ।
नितनई बिरह बिथा मन हारो, मथत सदा मन मार मार ।
कपट करत कारे कहो प्यारे, गोरे हैं बड़े भोरे क्यारे ।
तुमहु किते कब मानहिं धारे हौंहु मना गई हार हार ।
प्रीत की रीत अबै तुम जानी, इतनेहु में मोहि कहत गुमानी ।
आपन करनी तनक न आनी सोचहु तो भ्रम टार टार ।
कठिन बड़ी जग प्रेम की फांसी, अबलो तुम समझी सब हांसी ।
हम हरिदास निकुंज निवासी धाय मिलैं तहां वार वार । २१

पद

प्रिया पिय लीन्हीं अंकम लाय ॥ टेक ॥
खेलत में तुम बिरह बढ़ायो गई कहा बित ताय ।
तुम्हहीं कह्यो मानु करि वे को आपुहि बुद्धि उपाय ।
काहे बिबस भई बिन कारण ऐसी गई डराय ।
सुन प्यारी यह भाय बतायो अन्तर गये जनाय ।
बारबार आसि गहा दीन्हों अबहि रही मुरझाय ।
सींची कनक लता सूरज प्रभु अमृत बचन सुनाय ।
अति सुख दै दुख को बिसरायो राधारमन कहाय ।२२

पद

नन्द नँदन त्रिय छबि तनु काछे । टेक
मानो गोरी सांवरी नारी दोऊ जात सहज में आछे ।
श्याम अंग कुसुमी नई सारी फल गुंजा की भांति ।

इत नागरि नीलाम्बर पहिरे, जनु दामिनी घन कांति।
आतुर चले जात बन धामहिं, अति मन हर्ष बढ़ाये।
सूरश्याम वा छवि को नागरि, निरखति नयन चुराये ॥२३

पद

मनहीं मन रीझति है राधा, बार बार प्रभु रूप निहारे ॥टेक
निरखति भाल बिन्दु सेंदुर को, वा छवि पै तनु मनु धनु वारे।
यह मन कहत सखी जन देखे, बूझे तो कह कैहों।
तिहूं भुवन शोभा सुख की निधि, कैसे उनहिं दुरै हों।
पग जेहरि बिछियन की झमकनि, चलत परस्पर बाजत।
सूरश्याम श्यामा सुख जोरी, मानि कंचन छवि लाजत ॥ २४

पद

श्यामा श्याम कुंज बन आवत ॥ टेक
भुज भुज कंठ परस्पर दीन्हे, या छवि उनही भावत ॥
इतते चंद्रावलि जाती ब्रज, उतते ये दोउ आये ॥
दूरहि ते चितवत उनही तन, यकटक नयन लगाये ॥
एक राधिका दुसरी कोहै, याको नहिं पहचानो ॥
बृज बृखभान पुरा युवतिन को, यक यक करि मैं जानो॥
यह आई कहुं और गांव ते, छबि सांवरी सलोनी ॥
सूर आजु यह नई बतानी, येक अंग नव लोनी ॥ २५

बार्तिक

मारग में चन्द्रावलि मिली वाको देख राधिका सकुचानी तब चन्द्रावलि बोली ॥ २६

पद

यह ब्रखभान सुता वह को है ॥ टेक
याकी सरि युवती कोउ नाहीं, यह त्रिभुवन मन मोहै ॥
अति आतुर देखन को आवति, निकट जाय पहिचानी ॥
बृज में रहत किधौं कहुं औरै, बूझेते तब जानी ॥

यह मोहनी कहां तें आई, परम सलोनी नारी ॥
सूरश्याम देखत मुसक्यानी, करी चतुरई भारी ॥ २७

वार्तिक

जब राधा न बोली तब चन्द्रावली ने मन में बिचारी ॥२८

पद

इन ते निधरक और न कोई ॥ टेक
कैसी बुद्धि रची है नोखी, देखी सुनी न होई ॥
यह राधा से हाथ विधाता, बुधि चतुराई बानी ॥
कैसी श्याम चुराय चली लै, अपनी भूषण ठानी ॥
और कहा इनको पहिचाने, मोपे लखे न जात ॥
सूरश्याम चन्द्रावलि जाने, मनहीं मन मुसकयात ॥ २९

पद

सकुच छांड़ि अब इनहिं जनाऊं ॥ टेक
येतो चले आपने काजहि, मैं काहे न समुझाऊं ॥
मनहीं मन यह जीति जायेंगे, जानि बूझि दिनराऊं ॥
यह चतुरई काछिके आये, सो अब प्रगट दिखाऊं ॥
बड़े गुणज्ञ कहावत दोऊ, इनको लाज तजाऊं ॥
सूरश्याम राधा की करनी, महिमा प्रगट सुनाऊं ॥ ३०

पद

कहि राधा ये को हैरी ॥ टेक
अति सुन्दरि सांवरी सलोनी, त्रिभुवन जन मन मोहे री ॥
और नारि इनकी सरि नाहीं, काहे न हम तन जोहे री ॥
काकी सुता बधू है काकी, काकी युवती धौं है री ॥
जैसी तुम तैसी है येऊ, भली बनी तुम सोंहे री ॥
सुनहु सूर अति चतुर राधिका, ये चतुरन की गों हे री ॥ ३१

प्रिया वचन

पद

मथुरा ते ये आई है ॥ टेक
कछु संबंध हमारो इनको, तातें इनहिं बुलाई है ॥
ललिता संग गई दधि बेचन, उनही इन्हें चिन्हाई है ॥
उहै सनेह जानरी सजनी, भवन आजु हम पाई है ॥
तबहीं की पहिचानि हमारी, ऐसी सहज सुभाई है ॥
सूर मोहि देखि यहां आवत, आपु संग उठधाई है ॥ ३२

चन्द्रावली बोली

पद

इनको बृजहीं क्यों न बुलावहु ॥ टेक
की वृखभान पुरा की गोकुल, निकटहिं आन बसावहु ॥
दोउ नवल नवला तुम हू हो, मोहन को दोउ भावहु ॥
मोकों देखि कियो अति घूंघट, काहे न लाज छुड़ावहु ॥
यह अचरज देखो नहिं कबहूं, युवती युवति दुरावहु ॥
सूर सखी राधा सों पुनि पुनि, कहति जु हमें मिलावहु ॥ ३३

दोहा

घूंघट पट ढांक्यो बदन, कल नहिं देत उघार ।
चितवहु मोतन नेकहूं, अती गरूरी नार ॥ ३४

वार्तिक

जब लालजी ने घूंघट न उघारो तब चन्द्रावलि ने आपहिं घूंघट खोल दियो ॥ ३५

दोहा

देख्यो तरुनी बदन को, नयन नयन को जोर ।
सफल जन्म चन्द्रावली, बिहंसे नन्दकिशोर ॥ ३६

चन्द्रावली बचन

पद

मथुरा में बस बास तुम्हारो ॥ टेक
राधा ते उपकार भयो दुर्लभ दर्शन भयो तुम्हारो ॥

बार बार कर गहि गहि निरखति, घूंघट ओट करो किन न्यारो ॥
कबहुंक कर परसति कपोल छुइ, चुटकि लेत ह्यां हमहि निहारो
कछु मैंहूं पहिचानत तुमको, तुमहिं मिलाऊं नन्द दुलारो ॥
काहे को तुम सकुचत हो जू, कहो कहा है नाम तुम्हारो ॥
ऐसी सखी मिली तोहि राधा, तो हम को काहे न बिसारो ॥
सूरदास दंपति मन जान्यो, यासों कैसे होत उबारो ॥ ३७

पद

राधा सखी मिली मन आई ॥ टेक
जबसे इनते नेह लगायो बहुत भई चतुराई ॥
और भई इनते तुमको सखि, गृह जन सों निठुराई ॥
काहू को मन मैं नहिं जानति, हमहु सबनि बिसराई ॥
तुम हो कुशल कुशल हैं एऊ, आप स्वारथी माई ॥
सूर परस्पर दम्पति आतुर, चतुर सखी लखि पाई ॥ ३८

पद

यह सखि अबलों कहां दुराई ॥ टेक
एते घोष हम कबहुं न देखे, अब जु कहां ते आई ॥
त्रिभुवन की शोभा सब गुण विधि, है विधि एक उपाई ॥
विद्यमान वृषभान नन्दनी, सहचरि सब दुखदाई ॥
आपने मन तकि तकि तनु तोलति, विय जानि सुन्दरताई ॥
दुसह रूप की रासि राधिका, कहो कौन पुर आई ॥
राचि रहे रस सुरत सूर दोऊ, निरखति नयन निकाई ॥
चीन्हे हो चलि जाऊं कुंज गृह, छांड़ि देहु चतुराई ॥ ३९

पद

ऐसी कुंवरि कहां तुम पाई ॥ टेक
राधाहू ते नख सिख सुन्दर, अबलों कहां दुराई ॥
काकी नारि कौन की बेटी, कौन गांव ते आई ॥
देखी सुनी न वृज वृन्दावन, सुधि बुधि हरत पराई ॥

धन्य सुहाग भाग है याको, यह युवतिन मन भाई ॥
सूरदास प्रभु हरषि मिले हंसि, ले उन कंठ लगाई ॥ ४०

पद

नंद नँदन हँसे नागरी मुख चितै हरखि चंद्रावलि लाई ॥ वाम भुज बनी दधिन भुजा सरि वापर चले बन धाम सुख कहि न जाई ॥ मनो विवि दामिनि बीच नव घन सुभग देख छवि काम रति सहित लाजे । किधौं कंचन लता बीच तमाल तरु भामिनी बीच गिरधर बिराजे ॥ गये गृह कुंज अलि गुंजे सुमननि पुज देख आनन्द भरे सूर स्वामी । राधिका रवन युवति रवन मन रवन निरखि छवि मन होत काम कामी ॥४१॥

पद

कुंज भवन राधा मन मोहन ॥ टेक ॥
रति विलास कर मगन भये अति, निरखत नैन लजोहन ॥
त्रिय तनु को दुख दूर कियो पिय, दै दै अपनी सोंहन ॥
बार बार भुज धर अंकम भर, मिल बैठे दोउ गोहन ॥
पीताम्बर पटु सों मुख पोंछत, हरषि परस्पर जोहन ॥
सूर श्याम श्यामा मन रिझवत, पीन कुचनि टक टोहन ॥ ४२

पद

वनहि धाम सुख रैन बिहाई ॥ ठेक ॥
तैसिय नवल राधिका नागरि, तैसई नवल कन्हाई ॥
तैसई पुलिन पवित्र यमुन को, तैसोई मंद सुगंध ॥
तैसिय कंठ कोकिला कुहकनि, तैसोइ सुख सनबंध ॥
रति बिहार कर पिय अरु प्यारी, प्रात चले ब्रज धाम ॥
सूरदास दोऊ वह जोरी, राजत श्यामा श्याम ॥४३॥

पद

दोऊ बन ते बृज धाम गये ॥ टेक ॥
रति संग्राम जीत पिय प्यारी, भूषण सजत नये ॥

ये ब्रज गये आपु अपने गृह , चित तें कोउ न टारत ।
मन बाचा कर्मणा एक दोऊ, येकौ पल न बिसारत ॥
जैसे मीन नीर नहिं त्यागत; ये खंडित हैं खूरण ।
सूर श्याम श्यामा दोउ देखो, इत उत कोउ न अधूरन ॥४४॥

॥ इति ॥

अथ मान लीला दूसरी

दोहा

एक समय श्री लाड़िली , पिय उर लखि निज छांह ।
सौत संग पिय जानके, कुपित भई मन मांह ॥

प्रियाजी वचन लालजी प्रति

पद

अब जानी पिय बात तिहारी ॥ टेक ॥
मोसों तुम मुंह की निबहत हो, भावति है वह प्यारी ॥
राखे रहत हृदय पर ताको, धन्य भाग हैं ताके ।
ऐसी कहीं लखी नहिं अबलों, वश्य भये जो याके ॥
भली करी यह बात जनाई , प्रगट दिखाई मोहि ।
सूर श्याम यह प्राण पियारी, उर में राखी पोहि ॥ २ ॥

पद

सुनत श्याम चकित भए बानी ॥टेक॥
प्यारी पिय मुख देख कछुक हँसि, कछुक हृदय रिस आनी ॥
नागरि हँसत हँसी उर छाया, तापर अति झुहरानी ॥

अधर कांपि रिस भौंह मरोरेउ, मनही मन गहरानी ॥
इक टक चिते रही प्रतिबिंबहि, सौति साल जिय आनी ॥
सूरदास प्रभु तुम बड़ भागिनि, बड़ भागिनि जेहि आनी ॥३

लालजी वचन

पद

प्यारी सांचु कहत कि हांसी ॥ टेक ॥
काहे को इतनो रिस पावत , कत तुम होहु उदासी ॥
पुनि पुनि कहत कहां तबहीं के, कहां ठगी सी ठाढ़ी ।
इकटक चिते रही हिरदे तन, मनो चित्र लिखि काढ़ी ॥
समुझी नहीं कहा मन आई , मदन बसे तुव आगे ।
सूरश्याम भये काम आतुर, भुजा गहन पिय लागे ॥ ४ ॥

प्रियाजी वचन

पद

मोहि छुओ जिनि दूर रहो जू ॥ टेक ॥
जाको हृदय लगाय लई है, ताकी बांह गहोजू ॥
तुम सर्वज्ञ और सब मूरख, सो रानी अरु दासी ।
मैं देखत हिरदे वह बैठी , हम तुम को भई हांसी ॥
बांह गहत कछु शरम न आवत, सुख पावत मन माहीं ।
सुनहु सूर मो तन वह इकटक, चितवति डरपति नाहीं ॥५॥

लालजी वचन

पद

कहा भई धनि बावरी, कहि तुमहि सुनाऊं ॥टेक॥
तुमते को है भावती , केहि हृदय बसाऊं ॥
तुमहि श्रवण तुम नयन हो, तुमही प्राण अधार ।
वृथा क्रोध तिय क्यों करो , कहि बारम्बार ॥
भुज गहि ताहि देखावहू , जो हृदय बतावति ।
सूरज प्रभु कहे नागरी , तुमते को भावति ॥ ६ ॥

प्रियाजी बचन

पद

माधो नाहिन डुरति जो हिरदे बसति ॥ टेक ॥

ऐसी ढीठ मेरे जान, तुमहि कीन्हीं है कान्ह, यो सन्मुख देखत न त्रसत । झुके न झुकति भाल, भृकुटि कुटिल किये, रूखे रूखी ह्वै रहति हँसते हँसति । तबही ते इकटक, चितवति वोहि जक, वा उरते इत उत न धँसति । जाहि सों लगत नैन, ताहि सों पगत बैन, नख शिख लों सब गात ग्रसति । जाके हरि राचे रंग, सोई है अन्तर संग, कांच की करौती के जल ज्यों लसति । बिहँसि बोले गोपाल, सुनि हो बृज की बाल , उछंग लेत कर धरनि खसति । अपनी छाया निहारि , काहे को करति आरि, काम की कसौटी सूर सकते कसति ॥ ७ ॥

पद

काहे कों हौ बात बनावत ॥ टेक ॥

अब तुम को पिय पति आति हौं छांह, अपनी धरनि बतावत ।
वा देखत हमको तुम मिलैहो , काहे को अनखावत ।
जैहैं कहूं निकस हिरदे से, जान बूझ क्यों तेहि उचटावत ।
जो वो कहै करौ तुम सोई, कहा मोहि पुनि२ समझावत ।
सूर श्याम नागर वह नागरि, भले भले जू मोहि खिजावत । ८

बार्तिक

यह कह प्रियाजी मुख मोर के मान कर बैठीं ॥९॥

लालजी बोले

पद

बृथा हठ दूर किन करहु प्यारी ॥टेक॥

कहा रिस करति ह्यां छांह अपनी देख उर कोइ नहिं रिस जरति भारी ॥ तुमहि धन रहति मन नयन में तुम बसति कनक सो कसि लेहु कहा बैठी ॥ चतुरई कहां बुद्धि कैसी भई

चूक समुझे बिना भौंह ऐंठी ॥ यह सुनत रिस भरी रही नहीं तहां खरी वोट ह्वै झरहरी मान कीन्हो ॥ जाहु मन मन कहेऊ मैं बहुत सुख लहेऊ सौत दिखराय मोहि सूर दीन्हो ॥ १०

बार्तिक

यह कठोर वचन सुनि लालजीहू अनखाय दूरि जाय बैठे. तब उनपै जाय दूती बोली ॥ १२

मूल ॥ गीतगोविंद ॥

साविरहे तव दीना ॥ माधव मन सिज विशिख भया दिव भाव नया त्वयि लीना ॥

दोहा

प्यारे तुम बिनु विरहणी, व्याकुल है अति दीन ।
मदन बान भय भीत ह्वै, भई तुमहि लवलीन ॥

मूल

निंदति चंदन मिंदु किरण मनु निंदति खेद मधीरं ॥
व्याल निलय मिलनेन गरल मिव कलयति मलय समीरं ॥१

अर्थ चौपाई

अति अधीर कहुं सुख नहीं पावे, ताहिन चंदन चांदनि भावे ।
व्याल निलय मिलि मलय समीरा, देत गरल इमि ता कहं पीरा ॥१

मूल

अविरल निपतित मदन शरादिव भव दव नाय विशालं ॥
स्व हृदय मर्मणि वर्म करोति सजल नलिनी दल जालं ॥ २

चौपाई

अविरल गिरत मदन शर साजा, तिनसों तुमही बचावन काजा ॥
सजल कमल दल कवच बनाई, तुमहि लेत निज उरहि दुराई ॥ २

मूल

कुसुम विशिष शर तल्प मनल्प विलास कला कमनीयं ॥
वृत मिव तव परिरम्भ सुखाय करोति कुसुम शयनीयं ॥ ३

चौपाई

वान शयन दारुण व्रत धारी, मनसिज शर रचि सेज संवारी ॥
वहुतर केलि कला सुख कारी, तुव परिरम्भण काज बिहारी ॥ ३

मूल

वहतिच गलित विलोचन जलधर मानन कमल मुदारं ॥
विधु मिव विकट विधुंतुद दन्त दलन लगिता मृत धारं ॥४

चौपाई

युगल नैन जल धार बहाई, कमल कपोलन पर छबि छाई ॥
राहु ग्रसत जिमि शशि कदराई, वरसत अमृत धरि झरिलाई ॥ ४

मूल

विलिखति रहसि कुरंग मदेन भवन्तम समशर भूतम् ॥
प्रणमति मकर मधो वि निधाय करेच शरे नवचूतं ॥ ५

चौपाई

तुमहिं मदन मूरत सम जानी, मृग मद चित्र बनाय सयानी ॥
नव पल्लव शरदै कर वामा, मकरासन धरि करत प्रणामा ॥ ५

मूल

प्रति पद मिद मपि निगदति माधव तव चरने पति ताहं ॥
त्वयि विमुखे मयि सपदि सुधा निधि रपि तनुते तनुदाहं ॥६

चौपाई

पुनि पुनि कहत अहो पिय प्यारे, तुव पद सहस प्रनाम हमारे ॥
तुम बिनु प्राण नाथ गिरधारी, दहत सुधा निधि मम तन भारी ॥६

मूल

ध्यान लयेन पुरः परि कल्प्य भवंत मतीव दुरापं ॥
विलपति हसति विषीदति रोदिति चंचति मुंचति तापं ॥७

चौपाई

जान तुमहि दुर्लभ वृजनाथा, ध्यान धरत मन करत सनाथा ॥
हँसि रोवति अति करति विलापा, इत उत चलि मेटत उर तापा ॥७

मूल

श्री जयदेव भणित मिद मधिक यदि मनसा नटनीयं ॥
हरि विरहाकुल वल्लव युवति सखी वचनं पठनीयं ॥८

दोहा

जो हरि विरह समुद्र रस, चहै लैन सुख दैन ।
पढ़े सोइ जयदेव कथित, राधा सखि के वैन ॥ ८ ॥ १२

छन्द

निज गृह लगत तिहिं सघन वन सम जाल सम सखि मालहै ॥
दारुण दुसह दुख जनित श्वासहुं मनहुं दवमन दाह है ॥
जानत अपन कहं वन मृगी सम मदन यम सम केहरी ॥
हाहा बिरहणी पर दया करु नाथ तुव शरणहिं परी ॥१३

लालजी वचन

पद

मानु करेउ त्रिय बिनु अपराधहिं ॥ टेक

तनु दाहत बिनु काज आपनो, कहत डरत जिय वादहिं ॥ कहां रही मुख मूंदि भामिनी, मोहि चूक कछु नाहीं ॥ झझकि रहौ क्यों चतुर नागरी, देखि आपनी छांहीं ॥ अजहूं दूरि करो रिस उरते, हिरदे ज्ञान विचारो ॥ सूर श्याम कहि कहि पचिहारे, हरि कीन्हो जिय भारो ॥ १४

दोहा

कमल हियो नंदलाल को, सूख्यो व्याकुल प्राण ।
व्याकुल वृंदावन चले, मिली दूतिका आन ॥ १५

दूती वचन

दोहा

कैसी भई लालन दशा, कहो न मोहि सुनाय ।
सकौ न दुख पहिचान तुव, आये कहा गंवाय ॥ १६

लालजी वचन

पद

व्याकुल वचन कहत हैं श्याम ॥ टेक
वृथा नागरी मानु बढ़ायो, जोर कियो तनु काम ॥
यह कहतहिं लोचन भरि आये, पायो विरह सहाय ॥
चाहत कहेउ भेद ता आगे, वानी कही ना जाय ॥
और सखी तेहि अंतर आई, व्याकुल देख मुरारि ॥
सूर श्याम मुख देख चकित भई, क्यों तनु रहे विसारि १७

दूती बचन सखी प्रति

पद

कहति दूतिका सखिन बुझाई ॥टेक॥
आजु राधिका मान करेउ है, श्याम गये कुम्हिलाई ॥
कर सों कर धरि लाल गई लै, सखिन सहित वनधाम ।
सुख दै कहति लिये आवति हौं, सँग बिलसाऊं बाम ॥
सो आगे की महरि बिरहनी, कहा करै वह मान ।
सुनहु सूर प्रभु कितिक बात यह, करो न पूरन काम ॥१८॥

पद

श्याम कुंज बैठार गई ॥ टेक ॥
चतुर दूतिका सखियन लीन्हें, आतुरताई जान लई ॥
मनही मन इक रचि चतुराई, यहै कहेगी बात नई ॥
अबहीं लै आवति हों ताकों, इहां भई कछु बहुत दई ॥
कर आई हरि सों परितिज्ञा, कहा कहे वृषभान जई ॥
सूर श्याम सों मान करेउ है, आजहिं ऐसी कहा भई १९

पद

सखियन संग लै तहां गई ॥ टेक ॥
दूतिका मुख निरखि राधा, जानि हृदय लई ॥
अति चतुर वृषभान तनया, सहजहि बोल लई ॥

सहज बचन प्रकाश कीन्हों, कहा कृपा भई ॥
तुरतहीं यह कहि सुनायो, श्याम बोलत तोहि ॥
सूर प्रभु वन बोलि पठयो. तोहि कारण मोहि ॥२०॥

वार्तिक

अरी प्यारी चल तोहि नंदलाल बुलावत हैं ॥ २१ ॥

प्रिया बचन

पद

काहे कों वन श्याम बुलाई, याही ते तुम धाई आई ॥टेक॥
कहा कहौं तोकोरी माई, तुमहू भलीं अरु भले कन्हाई ॥
अब एक नई मिली है आई, ताही को अब लेहि मिलाई ॥
ताको राखी हृदय दुराई, तो कों ह्यांते टारि पठाई ॥
सूरश्याम ऐसे गुनराई, उनकी महिमा कही न जाई ॥

सखी बचन

पद

आजु कछू घर कलह भयोरी ॥ टेक ॥
तऊ आजु अनमनी बतानी, यह कछु मान कियोरी ॥
मो सों कछू कहेउ नहिं मोहन, सहज पठाई लैन ॥
कहा पुकार परी हरि आगे, चलो न देखो नैन ॥
तेरो नाम लेत हरि आगे, कहत सुनाय सुनाय ॥
सूर सुनहु काको काको गथ, तैं धौं लियो छिड़ाय ॥२३॥

अष्टादश प्रबंध

मूल

माधवे मा कुरू मानिनि मान भये ॥

दोहा

जग सुख कारन दुख हरन, मोहन रूप विशाल ॥
तांसो मान न ठानियो, री अभिमानी बाल ॥

मूल

हरि रसि सरति वहति मधु पवने . किम पर मधिक सुखं सखि भवने ।१

चौपाई

वहत वसंत पवन हरि आये , तुम घर रहि सखि का सुख पाये ॥१

मूल

ताल फूलादपि गुरु मति सरसं , किंवि फूली कुरुषे कुच,कलशं ॥२

चौपाई

ताल फूलन सम गुरु अति सरसा, करत विकल क्यों युग कुच कलसा॥२

मूल

कतिन कथित मिद मनु पद मचिरं, मा परि हर हरि मति शय रुचिरं॥३

चौपाई

बार बार समझावहुं प्यारी , तजहुन अतिशय रुचिर ललारी ॥ ३

मूल

किमिति विषी दसि रोदिसि विकला, विहंसति युवति सभा तव सकला३

चौपाई

किमितिविषीदिसि रोदिसिविकला,लखितुवहंसतियुवति जनसकला४

मूल

मृदु नलनी दल शीतल शयने , हरि मव लोकय सकलय नयने ॥५

चौपाई

बैठे मृदु नलनी दल से जन, हरिहि विलोकु सफल करु नैनन ॥५

मूल

जनयसि मनसि किमिति गुरु खेदं, शृणु मम बचन मनीहित भेदम्॥६

चौपाई

किमि मन खेद करत हठ धारी , मानि बचन मम मिलहु मुरारी ॥६

मूल

हरि रूप यातु वदतु वहु मधुरं , किमिति करोषि हृदय मति विधुरं ॥७

चौपाई

आवत हरि बोलत मृदु बैना, करत कठोर हृदय किमि मैना ॥७

सूल

श्री जयदेव भनित मति ललितं, सुख यतु रसिक जनं हरि चरितं ॥८

दोहा

गीत ललित जयदेव कृत, रशिक जनन सुख खान ॥
सुनत पठत कलि मल दहल, हरीदास के प्रान ॥ ८ ॥२४

प्रियाजी वचन

पद

यह कछु नोखी बात सुनावति ॥ टेक ॥
काको गथ मैं धौं लीन्ही है, बार बार बन मोहि बुलावति ॥
मेरी धां हरि लरत कौन सों, इत भैया मोहि कीन्ही ।
जैसे हैं तेरे ये साई, मैं नीके करि चीन्ही ॥
की बैठो की भवन जाहु की, मैं उनपै नहिं जाऊं ।
सूरदास प्रभु को री सजनी, जन्म न लैहों नाऊं ॥ २५ ॥

दूती वचन

पद

मैं कह तोहि मनावन आई ॥ टेक ॥
प्रगट लिये सब को बृज बैठी, कहा करति अधिकाई ॥
जाइ करौ ना बोध सबनि को, मोपर कत सतरानी ॥
श्याम लरत तबहीं स उन सों, तिनपर अतिहि रिसानी ॥
बार बार तू कहा कहतरी, बृज काको मैं लीन्हो ॥
सूरदास राधा सब हरिसों, ज्वाब निदरि के लीन्हो ॥ २६ ॥

पद

नैं कछु नहिं काहू को लीन्ही ॥टेक॥
प्रगट कहौं तबही मानैगी, ज्वाब निदरि मोहि दीन्हो ॥
तब बदिहौं ऐसहि हां कैहै, जंह बैठे सब बैरी ॥

मेरे कहे बहुत रिस पावति, संपति सब की लेरी ॥
इक इक करि सब तोहि दिखाऊं, कहि आवहु बन जाई ॥
की दीजो की सब पुनि लीजो, सूरश्याम पै आई ॥ २७ ॥

पद

जिन जिन जाय श्याम के आगे तेरी चुगली बहुत करी ॥टेक॥
बार बार तिन सों हरि खीजै तेरी यां है मैं हु लरी ॥
श्याम भेद करि मोहि पठाई तू मोही पर खरी परी ॥
जाय करौ रिस बैरिन आगे जाके जाके गर्थाहि हरी ॥
धरनि अकाश बनहु के आये देखत तिनके अतिहि डरी ॥
सूरश्याम बिन न्याव चुकै क्यों तिन पर तू अति ही झुहरी ॥२८

पद

ते जन पुकारे हरि पै जाय ॥ टेक ॥
जिनकी यह सब सौज राधिका, तेरे तनु तें लई छिड़ाय ॥
इन्दु कहे हों वदन बिगोयो, अलकनि अलि समुदाय ॥
नयननि मृग वचननि पिक, लूटे बिलपत हरिहिं सुनाय ॥
कमल कीर केहरि कपोत गज, कनक कदलि दुख पाय ॥
विद्रुम कुंद भुजंग संग मिलि, शरन गये अकुलाय ॥
अति अनीति जिय जानि सूर प्रभु, पठए मोहि रिसाय ॥
बन बोली वृज नाथ वेगि चलि, अब उत्तर दे जाय ॥२९॥

पद

मानु करौ तुम और सवाई ॥ टेक ॥
कोटि करौ एकै पुनि है हो, तुम अरु वे मन मोहन माई ॥
मोहन सो सुनि नाम श्रवनहीं, मगन भई सुकुमारी ॥
मानु गयो रिस गयो तुरतहीं, लज्जित भई मन भारी ॥
धाय मिली दूतिका कंठ सों, धन्य धन्य कहि बानी ॥
सूर श्याम बन धाम जानि के, दरशन को अतुरानी ॥३०॥

पद

चलहि किन माननी कुंज कुटीर ॥ टेक ॥
तो विन कुंवरि कोटि वनिता जुत मथत मदन की पीर ॥
गद गद सुर बिरहाकुल पुलकित श्रवत विलोचन नीर ॥
क्वासि क्वासि वृषभानु नंदनी बिलपत विपन अधीर ॥
वंशी विषिख व्याल मालावलि पंचानन पिक कीर ॥
मल यज गरल हुतासन मारुत शाखा मृग रिपु चीर ॥
जै श्री हित हरिवंश परम कोमल चित चपल चली पिय तीर ॥
सुनि भयभीत वज्र की पिंजर सुरत सूर रन वीर ॥३१॥

पद

मन पछतावो ही रह जैहै ॥ टेक ॥
सुनि सुंदरि यह समय खोय ते पुनि न शूल सहि जैहै ॥
मानहु मैन मजीठ प्रेम रंग तैसे ही गहि जैहै ॥
काम हरष हरै हरि अंबर देखत ही बहि जैहै ॥
इते भेद की बात सखीरी कत कोऊ कहि जैहै ॥
परत भवनि खनि कूप सूर त्यों, मदन अगिनि दहि जैहै ॥ ३२ ॥

पद

बहुरि पछितैहै री वृज नारि ॥
देखि जाय ठाढे मग जोवत, सुंदर श्याम मुरारि ॥
ऐसी निठुर नेक नहिं चितवत, चंचल नैन पसारि ॥
कहा गर्व या झूठे तनको, देखि हाथले वारि ॥
तजि अभिमान मानरी मानिनि, मैं जु करति मनुहारि ॥
सूर हंस स्वाती सुत धोखे कवहुंक खात जुवारि ॥३३॥

पद

हँस के कहेउ दूतिका आगे श्यामहिं सुख देरी तू जाय ॥टेक॥
करि अस्नान अभूषन अँग भरि, मैं आवति तो पाछे धाय ॥
यह सुनि हरषि भई अति हीं सखि, गई तहां जहां श्याम ॥

अति व्याकुल तन की सुधि नाहीं, विह्वल कीन्हों काम ॥
की बन में की घर हौं बैठे, की वासर की जाम ॥
सूर श्याम रसना रट लागी, राधा राधा नाम ॥ ३४ ॥

पद

श्याम नारि के विरह भरे ॥ टेक ॥
कबहुंक बैठत कुंज द्रुमनि तर, कबहुंक रहत खरे ॥
कबहुंक तन की सुरति विसारति, कबहुंक तन सुधि आवत ॥
तब नागरि के गुणहिं विचारत, तेइ गुण गुनि गुनि गावत ॥
कहूं मुकुट कहुं मुरलि रही गिर, कहुं कट पीत पिछौरी ॥
सूर श्याम ऐसी गति भीतर, आई दूतिका गोरी ॥ ३५ ॥

पद

श्याम भुजा गहि दूतिका कहि आतुर बानी ॥टेक॥
काहे को कदरात हो मैं राधा आनी ॥
बिरह दूरि करि डारिये सुख करो कन्हाई ॥
त्रिया नाम श्रवननि सुन्यो चितए अकुलाई ॥
मिले दूति कहिं अंक दे लोचन भरि आई ॥
प्यारी प्यारी बोलि के युवतिहिं उर लाई ॥
तब बोली हंसि दूतिका पिय आवत नारी ॥
सूर श्याम सुनि बोले तबै हरषे बनवारी ॥ ३६ ॥

पद

धरहु धीर प्यारी अब आवति ॥ टेक ॥
मैं जो गई प्रतिज्ञा करिके सो कहि बात जनावति ॥
मन चिंता अब दूरि करौ जू कहौ कहा मोहि देहौ ॥
बनि आवति वृषभान नंदनी भुज भरि अंकम लैहौ ॥
यह सुन्दरता और नहीं कहुं बड़ भागी सो पावै ॥
सूर श्याम दूतिका बचन सुनि कर युग जोरि मिलावै ॥३७॥

दोहा

चतुर सहचरी बांह धरि , ल्याई भानु कुमार ।
अंकम भरि दोई मिले , राधा नंद कुमार ॥ ३८ ॥
जाको निर्गुण कहत हैं , निगम बखान बखान ।
सो हरि राधा प्रेम बस , बन बन फिरत भुलान ॥ ३९ ॥

पद

मनो गिरिवर ते आवति गंगा ॥ टेक ॥
राजत अति रमनिक राधिका , यहि विधि अधिक अनूपम अंगा ॥
गौर गात अति बिमल वारि बिधि, कटि तट त्रिवली तरल तरंगा ॥
रोम राजि मनो यमुन मिली अध, भँवर परत मानो भ्रुव भंगा ॥
मणि गण भूषण रुचिर तीर बर , मध्य धार मोतिन में मंगा ॥
सूरदास मनो चली सुरसरी , श्री गुपाल सागर सो संगा ॥४०

पद

फूलनि के महल फूलनि के शय्या, फूले कुंज बिहारी फूली राधा प्यारी॥
फूले वे दम्पति नवल मगन , फूले फूले करे केलि न्यारी ॥
फूली लता बेलि विविध सुमन गन, फूले आनन दोऊ हैं सुखकारी॥
सूरदास प्रभु प्यारी परवारत, फूले फूल चम्पक बेलि निवारी ॥ ४१ ॥

पद

आजु रंग फूले कुंवर कन्हाई ॥ टेक ॥
कबहुंक अधर दशन भरि खंडत , चाखत सुधा मिठाई ॥
कबहुंक उर कर परसि कठिन अति , तहां वदन परसावत ॥
मुख निरखति सकुचाति सुकुमारी , मनही मन अति भावत ॥
तब प्यारी कर गहि मुख टारति , नेक लाज नहिं आवत ॥
सूरदास प्रभु काम शिरोमणि , कोक कला दिखरावत ॥
वार्तिक—या उपरांत सखियों ने आरती उतारी ॥

इति

अथ वेणी गूंथन लीला

दोहा

एक समय परभातहीं, वन सों कुसुम वटोर।
प्रिया सिंगारन को चले, नागर नन्द किशोर ॥१॥
चमकीली चुरियां भरें, ककही डुरिया तेल।
बरन बरन के कुसुम के, गजरे हार फुलेल ॥२॥
पहुंच प्रिया की कुंज में, खड़े द्वार पर जाय।
बोले प्यारी लाड़िली, बेनी लेहु गुहाय ॥३॥

रेखता

गूंथन को बेनी तेरी मृगनैनी आज आयो।
कंचन जड़ाऊ कंघी सुन्दर फुलेल लायो ॥१॥
निनवारों केश कारे निज कर सों तेल डारों।
बिच बीच फूल गूंथों तन मन को तुमपै वारों ॥२॥
केवड़ा गुलाब सोनजुही मालती चमेली।
मालाहु मोंगरा की बारन गुहों नवेली ॥३॥
सिर शीश फूल कुसमों की कोर जूड़ा बांधौं।
लटकारी नागनीसी लटकाय गले सांधौं ॥४॥
साजूं सिंगार सारे सिर ओढ़नी उढ़ाऊं।
माथ पर तिलक मृग मद को वेंदी भाल लाऊं ॥५॥
पग में लगाऊं जावक निज भाग को मनाऊं।
हरिदास विमुख कीजो ना याही बर मगाऊं ॥६॥

प्रिया बचन

बार्तिक

अरे लाला तुम्हें तिरयों के सिंगार से कहा प्रयोजन है, अरे तुम वा बात में कहा जानों ॥५॥

लालजी वचन

दोहा

प्यारी तुमहिं रिझाय हूं, जो न करों सो थोर।
भली भांति सिंगार तुव, जो न करों तो खोर ॥७॥

प्रियाजी वचन

दोहा।

प्यारे मो लगि आप को, नितहुं नयो श्रम होय।
भेद परस्पर प्रीति को, तुम बिन जाने कोय ॥८॥

वार्तिक—लाला मोरी बेनि गूंथिवौ तौ तुम से नाहीं बनेगो ॥८॥

लालजी का बचन

पद

वेणी गूंथ कहा कोई जाने, मेरी सी तेरी सोंह राधे।
बिच बिच फूल सेत पित राते, कोकरि सकें हरि सोंह राधे॥
बैठे रसिक सवांरन वारन, कोमल कर कंगही सों साधे।
स्वामी श्यामा नख सिखलों बनाई, दे काजर नखहीं सों आधे॥

पद

प्यारी को सिंगार करत नंदलाला ॥टेक॥
बार बार में मोती पोये, कन विच झलके वाला॥
कलियनदार ज़री को लंहगा, ऊपर सुर्ख दुशाला॥
पुरुषोतम प्रभु रसिक शिरोमणि, छवि निरखत बृजबाला॥ १०॥

सवैया

सारी संवारी है सोन जुही अरु जूही की तापै लगाई किनारी॥
पंकज के दलको लंहगा, अंगिया गुलबांस की सोहत न्यारी॥
हार चमेली हमेल गुलाब की, मौर की वेंदी दै भाल संवारी॥
आज विचित्र संवार के देखोजू, कैसी संवारी है प्यारेने प्यारी॥

कवित्त

भृकुटी तनीको नख वेसर बनी को, लट नगन फनी को लख फूल्यौ

कंज फीको है ॥ मैनकी मनीको नयन बानकी अनीको, चोखे सैन रजनीको हौंस हुलसन हियो कोहै॥ रूप रमनी को कै रमा रमनी को, गज गता गमनी को कैधौं सिन्धु सूरजीको है॥ बैंनी बंद नीको मृदु हांस फंद नीको, मुख चंदहू ते नीको वृषभान नन्दनी को है ॥१२॥

प्रिया की छवि वर्णन

पद

वृज नव तरुणी कंदव मुकट मणि श्यामा आज बनी ॥
नख शिख लौं अंग २ माधुरी मोहे श्याम धनी ॥
यो राजत कंवरी गूंथत कच कनक कंज वदनी ॥
चिकुर चंद्र कन बीच अरध विधु मानो ग्रसत फनी ॥
शौभग रस शिर श्रवत पनारी पिया सींमंत ठनी ॥
भृकुटि काम को दंड नयन शर कज्जल रेख अनी ॥
तरल तिलक ताटंक गंड पर नासा जलज मनी ॥
दसन कुंद सरसा धर पल्लव प्रीतम मन समनी ॥
चिबुक मध्य अति चारु सहज सखि स्यामल बिन्दुकनी ॥
प्रीतम प्राण रत्न संपुट कुच कंचुकि कसव जनी ॥
भुज मृणाल बल हर तब ले युत परस सरस श्रवनी ॥
श्याम शीस तरु मनो मिउ वारी रची रुचिर रमनी ॥
नाभि गंभीर मीन मोहन मन खेलन को हृदयनी ॥
कृष कटि पृथुनी तब किंकनि भृत कदलि खंभ जंघनी ॥
पद अंबुज जावक युत भूषण प्रीतम उर अवनी ॥
नव नव भाव विलोक वाम इव बिहरत वर करनी ॥
हित हरिवंश प्रशंसत श्यामा कीरत बिषद घनी ॥
गावत श्रवणन सुनत सुखाकर विपस दुरति दमनी ॥१३

बार्तिक

या प्रकार सिंगार करि लालजी दर्पन दिखायवे लगे ॥१४॥

पद

तेरो मुख नीको है कि मेरो राधा प्यारी ॥टेक॥
दर्पन हाथ लिये नद नन्दन सांची कहो वृखभान दुलारी ॥
हम का कहें तुम्हें किन देखो मैं गोरी तुम श्याम विहारी ॥
हमरो वदन जिमि चंदाकी उजारी तुम्हरो वदन जिमि रैन अंध्यारी ॥
तिहारे शीस पर मुकट विराजे हमरे शीस तुम्हीं गिरधारी ॥
चंद्र सखी भज बाल कृष्ण छवि दोऊ ओर प्रीति बढ़ी अति भारी ॥

वार्तिक — प्रियाजी ने ललिता को बुलाय कही देखो सखी बेसर कौन की नीकी लगे है ॥

पद

बेसर कौनकी अति नीकी ॥टेक॥
न्याव पड़ो ललिता के आगे कौन ललित कौन फीकी ॥
दोई मिल झगरत ललिता सों चोप पड़ी अति जीकी ॥
दामोदर हित बिलग न मानो झुकन झुकी प्यारी जीकी ॥

ललिता बचन

वार्तिक

लालजी बुरा न मानौ, वेसर प्रिया जीकी ही नीकी लागे है, लालजी हार मान प्रिया जी से बोले ॥

पद

राधा प्यारी रूप उजारी नेक कृपा करि मोतन हेरो ॥
तन मन धन छवि ऊपर वारों नाम उचारूं तेरो ॥
हंस मुसकाय बदन तन हेरो मोहि करो चरनन को चेरो ॥
अली किशोरी एक वारहू कहु तो लाल बिहारी मेरो ॥१६

पद

तुम मुख कमल नयन अलि मेरे ॥
अति आरत अनुरागी लंपट हरबरात इत फिरत न फेरे ॥
मान करत मकरंद रूप रस भूल नहीं फिर इत उत हेरे ॥

भगवत रसिक भये मत वारे घूमत रहत छके मद तेरे ॥१७॥

वार्तिक

यह सुन प्रिया जी मुसकराय बोली ॥

पद

प्रीतम तुम मो दृगन वसत हो ॥ टेक
क्या भोरे से हो पूछत हो, कै चतुराई कर जो हँसत हो ॥
लीजे परख स्वरूप आपनो, पुतरिन में तुमहीं जु लसत हो ॥
वृन्दावन हित रूप रसिक तुम, कुंज लड़ावत हिय हुलसत हो १८

सवैया कवित्त

चैन नहीं दिन रैन परे जब ते तुम नैनन नेक निहारे ॥
काज बिसार दिये घर के वृजराज में लाज समाज बिसारे ॥
सो बिनती मनमोहन मानियो मोसों कहूं जिन हूजियो न्यारे ॥
मोह सदा चित सों अलि चाहियो नीके कै नेह निवाहियो प्यारे ॥ १६

वार्तिक

या उपरांत दुहु जन जड़ाऊ चौकी पर विराजमान भये तब सखी बोली ॥

पद

आज इन दोउन पै ना जैये ॥ टेक
रोम २ से छबि वर्षत हैं, निरखत नैन सिरैये ॥
रूप रास मृदु हांस ललित मुख, उपमा देत लजैये ॥
नारायण या गोरे स्याम को, हिये निकुंज वसैये ॥ २०

आरती रेखता

चंदन की चौकी चामीकर रत्न जड़ी चमके ।
धन नील पिया गोद प्यारी दामिनी सी दमके ॥
जमुना के तट पै वंसीवट केलि कुंज मांहीं ।
पट नील पीत पहरे बैठे देहि गले वाहीं ॥ २
सज २ सिंगार सारी सखी आरती उतारें ।

अटकी हैं आंखें अनुपम छबि पलक नाहिं मारें ॥ ३
पहिरावें फूल गजरे मन फूल २ सारी ।
बहु भांति अतर अरगजा सुगंध साज न्यारी ॥ ४
भरि भाजनों में भोजन नैवेद्य नये लावें ।
बीरा मसाले वाले निज हाथ से खिलावें ॥ ५
कर जोर करैं बिनती बहु बाजने बधाई ।
हरिदास सुजस गावें चरणों में शीस लाई ॥ ६॥ २१

इति

अथ चन्द्रावली लीला

दोहा

क्रीड़त बालक संग बृज, यशुमति को सुख दीन्ह ।
तरुण रूप गोपियन संग, क्रीड़त चित हर लीन्ह ॥ १
चन्द्रभाग इक गोप की , चंद्रावली कुमारि ।
भई किशोरी गेह में , लखी श्याम रिझवारि ॥

लालजी बचन माता प्रति

मांड

कर देहु मोर ब्याहु माता मैं बड़ो भयो ॥टेक ॥
गोप सुता चंद्रावली चंदा कैसी जोत ।
वाके सामू और सखी लागत जिमि खद्योत ॥१॥
गिरि गोवर्द्धन निकट मैंहू तो चरावत धेन ।
सखी भीर संग लाय मुहि मार गई द्रग सैन ॥२॥
चतुर चपल चन्द्रावलि तब सों द्रगन समाय ।
मन मेरो हरि लै गई नैनन नैन मिलाय ॥३॥
छिन छिन बीतत मनहुं जुग वा प्यारी बिन मोहि ।

मैया वाहि विवाह दे सत्य कहूं मैं तोहि ॥४॥
वाकी छवि छाई द्रगन चितहूं लीन्हो चोर।
बिन देखे हरिदास अब चित्त चिंता अति घोर ॥५॥२

जसोदा वचन

मांड

धरु धीर लाला लाऊं थारी लाडी लाडली ॥टेक॥
चन्द्रावली चित चोर को ढूंढन दे निज जोड़।
तुमरी जोड़ी बहुत है चंदहिं लावै होड़ ॥१॥
पांच बरस के लाला तुम बालक अबुध अजान।
अतिहुं सबल चन्द्रावली तुमहिं खिजावत आन ॥२॥
नंद बाबा तुम लागि सुत लैहैं दुलहिन जोड़।
प्रेम करौ वासों लला चन्द्रावलि को छोड़ ॥ ३ ॥
जे ब्रज जुवती मद मती डोलैं जोवन जोर।
इनको नेक न मानियो लाल निहोरा मोर ॥४॥
दे दधि तुमहिं रिझाय के खिजवें बन में जाय।
इनको ना हरिदास तुम जानहु सहज सुभाय ॥५॥४॥

पद

चन्द्रावली सों प्रीति बढ़ाई ॥टेक॥
ताके मिलवे हित हरिजू नित प्रत करत अनेक उपाई ॥
क्षण ना चैन लहैं बिन ताके ऐसी अद्भुत डोर लगाई ॥
वाही की हरिदास सबन सों श्री मुख सों नित करत बड़ाई ॥५॥

वार्तिक

चन्द्रावलीहू प्रेम के फन्द में अधीर होयवे लगी अरु ललिता से इकंत में बोली ॥६॥

छंद

ललिता सों पूंछै नीके कर किहि बिधि श्याम मिलाई।
अब न परत मोकूं कल क्षणहूं जिय में अति अकुलाई ॥७

ललिता वचन

छंद

अब तुम जाय शीस गोरस ले बेंचन के मिस आओ।
गोवर्द्धन पर गोविंद खेलत निरखि परम फल पाओ॥
करि सिंगार चली चन्द्रावलि नख शिख भूषण साजे।
ज्यों करिणी गजराज बिलोकत ढूंढ़त है अति गाजे॥
गोवर्द्धन के शिखर चारु पर सखा वृन्द संग लीन्हे।
गोपिन देख टेर हरि कीन्हों दान लेन मन कीन्हे॥

लालजी वचन

वार्तिक

अरे भईया चलो आज दधि को दान लेवें देखो कोई गो-
पी जान ना पावें ॥६॥

छंद

राखो घेरि सकल युवतिन को सखा वृन्द सों भाख्यौ।
आपु जाय पकरयो कोमल कर दधि अमृत रस चाख्यौ॥
देदेवो दधिको दान सुन्दरी गहर न लावो चित्त।
तुम्हरे काज नित्य हम ठाड़े अरपैं अपनो चित्त॥१०॥

चन्द्रावली वचन

वृन्दावन में धेनु चरावत, मांगत गोरस दान।
नाना खेल सखन संग खेलत, सुभ पायो नृप यान॥११॥

लालजी वचन

अरी ग्वालि मदमत्त वचन की, बोल न वचन बिचार।
अचल राज गोवर्द्धन मेरो, वृन्दा बिपन मंझार॥१२॥

चन्द्रावली वचन

जो तुम राजा आप कहावत वृन्दावन की ठौर।
लूट लूट दधि खात सबन को चोरन के सिर मौर॥१३॥

लालजी बचन

चोरी करत भक्त के चित की दूध दही नव नीत।
सखा वृन्द सब मीत हमारे बड़ी राज रजनीति ॥१४

चन्द्रावली बचन

जो तुम राज नीति सब जानत बहुत बनावत बात।
जब तुम जन्म लियो मथुरा में आये आधी रात ॥ १५

लालजी बचन

सुनरी ग्वारि गंवारि बात की बोलत बिना बिचार।
कमल कोश में बसत मधुप ज्यौं त्यौं भुवि रहे मुरार ॥१६

चन्द्रावली बचन

दूध दही के नाते बनावत बातें बहुत गुपाल।
गढ़ि गढ़ि बोलत कहा सांवरे लूटत हो बृजवाल ॥१७

लालजी बचन

जो प्रभु देह धरे ना भुवि पर दीन अधम को तारे।
बढ़े असुर पुहुमी पर खल अति तिन्हीं तुरत को मारै॥
योग युक्त कर ध्यान लगावत योग सिद्ध कर ज्ञान।
नेति नेति कर निगम बतावत ताहि होत निरमान॥
योग सांख्य अरु ज्ञान भामिनी माया हृदय बिनास।
प्रेम भक्त मेरो यश गावे तेहि घट मेरो वास ॥१८॥

चन्द्रावली बचन

मुख ऊपर कहा कहो लायकै आन उतर को खोर।
जब यशुमत ने ऊखल बांधे हमहीं दीन्हे छोर ॥१९॥

लालजी बचन

बालक निपट अजान ग्वालिनी कछु सुधि जानि न जाय।
लेकर चीर कदम पर बैठ्यो सबहिन हा हा खाय ॥२०॥

चन्द्रावली बचन

बहुत भये हो ढीठ सांवरे मुख पर गारी देत।

तुम्हरे डर हम डरपत नाहिन कहा कपावत बेत ॥२१॥

लालजी वचन

रेख़्ता

दौरो दौरो मैया घेर लेव ग्वालिनी।
कोऊ न जान पावें हैं बड़ि गंवारिनी॥
भई ठीठ सबै भारी मटुकी को छीन लीजो।
दधि दूध लूट सांकरीसी खोर मांहि खीजो॥
आई हैं इंदा वृन्दा राधा चन्द्रावलि खोटी।
मनुहार करो सबकी अब ढूंढ़ ढूंढ़ जोटी॥
नहिं नेक ना डरैयो सुन सुन के इनकी बातें।
या ठौर पै दिखाहौं इनकी मैं सभी घातें॥
बन आई बड़े घर की सिगरी कुबोल बोलैं।
हरिदास इनकी आज सबै पिछली बातें खोलैं॥२२॥

छंद

बिमल बिमल दधि खात सबन को करत बहुत मनुहार।
गहि बहियां ले चले श्याम घन सघन कुंज के पार॥
पहिले सखी सबै रचि राखी कुसुमन सेज सँवार।
नाना केलि सखन संग विहरत नागर नंद कुमार॥
आलिंगन चुंबन परिरंभण भेंटन भरि अंकवार।
श्रम जल बिन्दु इन्दु आनन पर राजत अति सुकुमार॥
मानो विविध भाव मिल बिलसत मगन सिंधु रस सार।
कुंज रंध्र अवलोकि सहचरी अपनो तन मन वार॥
निरख निरख दंपति नूतन सुख तोर तोर तृण डारैं।
यह अविलोकि देखि गंध्रव मुनि वर्षत सुमन अपारैं॥
गोवर्द्धन की सघन कन्दरा कीन्हौं रैन निवास।
भोर भये निज धाम चले दोउ अति आनंद बिलास॥२३॥

इति

॥ ऋतु बसंत लीला ॥

पद

आयो जान्यों हरि ऋतु बसंत , ललना सुख दीन्हो तुरंत॥
फूले बरन कुसुम पलास , रति नायक सुख को विलास ॥
संग नारि चहुं आस पास, मुरली अमृत करत भास ॥
श्यामा श्याम बिलास एक, सुखदायक गोपी अनेक ॥
तजत नहीं काहु छिन एक , अलख निरंजन विविध भेक ॥
फागु रंग रस करत श्याम , युवती पूरन करत काम ॥
वासर है सुख देत जाम , सूर श्याम वहु कंत वाम ॥१॥

पद

डफ बाजन लागे हेली ॥ टेक
चलहु चलहु जैये तहँरी जहां खेलत श्याम सहेली ॥
जहँ घन सुंदर श्यामरो, नाहिं मिस देखन दाव ॥
ये गुरुजन बैरी भये अब कीजे कौन उपाव ॥
आवहु बछरा मेलिये बन को देहि विडार ॥
वे देहैं हमही पठै हम देखैं रूप अपार ॥
आंजत गागर ढारिये जमुना जल के काज ॥
इहि मिस बाहर निकसि के जाय मिलें बृजराज ॥
राग रंग रग मग रहो नंदराय दरबार ॥
गावत सकल गुवालिनी नाचत सकल गुवार ॥
घरी घरी आनंद करि जीवन जान असार ॥
खाय खेलि हंस लीजिये फागु बजै त्यौहार ॥
मुरली मुकुट विराजही कटि पट राजत पीत ॥
सूरज प्रभु आनँद भरे गावत होरी गीत ॥ २

वार्तिक

ऐसो विचार करि सब सखीं प्रीतम के निकट नंद घर जाय पहुंचीं अरु छबि देख अत्यंत प्रसन्न भई ॥ ३

छन्द

प्रथम वसंत पंचमी शुभ दिन मंगलचार बनायो ।
पंचानन जारयो मन्मथसो प्रगट भयो फिरि आयो ॥
जसुमति मात वधाई बांटत फूली अँग न समाई ।
उबटि अन्हाय श्यामसुंदर को आभूषण पहिराई ॥
घर घर तें आई बृज सुंदरि मंगल साज संवारे ।
हेम कलश सिर पर धरि पूरन काम मंत्र उपचारे ॥
अबीर गुलाल अरगजा सोंधी लीन्हो साज बनाय ।
मन में किये मनोरथ बहु विधि मिलत सबै मन भाय ॥
भीर जान सिंह पौर त्रियन की यशुमति भवन बुलाई ।
ढूंढ़ि सकल त्रिय दौर मात को पकरि बांह लै आई ॥
केसर चंदन और अरगजा सखि महरि के नाये ।
जो जो विधि उपजी जाके जिय सोइ सोइ भांति कराये ॥
फगुवा दियो महरि मन भायो यशुमति परम उदार ।
पकर लिये घनश्याम मनोहर भेंट भरि अंकवार ॥
पहली जान वसंत पंचमी यशुमति बहुत खिलाये ।
केशर चंदन और अरगजा श्याम अंग लपटाये ॥
ता पीछे गोपिन ने छिरके कनक कलश भरि ढारे ।
मानो सीस तमाल अमृत घन सरस सुधा निधि रारे ॥
चंदन चोवा मथत हात करि नील जलद तन अरप्यौ ।
मानो प्रगट करे अपनो चित पिय को प्रान समरप्यौ ॥
कियो मनोरथ नाना विधि के मेवा बहु विधि लाई ।
सो हरि ने स्वीकार कियो सब निरखि परम सुख पाई ॥
सुबल सुबाहु तोक श्रीदामा सकल सखा जुरि आये ।

रतन चौक में खेल मचायो सरस वसंत वधाये ॥
करत परस्पर गोप ग्वाल मिलि क्रीड़ा अति मन भाई ।
सुरंग अबीर गुलाल उड़ावत रहेउ गँगन छबिछाई ॥
फगुवा देत कहेउ मन भायो सबै गोपिका फूली ।
कंठ लगाय चली प्रीतम कों अपने गृह अनुकूली ॥
करत आरती विविध भांति सों यशुमति परम सुहाई ।
सखा वृंद सब चले जमुन तट खेलत कुंवर कन्हाई ॥
बैठे जाय सघन कुंजन में जमुना तीर गोपाल ।
सखी एक तहँ आय निकटहीं बोली वचन रसाल ॥ ४

सखी वचन

दोहा

वृन्दावन फूलो लला, सघन कुंज बहु भांति ।
प्रफुलित द्रुम पल्लव सकल, गुंजरित मधु कर पांति ॥ ५
गोवर्धन के शिखर पर, फूले कुसुम पलास ।
संयोगिन सुख सुरत दै, बिरहिन करत उदास ॥ ६
उठि चलो नागर निपुण, मग जोवत प्रिया बाल ।
क्यों वसंत दिन खोव इत, मनमथ करत बिहाल ॥ ७

लालजी वचन

वार्तिक

अरी सखी मेरो चित्तहू प्रिया जू के संग फाग खेलवे को चाहै है तू जाय के उनको लिवाय लावै । सखी जाय प्रियाजू सों बोली ॥ ८

दोहा

निरतत युवतिन संग सखी, हरि वंसन के मांह ।
विहरत वृंदा विपिन मिलि, जहँ बिरही गत नांह ॥ ९

मूल

ललित लवंग लता परि शीलन कोमल मलय समीरे ॥

मधुकर निकर करंबित कोकिल कूजत कुंज कुटीरे ॥ १ ॥

अर्थ

ललित लवंग लता कौं परसत, कोमल मलय वायु सुख वरषत।
कोकिल मधुकर निकर सिहांही, गुंजत मंजुल कुंजन मांही ॥१

मूल

उन्मद मदन मनोरथ पथिक, वधूजन जनित विलापे।
अलि कुल संकुल कुसम समूह, निरा कुल वकुल कलापे ॥२॥

अर्थ

मदन पीर मन करत मलीना, पथिक वधू बिलपत अति दीना।
भ्रमर समूह कुसुम वन मांहीं, तिनके भार बिटप अकुलांहीं ॥२

मूल

मृग मद सौरभ रभस वश वद नव दल माल तमाले।
युवजन हृदय बिदारन मनसिज नख रुचि किंशुक जाले ॥३॥

अर्थ

तरल तमालिन नव दल माला, विकिरत मृग मद गंध रसाला।
किंशुक कुसुम मदन नख होई, युवजिन हृदय बिदारत सोई ॥३

मूल

मदन महीपति कनक दंड रुचि केसर कुसुम विकासे।
मिलित शिली मुख पाटलि पटल कृत स्मर तूण बिलासे ॥४

अर्थ

मदन भूप कर कनक छड़ी से, बिकसे केसर कुसुम कली से।
पाटल फूल भ्रमर बहु छाये, मनहु मदन तूणीर सुहाये ॥४॥

मूल

बिगलित लज्जित जग दव लोकन तरुण करुण कृत हासे।
विरहिनि कृन्तन कृत मुखा कृति केतकि दन्तुरि तासे ॥५॥

अर्थ

करुण विटप नव कुसुमनि भारी, हंसत मनहुं जग निलज विचारी ॥

कुन्त सुखा कान्ति केतकि फूला, देखत लगत बिरही उर शूला॥५॥

मूल

माधविका परि मल ललिते नव मालति जात सुगंधौ।
मुनि मनसा मपि मोहन कारिनि तरुणा कारण बंधौ॥६

अर्थ

माधविका नव मालति जाती, देत सुगंध मनहीं हरषाती।
मुनि जन मानस हू हरि लैहों, युवतिन सहजही वश करदेहों॥६

मूल

स्फुरदति मुक्त लता परि रम्भण, मुकलित पुलकिन चूते॥
वृन्दावन बिपीने परिसर परिगत यमुना जल पूते॥७॥

अर्थ

संग मिलि युक्त लतन के जाला, मुकलित पुलकित श्याम तमाला
शीतल जमुना जल लहराई, पावन वृन्दावन छवि छाई॥७

मूल

श्री जयदेव भणित मिद मुदयतु हरि चरण स्मृति सारम्।
सरस वसंत समय बन वर्णन मनु गत बदन बिकारम्॥८॥

अर्थ

ऋतु वसंत वरणन सरिस पूरित मदन विलास।
पंडित श्री जय देव कृत हरि पद देत हुलास॥८

छंद

नव मालती डार डुलावत हीं बहु पुष्प पराग प्रसार करे।
प्रगटे पट बास बिलास वहे सब कानन माहि सुवास भरे॥
पुनि केतकी गंध उड़ाय चले मनु मार शरासन हांथ धरे।
इहि भांति वंसत बयार वहे दुखिया बिरही जन प्राण हरे॥६

वार्तिक

यह सुन राधिका ईर्षा बस होय मान कर बैठी, अरु अपर सखी आय प्रिया जी से बोली॥१०॥

दोहा

जग सुख कारन दुख हरन, मोहन रूप बिशाल ।
तासों मान न ठानियो, री अभिमानी बाल ॥ ११

मूल

हरि रयि सरति वहति मृदु पवने ।
किम पर मधिक सुखं सखि भवने ॥
माधवे मा कुरु मानिनी मान मये ॥१॥

अर्थ

बहत बसंत पवन हरि आये, तुम घर रह सखि का सुख पाये ॥१॥

मूल

ताल फलादपि गुरु मति सरसं, किं विफली कुरषे कुच कलसं ।

अर्थ

ताल फलन सम गुरु अति सरसा , करत विफल क्यों जुग कु-
च कलशा ॥२॥

मूल

कति न कथित मिद मनु पद मचिरं , मा परि हर हरि मति शय रुचिरं ॥३॥

अर्थ

वार वार समझावहुं प्यारी, तजहु न अतिशय रुचिर ललारी ॥३॥

मूल

किमिति विषी दसि रोदिषि विकला, विहंसति युवति सभा तव सकला ॥४॥

अर्थ

किमिति विषादिसी रोवति विकला, लखि तुम हंसत युवतिजन सकला ॥४॥

मूल

मृदु नलिनी दल शीतल शयने , हरि मवलोकय सफलय न-

यने ॥५॥

अर्थ

बैठे मृदु नलनी दल से जन, हरि हिं विलोकु सफल करु नैनन ॥५

मूल

जनयसि मनसि किमिति गुरु खेदं, शृणु मम वचन मनी हित भेदम् ॥६॥

अर्थ

किमि मन खेद करत हठ धारी, मानि बचन मम मिलहु मुरारी॥६

मूल

हरि रुपयातु बदतु बहु मधुरं, किमिति करोषि हृदय मति विधुरं ॥७॥

अर्थ

आवत हरि बोलत मृदु बैना, करत कठोर हृदय किमि नैना॥७

मूल

श्रीजयदेव भनित मति ललितं, सुख यतु रसिक जनं हरि चरितं॥

दोहा

गीत ललित जयदेव कृत, रशिक जनन सुख खान।
सुनत पठत कलि मल दहन, हरीदास के प्राण॥ ८ ॥१४॥

छन्द

पिय माधुरे बोलन बोलत हैं, तुव निष्ठुर बानी कहां लों सहैं।
वह बारहीं बार करें बिन्ती, तुम होय कठोर नहीं सुनती॥
उनके अनुराग भरो मन में, पर द्वेश छयो तुम्हरे मन में।
तुम को चितवें हरि प्रेम सने, उन पै तुम हेरत नाहिं बने॥
लगै चंदन की चर्चा बिषसी, शशि शीतल सूरज की तपसी।
अगनी समहू हिम लागत है, रति केलि महा दुख दायक है॥
सब रीति में तू बिपरीत करे, पिय को नहिं नेकहु ध्यान धरे।
नहिं भाग मनावत री सजनी, वर तोहि मिलो त्रैलोक्य धनी॥१५

वार्तिक

अरी प्यारी या समय पै मान करिवो वृथा है ॥१६॥
प्रिया जी– अरी सखी मैं तो बिना लालजी के आये नहीं जाऊं; वे अपनो कपट नहीं छांडें हैं ॥१७॥

सखी वचन लालजी प्रति

दोहा

अतिहु रिसानी राधिका, हम बहु किये उपाय ।
अब तुम आपुहिं जाय के, लावहु ताहि मनाय ॥ १८

वार्तिक

यह सुन लालजी के मन खेद भयो वे बोले अरी सखी प्रिया जी बिना कैसे वसंत होयगो, चलो वाहि लुवाय लावैं. १९

लालजी वचन प्रियाजी प्रति

दोहा

अरी सुशीले राधिके, तजहु अकारन मान ।
मदन दहत मम सकल तन, देहु कमल मुख पान ॥ २०
आज वसंत मनायवे, जुरीं सकल वृज बाल ।
तो बिन मोहि न सुहात कछु, क्षण क्षण होत बिहाल ॥२१

वार्तिक

यह सुन प्रियाजी प्रसन्न होय उठि बैठीं, अरु दुहूं जन गलबहियां देइ फाग खेलवे चले ॥२२

छंद

दोई जन मन मगन होय के तुरत चले उठि धाय ।
कियो वसंत खेल वृन्दावन अद्भुत फाग मचाय ॥
लता लता बन बन कुंजन में खेलत फिरत वसंत ।
मनहु कमल मंडल में मधुकर बिहरत है रसमंत ॥
उत श्यामा इत सखा मंडली उत हरि इत वृजनार ।
मनौ ताम रस पारस खेलत मिल मधुकर गुंजार ॥

खेल वसंत बहुत सुख मान्यो हरषे गोपी ग्वाल ।
विहँस गये वृजराज भवन सब चंचल नैन विशाल ॥
होरी डांडो दिवस जानके अति फूले वृजराज ।
बैठे सिंधु द्वार पै आपुन जुरि के गोप समाज ॥
विप्र बुलाय वेद विधि करके होरी डांडो रोप ।
आनंदे सब गोप मंडली मन्मथ कियो प्रकोप ॥
परिवा प्रथम दिवस होरी को नंदराय गृह आई ।
सकल सौंज गोपी कर लेके खेलन को मन भाई ॥
दुइज दुहु दिशि ते होरी मची सुरंग गुलाल उड़ायो ।
मनो अनुराग दुहुन के अंतर सबहिन प्रगट करायो ॥
तीज तरुनि मिलि पकरे मोहन गहि कर अंजन दीन्हो ।
मत्त मधुप बैठ्यो अंबुज पर सुखरत है सुर झीन्हो ॥
चंपक लता चौथ दिन जान्यो मृग मद सोर लगायो ।
मनहुं नील जलधर के ऊपर कृष्णागर लपटायो ॥
पांचै प्रमुदा परम प्रीत सों केशर छिड़की घोर ।
मनहुं सुधा निधि बरषत घन पर अमृत धार चहुंओर ॥
छठ छःरागनी गाय रिझावत अति नागर बलवीर ।
खेलत फागु संग गोपिन के गोप वृंद की भीर ॥
सातें रिजि सुगंध सब सुंदरि लै आई उपहार ।
बलि मोहन को हंसत खेलावत रीझ भरत अंकवार ॥
आठें अति आतुर अबला प्रिय चुंवन दीनो गाल ।
नाना विध शृंगार बनाये बेंदा दीन्हों भाल ॥
नौमी नौसत साज राधिका चन्द्रावलि वृजनार ।
हो हो करत पलास कुसुम रंग बरषत है जो अपार ॥
दशमी दसैं दिशा भई पूरित सुरंग अबीर गुलाल ।
मनु प्रीतम मिलवे के कारण फूले नयन विशाल ॥
येकादशी येक सखी आई डारो सुभग अबीर ।

येक हाथ पीताम्बर पकरयो छिरकत कुम कुम नीर ॥
द्वादशि मची दुहू दिसि होरी इत गोपी उत ग्वाल ।
इत नायक बल मोहन दोऊ उत राधा नव लाल ॥
तेरस तरुनी सब मिलके यह कीन्हो कछुक उपाय ।
ताके सुबल मधु मंगल बोल्यो सबहिन मतो सुनाय ॥
चौदस चहुं दिशा सों मिलके गह जोरो गहि श्रोर ।
मन मोहन पिय दूलह राजत दुलहिन राधा गोर ॥
देख कहूं कुसुमा कर फूल्यो मधुप करत गुंजार ।
चंद्रावलि केशर ले आई छिरके नन्द कुमार ॥

पद

वल्लभ राज कुमार छबीले हो ललना ॥ टेक
धनि धनि नंद यशोमति धनि धनि गोकुल गाऊं ॥
धन्य कुँवर दोउ लाड़िले मोहन जाको नाऊं ॥
सखा नाम ले बोलहीं सुबल तोप श्रीदाम ॥
जहँ तहँ ते उठि चले बन बोलत सुंदर श्याम ॥
गिरवर धारी रस भरे मुरली मधुर बजाय ॥
स्रवन सुनत गोपी सबै घर घर ते चलीं धाय ॥
भेष विचित्र बनाय के भूषण सबनि शृंगार ॥
मंदिर ते सजि सब चलीं बालक बन बन वार ॥
येक ओर युवतीं जुरीं एक ओर बलबीर ॥
वासन मार मची भली मनो रुपे सुभट रन धीर ॥
सकल बधू आईं सबै हो अपने २ टोल ॥
झुम सेती भावहीं नक, बिच बिच मीठे बोल ॥
एक सखी तब सैन देहो लीन्हे सुबल भुलाय ॥
हा हा क्योंहू भांति कै नक मोहन पहिराय ॥
बहुरि उबटि बृज सुंदरि मन मोहन लीन्हे घेरि ॥
नैनन काजर दे चलीं हँसत बदन तन हेरि ॥

रुज मुरज डफ दुन्दुभी बाजै बहु विधि साज ॥
बिच बिच भेरी झिम झिमी घोष शब्द गाज ॥
यहि विधि होरी खेलहिं हो सकल घोष सुखदाय ॥
गिरिवर धारी रूप पर सूरत जनि बलि जाय ॥ २४

वार्तिक

वाहि दिन होरी खेलके लौट अपने अपने गृह आये फिर दूसरे दिन राधिका होरी खेलवे चली ॥ २५

पद

ऊंचो गोकुल नगर जहां हरि खेलत होरी ॥टेक॥
चलि सखि देखन जाहि पिया अपने की जोरी ॥
बाजत ताल मृदंग और किन्नर की जोरी ।
गावत दै दै गारी परस्पर भामिनी भोरी ॥
बुका सुरंग अबीर उड़ावत भरि २ झोरी ।
इत गोपिन के झुंड उतहिं हरि हलधर जोरी ॥
नवल छबीले लाल तनी चोली की तोरी ।
राधा चली रिसाय ढीठ सों खेले कोरी ॥
खेलत में कैसो मान सुनो वृषभान किशोरी ।
सूर सखी उर लाय हंसत भज जीह झकझोरी ॥२६

रेखता

आई बहार होरी डफ बाजे खोरी खोरी ॥
नंदलाल ग्वाल लेके बैठे हैं जुरके पौरी ॥ १
मग रोक रोक ठाड़े लेके गुलाल झोरी ॥
पिचकारी हाथ हाथों रंग की भरी कमोरी ॥ २
इतसों प्रिया पधारी संग सहेलीं न थोरी ॥
बड़ी भोर शोर भयो नंद पौर खेलें होरी ॥ ३
दुहुं ओर रंग वरषा बादल गुलाल छाये ॥
वृजबासी गोपी ग्वाल सब देखवे को धाये ॥ ४

नंदरानी दौरी आई प्रिया की समाज चीन्हों ॥
हरिदास देकें फगुवा सब को विदाई कीन्हों ॥ ५ ॥२७

होरी

पिया प्यारी दोउ खेलत होरी ॥ टेक
नंद नंदन बृजराज सांवरो, श्री वृषभानु किशोरी ॥
परमानंद प्रेम रस भीने, अबीर लिये भर झोरी ॥
करत मन में चित चोरी ॥
भुज भर अंक सकुच तज गुरुजन, विचरत हैं मिल जोरी ॥
छूटि अलंका उरझि कुंडल सों, बेसर पीत कस्योरी ॥
चलो सुरझावो गोरी ॥
कर कंकण केशर पिचकारी, केसर भर ले दौरी ॥
छिरकत फिरत हुलस लिये हर्षत, निरखत हँस मुख मोरी ॥
चलो क्यों होइयो बौरी ॥
धनि गोकुल धनि धनि श्री वृन्दावन, जहं यह फाग रच्योरी ॥
श्री रस रंग रीझ रहे बृज पर, वारों वैकुंठ करोरी ॥
भूकि काशी जहं थोरी ॥

राग सारंग

रसिया को नारि बनावोरी ॥
कटि लहंगा गल मांहि कंचुकी, चूंदरी शीश उढ़ावोरी ॥
गाल गुलाल द्रगन में अंजन, वेंदी भाल लगावोरी ॥
नारायण तारी वजाय के, यशुमति निकट नचावोरी ॥ २८

होरी

या बृज में कैसी होरी मचाई ॥ टेक
इतते आई कुवंरि राधिका, उत ते कुंवर कन्हाई ॥
खेलत फाग परस्पर हिल मिल, या छवि वरणि न जाई ॥
घर घर बजत बधाई ॥
बाजत ताल मृदंग झांझ डफ, मंजीरा सहनाई ॥

उड़त गुलाल लाल भये बादर, केसर कीच मचाई ॥
मनो मघवा झर लाई ॥
राधे सैन दई सखियन को, झुंड झुंड मिल धाई ॥
पकरोरी पकरो श्याम सुंदर को, यह अब जाने न पाई ॥
करो अपने मन आई ॥
छीन लियो मुख मुरली पीताम्बर, शिर पर चूनरी उढ़ाई ॥
बेंदी भाल नयन में काजर, नक बेसर पहिराई ॥
मनो नई नारि बनाई ॥
सिसकत हो मुख मोर २ के, कहां गई चतुराई ॥
कहां गये तेरे पिता नंदजी, कहां यशोमति माई ॥
तुम्हें अब लेत छुड़ाई ॥
धनि गोकुल धनि धनि श्री वृंदावन, धनि यमुना ठकुराई ॥
राधा कृष्ण युगल जोरी पर, नंददास बलि जाई ॥
प्रीति उर रही न समाई ॥ ३०

होरी

श्याम मोसे खेलो न होरी, पालागों कर जोरी ॥
गैया चरावन मैं निकसीहूं, सास ननंद की चोरी ॥
सगरी चुनरिया न रंग भिंजोवो, इतनी सुनो बात मोरी ॥
छीन झपट मोरे हाथ से गागर, जोर से बैयां मरोरी ॥
दिल धड़कत मोरी सांस चढ़त है, देह कंपत गोरी गोरी ॥
अबीर गुलाल लिपट गयो मुख से, सारी रंग में बोरी ॥
सास हजारन गारी दैहै, बालम जीता न छोरी ॥
फाग खेलके तैंने मोहन, क्या कीनी गति मोरी ॥
सूरदास आनंद भयो उर, लाज रही कछु थोरी ॥ ३१

होरी राग भूपाली

डगर मोरी छांड़ो श्याम, बिंध जावोगे नैन में ॥
भूल जाओगे सब चतुराई, लाला मारूंगी सैनन में ॥

जो तेरे मन में होरी खेलन की, तो खेलत कुंजन में ॥
चोवा चंदन और अरगजा, छिरकूंगी फागुन में ॥
चंद्र सखी भज बालकृष्ण छबि, लागी है तन मन में ॥ ३२

होरी

छैल रंग डार गयो मोरी चीर ॥ टेक
भीग गयो अति अतलस गोटा, हरत कंचुकी चीर ॥
चालत कुंकुम नाक कुचन पर, ऐसो निपट बेपीर ॥
ललित किशोरी कर बरजोरी, मुख सों मलत अबीर ॥ ३३

होरी

रंगन भींग गई हो मोहन, सारी सुरख नई ॥
सजत ननदी पहिरत निकसी, अबही मोल लई ॥
देत अनोखी गारी भावे, या मति किन्हु दई ॥
दया सखी या गोकुल बस के, ऐसी कबू न भई ॥ ३४

होरी

थारे कहूंगी कपोलन लाल, जी म्हारी अंगिया न छुओ ॥ टेक
यह अंगिया नहीं धनुष जनक को, छूअत टूटो तत्काल ॥
नहिं अंगिया गोतम की नारी, छुअत उठी नंदलाल ॥
कहा विलोकत भृकुटि कुटिल कर, नहीं यह पूतना खाल ॥
यह अंगिया काली मत समझो, जो नाथ्यो पाताल ॥
गिरिवर उठाय भयो गिरिधारी, नहीं जान्यो बृजबाल ॥
जाओजी खावो सुदामा के तंदुल, गोवन के रखवाल ॥
इतनी सुन मुसक्याय सांवरो, लीन्हों अबीर गुलाल ॥
सूरश्याम प्रभु निरख छिरक अंग, सखियन कीन्हो निहाल ३५

वार्तिक

प्रियाजी को ऐसो प्रेम देख सब गोप ग्वाल अरु सखी प्रिया पीतम के संग कुंजो में होरी खेलिवे गये ॥ ३६

पद

कामिनी कंत वसंत लुभाने ॥ टेक
उवटन मंजन करि सखियों ने, दीन्ह बनाय बसंती बाने ॥
अँग अँग विविध प्रकार आभूषण, पहिरे नूतन पट कुसुमाने ॥
नवल लाल नवलासी श्यामा, नवल गुलाल अबीर रंगाने ॥
नवल निकुंज नवल द्रुम पल्लव, गुंजत भ्रमर मनहु बौराने ॥
दोई द्रग यह शोभा के प्यासे, किमि हरिदास मनाये माने ॥३७

होरी

श्री श्यामा श्याम बिहारी, बड़े दोइ होरि के खिलारी ॥टेक
मन माने कुंजों में डोलें, तनकी सुधि न सम्हारी ॥
संग सखा सब ग्वाल लाल के, संग लली वृजनारी ॥
लिये कर में पिचकारी ॥ १
बाजत बीन मृदंग झांझ डफ, सुर सहनाई न्यारी ॥
दुहुं दिशि राग बसंत अलापत, गावें दे कर तारी ॥
छके मोहन छबि प्यारी ॥ २
राधा रंग डारत मोहन पै, लाल भिंजावत प्यारी ॥
सब सखियन मिल रंग परस्पर, मारत भर पिचकारी ॥
लखत हरिदास सुखारी ॥ ३८

होरी

युगल किशोर किशोरी, दुहूं मिलि खेलत होरी ॥ टेक
निज निज यूथ लिये संग डोलें, वृन्दावन की खोरी ॥
अबीर गुलाल भरे झोली में, संग में रंग कमोरी ॥
धरि धरि गाल गुलाल लगावत, रहत प्रिया मुख मोरी ॥
भींज रहे इनके वर बागे, उन सारी रंग बोरी ॥
खेलत इमि हरिदास दुहूं जुर, अतिही अनूपम जोरी ॥ ३९

फाग होरी

जहां बादल लाल गुलाल, तहां कुंजों में होरी होरही ॥ टेक

जुर आईं सखी सब राधिका, मनमोहन के संग ग्वाल ॥ तहां०
लये हाथन में पिचकारियां, झोरिन में भरें गुलाल ॥ तहां०
रंग डारें श्री राधा पै मोहना, मोहना पै राधा बाल ॥ तहां०
सुख मीड़त दोउ गुलाल सों,छबि पर हरिदास निहाल ॥ तहां० ४०

फाग

जहां बांके बिहारी बिराजें, तहां सखि है ना हमें डर काहू को ॥टेक
राजें जू तहीं श्री राधिका, बनी जोरी मनोहर रूप ॥ तहां सखि
जे दोऊ वासी कुंजन के, बृजवासिन के सिरदार ॥ तहां सखि है
पागे दोउ रंग गुलाल में, डोलें मतवारे समान ॥ तहां सखी
या छबि पर हरिदास हूं, अपनो तन मन धन वार॥ तहां सखी॥४१

रसिया

श्री श्यामा श्याम खेलैं होरी ॥ टेक
कर कंचन पिचकारी सोहे, अबीर गुलाल भरे झोरी ॥ १
ग्वाल सखा संग में नंदलाला, सखियन संग राधा गोरी ॥
अरस परस हरिदास लुभाने, अनुपम लाल लली जोरी ४२

होरी

कुंजों में धूम मची भारी ॥ टेक
इत नंदलाल सखा संग लीन्हें, उते बृजबाल लली प्यारी ॥
अरस परस होरी दोई खेलें, भर मारत रंग पिचकारी ॥
चित हरिदास दरस को ललचै, युगल चरन की बलिहारी ॥ ४३

होरी

देखो नंदलाल बृषभान किशोरी, होरी खेलन को आये ॥टेक
झुंडन बृजबाला कुंजन में, ग्वालों की भीर नहीं थोरी ॥होरी०
प्रीतम नारि बनाई प्रिया ने, पहिराई सारी कर भोरी ॥ होरी ०
कटि लहंगा उर कसी कंचुकी, द्रग काजर माथे रोरी ॥होरी०
बेंदी भाल पगन में नूपुर, नाच नचावे बृज खोरी ॥ होरी ०
बाजत डफ अरु झांझ सहनाई, गावत ऊंचे सुर होरी ॥होरी०

या सुख को हरिदास पियासो, देखन चहत जुगल ओरी॥होरी०४४

होरी

वृन्दावन कुंजन में जाय बसों अब, मोरे मन ऐसी आवे ॥
मन निरखहुं नित्य बिहार की लीला, लोटत ब्रजरज में जु रहों अब ॥ मोरे मन ॥ प्रिय प्रीतम की रस की बातें, सुनत सदा चित लाय रहों अब ॥ मोरे मन ॥ व्यञ्जन बिबिधि प्रकार बनाऊं, निज कर दोउ जिमायो करों अब ॥ मोरे मन ॥ सकल मसाले दे बर बीरी, दोउन को चबवाय करों अब॥ मोरे मन ॥ पहिराऊं जो बसंती बाने, भूषण अंग सजाव करों अब ॥ मोरे मन ॥ अतर सुगंध अरगजा लेपन, निज कर सों जु लगायो करों अब ॥ मोरे मन ॥ नित होरी हरिदास खिलाऊं, रंग गुलाल उड़ाऊं करों अब ॥ मोरे मन ॥ ४५ ॥

होरी

दुलहा श्री राधा प्यारी बनी, दुलही नंदलाल ॥ टेक ॥
लकुट मुकट मुरली पीताम्बर, छीन पिन्हाई सारी ॥
बेंदी भाल श्रवन में बिछिया, करि अंखियां कजरारी ॥
फिरत नचावत बृज खोरिन में, लाज लजावत भारी ॥
मल मल गाल गुलाल लगावें, अंखियन में पिचकारी ॥
छबि निरखत हरिदास मगन है, चरण कमल बलिहारी॥४६

गजल उराहनौ

नंदरानी लो बृज आपनो, कहां लों सहैं अनरीत हम ।
बसि हैं कहूं अब अंत जा, कहँ लों सहैं अनरीत हम ॥१
जायो जो पूत सपूत तुम, सिखलाये जग भर के करम ।
रहिबे को अब यहां ना धरम, कहांलों सहैं अनरीत हम ॥२
होवे होरी फलजाय की कहुं, एक दिन कहुं पांच दिन ।
तुव लाल खेलत तीसौं दिन, कहां लों० ॥३॥
जग में बसंत बहार हो, रंग छींटे सब कारें ।

यह ढावे रंग कमोरियां , कवलों० ॥४॥
काफी है दो एक मुट्ठियां, सिरपै अबीर गुलाल की।
वह डारे भर भर भोरियां, कहां लों ॥५॥
ग्वालों की टोलियां बनाय के, बृज वालों की मग रोकिदे।
मुह पै गुलाल मले हमें, कहां लों० ॥६॥
गलबांह दे नाचन लगे मुख चूमि के धरे चोलियां।
मुख पान खावे खवाय के, कहां लों० ॥७॥
हरिदास हैं तो अहीरनी पर आवरू अपनी रखें।
लो राम राम जसोदा जी, कवलों० ॥८॥४७॥

गजल

इतने उरहने देने पै नित धूम लागे बंसल की।
जसुधा जरा निज लाल को, तुम रोकिहो कि न रोकि हो॥
ले ले अबीर गुलाल को , मल दे हमारे गालों पै।
मारे करोरों कुम कुमा, तुम रोकि हो कि न रोकि हो ॥१॥
जरतारी चूनरि फारि के, चोली पै होली खेले सदा।
लहंगा पै घात लगावे है, तुम० ॥२॥
झक झोरे बहियां मरोर के, झटका दे मोतिन माल को।
कर पकरै कुंडल कानों के, तुम० ॥३॥
भर भर के रंग पिचकारियां, तक तक के मारे नैनो में।
सिर पैर सों सर बोरे रंग, तुम ० ॥४॥
संग लेइके सब ग्वालों को, नित रोके जमुना बाट के।
गगरी गिराय के ढाय दे, तुम ० ॥५॥
इतनी जो भारी अचगरी, करत्यो न तुम्हरी सलाह बिन।
हरिदास अंत बसेंगीं हम, तुम० ॥६॥४८॥

पद

जसुधा किन रोकत आपनो लाल, छेड़त हम को डगर में ॥
संग लैके सखा नित डोले , धीर पकरै सभी बृजबाल ॥

सब कोई भिजावै रंग में, आंखो में मारे गुलाल ॥
काहूकी जू छतियां पकरैं, मीड़े पुनि काहू के गाल ॥
अब हरिदास कहां भग जैये, सहिये कहांलौ कुचाल ॥४६॥

वार्तिक

जसोदाने सब को समझाय फगुवा दे बिदा कीन्हो ॥

श्री

चौथा भाग

अथ जोगन लीला

दोहा

एक समय नँद नंद जू, जोगन भेष बनाय
छलन चले श्री लाड़ली, मन में अति हरषाय । १ ।

पद

जब जोग जुगत जस गाई, बरसाने जोगन आई ॥टेक॥
जटा जूट सिर नीको सोहे, लांबी लट लटकाई ।
भाल तिलक कानों में कुंडल, शृंगी नाद बजाई ॥
पट कोपीन गले बिच सेली, तन में भसम रमाई ।
हाथ सुमरनी बगल बागाम्बर, टेरत अलख जगाई ॥
जब पहुंची वृखभान पौर पै, ऊंची टेर लगाई ।
भनक लाड़ली कान परी ज्यों, सखी देखन पठुवाई ॥
आपुन ही पुनि मंदिर तजि के, बाहर देखन आई ।
लखि जोगन को रूप मनोहर, हरीदास बलजाई ॥२॥

वार्तिक

प्रियाजी बचन

अरी सांवरी तू कौन है, अरु जोग आश्रम कब से लियो कोई बड़े भूप की बेटी दीसे है ॥३॥

पद-कहरवा

जोगन बचन

जन्म जन्म की जोगनियां, मैं तो जोग जुगत दिखराऊं ॥टेक॥

बन २ डोलत फिरत रहूं मैं तो, घर २ अलख जगाऊं।
घर बासिन सों दूर रहों, इक ठौर नहीं बिलमाऊं।
कोऊ संग न साथी मेरो, मैं तो भवन ही जात डराऊं।
जोगी जंगम जहां मिले तहां, बैठ गुरू गुण गाऊं।
देव भिक्षा हरिदास चलो अब, दूसर ठांव जगाऊं। ४

वार्तिक

लाड़ली बचन

अरी प्यारी जोगन नेक तो या ठौर पै बिलमो, फेर चली जाईयो ॥५

पद

बिलमों थोरिक देर जुगनियां ॥टेक॥
भिक्षा देन को कोई नहीं इत, संग सखी मोरी गई पनियां।
तुमरो रूप लुभायो मोमन, चलु हम तुम बिहरें बन बगियां।
हमहूं को कुछ जोग बताओ, तुम सम कोऊ मिलियो ना गुनियां।
तब संग छोड़न नाहिं चहे चित, सुजन रहो तुम माधुरी बोलियां।
मो मन अस हरिदास चहे अब, लय फिरों तोको निज कनियां। ६

पद

जोगन बचन

जोग में भोग बने ना गोरी। टेक।
तुम वृषभानु सुता बड़ भागिन, हमसी बहु डोलें तव खोरी॥
तुम घर बासी भोग बिलासी, अंत कहूं ढूंढो तब जोरी॥
जोगिन के संग जन्म बिगारो, दीसो माहि तुमहिं बड़ि भोरी॥
धन सम्पति जोबन सुख भोगो, बैस तुम्हारी अबै अति थोरी॥
हमरे संग हरिदास करो का, खेलहु जा तुम अपनी पोरी॥७॥

पद

भोग में जोग को काज कहारी ॥टेक
मैं निज जोग प्रभाव सों जान्यो, नंद नंदन सों नेह लगारी।

त्रिभुवन पति तज जोग बिचारत, दूध दही तजि खात मठारी।
जोग को खेल करो कत प्यारी, सुहिरो को हरिदास बृथारी। ८

वार्तिक

लाड़ली बचन

अरी बीर तू तो वाको नाम लेइ है, जाके पीछे मैं बावरी भई डोलूं हूं, लोक लाज त्याग दीन्हों हों ॥ ९

रेखता

दिलदार यार प्यारे गलियों में मेरे आजा।
आंखें तरस रहीं हैं सूरत इन्हें दिखा जा॥
चेरी हूं तेरी प्यारे इतना तू मत सतारे।
लाखों ही दुख सहारे टुक अब तो रहम खाजा॥
तेरे ही हेत मोहन छानी है खाक बन बन।
दुख झेले सिर पे अगणित अबतो गले लगाजा॥
मन को रहूं मैं मारे कब तक बतादे प्यारे।
सूखे बिरह में तारे पानी इन्हें पिलाजा॥
सब लोक लाज खोई दिन रैन बैठ रोई।
जिसका कहीं न कोई तिसका तुही बचाजा॥
मुझ को न यूं भुलाओ कछु शरम जी में लाओ।
अपने को मत सताओ ये प्राण प्यारे राजा॥
हरिचंद नाम प्यारी दास है जो तुम्हारी।
मरती है वह बिचारी आकरउ से जिवाजा॥ १०॥

दोहा

जोगन बचन

क्यों न बड़ाई कीजिये, लाड़िक कुल वृषभान।
अब हों निश्चय चाख हों, पायो मैं सनमान॥ ११

वार्तिक

श्री लाड़ली जी ने जोगन को हाथ पकरि घर भीतर

ले गई अरु आदर पूर्वक बैठायो, जोगन प्रसन्न होय बोली ॥१२

पद

सखि आज रहें कल होंगे बिदा, मिहमानों से हिलमिल रहिये । टेक
ऊंची अटारियों के साम्हू बगियां, आसन जाय जगइये ।
अतर फुलेल पान की बिरियां, सुंदर सेज सजैये ।
सब सखियन मिल सेवा कीजे, बहु पकवान बनैये ।
हम हरिदास नियम कर बैठे, फिर मिल बोल बतैये ।१३

दोहा

सखी बचन

भूमि शयन योगी करे, कहत बचन बिपरीत ।
भूल न आदर पाइये, तप मारग की रीत ॥ १४

दोहा

जोगन बचन

तुम मन मृदु कीरत लली, या सखि हियो कठोर ।
तपसिन को शिक्षा करे, आयो कलि को ओर ॥ १५

दोहा

प्रिया जी बचन

भुज भरि लीनी कुंवरि ने, जोगिन जिन कर खेद ।
वृंदावन हित रूप यह, समुझ परो है भेद ॥ १६

पद

राग पूर्वी

दोऊ जन हिल मिल बोलन लागे, त्यागे सकल सकोच हो ॥ टेक
कर में कर ले सेजन बैठे, बांधो परम सनेह हो ॥
नैनन सों नैन मिलावत, चितवत बीते सकल संदेह हो ॥ १
सेवा पै सखियां सब ठाड़ी, बिजनन करत बयार हो ॥
क्षण २ बीरी बनाय खवावें, अतिहि सुगंध बहार हो ॥ २
बिबिधि भांति भोजन ले आई, झारी भर भर नीर हो ॥

लखि हरिदास जुगल छवि नीकी, मेटत उर की पीर हो ॥२।७१

इति श्री जोगन लीला

अथ बिसातन लीला

छंद

एक समय श्री नंद नँदन जू, मन में याहि बिचारी.
धरिके रूप बिसातिन जूको, छलिये राधा प्यारी,
कीनखाप का लहंगा पहिरो, ओढ़नियां गुलतारी.
कस २ के छतियों पै बांधी, अंगियां बूटे वारी.
शीस फूल हथ फूल जड़ाऊ, मोतिन मांग संवारी.
नाक बुलाक करनफुल झुमका, हार हमेल नियारी.
रतन जटत किंकिनी अरु ककना, पग नूपुर झनकारी.
छलछुम बिछिया पायन बाजें, घन गरजन अनुहारी.
चाल मराल मनोहर चितवन, मृदु मुसकान पियारी.
बरसाने की गलियन डोलें, कहें हरिदास पुकारी .१

पद

गली २ में कहत फिरत कोई, लालही लेहु मुल्याई.
ऐसी कहत बिसातिन आई ।।टेक।।
जबहीं गई वृषभान पौर तब, ऊंची टेर सुनाई.
स्याम पोत अरु स्याम नगीना, या घर लायक लाई.
द्वारे उझकि २ फिर आवे, आगे जात सकाई.
तनु ढांके पुन घूंघट मारे, लाज जो भींजत जाई.

पद

भीतर खबर भई तब प्यारी, बोल निकट बैठाई।
कौन अपूर्व वस्तु तो पाहीं, कहु मोसों समुझाई।
कौन नगर तू बसत बिसातिन, अबहीं दई दिखाई।

तोसी भटू बड़े घर चहिये , धन विधि जिन जु बनाई.
सबहीं भांति ऊजरी तनकी , किहि मुख करों बड़ाई.
तोहि बसाऊं राजद्वार पै , मन में होय सचाई.
कैसे चुन्नी कैसे मोती , कीमत देहु बताई.
है लघु वैस कौन पै सीखी , परखन की चतुराई. ३

पद

कांख माहि ते गांठ काढ़कर, स्यामाजू लरी गहाई । टेक
बड़े मोल के नग यह मेरे , तुम रिझवार महाई.
जो २ रुचे वस्तु सो राखो , बड़े गोप की जाई.
औरों बात कहत सकुचत हों, प्रीति जो देख विकाई.
नाना विधि की डबिया छल्ला, आरसी मणिन जड़ाई.
श्री राधा के आगे धर के , बोली मैं भेंट चढ़ाई. ४

प्रिया जी बोली

पद

अरुझो मा मन तोमें विसातिन । टेक
रूप ठगोरी मो पर लाई , लखत रहों तुम सांवरे गातन.
चौपर चार घड़ी संग खेलों , हंस २ के सुनो माधुरी बातन.
संग जुवाय पलंग पौढ़ाऊं , बहरों संग लेइ वन बागन .
दिवस रात हरिदास करों हित, लेहुं लगा तुम्हें आपनी छातन ५

छंद

बटुआ खोल दिखाई बेंदी , नागरि के मन भाई .
सुघर विसातिन अपने कर सों, माथे कुंवरि लगाई .
पुन झोरी तें दरपन काढ़ो. मुख शोभा दरसाई .
उदित भाल पर मनो सुहाग मणि, लख स्यामा मुसकाई .६

पद

अंकभर ढिग में बैठाई । टेक
मन में हरष अपार बढ़ायो, दुई दिल खोल जवै बतराई.

परसत अंग दशा बदली तब, प्यारी अपने मन सकुचाई ॥
प्रेम विवस हरिदास बिसातन, तन मन की सब सुधि बिसराई ॥७

प्रिया जी बोली

दोहा

अरी प्राण प्यारी सखी, कत गई तू बबराय ।
कै डरपी कै काहु की, छाया दई दबाय ॥ ८ ॥
सांझ भई अब ठहर जा, प्यारी याही ठौर ।
भोर भये उठ जाइये, व्यापारिन सिरमौर ॥ ९ ॥

बिसातिन बोली

दोहा

सजनी मो मन डरत है, पर घर बितवत रैन ।
और कहूं बासो सुहैं, आज्ञा देवो लैन ॥ १० ॥

रेखता

अबला अकेली पर घर की, घर में बसइये ।
पुनि सबैं मोसी तरुनी, बहु लोक लाज लैये ॥ १ ॥
दिन है अबैरी थोरी, सोरो कहो तू माने ॥
घर में लराई होवेगी, देहु मोहि जाने ॥ २ ॥
व्यापरनी हों मैं तो, दिन रैन फिरन वारी ।
नहिं देखो घाम बादल, नहिं अंध्यारी उज्यारी ॥ ३ ॥
नित इकलेही घूमों संग, साथ कहां पाऊं ।
हरिदास मोहि जान दो, लागों तुम्हारे पाऊं ॥ ४ ॥ ११ ॥

पद

बिसर न सकत प्रीति अति बढ़गई, व्यारू संग कराई ॥
रजनी गुण उघरे जब शय्या, अपने ढिग पौढाई ॥
जबहिं स्वरूप प्रकाश्यो अपनो, जानपरी लंगराई ॥
वृंदावन हित रूप छदम तज, सुख की अवध मनाई ॥१२॥

इति श्री बिसातिन लीला

अथ सुनारन लीला

दोहा

श्री राधा के नेह में, सदा मगन बृजराज ।
छल बल करते नित भये, तिनहिं रिझावन काज ॥१
बन के सुघर सुनारनी, एक समय नंदलाल ।
बरसाने में जाय के, मोही सब ब्रजबाल ॥२॥

वार्तिक

इन को रूप देख एक सखी, प्रिया जी पास जाय बोली ॥३

पद

आई है प्यारी पौर सुनारन ॥ टेक ॥
चाल मराल मनोहर चितवन, तासम रूपवती कोऊ नाहिन ।
लाल जवाहिर हीरा जड़े नग, बेचन लाई यहां यहि वारिन ॥
तुम्हरे ही लायक जेवर लाई, खोज फिरी तुम्हें अहे हजारन ।
ताहि खड़े बड़ि बेर भई है, कहुं हरिदास बुलावन कारन ॥४॥

वार्तिक

प्रिया जी बोली सखी वाको बुलाय लाओ ॥५॥

पद सारंग

का का सौदा ल्याई प्यारी सुघर सुनारनी ॥ टेक ॥
कित सों आई कहां को जावे, नाम का है तेरा कौन की है कामनी ॥
कोमल गात बड़े घर कैसी, बोलत ना बात तेरी आंखियां लजावनी ॥
बैठो हरिदास आज बात हू करो जो इत, होयगो बिलंब लागी आई अभी जामनी ॥ ६ ॥

सुनारन बचन

देखोरी सलोनी सौदा, जल्दी जाने देवरी ।
गांव ठांव दूर मेरो, डोलूं ठौर २ नित ॥

सांवरी सुनारी मेरो नाव जान लेवरी ॥
सोना चांदी चीजें नख सिख लों पहिरबे की ।
लाई हों तुम्हारे काजे पहिरो सुख पावरी ॥
तुम सम इनको गाहक कोई सजनी ।
या पुर में अवलो सोहे ना दिखाओरी ॥
सौदा सब लै जैहों घर को अभी में ।
हरिदास चाहे कछु विको ना विकाउरी ॥ ७

रेखता

जे चीन की हैं छूरी गुजरात के हैं गजरे ।
कटि किंकिणी कटक की बीरा वजाउ सगरे ॥
ये माला मालवे की बेसर बनारसी ।
नथनी है नागपुर की आसाम आरसी ॥
हतरास की हमेलें वेंदी हैं वृंदावन की ।
मथुरा की साथे बेंदी चुन लेहु अपने मन की ॥
जे कानपुर के कुंडल काबुल की हैं बुलाकें ।
है जूना गढ़ी झुमका विजनौर की जे शांकें ॥
ककना कपूर थला के पटना की हैं पटेली ।
हथफूल हथनापुर के लाई हों मैं नवेली ॥
छपरा के छल्ले पहिरों हयोरछुर हमेलें ।
पिपराज पायजेबें घुंघरू पगन में खेलें ॥
बिछिया बुंदेलखंडी पहराउं हाथ अपने ।
हरिदास आस भारी सुख एतो नाहिं सपने ॥ ८

वार्तिक

सुनारनी ने जबही पियाजी को हाथ गहिबो चाहो त्यों ही सखी उनको पहिचान गई ॥ ९

दोहा—सखी वचन

अरी लाड़ली नेक तो, देखहु नयन उघार ।

आयो तुम को छलन को, छलिया नंद कुमार ॥ १०

वार्तिक

यह सुन प्रिया जी बोली बलिहार महाराज पुरुष होय के बनिता बनौ हो, लालजी बोले प्यारी तुमको प्रसन्न करवे सखियों ने आरती उतारी ॥

इति श्री सुनारन लीला

अथ नाइन लीला

छंद

अति प्रवीण छल में नंद नंदन पहिरें गहने जनाने ॥
एक समय नाउन बन राधेहिं छलन गये बरसाने ॥
बरन २ के बगल महावर हाथ नहरनी लीनी ॥
गलन २ बरसाने डोलें वनिता अति रस भीनी ॥ १

वार्तिक लालजी बचन

अरी कोई सूंड़ महावर करायलो २ इनको रूप देख सखी ने प्रिया सों जाय कही ॥ २

सखी बचन

छंद

कोमल गात सांवरे रंग की रूप अनूपम नारी ॥
नाउन कहि २ गलियन डोलें पूंछत राधा प्यारी ॥
आज काल या बृज के भीतर ऐसी नाउन नाहीं ॥
हुकुम होय तो लाऊं वाको अपने मंदिर माहीं ॥ ४

वार्तिक

श्री लाड़ली जी ने झरोखा ते ताको, देख ताकों बुलायवे की इच्छा कीन्हीं और सखी से बोली ॥ ५

पद

मोहू को वा नाउनियां ने, रूप ठगोरी लाई ॥
जल्दी जाव भवन लै आओ, देखों मैं चतुराई ॥
आजहिं तो फुल वगियां डोलत मैं हू गई थकाई ॥
ऐसी सुंदर नाउनियां सों, पावन लेहु दवाई ॥
हरिदास तिहिं बेग बुलावहु, कर लेऊं मन भाई ॥ ६

वार्तिक

आज्ञा पाय सखी सांवरी नाइन को भीतर लिवाय लेगई ॥ ७

दोहा

चौ नजरें होतहु प्रिया, भूली सुध बुध अंग ।
इक टक ताहि निहार के, डूबी प्रेम तरंग ॥ ८
पुनि सम्हार निज बदन को, मन में अति हरषाय ।
बोली प्यारी बैठ तू, कौन कहां की आय ॥

दादरो

नाउन बचन

कछु सेवा करालो मोरे करसों लली, मैं तो तिहारी नाउनियां.
बरसाने के घर २ देखे, तो सी दिखानी नहिं साउनियां.
तुमरी ठकुराई सुन आई, थोरी सी देर की हों पाहुनियां.
उबटन करि असनान कराऊं, लाऊं महावर पावनियां.
वेणी गुथों हरिदास सुमन सों, नजर उतारों बलि जाउनियां.१०

वार्तिक

प्रिया जी यह सुन प्रसन्न होय बोलीं अरी मोरी पींठ ब-हुत दुखे है ताको मींजिदे. ११

दोहा

उठी झपट के सांवरी , मन में अति हरषाय ।
चौकी ढिग ठाढ़ी भई , छुवत अंग सकुचाय ॥ १२
झल मलात मन जानके, लखत प्रिया की पीठ ।
चित्र लिखीसी रह गई , कहत न खाटी मीठ ॥ १३

वार्तिक

नाउन को ऐसी प्रेम में विवस देख सखी बोली, १४

दोहा

एरी नाउन अनमनी , कैसी दीसत आज ।
अपनें कुल के काम में , कत पालत है लाज ॥ १५
जो २ तेरो काम है , कह्यो करन मैं सोय ।
तूतो पुतरी सी खड़ी , दीन्ह बुद्धि को खोय ॥ १६

वार्तिक

यह सुन घबराय के सिर झुकायो, अरु प्रिया जी की ओर हाथ पसारे, सखी ने देख हंस दियो, अरु बोली ॥ १७

दोहा

अरी सखी मोको दिखे, यह छलिया नंदलाल ।
देखो याके कंठ में , लटकत है बनमाल ॥ १८

वार्तिक

प्रिया जी नाउन को मुख देख २ हंसवे लगीं अरु लालजी हू हँस उठे, प्रिया जी ने उन्हें अपने समीप चौकी पर बैठाय लियो सखियों ने युगल स्वरूप की आरती उतारी ॥ १६

इति श्री नाइन लीला

अथ मालिन लीला

दोहा

एक समय नंद नंद जू , मालिन भेष बनाय ।
बरसाने की गलिन में , डोलत पहुंचे जाय ॥ १
घुंघरारो लहंगा सजो , चूंदर कुसुम सुरंग ।
विविधि बरण साजे सकल, आभूषण अंग अंग ॥ २

लालजी वचन

वार्तिक

प्रिया मंदिर के द्वार पर जाय टेर लगाय बोले । ३

पद

कोई फुलवा लेहुरी फुलवा ॥ टेक ॥
नील स्वेत पीरे पचरंगी , बरन बरन के हरवा ॥
चुन २ कली चमेली चटकीं , टटकी दोना मरुवा ॥
ललित किशोरी बिबस होय , चट पहराऊं पिय गरवा ॥ ४ ॥

वार्तिक

इन को देख एक सखी प्रिया जी पै जाय बोली ॥ ५

पद

प्यारी एक मालिन पौर तिहारी । रंग सांवरो वा मालिन को , नील मणिन अनुहारी । ठाड़ी है वृखभान पौर पै , पूछत नाम दुलारी । बेंदी भाल नयन बिच काजर, बेसर की छवि न्यारी चलत चाल चपला ज्यों चमकत , झूमत झूम घटारी । यह सुनके वृखभान नंदिनी , बोली तब मुसकाई । ले आओ तुम वा मालिन को , कैसी है वह आई । ले आज्ञा प्यारी की तबही, सखी वेग उठधाई । चलरी मालन याद करत तुहि , दास चरण बलि जाई ॥ ६ ॥

वार्तिक

प्रिया जी के निकट जाय मालिन बोली ॥ ७ ॥

पद

प्यारी मेरी फुलबगिया में चलौगी कि ना, मैं तो तिहारी मलिनियां॥
विविधि रंग फूली फुलवारी , अलबेली मन भामिनियां ॥
बहुत दिना की आशा लागी , सींच २ कर कामिनियां ॥
सुफल करो पद तल अंकित कर, ललित किशोरी दामिनियां ॥

वार्तिक

यह सुन प्रिया जी प्रसन्न होय बोली ॥ ८ ॥

पद

मालिन मधु भरे नैन रसीले ॥

कहौ कौन है तात तिहारो, कौन तिहारी माई ॥

को है सुंदरि नाम तिहारो, कौन गांव ते आई ॥ १० ॥

मालिन वचन— अचल प्रेम है तात हमारो भक्ति हमारी माई स्याम सखी है नाम हमारो, पुर गोकुल ते आई ॥ ११ ॥

प्रिया जी वचन— तुम्हरो रूप देखि मन उमग्यो, सुन मालिन की जाई, हम लेंगी सब वस्तु तिहारी, काका सौदा लाई ॥ १२ ॥

मालिन वचन— चंपा कली हमेल चमेली, फूलन हार बनाई सेवती गुलाब सुमन के झुमका, तिहारेहि कारण लाई ॥ १३ ॥

प्रिया जी वचन— कित मथुरा कित गोकुल नगरी, कित बरसाने आई। कौंन बताओ नाम हमारो, किन यह ठौर बताई ॥ १४ ॥

लालजी वचन— तीन भुवन में सुयश प्रगट है, अरु तुम्हरी ठकुराई। राधे नाम रूप की राशी, श्री वृखभान की जाई ॥ १५ ॥

प्रिया जी वचन— चंचल चतुर सुघर तू मालिन, हम जानी चतुराई। फूलन हार बने अति सुंदर, और कहो क्या लाई ॥ १६ ॥

लालजी वचन— सुंदर तेल फुलेल उबटनो, अतर सुगंध मिलाई। जो रुचि होय सो लै मेरी प्यारी, बेर भई मोहि जाई ॥ १७ ॥

प्रियाजी वचन— बेर बेर तू जिन कर मालिन, देहों माल अघाई। हीरा लाल रत्न मणि माणिक, भू-

पण बसन मंगाई ॥ १८ ॥

मालिनी वचन- बड़े घरन की मालिन हूं मैं, धन की रुचि कछु नाहीं। मैं सौदागर प्रेम रतन की, और न कछू सुहाई ॥ १९ ॥

प्रियाजी वचन- फूल फुलेल की बेंचन हारी, कहा अधिक इतराई। लेहु लेहु फूल फिरत कुंजन में हम पै करत बड़ाई ॥ २० ॥

मालिन वचन- सुकृत जन्म के फलते भामिन, यह मेरे फूल सुहाई। पच पच हार रहे सुर नर मुनिं, ऐसे फूल न पाई ॥ २१ ॥

प्रियाजी वचन- जिन फूलन की खोज थकित भये, सुर नर पति मुनि राई। ऐसे फूल कहो मृग नैनी, कौन बाग सों लाई ॥ २२ ॥

मालिन वचन- त्रिभुवन पति जगदीश दयानिधि, नंद कुंवर यदुराई। वा मोहन के बाग सों प्यारी, नवल फूल चुन लाई ॥ २३ ॥

प्रियाजी वचन- यह सुन के वृखभानु नंदिनी, तन मन सुख अधिकाई। आज की रैन रहो घर हमरे, भोर भयें उठजाई। सांची प्रीति देख प्यारी की, रैन की सैन ठहराई। यह छवि देख मगन भये सुर नर, दास चरण बलि जाई ॥२४॥

वार्तिक

प्रात समय निकुंज से निकसे ॥ २५ ॥

पद

लटकत आवत कुंज भवन ते ॥ टेक

ढुर ढुर परत राधिका ऊपर, जाग्रत शिथिल गमन ते ॥

चौंक परत कबहूं मारग बिच, चलत सुगंध पवन ते ॥

भर उसास राधा वियोग भय, सकुचे दिवस रमन ते ॥
आलस मिस न्यारे न होत हैं, नेकहु प्यारी तन ते ॥
रसिक टरो जिन दशा श्याम की, कबहूं मेरे मन ते ॥२६॥

रेखता

लालजी वचन

टुक बंगला में बैठो बाग की बहार है ।
घर को न जाव प्यारी यां भई अवार है ॥
जाही जुही चमेली क्या मालती सुहाई ।
क्या सर्व सुहागिल सेवती क्या गुल डोरी लगाई ॥
चारों तरफ तरफ से क्या गुलाब की क्यारी ।
क्या सर्व सफेद कनेर है क्या गुलवास है न्यारी ॥
हँस करके ललित किशोरी उर कंठ सों लगाई ।
गुलशन सिधारो प्यारी क्या भई चमन सवाई ॥२७

पद

महलन चलो नवल अलबेली ॥टेक॥
रंग महल में सेज बिछौ है, चुन चुन कुसम चमेली ॥
चम्पा मरुआ और केवड़ा, बिच बिच फूल खिली ॥
चित्रकारी मेरे देखो जी मंदिर में, सुंदर गर्व गहेली ॥
पुरुषोत्तम प्रभु रसिक शिरोमणि, थारे चरण की मैं चेली ॥२८

इति श्री मालिन लीला

अथ गोरे ग्वाल की लीला

दोहा

एक समय श्री लालजी, कीन्हों प्रिया सिंगार ॥
नख शिख पट भूषण सजे, मन में हर्ष अपार ॥
छवि अनूप अति माधुरी, निरख रहे भरि नैन ॥

वरण २ छबि चंद्र की, लागे पटतर दैन ॥ २

वार्तिक

अरी प्यारी तेरे अंग अंग अरु आभूषण २ में शशी की शोभा दीसे है ॥ ३

सवैया

सारी संवारी है सोनजुही, अरु जूही की तापे लगाई किनारी ॥
पंकज के दल को लहंगा, अंगिया गुलबांस की शोभित न्यारी ॥
चमेली को हार हमेल गुलाब के, मौर की वेंदी दे भाल संवारी ॥
आज बिचित्र संवार के देखो, सो कैसी सिंगारी है प्यारे ने प्यारी ४

कवित्त

चंदा सो वदन जामें चंदा सो बिंदा दिये, चंदा तन चितवत चंदा छबि छाई प्यारी। चंदन की सारी सोहे चंदन को हार हिय, चंदन को लहँगा सोहे चंदा मुख भाई प्यारी ॥ चंदन की कंचुकी औ चंदन की बंदनी, चंदन की बगली चंदा तन धाई प्यारी। कहा कहों कछु न कहत आवे आज सु, तिहारो मुख देख चंदा गयोहै लजाई प्यारी ॥ ५

प्रियाजी बचन

हे प्यारी! तुम मोकों जड़ चंदा को रूप बताय के म्हारी निंदा करो हो, चंदा में कलंक अरु बहुतसे दोष हैं ऐसी कहि रूठि के चलीं ॥ ६

राग बिहाग

यह कहि के प्रिया धाम गई ॥ टेक
चौंक परे हरि यह जब जानी, अब यह कहा भई ॥
दोष न होय कछू सखि मेरो, मैं तो उपमा दई ॥
रिसन भरी नखसिख लों प्यारी, जोवन गर्व मई ॥
लावो बेगि मनाय सखीरी, याबिन जात बही ॥
पुरुषोत्तम प्रभु की छबि निरखत, लाओ बेगि सही ॥ ७

वार्तिक

लालजी बचन सखी प्रति

अरी सखी मैंने तो सहज स्वभाव ही प्यारी जी की छबि देख चंद्रमा की उपमा दई रही, अब तुम मेरी प्यारी को मनाय लाव तो तुम्हारो बड़ो उपकार मानूंगो, वाके बिना मोको चैन नहीं परे ॥८

पद

वृषभान कुंवरि जब देखो, सब जन्म सुफल कर लेखो ॥
मैं राधा राधा गाऊं, राधा हित वेणु बजाऊं ॥
मैं राधा रमण कहाऊं, काहे दूजा नाम धराऊं ॥
जहां राधा चरचा कीजे, तहां प्रथम जान मोहे लीजे ॥
जहां राधा राधा गावें, तहां सुनवे को हम आवें ॥
श्री राधा मेरी सम्पत, श्री राधा मेरी दंपत ॥
श्री राधा मेरी शोभा, श्री राधा को चित लोभा ॥
मैं राधा के संग नीको, राधा बिन लागत फीको ॥ ९

खेमटा

देखी कहूं गलिन में मो प्राण जीवनी ॥ टेक

येहो सुजान प्यारी मम चूक क्या बिचारी, क्यों दूर गई लतन में देहु दरश आनंदनी । जब चलत चाल छबि सों तब हलत हार उरसों, ठुम २ चरण धरन पै तूहै गति गयंदनी । तेरी छटा चरन की निंदत रवि किरण की, हा हा कुंवरि किशोरी तूहै सुख सम्मोहनी । यह सुनत बचन मेरो पाषाण द्रवत हेरो, हित रूप लाल चेरो येहो दुःख निकंदनी । १०

पद-देश

राधा हे राधा कित गई ॥ टेक

वृंदा विपिन अछत प्यारी बिन, सब बिपरीत भई ॥
मेरे मंद भाग सों काहू, पोंच प्रकृति सिखई ॥
व्यास स्वामिनी वेग मिले तो, बाढ़े प्रीति नई ॥ ११

वार्तिक

अरी सखी प्यारी को वियोग अब घरी घरी अधिक दुख देवे है जल्दी ढूंढ़ लाओ ॥ १२

पद

श्री राधा प्यारी देखी है चितचोर ॥ टेक
लागी काहू ठौर मैंने, देखी है चित की चोर ॥
चंद्र बदन मृग लोचनी राधे, जैसे चंद्र चकोर ॥
नई प्रीति सों सब रस बाढ़ो, जोबना करत ही जोर ॥
पायन में नूपुर धुनि बाजे, गज गति चलती तोर ॥
या छवि निरख के मगन भये, गुण गावत दास किशोर १३

पद

मेरी तो जीवन राधा, बिन देखे न आवे चैन ॥
मोसे तो कछु चूक परी ना, कैसी रूठी सुख दैन ॥
पैयां परूं मैं तोरे ललिता बिशाखा तोरे,
नेक जाउ राधा लैन ॥
धीरज प्यारी जू के देखे श्री राधा जू के,
शीतल होंगे मेरे नैन ॥ १४

वार्तिक

लालजी बड़े अधीर होय प्यारी के वियोग में बोले ॥ १५

पद-विहाग

कहो कहूं देखी रे इत जात, रूप गरबीली प्यारी राधा ॥ टेक
चंपक बरण गात मन रंजन, खंजन चख कुरंग मद गंजन,
अमल कमल मुख जोति बिलोकत, होत शरद शशि आधा ॥
अहो सुगंध मृग शावक नयनी, कहुं देखी प्यारी पिकवयनी,
सुखमासिंधु अगाधा ॥ अहो मराल मानसर वासिक, अहो अलिंद मकरंद उपासिक, देहु बताय मोह मयाकर, होत अपत अपराधा ॥ अहो कदम्ब अहो अंब निंब वट, सोहत सुखद छांह

यमुना तट, हरत ताप की बाधा ॥ संतत देत गोप गोधन सुख, कबहू न सह सकत मेरो दुख, उपकारी बपु वेद बखानत, अबहि मौन क्यों साधा ॥ आरत बचन पुकारत लालन, मन्न जो फंसो बिरही के हालन, मदन जाल सों बांधा ॥ अतिशय विकल देख बनवारी, प्रगट भई वृखभानु दुलारी, सूरदास प्रभू को लगाय उर, पुरवत रस की साधा ॥ १६

वार्तिक

मोहन प्यारे को बिलाप देख प्रियाजी ग्वाल को रूप धार के प्रगट हो गई ॥ १७

पद

कर बिचार वृखभानु दुलारी ॥ टेक
ग्वाल रूप धर छलन कृष्ण को, नंदगांव की ओर सिधारी ॥
जहां हरि अपनी गाय चरावें, तहां आप चलि जाई ॥
देख रूप मोहे मुरलीधर, भूल गये चतुराई ॥ १८

वार्तिक

तिनको देख मोहन बोले ॥ १९
अरे मित्र क्या नाम तिहारो वास कहां है तेरो.
कबहूं नाहिं अबे लो देखो करत सदा ब्रज फेरो. २०

बार्तिक

ग्वाल के बचन
गोरे ग्वाल भानुपुर के हम, गोधन वृंद चरावें.
रशिक बिहारी गाय हमारीं, आईं सज कहां पावें. २१

वार्तिक

अरे भइया हमारी गाय हिराय गईं ताको ढूंढ़वे आयो हों अरु राधिका ही वाको ढूंढ़वे आई रही सो हिराय गई ॥ २२

रेखता

बरसाने बास मेरो वृखभानु गाय चारूं.

संग राधिका के खेलूं सब रोग राई झारूं ॥
नहिं जानों घर सों कित साऊं गई है वा अकेली ॥
मैं हूं न साथ लागो न और कोउ सहेली ॥
पितु मातु वाके दोइ जन बैठे हैं बाट हेरें ॥
सब खान पान त्यागो कहि राधा २ टेरें ॥
मैं हूं तो इत में वाको आज ढूंढवे को आयो ॥
संग कौन के वा लागी के कारे काट खायो ॥
अब लौट के मैं जाऊं तो का जवाब देहों ॥
हरिदास जो बतादो तो तुमरो गुण मनैहों ॥ २३

वार्तिक

लालजी वचन

अरे भैया जाके तू गुण बखाने है, सो राधिका तो अबहीं यहां ते रूठ के गई है, तुम ने तो नाहीं देखी ॥ २४

कवित्त सवैया

सूही सी सारी सुहाई है सांझ में, नैनन मांझ मिजाज मई है ।
को है कहां की है कौन की है, घर कौन के आई नवेली नई है ॥
ठौर ठगे उमगे से ममारख, रीझ रहे आली भेंट भई है ।
को वलिया गलिया में गई, सुदिया लै गई सो जिया लै गई है ॥२५

पद

ग्वाल के वचन

गुण सुन वृखभानु कुंवरि के, ज्याके लाल तुम रहो आधीन ॥ टेक
वह तो गृह से सटक, बन रहत अटक, नहिं मानत हटक, इत उतहीं फिरै । ऐसी फिरै इतरात, नहीं काहू को सिहात, मनमाने जित जात, नहिं नेकहु डरै । बेटी बड़े की कहावे, दधि बेचवे को जावे, ताहि लाजहू न आवे, सब नाम धरै । एक मेरी सुन लीजे, ऐसी नारि न पतीजे, ब्याह कहूं ज्यासों कीजे, तेरो चित्त हरै । जाकी मुख उज्यारी, देख रीझोगे बिहारी, पियो बार बार

पानी, जब भीत को करै ॥ २६

वार्तिक

भैया तुम नाहक वाके पीछे फिरौ हौ, वातौ तुम्हें नेकहू ना पूछे ॥ २७

लालजी के वचन

पद

सखा तुम बोलो ना बात विचारी ॥ टेक
कहौ कौनसी बाल जगत में, जैसी है वृखभानु दुलारी ॥
भानु नगर के बसनहार तुम, प्यारी की अनुहारी ॥
रवि शशि कोट बदन की शोभा, दीजे तुम पर वारी ॥
कहौ कौन से मैं व्याहु कराऊं, रची कवन विधि नारी ॥
करत वास हिरदे में मेरे, कीरति कुंवरि दुलारी ॥
प्रेम बिवस कछु सुरत रही ना, तनु की सुरत बिसारी ॥
लिये लगाय वेग उर प्यारी, तब हँस रशिक बिहारी ॥ २८

वार्तिक

या कहि के ग्वाल रूप प्यारी को पहिचान अपने कंठसों लगाय लीन्हों अरु प्रेम में मगन होय कहिबे लगे ॥ २९

पद-देश

सखी री मैंहू नंद किशोर ॥ टेक
मैं दधि दान लेत वृंदावन, रोकतहूं बरजोर ॥
यह जो माननी मानकर बैठत, बिन्ती करूं कर जोर ॥
पुरुषोत्तम प्रभु मैंहूं रशिक मणि, यह मेरी चित चोर ॥ ३०

रेखता

हम ते न प्राण प्यारी मुख मोरबो करो ॥
वृखभानु की दुलारी चित चोरबो करो ॥
कछु दोष नाहीं मेरोरी क्यों मान कीजिये ॥

रजनी विहात सजनी रिस छांड़ दीजिये ॥
मो तन निहार गोरी मैं तो हूं सरण तोरी ।
आनन है चन्द्र तेरोरी लोचन मेरे चकोरी ॥
कीजे कृपा किशोरी दीजे अधर सुधारी ।
लीजे लगाय अपनेरे हिरदे रशिक विहारी ॥
सखियों ने आरती उतारी.
इति श्री गोरे ग्वाल लीला

अथ तमोलन लीला

दोहा

श्री राधा के प्रेम को, नितहि वृंदावन काज।
छदम रूप सों जातते, वरसाने वृजराज ॥१॥
एक समय तिय भेष धरि, बने तमोलन जाय।
बरसाने की गलिन में, बोले टेर जगाय ॥२॥

पद

कोई ले लेव लली लाल विरियां ॥टेक
दूर देश तें आई तमोलन, ढूंढ़ों वेही अमिरियां।
गलन गलन में डोलत मोकों, या पुर होत अविरियां।
बरण २ के पान मसाले, भरिलाई था चुलियां।
निकसोरी रिझवार सहेली, लेहु मसाले पुरियां।
अबकी गई हरिदास न जानो, कब करिहों यहां फिरियां ॥३

वार्तिक

या तमोलन को रूप अनूप देख सखी प्रिया जी से जाय बोली ॥४

पद

आई एक प्यारी पौर तमोलन ॥टेक॥

छवि की खानि मान की भूखी, बोलत है अति माधुरे बोलन।
ढूड़त है बड़ भूप भवन को, चाल गरूरी गयंद की डोलन ॥
चुलिया पान बगल में दाबें, बिन रिझवार न चाहत खोलन।
डार दई हरिदास ठगौरी, बस कीन्हीं सखियां बिन मोलन॥५॥

वार्तिक

प्रिया जी ने झरोखा सों देख तमोलन को भीतर बुलवायबे की आज्ञा दीन्हीं, सखी बुला लाई॥६

प्रिया जी बोली

कौन देश तें आई तमोलन, मात पिता को तेरो।
कहा नाम कौने दिखरायो, तोहि भवन यौ मेरो॥
सब गुण खानि रूप की राशी, ग्राहक चित्त चुरावो।
चुलिया में जो सौदा लाई, सो मोकों दिखरावो॥७

तमोलन बोली

देश गांव मेरो नहिं कोई, ना कोउ बाप मतारी।
नाम अनेक भवन तुम आई, अपने मन सों प्यारी।
ग्राहक नाहिं मिले या जग में, तुम सम भूप किशोरी।
तुमरी हमरी प्रीति परस्पर, मानहुं बिधना जोरी।
बैरागढ़ी बंगला देशू, पान लवार बिलहरी।
सुभग गंगेरी रामटेक के, लाई पान सुनहरी।
मीठे पान महोवा सागर, नागरि ले लेव बीरा।
डार मसाले निजकर लाऊं, हरण सकल उर पीरा।
जायपत्री और जायफल, लोंग लायची धनियां।
खारक और खोपरा डारे, बीरा खांय चिकनियां।८।

रेखता

कटु खारे तीखे मीठे मधुरे कषायले।
कफ वात को बिनासे जो कोई खायले।
कृमि पेट सों निकासे मुख में सुवास लावे।

मुख में को मैल मेटे शोभा नई दिखावे ॥
दलदार है मसालेदार नारि को सिंगारा ॥
म्हारे ताम्बूल तन पै गुण लागें न्यारा न्यारा ॥
खातों ही काम ज्वाला परचंड होय आवे ॥
नित खात नंदलाला बाला सबै रिझावे ॥
तुमहू तो मोकों वाकी रिझवारसी दिखाओ ॥
हरिदास डुलिया हेर हेर मांगो सो बताओ ॥ ६

प्रिया जी वचन

अरी प्यारी तमोलन तेरे पानों को हाल सुन मो मन तोसों और कछू पूछवे को चित चाहे है, नेक याही ठौर ठहरजा ॥ १०

पद

आज बसो यहिं बरइन बिहनी ॥ टेक
तुम्हरो रूप लुभायो मो मन, नीकी है बतियों की कहनी ॥
होय इकंत सुचित मैं लैहों, तुम्हरी जो २ सौदा चहनी ॥
सौदा बेचो पग श्रम मेटो, भावेगी तुम्हें इत की रहनी ॥
सांझ परी अब रैन अंधेरी, ठहरो रात दुवहु सम पहुनी ॥
दीसत हो हरिदास उदासी, मो सम तुमहू नारि बिरहनी ॥ ११

दोहा

सुनत बचन भई डह डही, प्रेम उमगि सब गात ।
गद गद सुर तंबोलनी, कहत न मुख सों बात ॥
घूरत प्यारी तन चिते, छन ही मन अकुलाय ।
बिबस होय झुक झुक परे, डुलिया पर सिर नाय ॥ १२

वार्तिक

यह हाल देख लाड़ली जी सखी को बुलाय बोली अरी बीर या बरइन को कहा होय गयो जो बेसुध होइ जावे है ॥ १४

दोहा

चित्रा चतुर निहार के, बरइन की सब देह ।

बोली यह तो मगन है, सखि काहू के नेह ॥ १५
जो लेने सो लेय के, करदो विदा बरैन ।
जा अचेत अब होयगी, ज्यों भींजेगी रैन ॥ १६

वार्तिक

यह सुन तमोलन अकुलाय के उठ खड़ी भई अरु बोली प्यारी मैं तो मनही मन अंत कहूं जाय बैठी रही अब सावधान भई जो आप कहो सो करूं ॥ १७

दोहा

उठी झपट तंबोलनी, लागी बीरा देन ।
सखी निरख बनमाल उर, राधहिं बोली बैन ॥ १८

सखी बचन

अरी प्यारी जोतो छलिया नंदलाल दीसे है यह सुन प्रिया जी घूर घूर वाको देखिवे लगी ॥ १९

दोहा

समाजी बचन

दृष्टि परस्पर जब मिली, दुहुं दिशि बढ्यो हुलास ।
प्यारे बरइन रूप को, प्रिया बिठायो पास ॥ २०
सखियों ने जुगल रूप की आरती उतारी ॥
इति श्री बरइन लीला

अथ गंधीगिरनी लीला

दोहा

ध्यान धरो जाको सदा, सनकादिक मुनि वृंद ।
सोइ छलन श्री राधिका, नट नागर वृज चंद ॥ १
एक समय मन में हरष, बनि के सुंदर बाम ।
गंधीगिरनी रूप सों, गई बरसाने गांम ॥ २

वार्तिक

गलियों में घूमती २ ऊंची टेर सों कहिवे लगी ॥ ३

दोहा

गंधी गिरनी दूर की, ले लेव तेल फुलेल ।
चोखी सौदा लाई हूं, चीजें हैं बिन मेल ॥
या पुर जो रिझवार हो, लेहु करहु न झेल ॥
भई हरिदास निहाल में, नगर भयो मम खेल ॥ ४

वार्तिक

यह सुन श्री लाड़िली जू के मंदिर से एक सखी निकसि बोली ५

छंद

कौन देश ते आई सखी तुम कौन तुम्हारो गांव ॥
चलु मो संगरी गंधीगिरनी भानु लली दिखरांव ॥
तू तरुनी इकली कत डोलत बोलत बोली प्यारी ॥
तिरछी चितवन बान चलावत चाल चले मतवारी ॥
चलो २ राधा कहँ देखो याही मंदिर माहीं ॥
तोसी नित आवत हैं लाखों विमुख न कोई जाहीं ॥ ६

वार्तिक

गंधी गिरनी बोली अरी सखी मैं तो या नगरी ते निपट निरास होय जात हुती यहां को हाल तो या प्रकार देखवे में आयो ॥ ७

दोहा

कर फुलेल को आचमन, मीठो कहत सराय ।
ये गंधी मति अंध तू, अतर दिखावत काय ॥ ८

सखी बोली

अरी तू तो सिगरे बरसाने की निंदा करै है ऐसे गरूरी ते कौन तेरो सौदा लेगो ॥ ९

रेखता

गरबीली अपने रूप की बोले गरूरी बोली ॥
मद माती गली कूचों में फिरती डोली डोली ॥
बेंचे है तेल घर घर इतरावे बात पूछे ॥
यातें बिके न सौदा मटके है हाथ छूछे ॥
ऐसी छमक बारी व्यापारन न देखी ॥
अड़की को अतर बेंचे मारे है बड़ी सेखी ॥
ऐसेही तेरे गुण को सुन ले जो राधा रानी ॥
हरिदास पट न खोलो कहती मैं हाथ तानी ॥

वार्तिक

सखी को कछुक क्रोधित देख गंधीगिरनी बोली अरी बीर मैं तो सहज स्वभाव ही या नगरी को हाल बतायो अब मोकों भीतर ले चल, सखी बोली चलो बीर ॥ ११

छंद

इन दोउन की बातें सुन के राधा द्वारे आई ॥
हाथ पकड़ गंधीगिरनी को भीतर गई लेवाई ॥
रूप अनूप देखि हरषानी बड़े गोप की जाई ॥
हँस २ दोई करन लगे बातें आसन पै बैठाई ॥ १२

प्रिया जी बचन

अरी गंधीगिरनी जो जो वस्तु मोरे लायक होय सो दिखाओ, वाने तुरंत संदूक खोल्यो अरु बोली ॥ १३

छंद

सांझ भई मोहे डोलत २ कोउ न बात बिचारी ॥
इक तुमही रिझवार दिखानी श्री वृखभान दुलारी ॥
वस्तु अनेक भरी जा पेटी जो चाहो सो लेवी ॥
मैं दामन की भूखी नाहीं प्रेम परीक्षा देवी ॥ १४

प्रिया जी बचन

प्यारी तूही सीशी खोल सब सुगंधों के नाम बताओ फेर मैं परसन्न करूंगी ॥ १५

गंधीगिरनी बचन

छंद

इतर गुलाब हिना अरु केवड़ा खस खस मोरछली को ॥
अंबर और अरगजा सूंघत दिल खुश होय लली को ॥
बेल मोंगरा और चमेली चंपा चोप बढ़ावै ॥
जाही जुही मोतिया सुंदर सूंघत मस्त जुवावै ॥
बरण २ के तेल सुहावन मन भावन रुचिकारी ॥
हैं हरिदास तुम्हारे कारण लेवहु राधा प्यारी ॥ १६

वार्तिक

यह कहि सीकों में रुई लपटाय प्रिया जी को हाथ बढ़ाय सुंघायवे लगी, वाही समय सखी पीताम्बर की कछनी कमर में देख बोली ॥ १७

दोहा

अरी सखी याती कसे, पीताम्बर कटि बीच ।
दीसे है छलिया लला, बस्तर लेवहु खींच ॥ १८

वार्तिक

प्रिया जी ने ओढ़नी सिर से उतार लालजी को रूप देख मुसकराय दियो, लालजी हूं हंसिवे लगे, सखियों ने दोहू जनों को सिंहासन में बैठाय आरती उतारी ॥ १९

रेखता

आनंद कंद मोरे नित रूप नये धरौ ।
छल छंद में आनंद सदा पायबू करौ ॥
छलवे में मेरे प्यारे तुम्हें होत कछु भारी ।
ब्रजनाथ रमानाथ मोरे प्रण सौख्य कारी ॥
आवो न चाहिये तुम को सब मान पान खोई ।

बिनहू बनाये बनिता को भेष मिलन होई ॥
हम करि हैं बात सोई जो आप हमको कहिये ।
याही सलौने भेष माहिं मिलत नित्त रहिये ॥
सखियां सहेली सारी तुम देख के हंसे ।
हरिदास रशिक जन उर यह सूरती बसे ॥२०॥

इति

अथ छल लीला

दोहा

एक समय श्री लाड़ली , मन में कियो विचार ।
धर मरदानै भेष को , छलिये नंद कुमार ॥१॥
बनीं सिपाही सब सखी , आप भई सरदार ।
सज २ के साजे चलीं , पहुंचीं बिपिन मझार ॥२॥

वार्तिक

जहां नंदलाल जी सखों के संग धेनु चराय रहे, वाही ठौर पहुंचीं ॥३॥

पद

सब गोप सिपाह सयानी , सिरदारिन राधे रानी ॥टेक॥
पग पनही पैजामा पहिरे , बांधे कटि पटलानी ।
एक रंग के अंग अंगरखा , सिर पगियां लपटानी ॥
कर तरवार तुवक कांधे पै , तरकश तीर कमानी ।
और अनेक शस्त्र सब साजे, छवि नाहिं जात बखानी ॥
सेनापति के पाछे सेना , चाल चले मरदानी ।
पहुंचे बिपिन जहां नँद नंदन , समर ध्वजा फहरानी ॥
चकित भये सब ग्वालि निरखि यह, कौतुक बुद्धि भुलानी ।
मन विहंसे हरिदास कन्हैया , छदम प्रिया को जानी ॥४॥

ग्वालों के वचन लालजी प्रति

पद

चढ़ आयो कोई भूपति भारी ॥टेक॥

आय अचानक वन में घेरो, अब कहां भाजि के जाव मुरारी॥
जितनी आईं उपाधें हम पै, तुमहीं तितनी दीन्हीं टारी।
जा सेना सब सज बज के आई, चढ़ि २ एक ते एक सवारी॥
ऐसी हम अबलों ना देखी, तन कांपत मन होत दुखारी।
तुमरे ही हरिदास भरोसे, अब प्रभुता दिखराओ तुम्हारी॥

लालजी वचन सखों प्रति

पद

काहे को घबरात सखा हो, वन देवी वन देव सहाई।
तुमरे देखत कितनी आपति, उनही ने सब दीन्ह मिटाई॥
भय को त्याग धरो सब धीरज, रहिहै ना जो समय सदाई।
सैन समीप आवतहिं हमरे, रहि जैहैं सब दांत चबाई॥
मैं जानों हरिदास मरम सब, काहे गये तुम सब घबराई॥६॥

वार्तिक

जब सेना समीप आई, तब श्रीदामा बोल्यो, भैया कौन हो कहां ते आये, तब ललिता बोली ॥७॥

पद

कंस रजा कर लेन पठाये॥ टेक॥

तुम सब गोकुल छांडि बसे बन, तब से भूपति राज भुलाये।
अब इकठौलो कर सब लावो, काज सरे नहि बात बनाये॥
नेक बिलम्ब भये तुम सिगरे, बचिहो ना काहू के बचाये।
जो कबहूं सरदार रिसाने, कर बनिहैं हरिदास बंधाये॥ ८॥

लालजी बचन ललिता प्रति

रेखता

इतरावो काहे इतने कत बात कों बढ़ाओ।

बनवाये कांच नौका, बिन नीर के चलाओ ॥
रोपो भवन पवन में, बालू की भीत बांधो।
लघु कीट पींजरों में, मृगराज लाय बांधो ॥
कर जोर के सबन कों, सिरदार कर मैं देहों।
जो तीन पांच करिहो, हथियार छीन लेहों ॥
मुख को सम्हार बोलो, हम जाने तुम्हरी घातें।
नृप के पठाये मारे, सब भूल गये बातें ॥
है छोटो बड़ो जैसो, सब कोई अपने घर में।
कीजे विचार कारज, हरिदास बल बगर में ॥ ९ ॥

बार्तिक

यह सुन प्रिया जी बोल उठीं ॥ १० ॥

दोहा

छौना जात अहीर के, नृपहि न नेक डरात।
बन बन डोलत फिरत हो, छोटे मुंह बड़िबात ॥ ११
जाकी धरनी पै बसो, तासों करत बिगार।
या में कहि है कोउ ना, भलो तुमहिं संसार ॥ १२

लालजी बचन

पद

जो परजा राजा की ह्वै है, सो तुव भूपति कौ भय खावे ॥
जो त्रैलोक्य नृपति को राजा, ताको कंस कहा डरवावे ॥
मारों कंस उलटि दों मथुरा, जब तो तुम को सांची आवे ॥
असुर सिंहासन की सुधि भूली, जब भूपति मन में घबरावे ॥
अबला होहिं कलहुं सबला कहुं, छल को मानु उतै चलि आवे ॥
मैं हरिदास मरम सब जानों, चाहे जित कोउ भाव छुपावे ॥१३

बार्तिक

यह सुन प्रिया जी ने मुसकराय दीन्हों अरु हांथ पसारते में उनकी वेणी की लट गले में दीख पड़ी तब लालजी बोले ॥१४

दोहा

काहे को तिरिया भई, कठिन पुरुष को रूप।
इतनो श्रम नाहक कियो, बनिके अनुचर भूप॥१५

प्रिया जी बचन

मोहन तुम्हरे कारणें, ढूंढे बिपिन पहार।
लहो नेक बिसराम नहिं, तुम बिन नंद कुमार॥१६॥

वार्तिक

यह कहि परस्पर हाथ धरिके हँसबे लगे, अरु सखियों ने अपने २ निज रूप प्रगट कीन्हें, प्रिया प्रीतम को कुंज महल में जड़ाऊ चौकी पर बैठाय आरती उतारी अरु गायबे लगीं॥१७

पद

आज दोऊ दामिनि मिल बिहँसी॥टेक॥
बिचले स्याम घटा अति नूतन, ताके रंग रसी।
एक चमक चहुंओर सखी री, अपने स्वभाव लसी॥
आई एक सरस गहनी में, दुहुं भुज बीच बसी।
अंबुज नील उभय बिधु राजत, तिनकी चलन खसी।
जै श्री, हित हरिबंश लोभ भेंटन मन, पूरण शरद शसी॥१८

इति श्री छदम लीला

अथ मनहारिन लीला

दोहा

अति प्रवीण छल छंद में, नट नागर बृजराज।
छलन हेतु श्री लालड़ी, सजत बिबिध बिधि साज॥१
एक समय चुरहारिणी, बन के श्री नंद नंद।
बरसाने बेचन चले, चूरी चाल गयंद॥२॥

छंद

घूम घुमारो लहँगा पहिरो, अरु अंगियां जरतारी.
नील बरन तन पै चूनरिया, चारु चपेटन वारी.
सकल जनानो गहनो पहिरो, ले डलिया भर चूरी.
बरसाने की गलन २ में, फिरे गुणन की पूरी. ३

वार्तिक

मोहनी रूप गलियों में टेर कहिवे लगी ॥४

पद

कोई ले लेव लाल की चुरियां ॥टेक॥
गलन गलन मनियारी पुकारे, सखियां बैठी अटरियां।
हीरा पन्ना और जवाहिर, लंबी मोती लरियां॥
नीली पीली सेत गुलाबी, लेव जड़ाऊ जुरियां।
कब की टेर रही मैं द्वारे, कोउ नहीं वाहरियां॥
लाल रतन को ग्राहक कोई, दीसे ना या पुरियां।
जाउं लौट हरिदास यहां से, फेर करोगी किरियां ॥५

वार्तिक

या प्रकार डोलती श्री वृषभानु के द्वार जाय एक सखी सों बोली॥६

छंद

दूर देश की मैं मनियारी, आई हौं बरसाने।
मंदिर कौन राधिका जूके, सो हम को अब जाने॥
ये चुरियां लाखन की जुरियां, को जग पहरन हारी।
पहरे जी वृषभान लाड़ली, कीरत कुंवरि दुलारी॥
ताही की ठकुराई सुनके, सखी दूर से आई।
वाही को अब मंदिर मोकों, जल्दी देहु बताई ॥७

सखी बचन

अरी मनियारी तू भली दीसे, जा द्वार पै खड़ी वाही को नाम पूछे है ॥८॥

छंद

भौंहै गोल गरूर हैं तेरी, अरी नवल मनियारी।
घूंघट में मुस्कात सयानी, नैन चुटीले भारी॥
मुदित होत देखत तुम्हें सिगरे, या पुर के नर नारी।
रंग सांवरी गुणन भरी तू, सौदागिरनी प्यारी॥६॥

मनयारी वचन

बड़े मोल की चूरी मेरी, नगर न ग्राहक कोई।
पड़ी हमारी फेरी खाली, घर घर आई टटोई॥
नील मणी की चूरी मेरी, पहरन लाइक कोई।
या घर छांड़ और ना दीसे, भागवान जो लेई॥
जिहिं नगरी रिझवार नहीं है, सौदागिर क्यों जावें।
वस्तु घनेरी गांठ हमारे, बिन ग्राहक पछतावें॥१०॥

सखी वचन

वार्तिक

अरी प्यारी मनियारी याही घर तोको अधिक काम होयगो तू इतनी बड़ी २ बातें काहे करे है॥११॥

छंद

कांच की बेचन हारी भामिनि, कहां अधिक इतरावे।
हमरे भूप और लाखन की, नित प्रति वस्तु बिकावे॥
पुर बजार तू देखी नाहीं, अति गरबीली नारी।
ब्यापारन अबहीं बन आई, बात न कहत बिचारी॥
तोहि चलों ले भूप भवन को, क्यों उदास तू होई।
लेहि लाड़ली राधा तेरी, सबरी सौदा जोई॥१२॥

वार्तिक

यह सुन मनयारी ने सखी की ठोडी गही अरु बड़ी प्रसन्न भई, बोली चलो सखी मोको शीघ्र ही ले चलो, दोई मिल पौर में गई॥१३॥

सखी वचन

दोहा

पौर बीच ठाड़ी भई, कही सखी समुझाय ।
गुणन प्रगट कर सांवरी, लैहैं तोहि बुलाय ॥१४॥

मनियारिन बोली

पद

चलु चलु चुरियां पहिरन हारी ॥टेक॥
कब की ठाड़ी भूप भवन पै, दूर देश की है मनियारी ।
गोरी२ बहियां में पहिराऊं, चूरी चमकीली नीली अरु कारी ॥
जो कोई हो रिझवार यहां पै, लेहु बुला मोहि होत अबारी ।
चलु सौदा हरिदास करूं अब, वेग करो मुहि होत अबारी ॥१५

वार्तिक

यह टेर सुन चित्रा सखी बाहर आय बोली, अरी मनियारिन सांझ होइ आई, अब याही ठौर रहिजावे, प्रातःकाल चूरी पहिराय के चली जाइयो ॥१६॥

मनियारिन वचन

पद

नाहिं बसों पर घर मैं प्यारी ॥टेक॥
खीजैगो सगरो घर मोते, सास ससुर अरु ननदी बारी ॥
नाहक मोहि कलंक लगेगो, नाम धरेंगे सब नर नारी ॥
देहु बिदा हरिदास मुहे अब, वार बार बलि जाऊं तुम्हारी ॥

चित्रा वचन—दोहा

एक बार भीतर चलो, प्यारी सों बतराय ।
भलो लगे सो कीजियो, येही सरल उपाय ॥१८॥

वार्तिक

मन में आनंद मान झूमत झुकत भीतर चली याको देख श्री लाड़ली जी बोली ॥१९॥

दोहा

अरी सांवरी गुण भरी, दीसे मोहि अनूप ।
कै बेंचत चूरी सखी, कै बेंचत है रूप ॥ २०

मनहारिन वचन

मोह खिलौना जिन करो, राज कुंवरि बल जाउं ।
तन थाक्यो वासर गयो, फिरत फिरत सब गाउं ॥ २१

लाड़िली वचन

मुख दीखत है डहडहो, लागत चिकनो गात ।
थाकी कैसी कहतु है, ऊपर कैहीं बात ॥ २२

मनहारिन बोली

पद

कपट कला कछु मोहि न आवे ॥ टेक
चोखी चूरी छुरला बेचूं, घट बढ़ नेक न मोहि सुहावे ।
चोखी प्रीति की भीत सदा है, झूठी सांची मोहि न आवे ।
हों हरिदास मान की भूखी, कौन कपट सो मोहिं दिखावे ॥२३

मनहारिन वचन प्रियाजी प्रति

रेखता

हम से न करो हांसी बड़े गोप की लली ॥
हों जो मनहारी प्रेम पारखी भली ॥
नहिं दास सों है काम वस्तु लेव जो चहे ॥
चूड़ी हमारी पहिरें सौभाग्य को लहे ॥
पहिराऊं अपने कर सों नग बीन बीन के ॥
सुख कौन भांति कर हो तुम चीन्ह चीन्ह के ॥
दिल खोल के कहों मैं लागो है मोह प्यारी ॥
हरिदास कही मानरी वृखभान की दुलारी ॥ २४

प्रिया जी बचन

रेखता

मनहारी मद की माती लावे है लाखों बातें ॥

वेचे हैं कांच चुरियां करती है वड़ी बातें ॥
पग पग में रूप तोले डोले गली गली ॥
छलिया को रूप धारो छलिवे हयें चली ॥
थोड़ीसी वैस तेरी भोरी दिखे मन्यारी ॥
मुसक्या के जादू मारे नैनों की कर कटारी ॥
चुरिहार जात नीची बोले है ऊंची बोली ॥
वृखभान पौर जाके मानो करे ठठोली ॥
सब भांति रूप सुंदर हरिदास लगे प्यारी ॥
रहजा भुवन हमारे कहि मान ले हमारी ॥ २५

दोहा

आउ सांवरी निकट तू , देखों बदन तिहार ।
एक बात ही में चिरी , क्रोध दूर दे डार ॥ २६
शीतल हो व्यापारनी, तेरो ऐसो काम ।
तजो तमक नई वैस की , फिरवो है वहु धाम ॥ २७

मनहारी बचन

हों आई तक राज घर , करत प्रथम पहिचान ।
बिन सौदा हांसी करो, यामें हित की हान ॥ २८

श्री लाड़ली बचन

कासों है तू हित कियो , अब लग परी न दृष्टि ।
बात कहत उरझे सखी , रची कौन विधि सृष्टि ॥ २९
ऊपर आसन बैठि के , खोलो डलिया आव ।
मोरे लायक होय जो ; सो मोकों पहिराव ॥ ३०

वार्तिक

या कहि के प्रिया जी ने मणि चौकी से अपनो हाथ पसार दीन्हों अरु मनहारी सुंदर २ चूरी पहिरावे लगी, प्रिया जी के हाथ को छूवते ही मनहारी को शरीर फूल गयो अरु आनंद में मग्न होय कांपिवे लगी ॥ ३१

प्रिया जी वचन

अरी सखी तू काहे को कांपे है ॥ ३२

मनहारी वचन

दोहा

तुम लायक चूरी कुंवरि , भूली हों निज गेह ।
याही डरते लाड़ली , कांपत है मम देह ॥ ३३

वार्तिक

यह कहि प्रेम में विह्वल होय मौन होय रहीं याको हाल देख ललिता बोली ॥ ३४

दोहा

परम गुणीलो नंद सुत , मैं देखो टकटोय ।
अहो प्रिया प्रीतम विना , ऐसो प्रेम न होय ॥ ३५

वार्तिक

प्रियाजी ने आंखों में गुलाब जल छिड़क दियो अरु दाढ़ी चूम के बोली ॥

रेखता

धनि धन्य नंद नंदन तुम्हरी हैं ऐसी बातें ॥
जब देखो तबै आके मो संग करो घातें ॥
नित नये रूप धारो तुम मोरे छलवे काजें ॥
ऐसे हू काम कीन्हें नित नाहिं आवे लाजें ॥
तुम नंद के हो ढोटा सीखो न जा कुचाली ॥
यह हाल देख २ हांसी करे संग आली ॥
मैं जान लीन्हें तुमरे छल छंद भली भांती ॥
हरिदास तुम को लेके अपनी लगाउं छाती ॥ ३७

वार्तिक

या उपरान्त दुहूं जन गलबहियां देय जड़ाऊ चौकी पर बैठे अरु सखिन ने आरती उतारी ॥ ३८

इति श्री मनहारिन लीला

अथ अवधूतन लीला

दोहा

नंद लाल अति कौतुकी , कीन्हों यहै विचार ।
अवधूतन को भेष धर , छलिये भानु कुमार ॥
वनिता भेष बनाय के , वरसाने नियराय ।
बगिया में वृखभान की , तुरतहिं उतरे जाय ॥१॥

वार्तिक

इनको रूप अनूप देख कें सखियों ने जाय के श्री लाड़ली जू से कही ॥१॥

पद

कहे कृष्ण कृष्ण रटिलाई , बगिया अवधूतन आई ॥टेक॥
सरवर तीर पहुप बंगला में , बैठी आसन लाई ॥
छवि की आगर रूप उजागर , लांबी लट छुटकाई ॥
स्याम बरण तनकी अति प्यारी , नील मणी छवि छाई ॥
भाल तिलक जटा जूट बिराजे , गल सेली लटकाई ॥
कजरारे रतनारे नैना , भौंह कमान चढ़ाई ॥
मंद हंसन दाडिम दुति दांतन , चितवत चित्त चुराई ॥
बीना अंक मधुर सुर बाजे , गावत टेर लगाई ॥
तरु तरुणी पशु पक्षी मोहे , सरिता धार थकाई ॥
तान तरंगन आप छकी पुनि , औरन देत छकाई ॥
शिव समाधि तजि विधि जप भूले , और की कहां चलाई ॥
वृज मंडल भूमंडल ऐसी , गुणवंती न दिखाई ॥
लाहु लिवाय चलो घर वाको, हरीदास बलजाई ॥१॥

वार्तिक

यह वृतान्त सुन प्रिया जी प्रसन्न होय अति अकुलाय के बोलीं चलो सखी वाको बुलाय लावें ॥६॥

पद

चलो सखि वाहि लिवा घर लैये ॥टेक॥
ऐसी गुणन भरी भामिनि को, अबहीं देखत नैन जुड़ैये।
ऊंची अटारन आसन देके, दरशन को सब नारि बुलैये॥
वा ढिग रहि हरिदास मगन मन, सेवा करि जिन भाग मनैये॥

वार्तिक

यह विचार करि श्री प्रिया जी सखियों के साथ बगिया में पहुंचीं अरु अवधूतन के रूप पै मोहित होय बोलीं ॥७॥

पद

तू सजनी मन में अति भाई ॥टेक॥
पुर बाहर सब आज तुम्हारे, बरणत हैं गुण लोग लुगाई।
सुनके मैंहुं भवन अकुलानी, तुव दरशन को दौरी आई।
राग अलाप सुनाय कृपाकर, दरशन ते हरिदास अघाई ॥८

बार्तिक

यह वचन सुन सांवरी अवधूतनी ने प्रियाजी को आदर पूर्वक बैठायो ॥९॥

दोहा

जब दोऊ सनमुख भये, मिले नैन सों नैन।
मन से मन अरुझे तबै, स्यामा बोली बैन ॥१०

बार्तिक

अवधूतनी वचन

मैंहूं तुम्हें देखि प्रसन्न भई, अब गाऊं हूं सो मन लगाय के सुनौ, यह कहि बीणा सुधार गायवे लगी ॥११॥

पद

लरकाई को प्रेम कहो अलि कैसे के छूटत ॥टेक॥

कहा कहों ब्रजनाथ चरित यह, वह अंतर गति लूटत ॥
चंचल चाल मनोहर चितवन, वे मुसकानि मंद धुनि गावत ॥
नटवर भेष नंद नंदन को, यह बिनोद गृह बनके आवत ॥
चरण कमल की शपथ करत हों, यह संदेश मुहि बिष सम लागत ॥
सूरदास मुहि निमिष न बिसरत, मोहन मूरत सोवत जागत ॥

पद

ऊधो जाके माथे भाग ॥टेक॥
अबलनि योग सिखावन आये, चेरिहि चपरि सुहाग ॥
आये बावन योग की बेली, काट प्रेम को बाग ॥
कुबजहिं करि आये पटरानी, हमहिं देत बैराग ॥
लौंड़ी की डोड़ी बाजी जग, हरि हांसी को राग ॥
कुबजा कमल नयन मिल खेलत, बारहि मासी फाग ॥
मिल्यो सुहायो साथ स्याम को, कहां हंस कहां कांग ॥
सूरदास प्रभु ऊख छांडि के, चतुर चिचोरत आग ॥१३॥

पद

योग ठगोरी ब्रज न बिकै है ॥टेक॥
यह व्योपार तुम्हारो ऊधो, ऐसे ही फिर जैहै ॥
जापै लै आये हो मधुकुर, ताके उर न समैहै ॥
दाख छोड़ि के कटुक निबोरी, को अपने मुख खैहै ॥
मूरी के पातन के कोइना, को मुक्ताहल देहै ॥
सूरदास प्रभु गुणहि छोड़िके, को निर्गुण निरबैहै ॥१४॥

पद

हमरे कौन योग ब्रत साधे ॥टेक॥
मृग त्वचि भस्म अधारि जटाको, को इतने अवराधे ॥
जाकी कहूं हार ही पैये, अगम अपार अगाधे ॥
गिरधर लाल छबीले मुख पर, एते बांध को बांधे ॥
आसन पवन बिभूति मृग छाला, ध्याननि को अवराधे ॥

सूरदास माणिक परिहर के, राखे गांठ को बांधे ॥ १५

पद

बिन गोपाल बैरन भई कुंजें ॥ टेक

तब ये लता लगत अति शीतल, अब भई विषम ज्वाल की पुंजें.
वृथा वहत यमुना खग बोलत, वृथा कमल फूलें अलि गुंजें.
पवन पानि धन सार सजीवन, दधि सुत किरनि भान भई भुंजें.
ये ऊधो माधो से कहियो, विरह कदन करि मारत लुंजें.
सूरदास प्रभु को मग जोवत, अखियां भई बरन ज्यों गुंजें. १६

पद

कहे कोई परदेशी की बात ॥ टेक

मंदिर माग आदर कर ले गये, हरि भखु देखो ज्यात ॥
मघ पंचक ले गये श्याम घन, ताते मन अकुलात ॥
मन मोहन बिन रहि न परतु है, वार वार बिलखात ॥
सूरदास वस भई विरह के, कर मींजे पछतात ॥ १७

वार्तिक

अवधूतनी को गान सुन के प्रिया जी प्रसन्न होय बोलीं ॥१८

रेखता

अवधूतनी है धन्य तोहि तूहै गुण भरी ।
वहु मान जोग रूप तेरो तान की खरी ॥
तुम हो प्रवीण विद्या में कला कौशलाई ।
तुम को है धन्य धन्य गुरु जिन तुम्हें सिखाई ॥
तुव चातुरी को देखिवे की लालसा हमारी ।
बरसाने बीच चलो रहो एकली अटारी ॥
जुर मिल के सखियां सारी टहल करेंगीं तुम्हारी ।
हरिदास बिन्ती मानो अब भामिनी पियारी ॥ १९

वार्तिक

यह बचन सुनके अवधूतनी ने मुख मोर लियो अरु

वीणा कंथा ते उतार अति रूखी मुद्रा बनाय बैठी यह देख ल-
लिता बोली ॥ २०

दोहा

कहो पियारी भामिनी, का कारण बलि जाउं ।
तुम उदास अति ही भई, सुनत धाम को नाउं ॥ २१

अवधूतनी वचन

दोहा

मेरे छक है गुणन की, सुनो खोल के कान ।
पर घर जाये ते कहूं, होवे ना अपमान ॥२२॥

ललिता वचन

दोहा

तुम्हें प्राण सम राखि हैं, लाड़ नयो नित होय ।
अहो गुणीली भामिनी, संशय मन ते खोय ॥ २३
गुण ग्राहक बिरचे नहीं, दूर करो संदेह ।
जो गुण को जाने नहीं, परिहर तिनके गेह ॥ २४॥

अवधूतनी वचन

दोहा

यह सुन भई जो डहडही, सखी सांवरी गात ।
चंपक बरणी धन्य तू, कही समझ की बात ॥ २५
अब हों निश्चय चलोंगी, जान तुम्हारो हेत ।
तो मन थाह मिली अटू, राधा उतर न देत ॥ २६

लाड़ली वचन

दोहा

कहा न्याय सो करत हो, कहत अति लड़े बैन ।
सुख पावे तो बिरमियो, नहिं कर जैयो गौन ॥ २७

समाजी वचन

दोहा

मसकि उठी कर बीन लै, लगी कुंवरि के साथ।
निपट मंद गमनी भई, गहि प्यारी को हाथ ॥२८
गोपन के मंदिर जिते, सब को बूझत नाम।
तन श्रम अधिक बता कहे, कितक दूर तव धाम ॥२९॥

अवधूतनी वचन

पद

राधे धीरे चलो मैं हारी ॥ टेक ॥
पग चलवे में होत बहुल श्रम, गजरथ तुरंग की बैठन हारी ॥
केतक दूर भवन अब तुम्हरो, सांची कहो वृषभान दुलारी ॥
नियरे जान चले हम पायन, देह दशा तुम नेह बिसारी ॥
गुण ग्राहक हरिदास इते ना, सखी लगी अब हम को भारी॥३०

वार्तिक

यह सुन प्रियाजी लजाय के बोली ॥ ३१ ॥

पद

जो कछु आयसु होय तुम्हारी, सोई सखी ललिता ले आवे ॥
तात रजा वृखभान हमारे, माता कीरति रानी कहावे ॥
आठों सिद्धि नवों निधि इनके, कौनऊ बात कमी नहिं आवे॥
गजरथ की कहा बात चलाई, चाहे सुरपति यान बुलावे ॥
घर चलि के हरिदास दिखैहों, जो कछु वैभव होय हमारे॥३२

वार्तिक

या प्रकार परस्पर बातें चीतें करत २ ही वृखभान मंदिर के समीप पहुंची अरु लाड़ली जी ने अवधूतनी को एक भवन में उतार दीन्हों ॥२३॥

दोहा

लै आई न्यारे भवन, बहुत करत सनमान।
अब एकान्त सुनाइये, सखी सांवरी गान ॥३४

वार्तिक

अवधूतनी ने मुसकाय के वीणा के सुर साधे, अरु चित की चोंप सों गावे लगी ॥३५॥

लावनी

सखि कैसी करूं मैं हाय न कछु वस मेरो।
बिन देखे सांवरो चंद्र द्रगन में अंधेरो ॥
सखि ऐसो सुन्दर नाहिं कोउ मैं सब जग हेरो।
वाकी जो लिखे तसवीर सो कौन चितेरो ॥
सखि कठिन छैल को बिरह आनि मुहि घेरो।
सिगरी निशि तारे गिनतहि होत सवेरो ॥
सखि जो तू मिलावे आज वह रूप उजेरो।
जब लों जीवोंगी गुण न भूलूंगी तेरो ॥
सखी नारायण जो न मिले वह मन को लूटेरो।
तब नंद द्वार पै जाय करूंगी डेरो ॥३६

वार्तिक

यह गायन सुन सब सखी रिझाय के प्रशंसा करवे लगीं अरु लाड़ली जी बोली ॥३७॥

दोहा

अहो सहेली सांवरी, कर यहि नगर निवास।
असन बसन करि हौं सखी, रहु नित मेरे पास ॥३८॥

अवधूतानी बोली

दोहा

मोहि न भावें नगर घर, यामें शंक न कोय।
आवत जात रहौं सदा, जो रावर हित होय ॥

वार्तिक

मन में प्रसन्न होय लाड़ली जी ने भेद निकासिवे के हेतु सखियों को बाजे बजायवे कही अरु आप बीन बजाय के गायवे लगीं ॥४०॥

पद-मांड

श्री स्याम सों संदेसो मेरो जाय कहियोरे ॥ टेक
बैठी नियत निकुंज में बिरहिनि राधा बाल ॥
मंत्र तुम्हारे नाम को जपत रहत नंदलाल ॥
पल २ जोवत पीय मग पहुंची परत अधीर ।
रसन पंखी नहिं उठत जिमि परो पींजरा कीर ॥
रात द्यौस हू में रहे मानन टिक ठहराय ।
जेते अवगुण ढूंढ़िये गुने हाथ परिजाय ॥
मोर मुकुट कटि काछनी पीताम्बर बन माल ।
यह सूरत मेरे मन बसो सदा बिहारीलाल ॥
कर मुरली लकुटी गहे घूंघर वारे केश ।
यह बानिक मन में बसो स्याम मनोहर वेश ॥
या अनुरागी चित्त की गति समझे नहिं कोय ।
ज्यों २ बूड़े स्याम रंग त्यों २ उज्वल होय ॥ ४१

दोहा

सखिन और बाने लिखे, प्यारी लैकर बीन ।
ग्रीव डुलाई सांवरी, गायो कुंवरि प्रवीन ॥ ४२
जब उघरी संगीत गत, प्यारी दे कर ताल ।
बिसर गई सुध सांवरी, नृत्यत गति नंदलाल ॥ ४३

वार्तिक

प्रियाजी ने फेर दूसरो राग गायो ॥ ४४

पद

नटवर लाल नचै सांगीत ॥ टेक
अधर धरे मृदु बैन बजावत, उड़त उपर ना पीत ।
ग्रीव डुलन तिरछी सी चितवन, करत मदन की गीत ॥
थेई २ करत नवल गत लैलै, लखत प्रियाहि जमीन ।
लख हरिदास सुमन सुर बरसत, वृज बनतन को मीन ॥४५॥

दोहा

है त्रिभंग ठाड़ी भई, कर मुरली को भाव।
कूक चले अंगुरी चले, भूली कपट कुदाव॥ ४६
राधा राधा रट लगी, अधरन ही के माह।
समझ २ ललिता कही, यह तो भामिनि नाह॥ ४७

वार्तिक

नाचती २ अबधूतनी प्रेम में मगन होय, अपनो हाथ पसार प्रिया जी के कांधे धरवे लगी तब प्रिया जी सावधान होय बोली। ४८

दोहा

कान लाग चित्रा कहेउ, यह है नंदकिशोर।
ये लक्षन नीके लखे, चलन दृगन की कोर॥ ४९
भरी कटोरी फक्कर की, लाई सखी सुजान।
सब की चोली लायके, तिहि के उर से पान॥ ५०
वह अधरन ही में हंसी, यह जु हंसी मुख खोल।
यह है धूर्त शिरोमणी, कह्यो सखिन सों बोल॥५१॥

वार्तिक

सब में बैठिके हंसवे लगी, अरु प्रिया जू ने हाथ पकरि अबधूतनी को अपने समीप चौकी पै बिठाय लियो, सखियों ने आरती उतारी॥५२॥

इति अबधूतानी लीला

अथ गौनेवारी की लीला

दोहा

छलन चातुरी में चतुर , नट नागर बृजराज ।
गौने की तिरिया बने , प्रिया छलन के काज ॥ १
अंग २ भूषण सजे , सिर सिंदूर सुहाय ।
बरसाने की गलन में , डोलत मन मुसकाय ॥ २

वार्तिक

बाट में ललिता मिली ताको वचन ॥ ३

छंद

अति ही नवल नवोढ़ा नारी कहो कहां ते आई ॥
कौन काज गलियन में डोले सो मुहिं देहु बताई ॥ ४

गौनेवारी वचन

मेरी बात सुनो सजनी हों नंदगांव ते आई ॥
बसि हों एक रात कोउ लायक मुहि राखो बिलमाई ॥ ५

वार्तिक

ललिता ताकी बांह पकरि प्रिया जू के समीप लाय बोली ॥६

दोहा

बड़े भवन की भामिनी , काहू दीन रुठाय ।
निकट राखिये याहि को, प्यारी ढिग बैठाय ॥ ७

वार्तिक

प्रिया जू ने आदर पूर्वक निकट बिठा लियो, तब घूंघट मार पांय लागि के गोनेवारी बोली ॥ ८

छंद

मेरो है पीहर पूरो मुहि तहां देव पहुंचाई ॥
अति अनीति नंदगांव देखि हों पीहर चली पराई ॥ ६

प्रिया वचन

छंद

कहु अनीति कैसी तें देखी कौने तोहि दुखाई ॥
दीसत है कुलवंती मन की कहिदे सबई सचाई ॥
घर छोड़े पति कैसे पावे बड़े गोप की जाई ॥
जाहु २ घर उलट आपने दे मुहि भेद बताई ॥ १०

गौनेवारी वचन

रेखता

गौने हों अबहीं आई चतुराई नाहिं जानो ॥
भोरो स्वभाव मोरो तुम साँची बात मानो ॥
मुहि पौर ठाढ़ी देखी इक दिन कुंवर कन्हाई ॥
रिझवार रूप वोही मो मन भरी मुराई ॥
तजि और ठौर खेलन मो द्वारे धूम लाई ॥
मैं सकुचि रही भीतर उन रंग में भिजाई ॥
गावे उघारी बातें मुख मीड़े मेरो माई ॥
कहै साँवरी सलोनी दै दै बड़ी बड़ाई ॥
कहं लों मैं तन को ढांकों लाजों से भींजी जाऊं ॥
हरिदास होत हांसी गति नितहिं किहिं सुनाऊं ॥ ११

वार्तिक

अरी प्यारी और हूं दुःख सुनो ॥

पद

सासु मिली मोकों लरिहाई ॥ टेक
झगरत रहत दिवस निशि मोसों, वाही ने सुत कीन्ह बराई ॥
ननदी नींद न सोवन देवे, सिगरो कुटुम करत लंगराई ॥
नाते सों हरिदास अघानी, अंत कहूं बसि हों अब जाई ॥ १२

छंद

इक दिन हों कपाट दे बैठी, ऐसी बुद्धि उपाई ॥
खोल २ कहे लंगर मेरी, मुरली तें जु चुराई ॥

हों डरपी कैसी बनी देया यासों कहा बसाई ॥
जुर आई सब पार परोसिन तिननि मोह समझाई ॥
यह राजा को कुंवर घर वासी तैं का कुमति कमाई ॥
दे डारो मुरली अब याकी जो कहुं डरी है पाई ॥
पुनि आये सब सखा संग के बढ़ि गई भीर सवाई ॥
काहू के कर रंग कमोरी काहू रंग पिचकाई ॥
बीच परी उनकी जु मिलानियां तिनन किवार खुलाई ॥
लाल कहें ढूंढो मुरली इहिं चोली मांझ दुराई ॥
हों घूंघट दे बाहर निकसी तारी सबन बजाई ॥
भाजन रंग सीस तें डारे नख शिख मोहिं भिजाई ॥
औसर पाय निकसि कें आई मोमें कहा धुराई ॥
विधि वांधी जुगरें मोसों भा यहि मुहि नाच नचाई ॥
अब काहू ढिग बैठरहोंगी वहि पुर गयो न जाई ॥
कीजे कहा होहिं जो राजा हू को सुत अन्याई ॥ १३

वार्तिक

ऐसी २ विषाद भरी बातें सुन प्रिया जी बोली ॥ १४

दोहा

अरी छबीली दिन गयो , आई रजनी घोर ।
बसो भवन व्यारू करो , उठि जैयो बड़ि भोर ॥ १५

वार्तिक

व्यारू कराय प्रिया जी ने अंत कहूं सेज बिछवाइ दीन्ही तब गौनेवारी बोली ॥ १६

छंद

न्यारे मोहि नींद नहिं आवे और कछू न सुहाई ॥
रहि के निकट कहानी कहि हों सुनो कुंवरि चितलाई ॥१७

वार्तिक

प्रिया जू बांह पकरि ले चलीं अरु अपने समीप सेज

खिझवाई अरु पौढ़ाय के पांय पलोट बोली ३ १८

प्रिया जी वचन

छंद

तू कारी कारो जो नंद सुत कैसे प्रीति पटाई ॥
उनके मन की हों परखत तें कैधों जुगत बताई ॥
वे मो दृग पुतरीन बसत हों उन दृग माहिं समाई ॥
यह तो बात अटपटी भामिनि सुनि हों सोच दवाई ॥
मुरलीधर कें वृज अनन्य मो बिन न और मन भाई ॥
कहत कहत हीं हिय भर आयो नैनन नीर बहाई ॥
नंदगांव तें सुनि मन लरजो तोसों करी भलाई ॥
खोटी बात कही प्रीतम की हों हिय जिय अनखाई ॥ १६

वार्तिक

यह सुन लालजी को मूर्छा आय गई अरु बेसुध होय गये, तब प्रिया जी बोलीं ॥ २०

अरी ललिता, अरी विशाखा, अरी तुंगभद्रा, अरी चित्रा, देखो तो जो कौन सो कौतुक है ॥ २१

ललिता बचन

दोहा

अचरज भाहू को महां, हुतो मौन रहि लाय ॥
अब जानो प्रीतम यही, प्यारी लेहु चिताय ॥ २२

वार्तिक

यह सुन प्रिया जी घबड़ाय के उठीं प्रीतम को अंग सों लगायो अरु मूर्छा गवांय के पान की बीरी दीन्हीं, ललिता ने लालजी को सिंगार कियो पुनि मुसक्याय बोलीं ॥ २३

दोहा

छदम चातुरी में पगे, अहो लाल बलिहार ।
कौन करावे प्रीति रस, प्रभुता देवे टार ॥ २४

होरी की महिमा तुम्हें , विधिना दीन्ह पठाय .
रस विलास वातें भली , जानहुं मोहन राय . २५

छंद

करि परिहास सखी भई न्यारी रजनी सुख जु बिहाई .
वृंदावन हित रूप परम कौतुक रस लीला गाई .२६

इति गौनेवारी की लीला

अथ जोगी लीला

दोहा

एक दिवस श्री लाड़ले , जोगी भेष बनाय ।
अलख जगावत भानपुर , सिंगीं नाद बजाय १

वार्तिक

इनको रूप झरोखा में से देख प्रियाजी ललिता सों बोलीं. २

पद

मैं परख्यो बड़ी बेर तें यामें जुक्ति जोग की नाहे .
यह जोगी बसत कहां है ॥टेक॥
कौन गुरू उपदेश तें , इन घर छांड़े तात ॥
ललिता निकट बुलायकें , यासों बूझ मरम की बात ॥
चितवन भरी सनेह की , हिये ललकि कछु और॥
घर घर प्यासो सो फिरे , याके चित्त की वृति न ठौर ॥
यह जोगी भयो तो कैसो, नाहीं ज्ञान को अंग ॥
जोग जवाहिर ज्यों दिये , जो कियो होहि गुरु संग ॥३॥

दोहा

कै जोगी जादू जु करि , मोहो राज कुमार ।
सुन्दरता पै रीझ कें , लै आयो अपने लार ॥४॥

बाहर सें बिरच्यो जु अब , पुर कौतुक कियो हेत ।
रूप सवादी सौ लगे , फिर २ फेरी देत ॥५॥
जिहि देखे तन ऊजरी , तहां उरभावे नैन ।
यह औगुण हैं जोग में , सत्य कहति हों बैन ॥६॥

ललिता जी का बचन

यह जोगी तुम नृप सुता , घटती कही न जाय ।
जो संदेह सो बूझिये , अबही लेहु बुलाय ॥

प्रिया जी का बचन

अरी जो तो जोग में काचो दीसे है बुलाय ले ॥८॥

ललिता जी का बचन

चलो जोगीराज तुम्हें प्रिया जी बुलावें हैं ॥६॥

वार्तिक

जोगी आय सन्मुख बैठि गयो, परस्पर देखकें दुहूं ओर हृद-य फूल गयो मानो कोई वस्तु हरी पाई ॥१०॥

ललिता जी का बचन

दोहा

सिंगी नाद बजाय तू , राग रंगीलो गाय ।
वास भानुपुर देहिंगी , सुन्दर कुटी छवाय ॥११॥

वार्तिक

जोगी ने सिंगनाद करि ऐसो मोहनी राग अलापो जाकों सुन प्रिया जी को महान अनुराग भयो ॥१२॥

प्रिया जी दोहा

कौन मनोरथ करि भये , तुम जो परम अवधूत ।
अलख पुरुष परख्यो नहीं , हिये रावरी कूत ॥१३॥

जोगी जी रेखता

ऐसी अनीत बातें , मत रावरी बखानो .
परदा की भामिनी तुम , कहा जोग रीति जानो .

जोगी के दूर घर हैं, बिन सामरथ न पावे.
गुरु होय पूरो वोही, गहि हाथ को पठावे.
हम अलख ब्रह्म ध्यावें, नहिं भेद गोरो कारो.
सब जन्म के वरण में, वाही को है पसारो.
जन्में न जोगी कुल में, सुन ज्ञान योग धारो.
हम त्यागो राज वैभव, तुम्हें गर्भ जाको भारो.
हमरो स्वरूप रावरि, तुम नेक नहिं चीन्हों.
हरिदास साधो भील मांगतों जु जान लीन्हों.

प्रिया जी दोहा

अलख अलख जाकों कहत, बरणों ताके अंग।
जैसे फूल अकाश के, किन देखे कैसे रंग ॥१५॥

जोगी जी

दिन दस नगरी विरमते, समझ तुम्हारो नेह।
अब चरचा ऐसी करी, पग धरें न तुम्हरे गेह ॥१६॥

प्रिया जी

पद

अब अवधूत कहो सच बानी ॥टेक॥
भली भई तुम आपन मुख सों, अपनी जड़ बुन्याद बखानी।
कौन देश कुल कौन तुम्हारो, कौन नगर तुम आसन ठानी॥
नाम बता हरिदास निवाजो, हम सब सीस धरे पग आनी॥१७

वार्तिक

यह सुन प्रिया जी की ओर निहार जोगी को हियो कांपवे लगो तब सम्हार के बोल्यो ॥१८॥

जोगी जी

सुन सजनी अब तोहि बताऊं, जो कुल सांचो हाल हमारो.
देश रंगीलो बड़े कुल जन्मे, नाम धाम सुख मूल बिचारो.
विदित जगत मय लोक सखी री, प्रेम पगे जन करत पसारो.

निर्भय रहत पलत सब कोई, वास तहां मो कहं अति प्यारो.
सोह सब त्याग भये हम जोगी, विरल कियो संसार नियारो.
सुखित भये गुरु ज्ञानहिं पाके, अब हरिदास न मीठो खारो.

प्रिया जी

जोगीराज ये सब गुण तौ ब्रज मंडल हू में मिले हैं, याको छोड़ और कौन सो देश तुम्हारो होयगो ॥२०॥

वार्तिक

यह सुन जोगी बिचार के मग्न होय चुप रहे तब सखी बोली २१

दोहा

रहि रहि के बोलत सखी, हंसत नैन की कोर।
जोगी कैधों कौतुकी, सिमटत जैसे चोर ॥२२॥

जोगी जी वार्तिक

प्यारी जे सखी तो निन्दा करे हैं, याके मारे तुम्हारे ढिग कैसे विलम पाउंगो, तुम्हारी सूरत देख के अरु रसीले बचन सुनवे तो वारंवार चित्त चाहै है ॥२३॥

प्रिया जी

दोहा

चित्रा नीरे आवतू, लक्षण लखहु निराट।
रावल २ कहा कहौ, चरचा औरै घाट ॥

वार्तिक

चित्रा जोगी को देखे बोली ॥२५॥

दोहा

केश ढके शिर बसन सों, जे भीजे जु फुलेल।
जोगी नहिं भोगी सखी, ये नंद सुमन के खेल ॥२६

वार्तिक

यह सुन लालजी ने अपनो रूप प्रकट कियो तब सखियन ने युगल रूप की आरती उतारी ॥२७॥

दोहा

खेल विविधि नित नित रचैं, भींजे उर अह्लाद ।
वृंदावन हित रूप जस, श्री हरिवंश प्रसाद ॥
इति श्री जोगी लीला

—०—

अथ वैद्यन लीला

दोहा

प्रिया प्रेम बंधन फँसे, नट नागर रिझवार ।
वैदन बन पहुंचे लला, भानु कुवँरि के द्वार ॥
लहंगा चूंदरि पहिर कें, तन आभूषण लाय ।
झोरी दावे वगल में, बोलत टेर लगाय ॥३॥

सखी प्रति वैदन

पद

गुणन भरी हो हेली हकीमन ॥टेक॥
दूर देश तें या पुर आई, हौं रिझवारन की जग जीवन ।
कबकी डोलत फिरत गलन में, निकसत ना कोई नारि नसीवन ।
हों हरिदास निरास भई अब, काहि कहों निज औषधि पीवन ।

बार्तिक

यह सुन एक भामा सखी भीतर सों निकसि कें बोली, अरी प्यारी तू कौन है ॥४॥

वैदन वचन

रेखता

गुणवंती वैद बेटी वैदांग सब पढ़ी ।
लो भागवली भामिनि कोऊ मोहनी जड़ी ।
झोरी में मोरी बूटी बहु औषधी भरी ।
सब जंत्र मंत्र मो पै हैं साधना खरी ।

करवा दो जहं चिन्हारी गुण मानि हैं सो तेरो .
निज पीय को जु प्यारी भयो चाहे ताहे टेरो .
परतीत नाहिं मन में परखो तुम्हैं दिखाऊं .
राजों के भवन भीतर आदर सदा मैं पाऊं .
वलि वेग ले पधारो अपने ही साथ मोही .
हरिदास जड़ी बूटी बिन मोल देहों तोही . ५

सखी दोहा

कहा तुम्हारो देश है, कहा तुम्हारो नाम ।
कहा मोल की औषधी, कहा तुम्हारो धाम ॥६॥

वैदन दोहा

अनुरागी मंडल वसों, चटकाली है नाम ।
गुण औषधि को मोल है, प्रेम हमारो धाम ॥७॥
आदर सों मुहि ले चलो, आओ प्रथमहिं बूझ ।
हिय की चाह अचाह सब, नीके परि है सूझ ॥८॥

बार्तिक

चंपक लता प्रिया जी के समीप जाय बोली ॥६॥

पद

आई है एक वैद की नारी ॥टेक॥
विकट गिरिन की बूटी वेंचे, निपट सलौने नैनन वारी ॥
बूटी लेहु न लेहु जु वाकी, कौतुक देखहु होहु सुखारी ॥
लै आऊं हरिदास सलौनी, जो आयसु वलि होय तुम्हारी ॥१०

प्रिया जी वचन

दोहा

अरी सखी अस गुणवती, अरु शोभा की खानि ।
वेगि भवन में लाय के, करवा दे पहिचान ॥११॥

बार्तिक

सखी पिछले पांव जा वैदन सों बोली ॥१२॥

दोहा

अरी लड़ैती वैद की, प्रिया बुलावत तोहि।
अब मिलाप कर सांचहूं, निश्चय मानो मोहि ॥१३॥

वार्तिक

यह सुन वैदन के रोम २ में आनंद छाय गयो, अरु श्यामा जू के सन्मुख आयकें अति आधीन होय ठाड़ी भई ॥१४॥

प्रिया जी वचन दोहा

खोल खोलरी कोथरी, कहा भरयो इन माहिं।
यह जु रूप विद्या जुविधि, रचना सों बस नाहिं॥

वार्तिक

यह सुन वैदन सांस लेय बोली ॥१५॥

दोहा

अनख न चित में आनियो, कहों सांच एक बात।
तुमसी गर्व गरूर जे, तिनके भवन न जात ॥१६॥

पद

गर्व गुमान नहीं मुहिं भावे ॥टेक॥
बनी रहो बेटी नृप घर की, पर अपमान भलो न कहावे॥
करहु निरादर गेह बुलाकें, रीति नहीं जा तुम्हें सरावे॥
शील सनेह न नेकहु जानो, का विद्या हरिदास दिखावे ॥१७

पद

इक अबला नवला पुनि सिंगरी, गुण परखन की रीति न जानो।
आपन सम नहिं दूसरि लेखो, सब की कूट करत सुख मानो।
बातन सों हित जुरत सयानी, बातन ही सों टूटत जानो।
भूप सुता संग रहत सदा तुम, काहे बात कठोर बखानो।
आदर दे बैठार न जानो, जुग पल हो हरिदास न ठानो ॥१८॥

वार्तिक

प्यारी तुम सब कहा हंसो हो, आओ बैठो अरु औषधि को

स्वाद देखो, मैंहू राजभवन की सब रीति जानों हों, जड़ी बूटी के मोल को सोच न करो. १९.

सखी बचन दोहा

सरहाई सी लगत है, और सबै गुण आइ।
एक बात के कहत ही, अधिक २ सतराइ॥
हम तो तेरे रूप की, करत प्रशंसा भूर।
धन्य दई की तू रची, निकसी निपट गरूर॥ २१.

बेदन बचन

जहँ गुण तहां गरूरता, सुनो बड़न सुख जाय।
बुद्धिहीन कैसे भटू, तुम आगे ठहराय॥२२॥

प्रियाजी बचन

दोहा

अरी सुनयनी बेदनी, इनके सुख मति लागि।
आई है जा काज को, समझि करै बड़ भागि॥२३
दुगुनो तिगुनो मोलले, तू जिन होय उदास।
ये भोरी बृज बासिनी, इनको प्यारो हास॥२४
तैं देखे पर नगर घर, ये न गई पर द्वार।
देख नई तुहि ह्वै रहीं, ये सब कौतुक हार॥२५
तेरी पाकी समझ है, करत सदा व्योपार।
ये भीजीं मो लाड़ में, इनको और बिचार॥२६

लावनी

जो कसब नतो अनुरूपा, जग मोहन तेरो रूपा॥
लखि तोकों मनहिं बिचारों, नृप कन्या तो पै वारों॥
देखत ही चित्त चुराई, उर में नहिं नेक रुखाई॥
रस की तू मूरत प्यारी, तुव दरश नैन सुखकारी॥
जिहि नगर बाट तू जावे, देखन को भीड़ जुड़ावे॥
औरौ बहु गुणन भरी है, विधिना तुम्हें एक रची है॥

बड़ भागिन दीसत मोही , जो कसव न चाहिय तोही ॥
अचरज हरिदास यही है , अस भूपति भवन नहीं है ॥ २७

वैदन -दोहा।

मोहि दई अनुकूल सुनि , मंडन वल्लभ राज ॥
नगर वगर निर्भय फिरों, नित नव युवति समाज ॥
जनम बड़े घर पायके, परे जु रावरि घेर ॥
प्यारी जु तुय परसाद ते, सुख बिलसत बहुतेर ॥
पर कारज विद्या पढ़ी, सब कोऊ होत अधीन ॥
रावर में की सुंदरी तलफें, लघु जल मीन ॥ २८

प्रियाजी-दोहा।

तूहे स्वेच्छा चारिणी , बात कहत प्रतिकूल ।
क्यों सर करे गुलाब की, सूजी वन के फूल ॥ २९

पद

दीख परी कुल कान तिहारी ॥ टेक
जैसे कुल में जनम लियो है, बात कहत वाके अनुहारी ॥
राखति है तू कान मिलाप की, बोलत आपुहिं धन्य बिचारी ॥
एक थल में विलमत न सुंदरी, घर२ की तोहि लागि बयारी ॥
जोगी कैसी घर घर फेरी, कीजे तो संग प्रीति कहारी ॥
बातें बहुत बनाय कें बोलत, लीन्हें गुण हरिदास निहारी ॥ ३०

वैदन-रेखता।

इक प्रीति कीन्ही भूखी तुम उर टटोय लीन्हों ॥
बातें न करो ऐसी मन मोर भलो चीन्हों ॥
तुमसी कृपाल शीलवंत गुणवती न पैहों ॥
कुल रीति करन काजें सदा याहि ठौर ऐहों ॥
सब लैवो देवो तुमहीं इक भली भांति जानो ॥
उर सों न प्रीति टारो तुव सांची बात मानो ॥
कर जोर करों बिनती हरिदास लागी रजनी ॥

जो लैने हो सो लेओ घर देव आन सजनी ॥ ३१

प्रिया जी- दोहा

याकी झोरी की सबै, वस्तू लेहु गिनाय ॥
याको वांछित दीजिये राजी ह्वै घर जाय ॥

वार्तिक

यह सुन चित्रा ने झोरी हाथ सों गहि लीनी, तब वैंदन बोली, अरी सखी जो चाहने होय तो मैं आपही गिन देउंगी.३३

वार्तिक

चित्रा बचन

अरी प्यारी जा वैदन तो देवे नहीं परंतु लेवे कों फिरै है, याके बदन पर तो पीताम्बर वनमाल दीसे है, यह देख सब तारी बजाय नाचिवे लगीं ॥ ३४

पद

जोतो छलिया नंदकिशोर ॥ टेक
कपट त्रिया को भेष बना के, राधा याको लाई चोर ॥
ठगत रहत नित प्रति यह सब को, अब याकों नहिं दीजे छोर ॥
लोक लाज हरिदास सभी इन, जमुना जल में दीन्हीं बोर ॥ ३५

वार्तिक

वाही क्षण स्त्री को भेष बढ़ाय, नंदकिशोर जी बन आये ३५

समाजी बचन

दोहा

हंसत मोहनी सोहनी, लीला निरख अनूप ।
प्रेम खेल के वारने, वाकौ जाकौ रूप ॥ ३७
हितरूपी कौतुक रचत, सजनी करत प्रशंस ।
विंद्राबन हित दुहु मिलन, सर्वस श्री हरिवंश ॥ ३८

इति श्री वैदन लीला

अथ तपसी लीला।

दोहा

छलिया नँद नंदन पगे, प्यारी जू के प्रेम।
जोगी बन जनु तन धरे, वृत अरु संयम नेम ॥ १
अधिक रूप तप करि अधिक, अधिक चातुरी आय।
सिंगीनाद बजावहीं, राग अपूरब गाय ॥ २

वार्तिक

इनको देख एक सखी बोली ॥ ३

छंद

जोगी वास करो इहि नगर में तुम्हें देहों कुटी बनाय।
श्री राधा आई दरश कों यों कहत बचन समझाय ॥
गुरु आसन तेरो कहां है हो कौन तिहारो देश।
कै जोगी भये ज्ञान ते कै कोई आई बिपति विशेष ॥
किते बरस तुम को भये हो भुई परकरमा देत।
कौन २ तीरथ किये हो तुम किहि बन रचौ निकेत ॥
क्यों जननी धीरज धरे हो जिहि तजि साधो जोग।
तुम बिछुरे कुल नगर के क्यों जियें सनेही लोग ॥
रूपवंत गुणवंत हौ हो दीसत राज कुमार।
दूर करो संदेह अब तुम कहो बात निरधार ॥

जोगी बचन

रेखता

चिरकाल के हैं जोगी साधन अनेक कीन्हें।
सुख त्यागो बास नगरी नहिं मोह माया चीन्हें।
हम प्रीति के हैं भूखे श्रद्धा करे जो कोई।
बिरमें तहां पै जाके मन में अनंद होई।
बड़ भागी राज कन्या मो पास काहे आई।

जग सों उदास जोगी हम बन में रहें जाई ।
यहि वार पुर में निकसे आसन की ओर जावें ।
हरिदास आस जग की तजि जाय गुरू ध्यावें ॥ ५

प्रिया जी वचन

रेखता।

बरसाने वास राबर या फाग मास कीजे ॥
दधि दूध मेवा मिसरी जो भावे सोई लीजे ॥
हम भोर होरी खेलन ससुरार अपनी जैहैं ॥
तुमको उछाह दिखराके फेर लौट अइहैं ॥
गुण रूप वैस तुम्हरी जसुधा के लाल कैसी ॥
वे बांसुरी बजावें तुम सिंगी घोर तैसी ॥
हुइ जैहै उनसों तुम सों बलिकाल की चिन्हारी ॥
विधिना तुम्हारी उनकी इक मूरती सवारी ॥
उन भाल खोर चंदन तुम तन भभूत धारें ॥
वे पहिरें पीतपट को तुम बाघ चर्म डारें ॥
तुमको छकन अमल की वे हैं जु रूप छाके ॥
तुम लाड़िले गुरू के वे प्यारे नृप पिता के ॥
गोधन सों प्रीति उनकी तुम्हें जोग धन है प्यारो ॥
रस रीति प्रीति उनकी तुम ज्ञान को बिचारो ॥
गिरि कंदरा कों तजि के तुय चित न अंत जावे ॥
उनको जो वृंदाबन की कुंजों को वास भावे ॥
विधना ने तुमरी उनकी जोरी भली बनाई ॥
इक संग सखी देखें हरिदास सौख्य पाई ॥ ६

दोहा

सिंगी फेर बजाइये, सब को सुरति सनेह ।
जा कारण तरुनी सबै, तज आई निज गेह ॥७॥

वार्तिक

यह सुन जोगी ने अपनो तन घुमाय सब बृज वालों की ओर दृष्टि पसारी, अरु देखते ही देखते सब जोग भूल गये, बोले ॥८॥

रेखता।

ब्रखभानु कुंवरि जब देखों, तब जन्म सुफल कर लेखों.
मैं राधा राधा गाऊं, राधा हित बेणु बजाऊं.
मैं राधा रमण कहाऊं, काहे दूजा नाम धराऊं.
जहां राधा चरचा कीजे, तहां प्रथम जान मोहे लीजे.
जहां राधा राधा गावें, तहं सुनवे को हम आवें.
श्री राधा मेरी संपति, श्री राधा मेरी दंपति.
श्री राधा मेरी शोभा, श्री राधा को चित लोभा.
मैं राधा के संग नीको, राधा बिन लागत फीको.९

वार्तिक

यह देख सखीं परस्पर सैन देके कहिवे लगीं, अरु बलैया लेके बोली ॥१०॥

दोहा

यह नामावलि हम सुनी, वाही मुरली माहिं।
महा मंत्र यह जपन को, प्रीतम बिन भेदी नाहिं॥११॥

वार्तिक

लालजी हू भेद खुलो जानि पकरिबे के डर सों हो हो होरी करि तारी देय भाजि उठे ॥१२॥

छंद

बचनन बहु रचना करी हो इत उत मन न डुलाय.
वृंदावन हित रूप बलि वादी प्रीति न हृदय समाय.१३
इति तपसी लीला

अथ नटनी लीला

छंद

सजनी सुख बरसत संकेत बटु लखि न भूलत उर अनुराग.
झुमें फूलन के झब्बा जापे वारों सुरपति बाग .
जहँ बहरत कीरति लली संग लिये सखियन समूह .
नट विन इक आई तहां है जु रह्यो को तूह .
नख शिख पट भूषण सजेरी दरसति परम प्रवीन .
कुंवरि हिं माथो नायकें कौतुक रचत नवीन . १

प्रिया जी बचन

सखी तू कौन है कहां ते आई

नटनी बचन

खेलत नृप सुतन रिझाई , नट नंदनी दूर से आई ।
प्यारो वट संकेत प्रिया को , सब सखियन सुखदाई ॥
यहि तकि निज गुण प्रगटन काजें , मैंहू तो उठ धाई ।
कोऊ नाचत असि धारा में , कोऊ बांस चढ़ाई ॥
चट पट डार अबहिं सब खेलत , तुम को देहुं बताई ।
सकल कला परवीण सखी हो , तुम भूपति की जाई ॥
ग्राहक हों हरिदास गुणन की , देव बकसीस सदाई ॥२

वार्तिक

यह कहि अचरौटा कटि में फांद लियो, सारी सीस में बांध लीनी, अरु बट की डार पै झपाकि के चढ़ गई, अरु बहु प्रकार की छल बल करबे लगी, एक२ कला दिखाय बकसीस मांगे है, याकौ कौतुक देखि प्रिया जी ने छल्ला अंगूठी दिये ॥३॥

प्रिया जी बचन

सुघर नटिनी की लीजियेरी बारंबार बलाय ।

लाघवता कहत न बने , यह चकरीसी फिर जाय ॥
प्रगट करत कमनी कलारी , बनी मनोहर भेष ॥
लै चल नगर बसाइये , कोऊ गुणी न ऐसो देख ॥ ४

नटनी वचन

तब उतरों बट डार से , कहो उपरनी देन .
को तुम सम लायक कुंवरि , कहा करों बड़ाई बैन .
जो २ मांगों देहु सो हो, कौतुक रच्यों अनेक .
महलन में रिझावार सों , तुम रीझन वारी एक .

प्रिया जी वचन

उतर उतर नट नंदनी तू , क्यों दे तन को त्रास .
मन भायो तुहिं देउंगी , बलिकर बरसाने वास .६

ललिता वचन

अरी नटनी वृखभान जू को जस बखान तोरी आसा पूरण होय जायगी ॥७॥

विशाखा वचन

अरी वीर कछू और हूं खेल दिखाय कें रिझाओ ॥८॥

वार्तिक

यह सुन नटनी फेर डारपै चढ़ गई अरु खेल करिवे लगी, प्रिया जी ने प्रसन्न होय उपरनी दई , नटनी ने शीश नवाय लीन्ही ॥९॥

नटनी बचन

आली अब खेलों ऊंची डार ॥ टेक ॥
धन २ वल्लभ वंश तुम्हारो , तुमही मोहि मिली रिझवार .
जा उपरैनी शीश में बांधों , पहिरों देव गल मोतिन हार .
यश तुम्हरो हरिदास कहोंगी , सुन सुख पावें नंद कुमार ।

वार्तिक

यह कहि नटनी डार सों कूंदी अरु प्रियाजी ने निकट आय

वाको वदन देख मोतीहार गले में पहिराय दीन्हों ॥११

प्रियाजी वचन

पद

तू शोभा की सींव पियारी ॥ टेक
बिधिना नाहक नाटिनी कीन्हीं, है कोऊ बड़ भूप कुमारी ॥
हम सबने तुम्हे काहु समय में, सांझी खेलत संग निहारी ॥
अंग २ परख कहत मुसकानी, तू नट नागरि नंद ललारी ॥
है नंद पूत धूतरी सजनी, हथ परखत हरिदास वृथारी ॥ १२

वार्तिक

लाल जी महाराज ने निज स्वरूप प्रगट कीन्हों सखीने जुगल रूप को जड़ाऊ चौकी पै बैठाइ आरती उतारी ॥ १३

दोहा

रस लीला संकेत वट , नित नई अनेक उपाय ।
वृंदावन हित रूप श्री , हरिवंश कृपा बलिजाय ॥ १४

इति नटनी लीला

अथ ढाढ़िन लीला

दोहा

एक समय श्री लाड़ले , होरी के बन छैल ।
ढाढ़िन बन डोलन लगे, बरसाने की गैल ॥ १

वार्तिक

श्री ब्रखभान पौर पै जाय प्रिया जी सों बोले ॥ २

पद

तन सांवरी ढाढ़िनी हैरी ॥ टेक
फगुआ दीजे लाड़ली , मोहे बड़ी आस है तेरी ॥

या पहिले दीजे गोद भर, होरी को पकवान ॥
राग अलाप सुनाय हों, तुम सुनो बहुरि दे कान ॥
औसर ही आवें जु हम, नित के ग्राहक नाहिं ॥
पुनि जो सुनी रिझावार मैं गुण समझति मन माहिं ॥
हों नख शिख गुण सों भरी, करि हों सबै प्रकाश ॥
पीहर पूरी सासुरे कमला को अचल निवास ॥
जितो देहु थोरो सबै परत भंडार न टोट ॥
हों घर घर जांचों नहीं लेहुं राज भवन की ओट ॥
मेरे गर्व गुमान कों कहा जानि हैं रंक ॥
जो मांगों सो ले टरों तो आशा होगी निःशंक ॥
ऐसे घरहीं मिलत है, हमें अधिक सनमान ॥
दिन जो रंगीले फाग के, कछु बरसो भामिन दान ॥
बैठो सखिन समाज रचि मुहि लेहु निकट बुलाय ॥
बरषा होइ सुख रंग की सब को देऊं प्रेम छकाय ॥ ३

प्रिया जी वचन

प्यारी तू कहां रहे है अरु कहा मांगे है ॥ ४

ढाड़िनी बचन

पद

या बृज में सुख बास हमारो ॥ टेक
हों कुल ढाड़िन की मैं बंदिन, बसन उतारन लेहुं तुम्हारो ॥
लागी औरहु आस घनेरी ; यह होरी त्यौहार बिचारो ॥
यह मोतिन को हार जड़ाऊ, फगुआ दीन्हों नंद दुलारो ॥
तुम सम कौन उदार तरुणि मणि, होरी को सुख बिलसनहारो
आस पुजै हरिदास चलों अब, बरणोंगी बड़ सुयश तिहारो ॥५

प्रियाजी बचन

पद

दीसत भामिनियां चटकीली ॥ टेक

आज अपूरव सूरत तेरी, देखी मैं भर नैन छबीली ॥
चटक मटक दिखरा अरु गाकें, मोहन को रंग दीन्ह रंगीली ॥
उन होरी खेलन रीझन में, दीन्ही मोतिन माल बड़ीली ॥
मोहू को हरिदास रिझाओ, फगुवा लागा बान रसीली ॥ ६

वार्तिक

यह सुन ढाड़िन तूंबरी लेइ ठाड़ी भई अरु गायवे लगी ॥७

रेखता

सुर सात तीन ग्राम लै तंबूरा मैं सुनाऊं ॥
पग पहर नूपुरों को संगीत गत दिखाऊं ॥
अंग अंग अदा देखो नंदलाल कैसी मटकन ॥
वा कैसी भोंह मरोरन वाही की ग्रीव लटकन ॥
वह तान मान गत में मन मोहने लजाऊं ॥
वा कैसे बान नैनों के मार कें बताऊं ॥
वाकी त्रिभंग सूरति की पूरी छटा लीजे ॥
हरिदास देके फगुवा अब जान मोहि दीजे ॥ ८

वार्तिक

यह देख सब चकित होय परस्पर कहने लगीं ॥ ९

दोहा

भटू सुघर ढांड़िन खरी, वैसिय होत त्रिभंग ।
नकल उतारी स्याम की, कियो कोऊ दिन संग ॥ १०
बीच २ हो हो कहै, ताके वाही भाइ ।
रंग भरनि नंदलाल की, वा विधि देत बताइ ॥ ११

प्रियाजी बचन

पद

याकों नित प्रति भौन बुलइये ॥ टेक
जबलों होरी के दिन बीते, याही केर समाज बनैये ॥
मिलि है ना गुणवारी ऐसी, देखत हूं नित नैन जुड़ैये ॥

चित चाहे हरिदास रहे संग, रीझि वड़ी दे घरहिं पठैये ॥११॥

वार्तिक

या उपरान्त प्रियाजी ने नूतन वसन पहिर के पुराने उतार ढाँड़िन को दीन्हे, वा माथा नवाय मन खोलि कें नाचिवे लगी.१२

दोहा

कबहूं कूटक भाव के, नचत रचन दृग लोल।
पहिचाने ललिता तबै, प्रीतम कैसे बोल ॥१३
या को निकट बुलाइये, लगत छदम सो गात।
वसन और पहराइये, समझ परेगी बात ॥१४
पहरायो वागो पलटि, दरस्यो स्याम स्वरूप।
लाल रसिक अति कौतुकी, वृंदावन हित रूप ॥१५

इति श्री ढाँड़िन लीला

अथ मौनी लीला

दोहा

एक समय नंदलाल लखि, फाग समय अनुकूल।
मौनी जोगी बन चले, बोलत मनहुं न भूल ॥१॥
औघड़ जोगी अनमने, तन ओढ़ें मृग छाल।
पनघट बैठे जाय कें, मोहत सब वृज बाल ॥२॥

वार्तिक

इन कों देख एक सखी अन्य सखी प्रति बोली ॥३॥

पद

तन पै घन की छवि छाई, एक औघड़ हों लखि आई.
कहा कहो मुसकानि अधरन में, है कोऊ तापस राई.
नैन बिशाल अमल कछु घूंमत, देखत चित्त चुराई.

मृग छाला ओढ़ें तन सुन्दर, मुख कछु रेख दिखाई.
धरें अनमनी मुद्रा दीसत, रूपवंत गुण राई.
मुख सों बोल कछू न उचारत, सोखत सैन बताई.
मानहुं गिरजा कंथ प्रगट भये, मदन सदेह कराई.
चलु देखो हरिदास बिनय सुनि, मनहिं प्रमोद बढ़ाई. ४

वार्तिक

यह सुन अपर सखी बोली ॥५॥

पद

होंहु लख्यो सखि अचरज भारी ।टेक
उपमा कछू न मिलत जुगिया की, मैं अपने मन बहुत बिचारी.
मदन जियावन को जनु निकसे, शिव शंकर तजि गिरजा नारी.
अति करुणा तन भीज्यों दीसे, रति पति सखा वसंत निहारी.
खोजत जनु हरिदास सजीवन, सूर अनंग जगावन हारी .६

वार्तिक

अपर सखी बोली ॥७

पद

कारण कछू उमा सुरभी सुत, छांडे फिरत उदास.
कै होरी कौतुक देखन को, आन कियो बृज वास.
कछु साधत कछू आराधत, भीतर देख जोग को अंग.
चित की वृत्ति सकोरि कौन विधि, करि राखी निज पंग.
मानौरी मानौ हम ऐसे, इन के मिलत न ढंग.
नाहिन कर डमरू बाघंबर, जटन भरै ना गंग.
रावल कहों कि धौं अनुरागी, सजनी परख निराट.
गिरि कंदरा छांड़ निज आसन, माड़्यो है पनघाट .८

वार्तिक

यह चर्चा सारे नगर में फैली, सखियां देखवे आईं श्री प्रियाजू हीं अष्ट सखीं संग लें सिधारीं, परस्पर दर्शन तें अति

अनुराग बढ्यो, मौनी बोलिबे को करे, परंतु संकोच बस नहीं बोले, कनखियन प्यारी तन चितै रह्यो ॥ ९

प्रिया जी वचन ललिता प्रति

दोहा

कनखियन चितवत सखी, पुनि रूखे है जात।
परसि कहत नागरि सुन "ललिता" क्यों तप कोमल गात १०

पद

जो कोई फाग को स्वांग दिखावै ॥ टेक
कै कोई कोमल तन नृप नंदन, घर तज छलकर लोक भुलावे.
धनि लघु बैस मांहिं इन साधो, जोग कठिन जो मुनि नहिं पावे.
धन वह भागिनि मातु जगत में, जो ऐसो रस रतहि जावे.
को तुम परस भरे या तन में, जोगिन को हरिदास लजावे. ११

ललिता जी

दोहा

मोहू को दीसत है प्यारी, चितवन औरहि रीति।
नाचत है मन नटवा भीतर, दरसत गाढ़ी प्रीति ॥ १२

प्रियाजी–दोहा

एरी सखि ऐसे न कहु, जोग जुगत या माहिं।
चेला काहू गुरु पूरे को, रुचत गेह सुख नाहिं ॥ १३

वार्तिक

यह सुन लालजी हूंका देवे लगे, अरु उठिकें चले, विशाखा ने हाथ पकर लियो अरु बोली, प्यारी यौं तो मोहन छलियाहै.१४

छंद

यह होरी सुख सिंधु वृंदावन राधा हरि अनुराग।
वृंदावन हित रूप नये नित, खेल रचत हैं फाग ॥ १५

इति मौनी लीला

अथ रंगरेजन लीला

दोहा

एक समय रंगरेजनी, रूप धर्यो नंदलाल ।
बरसाने में जायके, चकित करीं बृजबाल ॥ १
पहुंच पौर वृखभान पै, चाल मराल दिखाय ।
या विधि बोली सबन सों, ऊंची टेर लगाय ॥ २

पद

घन बरणी रूप गुमानी, रंगरेजन निपट सयानी ॥ टेक
कहि यौरी कोई राजकुंवरि सों, जात जो रावर माहीं ।
कै बुलाय लो आप पास कै, बेग देहु कर नाहीं ॥
मो गुण देखि बहुत हित करिहौ, जो ढिग आवन पाऊं ।
तुम रिझवार सबन के अंबर, रंग जो अपूर्व लाऊं ॥
या पुर ऐसी गुणवंती तुम, हुई है सुनी न देखी ।
हे हरिदास कुंवरि की चेरी, चलहु लिवाय विशेखी ॥ ३

वार्तिक

यह सुन चित्रा सखी प्रिया जू पै जाय बोली ॥ ४

दोहा

घन बरणी अति सुंदरी, बधु आई एक पौर ।
वा समान या जगत में, विधना रची न और ॥ ५
चतुर चीर के रंगन में, मनमोहन करि सैन ।
वाहि देखि अचरज बढ्यो, कहत रसीले बैन ॥ ६

प्रियाजी बचन

दोहा

अस कौतुक जोरा भरी, लाओ मंदिर माहिं ।
देखें चतुर चितेरनी, जा सम दूसर नाहिं ॥ ७

वार्तिक

सखी चितेरनी की बांह गहि, भीतर लिवाय लाई ॥ ८

प्रिया जी वचन

पद

को कहि है रंगरेजनि तोही ॥ टेक

झूमत है अतरौटा अतलस , वदन सुरंगी सारी सोही ।
लखि के पीत कंचुकी चूनर , रति रंभा मन में रहि मोही ॥
बसन अमोल राजघर केसे , यह संदेह भयो सखि मोही ।
कहि डारो हरिदास भेद सब, नेक न मो ढिग राखहु गोही ॥ ९

रंगरेजनी वचन

दोहा

जैसी रुचि होवे मुहै, रंग के पहिरों सोय ।
जो मेरे घर को कसब, कहि दे जो रुचि तोय ॥ १०

श्री प्रियाजी वचन

दोहा

नीच कसब तजि भामिनी, और करौ जो भाव ।
काहे ऐसे रूप को , घर घर फिरत लजाव ॥ ११

रंगरेजनी–रेखता

कुल कृत्य नाहिं छांड़ों समझों हों मैं घनेरो ।
पानी न मोहि पावे, घर घर न करों फेरो ॥
वड़ लाभ या कसब में सब कर दरस पाऊं ।
वारों हों वा बड़ाई घिरी घर में दुःख पाऊं ॥
कहां चीर रंगनहारी, कहां भानुकुल की जाई ।
याही कसब ने प्यारी मुहि तोहि को मिलाई ॥
जहां चाहे तहां डोलूं खोटी कहै न कोई ।
कुल रीति चली आई मैं सार लियो टोई ॥
मम रूप रंग कारण घर बैठें कहो भलाई ।
घर के न मानें मोरे जहां चाहें दें पठाई ॥

सब की हों पराधीन सीख मानों अलि कहाऊं।
अनखायें देखे घर में हरिदास ना लजाऊं॥ १२

सखी हंस के बोलीं

वार्तिक

अरी बात कहत ही तोकों इतनी तमकि अरु तेजी आय गई १३

प्रिया जी बचन-दोहा

बैठ रहो मोढिंग सखी, तेरो भलो मनाउं।
असन बसन मन भावते, तुम को अभी दिवाउं॥ १४

रंगरेजनी वचन

पद

को अपने पग बंधन लावे॥ टेक
पर घर शवरि आय रुके को, को सुख सों पर हाथ बिकावे।
को चाहे पर घर के भोजन, को कहतो बातन सकुचावे॥
वेग बताव सखी सब स्यानी, जो कोऊ जोन बसन रंगवावे।
घरको काम बिगारे को सब, एक घरी मुहि युग सम जावे॥
वासर बीत गयो बातन में, घोर निशा अब सासू आवे।
गम कर की देखो चतुराई, मोको ना कछु और सुहावे॥
भोरी लखि जनि करहु खिलौना, देहु विदा हरिदास मनावे १५

प्रियाजी बचन-दोहा

अरी प्रगट की चातुरी, हमहू देखें सोय।
बहुत काम हम लेहिंगे, नेक उदास न होय॥ १६

रंगरेजनी बचन-पद

सब जाने मोरी चतुराई॥ टेक
जहां गये बसन रंगे मो कर के, और नहीं तिनके मन भाई॥
वे रिझवार बड़ी सब भामिनि, उनने फिर २ मोहि बुलाई॥
अब पहिचान भई या घर सों, जा सब है मो भाग्य बड़ाई॥
हाथ हथौटी जब दिखरैहों, तब तुम को गुण परहि दिखाई॥

सुफल होंहिं मम भाग श्री राधे, सोकर रंग तुम्हें पहिराई.
सुभग बांधनू की जो चुनरिया, प्यारी जू तुम लाने लाई.
पहिरो वाहि छबीली सुख सों, यह बिनती हरिदास सदाई.१७

वार्तिक

कांख सों सारी निकार प्रिया जू के हाथ में दीन्ही सखियों ने प्रशंसा करी, श्री लाड़िली जू कों पहिराई ॥१८॥

सखी बचन रेखता

सबै निहोरैं सब कर जोरें हमहूं कों रंग दीजे.
तेरी सुमति बिशाल प्रशंसा एक बदन कहा कीजे.
अब तेरो गुण उघर परयो है सुन सजनी मृग नैनी.
कौन देश को नगर जहां की यह गहरी रंग रैनी.१९

चितेरन रेखता

जग जाने नाम मेरो व्यापारनी बड़ी.
नितहीं दुकान मोपै गुण ग्राहकी बड़ी.
करों काज मन लगाके सब प्रीति करें थारी.
मुंह मांगे दाम देतीं सब गोप की कुमारी.
तुम्हरे जु प्रथम आई लख नेह की मिताई.
उन सब की द्रव्य देनी मैं आजहीं भुलाई.
एक तो विदेश आई पुनि पाये मन पराये.
अन मिल को मरम धीरे धीरे जात मिल मिलाये.
अब सांची कहो प्यारी सारी तो मन को मानी.
हरिदास हों तो फूली बार बार पियों पानी.२०

वार्तिक

प्रिया जी दर्पण में मुख देख बोलीं, प्यारी रंगरेजन अब तोहि सांची प्रीति जान परी ॥२१॥

रंगरेजन बचन छंद

मैं सबही भर पायो मुख सों बात रीझ की काढ़ी.

हौंस २ अब बसन रंगूंगी चौप लगी हिय गाढ़ी ॥२२॥

वार्तिक

प्रिया जू ने अपने उतारन वस्त्र दिये अरु बोली ॥२३॥

दोहा

वस्त्र उतारन मोर जे, लेवहु सहित हुलास।
पहरो री रंग रेजनी, पुर वहु मन की आस ॥२४॥

वार्तिक

यह सुन रंगरेजनी को हियो धुक पुक होन लग्यो, अरु सकुच के नीची दृष्टि कर लीन्ही ॥२५॥

सखी विशाखा बचन —दोहा

पहर पहर बड़ भागिनी, अब आज्ञा जिन टार।
अरी भटू इत उत कहा, लागी अबहिं निहार॥२६

वार्तिक

कोऊ सारी लाई कोई चोली पहिरावे लगीं याही में लाल जी को छद्म प्रगट होय आयो, सखियन ने लालजी को सिंगार कीन्हों अरु जुगल रूप को चौकी पर बिठाय आरती उतारी.२७

छंद

प्रीतम छद्म दरश उत कंठा प्रेमी प्रेम भिंजे हैं।
वृन्दाबन हित रूप मिथुन सुख बिलसन जो मन दैहैं ॥२८

इति रंगरेजन लीला

अथ सन्यासी लीला

दोहा

सुख भोगी नंद लाड़िले, प्रिया बिना नहीं चैन।
जोगी बन वृषभान पुर, लागे फेरी देन ॥१॥
फिरत फिरत सब सखिन को, अपनो रूप दिखाय।

तिरियन के चित चोर कें, पहुंचे पनघट जाय ॥२॥

वार्तिक

इनको वा ठौर बैठे देख एक सखी बोली ॥३

पद

इत कित आसन माड़ी गुसांई ॥टेक॥
बड़े २ लोग वसत नगरी में, देव फेरी मंगता की नाईं॥
तुम्हरो मन आसन थिर नाहीं, जोग जुगत कछु नाहिं दिखाई ॥
बाघाम्वर अरु भसम लपेटें, मौन धरें नहिं तापस राई ॥
चितवन अरु मुस्कान रसीली, दीसत है तुम्हरी चतुराई ॥
बूझति हों हरिदास बनाओ क्यों आये तुम गेह बिहाई ॥४॥

दोहा

अनुरागी सो लगत है, त्यागी कह्यो न जाय ।
इत उत दृष्टि न जात है, पनघट ही मंडराय ॥५॥

वार्तिक

याकी चरचा नगर २ में चली, सखी देखवे को आईं, दूध दही लाईं श्री प्रियाजू हू सखिन सहित आईं, इनको देख गुसांई जी के मन में बड़ो आनंद छाय गयो, वे सिंगी वजाये नाचवे लगे ॥६॥

पद

अलख जगावत वार भई है ॥टेक॥
डगर नगर डोलत दिन वीत्यो, अब देखी रचना जु नई है ॥
भाव भगत की रीति जो न्यारी, या पुर की बनितान लई है ॥
बिरमन को हरिदास चहै चित, प्रीति पुरातन छाय गई है॥७॥

वार्तिक

या को देख श्री प्रिया जू बोलीं ॥८॥

दोहा

परखो री चंपक लाता, जो कोई छल रति धूत ।

मोकों दीसत है सखी, नंद महर को पूत ॥९॥

वार्तिक

यह सुन नंदलाल जी सटपटाय कें हो हो होरी कहत भाजे अरु सखी ने पीछे जाय सघन बन में घेरि लीन्हें॥१०

दोहा

बातें रस घातें फबी, होरी को फल पाय।
वृंदाबन हित रूप बस, दुलहिन को जस गाय ॥११

इति सन्यासी लीला

अथ पटवन लीला

दोहा

प्रिया मिलन की चटपटी, लागी ललहिं अपार।
पटवन भेष बनाय के, पहुंचे भानु दुवार ॥१॥

वार्तिक

बाहर गली में ठाड़े होय बोले ॥२॥

पद

कोई ले लेव रुचिर छुटीला, आई पटवन परम सुशीला ॥
त्रिविधि बरण के पाट हैं मोपै, सेत सुरंगी पीला ॥
घटहु सकल आभूषण रुचि सों, जो जेहि अंग सजीला ॥
डोरा डुरियां छला फूंदरा, रेशम रंग चटकीला ॥
भानु कुंवरि के लायक लाई, छवि लख मुदित रंगीला ॥
द्वारपाल हरिदास जान दे, मुहि रोके ना हटीला ॥३॥

द्वारपाल बचन

छंद

देखी नई निपट चंचल सी, तोहि जान नहिं दैहों ॥
है टुनिहारी सी क्यों तेरो, कह्यो मान हों लैहों ॥४॥

पटवन बचन छंद

मोसी हूंको नाम धरत है, किन तोहि सीख बताई .
तनक दया करि देहु जान मोहि, बड़ी दूर तें आई . ५

द्वारपाल बचन छंद

नाम सुशीला धरो बिप्र किन कहत आतुरे वैना .
लै भाजेगी वस्तु रजा की मैं परखे तो नैना .
रावर महिं जात है रूरी किन ने तोहि बुलाई .
ताहू पै सतरात गांठ की खरचत है चतुराई .
उसरि बैठ धीरज धरु मन में जो तो माहिं भलाई .
बरजोरी सी करत बिना समझे तें धूम मचाई .
कै आज्ञा कीरति जू देवै कै कीरति की जाई .
भीतर जानि देउंगो तबहीं मोहिं वृखभान दुहाई .

पटवन बचन दोहा

देत दुहाई भूप की, कहा भीर परि तोहि ।
मैं अबला ब्योपारनी, क्यों भटकावति मोहि ॥७॥

द्वारपाल

पद

छलिया सी तू मोहि दिखावे ॥टेक॥
राज भवन के लायक नाहीं, दोसेरी बड़ि बात बनावे .
नंद गांव की कोऊ गुनीली, चट२ बात कहत न लजावे .
जाहु भवन हरिदास हठीली, काहे नाहक बात बढ़ावे . ८

पटवन पद

कत रोकत तू पौर पराई ॥टेक॥
कैसो है नंदगांव गरूरे, जो तू बोलत दोष लगाई .
राज पौर के लाइक नाहीं, बोलत ऐसी बात चवाई .
मैं अबहीं पाछे फिर जैहों, जो यामें कछु तोर बड़ाई .
सुन पैहैं वृषभान सुता जो, निकसैगी हरिदास खटाई . ६

वार्तिक

इतने में चित्रा सखी बाहिर आय बोली ॥१०॥

दोहा

कौन कहां की है सखी, मोहि कहो समुझाय ।
अबहिं प्रिया पै सुंदरी, चलि हों तोहि लिवाय । ११

पटवन पद

पटवन गहनो पोहन हारी ॥ टेक ॥
चाह करें मोरी वृज बनिता, उन सब की मैं अधिक पियारी ॥
अस अपमान कियो ना कबहूं, जस या पोरी कौ अधिकारी ॥
जात हुती हरिदास घेर मैं, लखिके याको हठ अति भारी ॥१२

चित्रा छंद

गहनो पोह यहां ही चलि तू, दीसत चतुर महाई ।
हों निकसी याही कारज कों, भली भई तू पाई ॥
जो चोखी मखतूल जो तो पै, अरु रेशम रंग रूरो ।
लेंहि चाह करि सब हिन चहियत, केश बांधिवे जूरो ॥१३

पटवन दोहा

या झोरी में सब कछू, पोहो चतुर सुजान ।
पौरि न वा मोहि लै चलो, बलि जाऊं सुख खान ॥ १४

वार्तिक

चित्रा भीतर लिवाय लै गई, अरु प्रिया जू कों देखि पटवन को हियो शीतल भयो वाने अपनी झोरी तें चुटीला निकासि प्रिया जू के हाथ में दीन्हों अरु नीची ग्रीवा करकें लजोंही सी ठाड़ी होय रही, प्रिया जी बोलीं ॥१५॥

पद

युवतिन बीच लजात अली है ॥टेक॥
नीची ग्रीवा छवि की सीवा, कुल परिवार दिखात भली है ।
बैठो पग श्रम नासो सुन्दरि, लाई मो लगि भेंट भली है ।

पटवन तूतो कहति लगत मुहि, मानो कोऊ भूप लली है.
दीन दशा तुव देखि दुखी में, सास ननँद तोहि कैसी मिली है.
कैसौ पति परिवार मिल्यो, हरिदास फिरावत गैल गली है. १८

पटवन दोहा

कहा बड़ाई कीजिये, लायक कुल वृखभान।
आसा बांधी मैं फिरों, त्यागि मान अपमान॥

रेखता

कहुं सांची बात राउर निंदा जो ना बिचारैं.
मो सास नंद पानी के मांगे पाहन मारैं.
परिवार सबै स्वारथ को सोपै खार खावै.
टुक बात परे मोरे ना कोऊ काम आवै.
अभिमानी महा देवर दिन रैन मुहि खिजावै.
बनि घर को सेठ जेठ कछू बात ना चलावै.
इक आसरो पती को मुहि देवे ओंज पानी.
हरिदास सब सों हारी दुख मूल की निसानी.

सखी बचन — वार्तिक

अरी प्यारी पटवन तूतो या समाज को खिलौना होय रही है, ऐसी कहि २ सब सखीं हंस उठीं॥१६॥

पटवन छंद

बातें कहे तें क्षण में प्यारी, देखो भई पराई.
काकों बिलग मानिये, अपनी हांसी मैं जु कराई. २०

प्रिया जी

छंद

सखी करो जिन हांसी याकी है जु विदेशिनि भोरी॥
तुरत कहिदई अपने मनकी बात न राखी चोरी॥
कौन २ से नगर जात हौ, कौन कौन से गेहा॥
हम बूझति हैं तोहि रंगीली, कासों अधिक सनेहा॥ २१

वार्तिक

यह सुन पटवन मुस्क्याय कें कछू ना बोली तब चित्रा ने कह्यो ॥ २२

चित्रा—छंद

जो प्यारी परसन्न करे तो नित होवे तेरो एवो ।
मान बीनती अब की मेरी यह बात कहि देवो ॥ २३

पटवन—लावनी

अब कहौ सांच बिन आंच न राखो ओटा.
मेरो हित नँद को धाम महिर को ढोटा.
वह आदर सब को राख मोहि पहिचाने.
माला मोसों जु पुहाइ पहिर सुख माने.
वह राज कुंवर सुख शील सबहिं मन भावे.
सुनतहुं बरसानो नाम नीर दृग लावे.
गुरुजन की मानत शंक नहीं मुख बोले.
बरसाने में चित देय घरहिं बन डोले.
अँग अँग दुलहिनि के रंग रच्यौ मैं देखो.
बालापन ते नयो नेह सगाई लेखो.
वह रंगो राधिका रूप और ना जाने.
तिनके मिलवे नित नये जतन वह ठाने.
तिनके देखे बिन वाहि कतहुं कल नाहीं.
वह फंसो प्रेम के फंद मगन मन माहीं.
मैं भई बावरी देखि प्रीति सखि वाकी.
कछु कहो नहीं हरिदास मौन को ताकी. २४

वार्तिक

या प्रकार प्रीतम की कथा सुनि प्रियाजी प्रेम में विह्वल होय गईं अरु गरो भर आयो सकुच के मारे कछू न बोलीं, तब ललिता ने कह्यो. २५

छंद

अरी सखी काहै अरु कब २ तू नंद धाम गई ही .
कौन भांति प्रीतम के मनकी तू सब बात लई ही .
इतनी तो मैं हूं परखी ही गाढ़ी लागन हीये .
सजन सगारथ कठिन लोक विधि रहे आड़ ही दीये.
तू पटवन उन उर अंतर की बात जु कैसी जानी.
कहत कछू विद्यावल के कै मोहन आप बखानी. २६

वार्तिक

यह सुन लालजी मन में सकाने अरु कछू उतर नाय दीन्हो प्रेम में मग्न होय बोले। २७

छंद

सेम रोम प्रीतम की प्यारी सुंदर सुखद सनेहा .
क्यों न्यारे हो सकें सखी ये एक प्राण दो देहा.
ललिता प्रेम वहति है उलटी जो जाने सो जाने.
श्री हरिवंश प्रसाद रशिक भर तिहि की रीति बखाने.
सावधान करवाय सहेली, दंपति लाड़ लड़ावे.
वृंदावन हित रूप प्रेम को कौतुक नाना भावे. २८

इति पटवन लीला

अथ तपसिन लीला

दोहा

स्याम वरण तपसिन वने , अतिही ज्ञान गरूर ।
विचरत उपवन भानु के , करत मदन मद चूर ॥ १
वैठी फूलन बंगला , प्रिया सखिन के पास ।
जोगिन ओर जु देखि कें , भई उर अधिक हुलास. २

वार्तिक

या तपसिन को रूप देखि, प्रिया जी बोलीं । ३

रेखता

अँग में भबूत तपसिन तन सांवरी छबीली ।
आड़ी है भाल खौरी लट लटकती सजीली ॥
धारें हैं वस्त्र भगुवां ग्रीवा में पाट सेली ।
तप को जु तेज तन पै चटकीली रंग हेली ॥
मृग छाला ओढ़ें दृग में कछु अमल की ललाई ।
अपने ही रूप छाकी झुकि जल में देख छांई ॥
धारें हैं ध्यान मुद्रा आसन रही लगाई ।
अरधांगि मानो शिव की कैलाश छांड़ आई ॥
याको जु देख मुद्रा पशु पंछि सुधि भुलाने ।
सुहिं देख मानो पहिरो दैन शिव के दूत आने ॥
कोई भूप सुता अबलाने सबल काम कीन्हो ।
निज नैन मूंदि मन में पति ध्यान धार लीन्हो ॥
कुलवंती रूप वंती कत जोग लिखौ भालै ।
दीपक सों होत काजल बिधिना की उलटी चालै ॥
हों देखि दशा याकी करुणा में भींजी जाऊं ।
कहौ मान लै जो मेरो हरिदास गृह बसाऊं ॥ ४

वार्तिक

यह कहि श्री लाड़ली जी तपसिन के ढिंगा जाय बोलीं ॥६

दोहा

परम सभागिन तपसिनी , रंचत लोचन खोल ।
किहि कारण यह साधना , कहो सकल दिल खोल ॥ १०

वार्तिक

ललिता बचन तपसिन प्रति ॥११

दोहा

श्री राजा वृखभानु कुल , मंडल राधा नाम ।

बूझत हित सों बैस लघु, क्यों त्यागो सुखधाम ॥ १२

वार्तिक

बड़ी वार बिचार करि लांबी सांस लेय तपसिन बोली १३

पद

जग को नेह बिहाय कें हम साधो पद निर्वान ॥ टेक
तिनहिं न और सुहावही, जिन कीनो अलख को ध्यान ॥
रूप न रेखा वाहि की हमहूं भये रूप अजान ॥
ज्योति पुरुष जग व्यापियो है वाकी कठिन पहिचान ॥
वाही रंग हरिदास रंगे अब पीवत पानी छान ॥ १४

दोहा

प्रिया जी बचन

कौन नृपति कुल हो तुमहिं, उतपति भई कुल कौन ।
कौन गुरू शिक्षा सुनी, ता बल त्यागो भौन ॥ १५

तपसिन बचन–दोहा

बड़े नृपति घर हैं हमहिं, लिये जन्म बड़ भूप ।
ज्योति पुरुष आराधहीं, जग व्यापो जु स्वरूप ॥ १६

प्रियाजी वचन–दोहा

नेह विरहने जोगिया, सूने पुर को बास ।
सुख परचे नहिं रूप बिन, नाहीं प्रेम प्रकास ॥ १७
यहि मंडल सुन जोगनी, जोग छुवे कोऊ पान ।
तू जो सहत कत कष्ट को, दीसत परम सुजान ॥ १८

वार्तिक

श्री प्रिया जी के बचन सुन सकल सखीं हाहा कर हंस उठीं, अरु जोगन के नैन क्रोध वश लाल ह्वै गये वा बोली १९

दोहा

पिता तिहारो देश को, हम राजा सब द्वीप ।
बचन कठोर जो बोलती, जोगन बैठि समीप ॥ २०

निंदा जो करो पीव की, हुई हों निपट उदास।
ऐसोइ प्यारो जोग है, ताको करो उपहास ॥ २१
दान मांग चोरी करे, निपट शिरोमणि धूत।
तदपि पियारो राधिके, नंद मिहर को पूत ॥ २२

प्रियाजी बचन-पद

जोगिन बोलहु बात विचारी ॥ टेक
प्रीतम के पद पंकज ऊपर, तोसी जोगिन कोटिन वारी ॥
शोभा धाम खानि गुण केरो, वासम कोउ तुहि देहु दिखारी ॥
तेरी जोग समुद्र बहाऊं, बोलो ना हरिदास वृथारी ॥ २३

वार्तिक

यह सुन विशाखा सखी बोली ॥ २४

दोहा

अरी पियारी क्यों करे, जोगिन सों चित भंग।
तुमसी लाइक राखिये, भांति २ रस रंग ॥ २५
तपसिन जन्मी कुल बड़े, यातें बड़ो गुमान।
आई अपने बाग पुनि, किये बने सनमान ॥ २६

वार्तिक

यह सुन श्री प्रिया जू ने करुणा के वश होय जोगिन को अंक में भरि उठाय लीन्हीं अरु बोली, प्यारी जोगिन अब भोजन करिके सिधारियो ॥ २७

छंद

मृगछाला खसी हो अंकम भरति कौस्तुभ मणि परी दृष्टि.
इत मन सकुची हो उत रोमांचित न उमग्यो है प्रेम गरिष्ट.
ये रीझे हैं उनके छदम पै वे रीझे दृढ़ प्रीति।
हिय की उरझनि हो रीझीं सहचरी गावत मंगल गीत.
निगमनि दुर्लभ होय है आनंद राधा नंदकुमार.
श्री हरिवंश जू हो परम प्रसाद लहि बरणो मति अनुसार.२८

दोहा

वलि हित रूप जो नित नयो, नित मन मिलन उमाह।
वृंदावन हित हो सखी, उमड़े दृग दोऊ चाह ॥२६॥

इति तपसिन लीला

~~~~~~~~~~~~

अथ अवधूत लीला

दोहा

नंदलाल जोगी बने, नख शिख गुरुवो रूप।
ज्ञान छकन नैनन छकी, मुद्रा परम अनूप ॥१॥
वय किशोर तन सांवरो, दिपत तेज बैराग।
भानुपुरा के वाहिरे, बिरमे आय जु बाग ॥२॥
सखिन सहित श्री लाड़िली, जहँ तोरतती फूल।
दीख परे जोगी तहां, बैठे तरु के मूल ॥३॥

वार्तिक

इन को देखि ललिता बोलीं ॥४॥

दोहा

उलटी बिधि की गति दिसे, तप लायक नहिं गात।
चलो निकट चलकें प्रिया, कछू बूझिये बात ॥५॥

वार्तिक

श्री लाड़ली जू अवधूत के समीप जाय बोली ॥६॥

रेखता

घर छांड़ काहे आये लघु बैस में बिरागी.
वहु काल के न जोगी पितु मातु आहिं त्यागी.
अभिराम श्याम मूरति सुकुमार देख गाता.
करुणा बटोही पंछी करि गारी दे बिधाता.
तुव जनक जननि कैसे लहें नींद खानो पीनो.
~~~~~~~~~~~~

भरि नैन है हैं देखत अब काको मन मलीनो .
उन केरु सारे पुर के परिवार के जू प्राणा .
सब को ठगोरी लाई तुम धारि जोगी बाना .
हरिदास हठ को तजिके परो नाहिं जोग खोजन .
यहि बाग में छवाय कुटी दूंगी इच्छा भोजन .७

वार्तिक

प्रिया जी की कोमल वाणी , सुन जोगी ने नैन उघार दीन्हें अरु बोले ॥८॥

रेखता

अबला अजान तुमसी कहा जोग जुगत बूझे .
हम अलख पुरुष देखें जग और नाहिं सूझे .
गुरु ज्ञान मोह नास्यो रिपु जान लोभ त्यागो .
मन कामना बहाई पुनि दूर क्रोध भागो .
निज नाथ रूप परचो अंतर में ताही देखें .
वाके बिना न बृज मंडल और कछू लेखें .
रमते रहें जगत में एक ठौर ना निवासा .
कछु बिरमें वाहि थल पै जहां देखें हरीदासा .९

वार्तिक

इनको अर्थ समझ कें श्री लाड़ली जू की इच्छा इन को बिरमायवे की भई तब बोली ॥१०॥

दोहा

ग्रीव लटक बृजराज सम , कैसे दरसत अंग ।
एक दिन एक क्षण अवतरे, एक रूप एक रंग ॥११॥

अवधूत बचन

पद

अबला बोलहु बात बिचारी ॥टेक॥
उलटी पुलटी उपमा देतीं , कहां जोगी नृप नंद कहांरी.

घोष रजा सुत दूलह कहिये, दुलहिन लोक मुकट मणिवारी ॥
वे सुख वासी भोग विलासी, हम अवधूत सदा बनचारी ॥
कैसे तुम ढिग विरमें भामिनि, चित छोभित हरिदास वृथारी ॥

प्रिया जी वचन

दोहा

तुम से तुमहीं सांवरे, रचो तपोवन कोट ।
ऊंचे नीचे हो गिरे, एक सुमेर जु ओट ॥१३॥

अवधूत वचन—पद

अब तुम सांची बात उचारी ॥टेक॥
यह सुन के हमरो हिय हुलसो, तुमरो सांचो प्रेम निहारी ॥
जगत गुरू जोगी को कहिये, होत सुधा सम हूं कहुं वारी ॥
ऊंचो आसन पद जोगी को, कोइ विरले पहुंचत तन गारी ॥
श्रद्धा प्रीति सहित जो सेवक, पावत मन वांछित फल चारी ॥
हमने निज नाथहिं परखायो, लेव परखो बड़ भागिन वारी ॥
विन बिचरैया गाय चरैया, तुम्हरो वल्लभ तुम उहिं प्यारी ॥
हम हरिदास गुरू बल पूरे, नेक न भोग रुचै संसारी ॥१४॥

वार्तिक

श्री मुरली मनोहर की ऐसी निंदा सुनि प्रियाजी को क्रोध आय गयो, तब बोलीं ॥१५॥

दोहा

प्रीति नहीं गोपाल सों, कोरो जोग निराट ।
कान न रंचक राखि हैं, उठ कि न लेवो वाट ॥१६॥

वार्तिक

यह सुन जोगी के नैन कमल सों आंसू आय गये, प्रेम सों गरो भरि आयो, उनकी दशा निहार ललिता बोलीं, अरी प्यारी जो तो छलिया नंद कुमार है, या उपरांत प्रिया प्रीतम परस्पर गलबाह दै ठाड़े भये अरु सखियन ने आरती उतारी ॥१७

दोहा

इत उत बाढ़न नेह की, मति अंजुल न समाय।
श्री हरिवंश प्रसाद लहि, यह जस रसना गाय॥

इति अवधूत लीला

अथ चितैरी लीला लिख्यते

दोहा

एक दिन बने चितेरनी, छलिया नंद कुमार।
बरसाने में जाय कें, बोलत गलिन मझार॥१॥

पद

गुणवंती चतुर चितेरी ॥टेक॥
चित्र लेहु करवाय कें यों, कहति देत है फेरी॥
स्याम बरण अति गुण भरी, तन ढांपे अभिराम॥
भाग्य वली कोई देखि है, मेरे हाथ को काम॥
देखि सोहनी संग लगी, कौतुक गोप कुमार॥
तिन सों बूझति ग्राम इहि, कोई है रिझवार॥२॥

सखी बचन दोहा

है रिझवार उदार अति, बेटी श्री वृखभान।
तोहि मिलावे वेगि दे, तहं पैहै सनमान॥३॥

वार्तिक

बाट में चंपकलता मिली सो बोली॥४॥

पद

आज अपूरब खेल दिखावे॥टेक॥
एक चतेरन कारे रंग की, ग्राम सखी सब संग फिरावे॥
है सुन्दरि गुण खानि छबीली, चित्र अनेक बगल में दावे॥
वाहि लिवाय चलौ प्यारी ढिग, राधा देखत हूं हरषावे॥

कर गहि संग लिवाय चलीं सब, एक कहे कछु एक हंसावें ॥
डरपत हैं हरिदास चितेरन, दोउ कर चीर सों देह छिपावे ॥ ५

चंपकलता बचन—दोहा

अरी भटू जनि होहि तू, नेक कहूं भय भीति ।
देखि सके को तोहि कों, राज भवन की नीति ॥ ६

चितेरन बचन—दोहा

हौं हूं बाहर गांव की, जानो राज न रीति ।
भोरि समझ कें राखियो, तुम मोहू सों प्रीति ॥७

वार्तिक

प्रिया जू के समीप जाय, चरण लागी; तब प्रियाजी बोलीं अरी बीर तोहि देख मैं बड़ी प्रसन्न भई, अब कोई चित्र दिखाओ, यह सुन चितेरन ने मदन को चित्र दिखायो, वाके समीप रति बैठी देखि, प्रिया जी के चित्त में अधिक हुलास भयो, तब तितेरन बोली ॥ ८

पद

गुण गिनती नहिं मोरि कुमारी ॥ टेक
बहुते चित्र दिखा हों भामिनि, जो तुम मोसों प्रीति बिचारी ॥
मोरि बनाये कसीदा देखो, कंचुकि है वड़ मोल की सारी ॥ ९

रेखता

छबि काम की जा देखो निज हाथ में बनाई ॥
वाके समीप बैठी रति जगत जीत लाई ॥
ऐसे अनेक चित्र हैं बिचित्र रूप रंग के ॥
तिन्हें देखते ही भामिनि मन मोहैं सारे जग के ॥
जो प्रीति मोपै करि हो दिखराउं तुम को सारे ॥
कर मोरि के कसीदा जो देख गुणी हारे ॥
पट कंचुकी जा देखो वामें बूटा हैं घनेरे ॥
कंकरेजी सारी लहर दार लाई लाने तेरे ॥

मो गुण की गिन्ती नाहीं फिरती हूं सब छिपा के ॥
रिझवार कोउ नाहीं तिनको दिखाऊं जाके ॥
तुम साथ मो हिये ही कछु गांस मैंने टारी ॥
करि हौ जो कृपा मोपे तुव चित्र खींचों प्यारी ॥
हों नेह की मैं भूखी करि हों जो टहल सारी ॥
मन पलटें मन मिलै है भल जानो जी दुलारी ॥
लघु बुद्धि मोरी जैसी तैसी मैं कह सुनाई ॥
हरिदास जैसी समझो रिझवार हो महाई ॥ १०

प्रियाजी बचन—दोहा

सब प्रकार सों नागरी, बहुते गुण तुम मांहिं ।
नैन फिरत चकडोर से, मन को थिरता नांहिं ॥ ११
धन्य २ तब नागरी, गुणन आगरी आय ।
तेरे हातन की सखी, पुनि २ लेउं बलाय ॥ १२

चितेरनी वचन—दोहा

यों न कहो हो बल गई, आई तक तुव ओट ।
दई नैन दीन्हें बड़े, यामें मम का खोट ॥ १३

प्रियाजी बचन—दोहा

चित्र लिखन विद्या कठिन, तू सीखी किहिं ठौर ।
बेल कसीदा में चतुर, तो सम लखी न और ॥ १४

चितेरनी बचन—दोहा

बड़े कष्ट उर लाग सों, विद्या पाई भूर ।
नीरस सों राचौ नहीं, या बल फिरों गरूर ॥ १५

प्रियाजी बचन—दोहा

ब्रज अवनी सब रस मई, तू वलि गुणन दिखाव ।
जौन देश में बसत हौ, उत अब चित न चलाव ॥ १६

चितेरनी बचन—पद

मो नगरी के लोग चवाई ॥ टेक

कहं लौं कहौं कुंवरि तुम से मैं, नित प्रति होत अनीति सवाई.
अपनो धर्म बचा बलि भाजी, जब सब ने मुहि बहुत खिजाई.
बचत रही औरन सम ज्यों त्यों, भामिनि अपने शील सुभाई.
फागुन की ऋतु कठिन सखी री, प्रेम बहत नहिं काहु बसाई.
हौं हरिदास अकेली घर की, यातें अब मैं बहुत डराई. १७

प्रियाजी बचन–दोहा

अरी भली तू भजि बची, शीलवंत गुणवंत।
तोसी तिय बिन रैन दिन, किमि काटै तुव कंत॥ १८

चितेरनी बचन–पद

कंथ सदा निरशंक हमारो॥ टेक
विद्या बल डोलूं या ब्रज में, द्रव्य कमाय देउं सुख भारो॥
मोहि कमाऊ जान न बोले पांय पलोटत धाय बिचारो॥
अपने मन सों सांची सती मैं, दोउन के मन एक बिचारो॥
निज सुख मोर बड़ाई सुनि कें, चित हरिदास न चिंता धारो॥१९

प्रियाजी बचन–पद

धन्य सती तोसी जग नारी॥ टेक
तोसी ही सतवंतिन सत सों, थंभि रह्यो गगन धरनि अति भारी.
धनि २ कुल जहां जनम तुम्हारो, धनि २ तात पिता महतारी.
दरस पुनीत सदा तुमसनके, कीजे नित हम याहि बिचारी.
तो कर की कारागिरि देखौं, है भामिनि अभिलाष हमारी.
जो तुम प्रेम की भूखी भामिनि, आज बसो हरिदास यहां री. २०

चितेरी बचन–दोहा

प्रेम सीव राधे चतुर, तुम सन कौन दुराव।
भली भांति तुमरे ढिंग, लखो प्रीति को भाव॥ २१

वार्तिक

ऐसी २ बारता में वासर बीत गयो, तब प्रियाजी चितेरनी को हाथ पकरि के भवन में लिवाय गई, अरु बोली॥ २२

दोहा

खान पान सब विधि अधिक, सुखी करोंगी तोहि।
दुरी बात सब जीय की, मटू बतादे मोहि॥ २३॥

चितरेनी बचन—दोहा

मन देकें अवलोकिये, जो दरसाऊं रूप।
तुमहु को जु चिन्हार है, देखो चित्र अनूप॥ २४॥

वार्तिक

यह कहि प्रिया प्रीतम को चित्र दिखायो॥ २५॥

दोहा

चौकी पै बैठी प्रिया, करि षोडश शृंगार।
रूप छकें कर जोरि कें, ठाड़े नंद कुमार॥ २६॥

वार्तिक

यह जुगल रूप को चित्र देखि प्रिया जी मुसकाय बोली अरी प्यारी तू कौन है, सांची बता दे॥ २७॥

दोहा

अरी चितरेन तू नहीं, दीख्यो छदम निराट।
ये कौतुक कापै बने, ओघट घाट न वाट॥ २८॥

वार्तिक

नंदलाल जी ने भेष पलटि कें तुरंत अपनो रूप प्रगट कियो तब सखियन ने तारी दीनी, अरु बोलीं, लाल जी तुम्हें ने-कहूं लाज न आवे॥ २९॥

लालजी बचन—पद

लाज सों है कहा काज हमारो॥ टेक॥
बैरन लाज जाहि की बेटी, ताघर ता कहं जाय उतारो।
धार बही अनुराग नदी की, वाही सें मम कारज सारो॥
धरि २ नाना भेष नये नित, वाही में मुहिं न्हायबो प्यारो।
बरसानो बर वास चहै चित, प्यारी दरस पै तन मन वारो॥

उन को प्रेम नहीं क्षण भूलों , चित इतहीं चलै रोकत हारो ॥
मन हरिदास नहीं बस मेरे, प्रेम को दाग लग्यो हिय कारो ॥२०

दोहा

अमली असल बिना दुखी , भूखौ बिना अहार ॥
रूप सवादी नैन जे , रहन न देत विचार ॥२१॥

ललिता वचन दोहा

लाल न्याय बोलत जु तुम , वसि हो यहिं ससुरार ।
दई त्याग कुल कान सब , लक्षण लिये विचार ॥२२॥
किधों बखानो पाहुनी , किधों पाहुने श्याम ।
दोऊ विधि दरशन दिये , बलजाऊं छबि धाम ॥२३॥

वार्तिक

दुहुं जनको संग बैठाय भोजन करवाये अरु सेज बिछाय आरती कर परदा डार दीनीं ॥२४॥

दोहा

आनंद वारिध वरसहीं , रजनी भरी सुहाय ।
श्री हरिवंश प्रसाद लहि , कह्यो जुगल अनुराग ॥२५॥
वृंदाबन हित रूप बलि , यह आनंद अकूत ।
गुरु वोई गुरु वो कह्यो , विधि जु व्यास के पूत ॥२६

इति चितेरन लीला

अथ ब्रम्हचारी लीला

दोहा

श्री राधा रस में पगे , मनहिं प्रमोद बढ़ाय ।
बने ब्रम्हचारी लला , बरसाने में जाय ॥ १
बैठे खोरी सांकरी , बड़े तपो धन धीर ।
इक आवें इक जांय फिर , लगी दरस की भीर ॥२

वार्तिक

इनको देख ललिता ने प्रिया जू पै जाय कही ॥ ३

पद

अति पंडित दूध अहारी, इक आयो है ब्रह्मचारी ॥टेक॥
मृग छाला ओढ़ें शुभ लक्षण सुंदरता पै वारी ॥
पोथी पढ़ जु बतावत सबकों, कर लिलाट की रेखें ॥
ललिता कहत लड़ैती चलहुतौ, कौतुक हमहीं देखें ॥
वर्तमान है गई होहिगी, ऐसी बात बतावै ॥
भाग्य भलो होय जा नगरी को, तहां पुरुष अस आवै ॥

वार्तिक

यह सुन प्रिया जी अष्ट सखी संग लेइ के एक भाजन में दूध भराय दर्शन कों चलीं इनको देख ब्रह्मचारी बोले ॥५॥

दोहा

संग सखिन की भीर लै, सब सखियां सिर मौर ।
तप में अंतर पारिवे, को आवत यहि ठौर ॥६॥

वार्तिक

यह सुन ललिता बोली. ७

छंद

यह बेटी कीरति रानी की पिता भयाने राई .
तुम जिन होहु उदास तुमारो मान बढ़ावन आई .
भेंट धरी लै पय जु मथनियां इच्छा जेतो पीजे .
गिरवर सघन कियो क्यों आसन चल नगरी सुख दीजे .
धरें अनमनी मुद्रा लोचन मूंदो कबहु न खोलो .
बैठी घेरि सखी चहुं दिशि तें ओंठन ही में बोलो .
हों जू कहों उच्च सुर बोलो बूझति राज दुलारी .
तप को तेज बड़े ऋषि नंदन नेकु न दृष्टि पसारी .
कबहूं ग्रीव डुलति है कबहूं हलत छबीली भौंहें .

बूझन कों अकुलात भानु कुल मंडन बैठी सोंहें.८

रेखता

पूंछे है तुंग विद्या मुख सों कछू उचारो .
बिन्ती करें बिशाखा बलि मौन कों निवारो .
हमें संग लै श्री राधा जस सुनके तुम्हारो आई .
बूझन की चाह सब को , क्षण २ बढ़े सवाई .
बकवाद औरों आगे , हम आये मौन ठानो .
याको है कहा कारण , दिल खोल के बखानो .
समदरशी ब्रम्हचारी नहिं भेद भाव सोहै .
तुमरी है बैस थोरी लखि चित्त होत छोहै .
अनबोल वृत्ति तुमरी हमें लागे है अनैसी .
हरिदास आस पुजवो हम आई लगा जैसी .९

दोहा

मरम बात बूझत सुनी , अधरन में मुसक्याय ।
उडत अबहि सब सिद्धिता , ऐसी परी जानय ॥१०

वार्तिक

यह सुन पोथी खोल कें बोले ॥११॥

ब्रम्हचारी बचन दोहा

कहा करे संदेह तू, अरी गौर ब्रजबाल ।
पति सुत तेरे कुशल हैं, दीसत भाग्य बिशाल ॥१२

तुंगविद्या बचन वार्तिक

अजी ब्रम्हचारी जी जा विद्या तुम ने कहां तें सीखी, धन्य है तुम्हारे कों ॥१३॥

ब्रम्हचारी बचन लावनी

सब विधि पूरण गुरु सखी हमारो जानो ।
विद्या के नगरहिं वास गुरू को मानो ॥
हम पढ़े चौंसटों कला कुशल तिन माहीं ।

गिरि कानन करहिं निवास नगर नहिं जाहीं ॥
हम रचे मदन के धंद अनंद बढावें ।
अतिहीं तिनमें सुख मान सदा सोई गावें ॥
हम ज्योतिष विद्या निपुण कहें फल सांचे ।
पढ़ के सामुद्रिक रेख करम की बांचे ॥
जाके अंग लक्षण जैसे होय बतावें ।
हमरे गुण सुन हरिदास जगत सुख पावें ॥१४॥

सखी बचन दोहा

प्रथम बरणिये कुंवरि के, ऋषि नंदन गुण ग्राम ।
तुमही बरसाने बसहु, जो रीझें श्री श्याम ॥१५॥

वार्तिक

ब्रम्हचारी जी श्री प्रिया जू की ओर निहार बोले ॥१६॥

छंद

विपुल सुहाग भाग दरसत है आगम बात सुनाऊं.
रोम २ सुख लिखो बिधाता और कहां लौ गाऊं.
अखिल लोकबनितन चूड़ामणि बरणत आदि मुनी से.
प्रीतम ते जु मान नित नूतन ह्वै है बिस्वा बीसे.
दुहुं कुल को यश वर्द्धन भामिनि सदा स्वभाव गरूरो.
आरज बधुन असीस फलेगी जुग २ अविचल चूरो.
ह्वै है कछु आभा समान को पुनि अति कोमल हीयो.
सजनी सबै लाड़ नित पालि हैं तन लक्षण लखि लीयो.
भूरि भाग्य तुम सब दरसति हो इहि पुर बड़ी जो छोटी.
चारि वदन बिधि हूं न कहि सकै ऐसी बिद्या मोटी.१७

वार्तिक

यह सुन तुंगविद्या बोली.

पद

नंद सुवन गुण कहो ऋषि राई॥टेक॥

है वह राज कुंवरि को दूलह, जाको तुम बड़ भागि बताई ॥
सुनियत हैं नंद ढोटा कपटी, लंपट धूत लबार चबाई ॥
लच्छण और कुलच्छण ताके, जानहु तुम सब शील सुभाई ॥
तनक दुराव न राखि कहो सब, होय सिधाई वा कुटलाई ॥
हम हरिदास विलग नहिं माने, जानत हैं सब वाकी दबाई ॥ १६

ब्रम्हचारी बचन—रेखता

सखि बोले बाय लागी सी नैक ना विचारे।
नंदलाल को निरादर करि जीभ मुंह बिगारे ॥
वाके समान जग में नहिं भागवान कोई।
गुण रूप शील प्रभुता नहिं अंत में टटोई ॥
तुम सन को बन बुलाके सब रात हीं नचाई।
श्रम मेटिवे के हेतु कीड़ो जमुना जल जाई ॥
वाही की महिमा गुण को कत जात हो भुलानी।
हरिदास होत अचरज सुंहि सुनिके तोर वानी ॥ २०

सखी बचन—छंद

अहो ऋषि बालक बढ़ जिन बोलो वे राजा अपु घर के ॥
नातै आदर देंहि राज तें दबें न भानु नगर के ॥ २१

ब्रम्हचारी बचन—छंद

सखी अधिक तूही बोलत है कौन बात दुख पायो ॥
कहु मोसों हों बरजि देहुंगो जो माने समुझायो ॥ २२

सखी वचन छंद

कौन २ सिख सुने तुम्हारी वे आंखिन के रोगी ॥
बिना नचाये नचत फिरत कहुं बन भामिनि कहुं जोगी ॥ २३

वार्तिक

यह बात सुन ब्रम्हचारी मनही मन सकुचि गये अरु बोले यामें अंतर नाहिं सखी तू सांची बातें बोले, तुमरी स्वामिन राज सुता वे दान मांगते डोलें ॥ २४

वार्तिक

सखी बलैयां लेइ बोली ॥ छंद

बचन सुनत तुम्हरे ऋषि राजा हम जु न्याय भरि पायो ॥
बोले पक्षपात तजि अब तुम मन जु ठिकाने आयो ॥ २५

वार्तिक

यह सुन ब्रम्हचारी जी उठ खड़े भये अरु गैयन के पीछे चलिबे लगे, मुरली गिरगई, सो ललिता ने उठाय प्रिया जी को बजायवे दई, लालजी लौट आये अरु बोले ॥ २६

छंद

बहुत बोल आधीन बांसुरी ललिता मेरी दीजे ॥
या छल को फल मिलो सखी अब मो बिनती सुन लीजे ॥ २७

सखी

लाला अब ऐसी लंगराई न कीजियो ॥ २८

वार्तिक

प्रिया जी मुरली लेय घर की ओर सिधारीं. अरु लालजी दीन होय पीछे दौरे, सखियों ने तारी बजाई अरु बोली ॥ २९

छंद

अनवट है कें नाचो मोहन जब जु बने ब्रम्हचारी ।
भानु कुंवरि को जस जु बखानो तब प्रसन्न होय प्यारी ॥ ३०

वार्तिक

लालजी नाचिवे लगे, सखियन ने बाजे बजाये ॥ ३१

पद

धन २ भानुवंश मणि राधा ॥ टेक
याही के दर्शन ते छूटे रैन दिवस सब मेरी बाधा ॥
वाको ध्यान धरूं निशिवासर रहत सदा मेरी यह साधा ॥
हों हरिदास प्रिया को चेरो चित आकर्ष्यो रूप अगाधा ॥ ३२

वार्तिक

प्रिया जू ने रीझ कें हार अरु उपरौनी दीन्हीं अरु कौतुक देखि २ सखीन ने जय ध्वनि उचारी ॥ ३३

छंद

मुरली दई बुलाय स्याम कों बरस्यो रंग सहाई ।
श्री हरिवंश प्रसाद रंगीली लीला वरनि सुनाई ॥
गुप्त प्रगट रस गहर भिंजावत ये सब के चित चोरें ॥
वृंदावन हित रूप प्रेम के खेल कहो सो थोरें ॥ ३४

इति ब्रम्हचारी लीला

~~~~~~~~~~~~

अथ वहेलन लीला लिख्यते

पद

वन आये बृजराज बहेलन ॥ टेक
बाला अति अभिराम श्याम तन,चित हरतों नहिं लावत झेलन.
अंग २ में सिंगार सजे सब, परम मोहनी रूप नवेलन ॥
पग नूपुर झनकार मनोहर, डोलतहै बन बगर की गैलन ॥
कर मैंना को पिंजरा लीन्हें, पंछी अचरज रूप सहेलन ॥
प्यारी जू के रिझवन के हित, नित हरिदास करत अस खेलन ॥१

वार्तिक

या प्रकार को रूप बनाय श्री ब्रखभान की बगिया के निकट सरवर तीर छाया में जाय बैठीं तहां याको देख सखीं परस्पर कहिवे लगीं ॥ २

पद

देखोरी पदमिणि परदाकी ॥टेक॥
कै पति सों कछु कीन्ह लराई, कै कहुं सास लरी है वाकी.
लखि पर पुरुष बचन हूं सुनतो, बन बैठत मूरति लज्या की.
धीरज वान कुलीन कामिनी, घूंघट पट सों बदन जो ढांकी.
~~~~~~~~~~~~

सब सों अनीमल मधुरी वानी, रहत सदा खग खेलन छाकी.
इकली आइ बसी पुर बाहर, है वनिता हरिदास जा बांकी. ३

वार्तिक

याकी अनौखी छबि देख युवतिन की बड़ी भीर भई, कोई कहे बोलरी बोल, कोऊ घूंघट को खोलिवे लगीं, याही समय प्रिया जी हू सखिन के संग वाग देखवे आई अरु भीड़ देखि पूंछवे लगीं ॥ ४

प्रियाजी बचन—दोहा

कहा खेल कौने रचो, देखन आई नारि ।
भई भीर भारी कहो, सब मिल मोह बिचार ॥ ५

सखी बचन—पद

आई अनौखी नारि नवेली ॥ टेक
मणि पिंजरा कर घर सों रूठी, लाई ना कोऊ संग सहेली ॥
मधुरे बचन पढ़ावत मैंना, करत न काहू सों मन मेली ॥
वाके रूप लखन को प्यारी, अब हरिदास न कीजे झेली ॥६

वार्तिक

इतनो कहि के प्रिया जी वाही ठोर सिधारीं अरु तिनकी कुशल पूंछ आदर दइ मैना बोली ॥ ७

मैना बचन— दोहा

अरी सांवरी खोल मुख, तो सम आई जानि ।
लाइक सों बतराइये, अरु दीजे सनमानि ॥ ८

वार्तिक

यह चमतकार देख प्रिया जी बोलीं ॥ ९

पद

धन २ री मैना सुखदाई ॥ टेक
धन ब्रज भूमि जहां अस पंछी, अस विधि की रचना न दिखाई.
भामिनि हू उपमा के बाहर, सुर पुर सों अबहीं जनु आई.

ऐसन सों मिलिये उठ धायकें, अरु कीजे हरिदास मिताई ॥ १०

वार्तिक

यह सुन वहेलिन ने घूंघट दूर करि अपनो मुख खोल दीनों अरु प्रिया जी कौ मुख विलोक अति प्रसन्न भई ॥ ११

प्रियाजी वचन

दोहा

आई हौ किहिं नगर सों, जात कौन स देश ।
महा मोहनी वपु धरें, घरनी विधि जु महेश ॥ १२
जो कछु कारज जात हो, सुख सों कीजे गौन ।
जो पै आई विरस कें, चलो हमारे भौन ॥ १३
यहै नृपति को नगर है, बसो निशंक यहि मोद ।
राखि देहुं तुम टहल में, भामिनि जु विचक्षण कोद ॥ १४

मैंना वचन

वार्तिक

भले माई हम को अपने ही घर राखो तौ प्रीति सों राधा नाम पढ़ि हों ॥ १५

प्रियाजी वचन

पद

उत्तर दे बड़ भागिनि वाला ॥ टेक
सोच बिचार तजो सब सुंदरि, अरु सिगरे घर के जंजाला ॥
निज घर अंतर पै तजि आई, अब या घर चलु मेटो कसाला ॥
बिना बिबेक मिटे ना चिंता, है हरिदास यही जग चाला ॥ १६

बहेलन वचन

दोहा

मेरो उर शीतल कियो, कुल मंडन ब्रखभान ।
चलि हों जो रचा करो, या मैंना मेरे प्रान ॥ १७

प्रियाजी बचन

दोहा

मैना प्रिय मुहि अधिक तुम , सुनो कहौं धर टेक ।
पल पुतरी सम राखि हों, रचो खिलौना एक ॥ १८
ऐसी ही मृदु बोलनी, तुम घर मैना और ।
देहु मंगा नृप नंदनी, प्रीति करन की ठौर ॥ १९

वार्तिक

यह सुन बहेलिन ने भारी स्वांस खींची अरु बोली प्यारी एक मैना की कहा चलाई जो कोउ मंगावे तो मैं द्वै चार मंगाय दूंगी. २०

पद

और अपूरब वस्तु हमारे, पास धरी नैनों सुखदाई ॥ टेक
ये सब तुम पै देहुं पठा तब, ऊरन होंहु करो न बड़ाई ॥
वेग सुनोगी श्रवणन प्यारी, मेरो हू परताप महाई ॥
कारज बसहू पाय प्रिया दे, या पुर लो मैं दौरी आई ॥
देहु रजा हरिदास चलो अब, निकट निशा दरशन सुख पाई. २१

वार्तिक

प्रिया जू ने हाथ पकरि बहेलन को उठाय मन में आनंद होय भीतर लिवाय गई अरु दुहु जन परस्पर प्रीति में मग्न हो वार्तालाप करिवे लगीं, इनको कौतुक देखि मैना बोली ॥ २२

दोहा

हंसत लसत दोऊ जनी, अलभ लाभ को पाय ।
इक गोरी इक सांवरी. बिलसत सुख चितलाय ॥ २३

वार्तिक

प्रिया जू के महल में पाहुनी आयवे को वृत्तान्त सुन रानी कीरति हू ताको देखिवे को गई, मैना की बलैयां लेय पाहुनी तन निहार बोली ॥ २४

पद

मोहन की अनुहार पाहुनी, दीसे जनु जसुधा की जाई ॥ टेक

भूपति भवन सुता अस चहिये, तेज रूप गुणखानि सुहाई ॥
किहि विधि मो कुल मंडन राधे, यासे तोसों भई मिताई ॥
धोखो परत सबनि यह देखत, कोउ न मुख सों कहत लजाई ॥
भेद नहीं हरिदास मिले कछु, बिधिना की गति जानी न जाई २५

प्रियाजी बचन

पद

यह कहुं रूठी जात हुती ॥ टेक
अतिही रोस भरी मग माहीं, निंदति देवर पती ॥
पीरी पोखर घाट निकट पै, चिरुखी गयंद गती ॥
हों जु गई देखन को बगिया, सखि सों सुनी दुचिती ॥
इकली जात दया मोहि आई, देखी अधीर मती ॥
हों हरिदास लिवा इत लाई, बड़े कुल की युवती ॥
कहि देहै सब भेद भवन को, हुई है जो पूरी सती ॥ २६

वार्तिक

कीरति जी को अति करुणा आई, तब दुहुंन को भोजन कराय और मैना हूको चुगाई, मैना वृखभान कीरति अरु राधे यह नाम उचार करिवे लगी, याको देखि के बनितन की भीर भई, प्रिया जू माता की आज्ञा लेय सीस महल में पधारीं, सांवरी हू ताके पीछे गई ॥ २७

प्रियाजी बचन

दोहा

कहि सजनी अब जीय की, गेह तजे किहिं काज ।
नाम न भूलि छुपाइये, साथिन की करि लाज ॥

सांवरी बचन

दोहा

कबहूं मैं कहि देउंगी, अब न करों चित चाल ।
जो मो पेंडे ही परो, उठि जैहों इहिं काल ॥ ६

चित्रा वचन

दोहा

तजहु प्रिया या संग को, बातन को अरुभेर।
ग्रह तज आई आपनो, तुम्हें तजत का बेर ॥३०॥

पद

यह सखि कोऊ छलन को आई ॥टेक॥
बातन में अरुझात सबन सों, मोहन बनितन रूप बनाई ॥
तुमहिं तजत याकों कहा शंका, निज ग्रह तजत न बार लगाई ॥
नहिं अनुरागिनि ना बैरागिनि, वहु गुण या में परत लखाई ॥
सांझ किधों परभात खुलेगी, गायन नाचन की चतुराई ॥
रात रहें हरिदास कढ़ेगी, या सजनी की सकल खटाई ॥३१॥

वार्तिक

यह सुन सांवरी मुसक्यानी अरु प्रिया जी बोली, अरी चित्रा सखी तूतो मानो ज्योतिष पढ़ि के जन्मपत्री को हाल बतावे है ॥३२॥

चित्रा

दोहा

मैं परखन में अति चतुर, भेष पलट यह कौन।
छदम लख्यो ना काहु ने, यदपि सबै परवीन ॥३३॥

सांवरी बचन

दोहा

जीत जु मेरी हो रही, बचन चातुरी ओट।
तुव बुधि बल टूटो नहीं, नेक छदम को कोट ॥ ३४

चित्रा

दोहा

छल छलियों को ही रुचै, हम न छुवें छल छांह।
यह विद्या अरु जीत यह, फुरहु रावरे मांह ॥३५॥

वार्तिक

लालजी अबहूं लों तो लज्जा तजो अरु त्रिया को भेष बढ़ाओ.३६
यह सुन श्री महाराज ने निज रूप प्रगट कियो तब सखियन ने युगल रूप की आरती उतारी । ३७

छंद

प्रेम हिये इत उत बली हो कौतुक रचत अनंत ।
श्री व्यास सुवन परसाद तें मैं कछु वरणे तदपि न अंत ॥
सागर मित जु सुमेर मित अरु मित नद नदी प्रवाह ।
वृंदावन हित रूप रस बिन मित बृज सिंधु अथाह ॥३८

इति बहेलिन लीला

गजल

कन्हैया जग पलैया जो नसैया श्रुति कहें सारी ।
वही नये रूप बन बन के रिझावें राधिका प्यारी ॥
पलटि के भेष बन जावें नई तिरिया गौने वारी ।
चितेरन चित्त चोरन बन सुनारन वेद की नारी ॥
रंगीली बनके रंगरेजन बने मालिन व मनहारी ।
कभूं पटविन कभूनाइन विसातन बन वीणाधारी ॥
कभू बहलन तमोलन बन बने गंधिन अतर वारी ।
मंगे हैं दान ढाणिन बन नचे नटनी विटप डारी ॥
कभूं जोगी कभूं मौनी संन्यासी तपसी बनचारी ।
कभूं जोगिन कभूं तपसिन कभूं अवधूत बृम्हचारी ॥
छन्न चौबीस गो स्वामी श्री वृंदावन चरचा चितलाई ।
युगल सरकार चरणों को सुमिर हरिदास कहं गाई ॥

लावनी

अद्भुत हरि चरित कौ काहे न अचरज आवे।
त्रिभुवन को स्वामी नंद को नंद कहावे॥ १
कियो दावानल को पान दूध सियरावे।
खींचे हैं पूतना प्राण नजर झरवावे॥ २
नख पै धारो गिरि राज इंद्र तरसावे।
धरतों दुहुंनी अव दूखत हांथ बतावें॥ ३
शुचि पटक सटक माथि कंचन कठिन दिखावे।
नभ सों पटको त्रिणावर्त झुलत भय खावे॥ ४
धरि फारि बका की चोंच सखान खिलावे।
सोइ पींजरा पिक अरु कीरन अंगुली लावे॥ ५
धंसि अघा असुर के पेट बाल वछ ज्वावे।
सोई सूने सदन विन दीपक जात डरावे॥ ६
तरु यमला अर्जुन तोरि कुयोनि नसावे।
पल्लव नाहिं छुवत पलास विपिन जब जावे॥ ७
विधि वाल बच्छ ले ठायो नये कर लावे।
वन बिछुरीं गैयन गोपन से ढुड़वावे॥ ८
लखि कारे नाग को चित्र चित्त भरमावे।
कालिय के फन फन निरतत ताल बजावे॥ ९
बृज बालन के संग रातहिं रास बनावे।
माता मुख ब्याह की बात सुनत शरमावे॥ १०
नित सहस सुंदरीं संग एकलो धावे।
राधा रस छाको छैल त्रिया बन आवे॥ ११
कोउ लाय कोटि रसनाहि कछु न कहि पावे।
करि दास आस हरिदास सदा गुण गावे॥ १२

॥ इति ॥

श्रीगणेशायनमः

अथ रथ के पद लिख्यते

रथ पै राजत दोऊ महाराज ॥ टेक ॥
मणिमय कलश पताका सोहे, सुंदर चारों बाज ॥ १
अद्भुत छत परदा पिछवाई, रतनन को सब साज ॥ २
नारायण सजनी ढिंग गावत, धन्य दिवस है आज ॥ ३ ॥ १

मांड

बृज राज संगै रथ पै राजै भानु नंदिनी ॥ टेक ॥
उज्वल रथ सखियन सजो रवि सो लावत होड़ ॥
तामें जोते लाय कें हंस वरन हय जोड़ ॥ १ ॥
नान्ही नान्ही बूंदियन नभ सों बरसत मेह ॥
मरुत मंद शीतल चलै दंपति बढ़त सनेह ॥ २
चहुं दिश कारीं बदरियां छाय रहीं नभ माह ॥
रुम झुम बरसत विपिन में सखियन परम उछाह ॥ ३
मंद मंद गति रथ चलै बीच सांकरी खोर ॥
बृज वनिता हरिदास मिलि लहत अनंद न थोर ॥४॥ २ ॥

मांड

जुगल वर आवत रथहिं चढ़े ॥ टेक ॥
सखि समूह घेरौ चहुं दिशि तें सांकरी खोर खड़े ॥
भीर भई कुंजन की मग में जहं तहं रहत अड़े ॥ १
उत नभ नील जलद विच चपला चमकत चमक लसी ॥
इत घनश्याम वाम दिश राधा छवि की धाम लसी ॥२
गावत मधुर मलार सबै मिल दादुर मोर ररैं ॥
बाजत मधुर मधुर सुर बाजे नभ में घन घहरैं ॥ ३
गौर श्याम अति रूप मनोहर वन उपवन विहरैं ॥

आनंद मगन सकल वृजवासी चित हरिदास हरैं ॥ ४ ॥३॥

रेखता

आई असाढ़ सुदी दोज मौज मन में भारी ॥
रथ पै सवार डोलें नंद नंदलाल राधा प्यारी ॥१
पन्नों के हैं पताका कंचन के कलश सोहैं ॥
मणियों के साज सारे देखे से चित्त मोहैं ॥ २
मोतिन की लागी झालर परदों में कामदानी ॥
कदली के चारु खंभा महरावों में कमानी ॥ ३
अति वेगवान वाजी सिंगार सभी साजें ॥
इनकी सु शोभा देखैं रवि रथ के वाज लाजें ॥४
छवि माधुरी जुगल की लखि के सखि सिरावैं ॥
हरिदास संग रथ के डोलैं मलार गावैं ॥ ५ ॥ ४ ॥

लावनी

चलु देखौ नवल निकुंज मैं रथ पै श्री किशोरी किशोर जी ॥
विविध वरन के वाने साजें दोऊ जग के चित चोर जी ॥
सखिगण राग मलार अलापें मिल मुरली धुन घोर जी ॥
घन गरजत चमकत हैं चपला बोलत दादुर मोर जी ॥
रुमझुम रुमझुम मिघवा बरसत लागत पवन झकोर जी ॥
धीमी चाल चलाओ रथ को रविजा जल हिलोर जी ॥
यह शोभा हरिदास विलोकत लहत अनंद न थोर जी ॥५॥

गजल

चंदन के चाक चितौर के चौकी जड़ाऊ सुहावनी ॥
वृजराज आज चलावै रथ संग लै प्रिया मन भावनी ॥ १
शोभा अपूरव परदों की पिछवाई मोतिन झालरैं ॥
हैं चारौं वाज सुहावने चलिवे में धीरज ना धरैं ॥ २
उमड़ीं सखी चहुं ओर सें गावैं हैं गीत सुहावनै ॥
नभ मेघ गर्जन को करैं लागे हैं जल वरसावनै ॥ ३
हरियाली वन की सुहावनी मद मत्त भंवरें गुंजारहीं ॥

हरिदास देख अनोखी छवि सखियां जु सरवस वारहीं ॥४॥६॥

पद

चलहु सखि मिल देखिये रथ पै नंद नंदन आवत हैं ॥ टेक
वाम भाग वृषभानु नंदिनी, घन दामिनी चमकावत हैं ॥१
सखियां विविध सिंगार किये, जनु बादल रंग पलटावत हैं ॥२
मंद मंद उत गरजन घन में, इत मल्हार मिल गावत हैं ॥ ३
उत दादुर इत बजत बांसुरी, राग मल्हार अलापत हैं ॥ ४
रथ हांकत मृदुहास हरत मन, अनुपम छवि दिखरावत हैं ॥ ५
बोलत हंसत परस्पर दोऊ, सखियन चित्त चुरावत हैं ॥ ६
अनुपम छवि हरिदास लखै, लखि लोचन लाहु मनावत हैं ॥ ७ ॥ ७

मल्हार

अबहीं कुंजन लखि आई रथ बैठे कुंवर कन्हाई ॥
उत घन इत घनश्याम लाड़िलो उत दामिनि इत प्रिया सुहाई ॥
उत बरषत बूंदन की लरियां इत गल मोतिन लर पहिराई ॥
उत रंग के बादर इत बागे उत धनु इत बनमाल लुनाई ॥
उत घन घुमड़ इतै दृग घूमत लखि सुख हरीदास बलजाई ॥ ८

पद

आली रथ आ गयो जमुना तीर ॥ टेक
श्याम बाम दिश राजत श्यामा, संग चली सखियों की भीर ॥
नभ में मेघ मधुर सुर गरजैं रुम झुम रुम झुम बरसत नीर ॥
मुरली मधुर मल्हार अलापत, सुन ब्रज वनिता होत अधीर ॥
वाही थल हरिदास चलो अब, लखि छवि मेंटहु उर की पीर ॥ ९

पद

आवोरी यह शोभा निहारैं ॥ टेक
नंद नंदन वृषभानु नंदिनी, राजत रथ गल बैयां डारैं ॥
नील जलद के पटलन भीतर, सहस किरण जिमि विधु विस्तारैं ॥
मेघ मधुर सुर बरसत बूंदन बन पक्षी मृदु बचन उचारैं ॥
सनमुख चलत सुरन की नारीं, अस्तुति करत पलक नांहि मारैं ॥

यह शोभा हरिदास निरख कैं, आज सखा हम सरवस वार ॥ १०

गजल

असाढ़ी दोज आई सुन अधिक आनंद हो मन में ॥
जुगल सरकार को रथ वैठे जइ चलौ सखि आज वा वन में ॥१॥
जुते हय हंस वरनों के लगीं हैं रेशम डोरें ॥
सुनत आवाज वा रथ की विविध खग बोलतीं मोरें ॥२॥
जड़ाऊ साज सारी लख मदन की मत भुलानी है ॥
सखी घर छांड़ के दौड़ी न इक ने दूजी जानी है ॥ ३
जमुन के तट वंसीवट पै सखियन की भीर है भारी ॥
खड़ीं चहुंओर रथ घेरें मनौं आई घटा कारी ॥४॥
चलैं रथ संग में धीरैं सवै मधुरे सुरों गावैं ॥
जुगल सरकार की शोभा लखैं हरिदास सुख पावैं ॥५॥११॥

। इति ।

श्रीगणेशायनमः

फुटकर पद

—※—

कबहुं न कृष्ण निराश कियौ ॥ टेक ॥
जब जब जो जन चाह करी, प्रभु तब तब ता कहं ताह दियो ॥
बहुत दिवस देखत मुहि वीते, टिक न टरयौ प्रभु टेक हियो ॥
रीती भरी भरी ढरकाई, अब लगि तुम्हरो हि ज्वाप जियो ॥
कोनहूं भांति कमी नहिं आई, जब जब प्रभु तुव शरण लियौ ॥
अबकी वार अवार विना प्रभु, करु शीतल हरिदास हियो ॥ १ ॥

कवित्त

अति आनँद पूरक जे जग में तुमरे पद पंकज ध्यावत हैं ॥

वहि है सरसी रुह लोचन सार असार विवेकी कहावत हैं ॥
पद पंकज सेवन के सुख पै सब योग विरागहू वारत हैं ॥
जग केर विषे हरिदास नहीं तिनके तन में लपटावत हैं ॥ २ ॥
अज आदिक केर जड़ाऊ किरीट वही पग के तल लोटत हैं ॥
वहि वानर भालु बनाय सखा सिय सुन्दर ढूंढत डोलत हैं ॥
अस भक्त अधीन अहैं जग वन्धु सबै तजि जो उन्हैं जोवत हैं ॥
तिन को अपनेहि समीप बुला कलि के मल को प्रभु खोवत हैं ॥३॥
निज सेवक जो वलि औ पहलादिक जानि अनुग्रह भूरि कियो ॥
सिगरे जग के असमीत कृपानिधि को तजि के मन अंत दियो ॥
शरणागत को सब अर्थ दिये उनहीं हरिदास बसाव हियो ॥
सब इन्द्रिय भोग भुंजे मनुजा बिन दुई पद पकंज वादि जियो ॥४॥२

पद

दया निधि तेरी गति लखि न परे ॥ टेक ॥
धर्म अधर्म अधर्म धर्म करि अकरन करन करै ।
जय और विजय पाप कह कीन्हों ब्राम्हण शाप दियो ॥
असुर योनि दीन्ही ताऊ पर धर्म उछेद करायो ॥
पिता वचन खंडे ते पापी सो प्रहलादऊ कीन्हों ॥
ताके हेतु खंभ सों प्रगटे नर हरि रूप जु लीन्हों ॥
द्विज कुल पतित अजामिल विषयी गणिका प्रीति बढ़ाई ॥
सुनहित नाम नारायण लीन्हों तिहिं तुव पदवी पाई ॥
यज्ञ करत वैरोचन को सुत वेद विहित विध कर्म ॥
तिहि हठिबांध पतालहिं दीन्हों कौन कृपानिधि धर्म ॥
पतिवृता जालंधर युवती प्रकट सत्य तें हारी ॥
अधम पुंश्चली दुष्ट ग्राम की सुआ पढ़ावत तारी ॥
दानी धर्म भानु सुत सुनियत तुम ते विमुख कहाये ॥
वेद विरुद्ध सकल पांडव सुत सो तुमरे जिय भाये ॥
मुक्ति हेतु योगी बहु श्रम करें असुर विरोधे पावे ॥
अकथित कथित तुम्हारी महिमा सूरदास कहा गावे ॥ ५ ॥

पद

सबनि सनेहो छांड़ि दियो ॥ टेक ॥

हा यदुनाथ जरा तन ग्रास्यो प्रतियो उतरि गयो ॥
सोई तिथि वार नक्षत्र लग्न सोई करत योग सोई टाट ठयो ॥
अब वे आंख फेरि नहिं वांचत गत स्वारथ समयो ॥
बरस द्यौस में होत पुरानो फिर २ सब कोउ लिखत नयो ॥
सोई धन धाम नाम सो कुल सोई २ यह वपु जिहि सब बिढयो ॥
अबहीं सब को बदत स्वान ज्यों चितवत दूर भयो ॥
दारा सुत हित चित सज्जन सब काहुन शोचि लयो ॥
संसृत बोप विचारि सूरि धनि जे हरि शरण गयो ॥ ६ ॥

पद

बादहिं जनम गयो सिराय ॥ टेक ॥

ना हरि भजन न गुरु की सेवा मधुवन बस्यो न जाय ॥
श्री भागवत श्रवन नहिं कीनों कबहूं रुचि उपजाय ॥
सादर व्है हरि के भक्तनि के कबहुं न धाये पाय ॥
रिझाए नहिं कबहूं गिरिवर धर विमला विमल यश गाय ॥
प्रेम सहित पग बांध घूंघरू सक्यो न अंग नवाय ॥
अबकी वार मनुष्य देह धरि कियो न कछू उपाय ॥
भव सागर पद अंबुज नौका सूर लेहु चढ़ाय ॥ ७ ॥

पद

मुख कटु वचन बकत नित निन्दा सुजन सुखे दुःख देता ॥ टेक ॥
कबहुं पाप के पावत पैसा, गाड़ि धुरि तहं देत ॥
गुरू ब्राम्हण अच्युत जन सज्जन, जात न कबहुं निकेत ॥
सेवा नहीं गोविन्द चरण की , भवन नील को खेत ॥
कथा नहीं गुण गीत सुयश , हरि साधन देव अनेत ॥
रसना सूर विगारे कहां लों , बूड़त कुटुम्ब समेत ॥ ८ ॥

पद

प्रभु हो सब पति तन को टीको ॥टेक॥

और पतित सब द्योस चारि के, हौंतो पतित जन्म ही को ॥
बधिक अजामिल गणिका तारी, और पूतना ही को ॥
मोहिं छांड़ि तुम और उधारे, मिटे शूल कैसे जी को ॥
कोउ न समरथ सेव करन को, खैंच कहत हों लोको ॥
मारियत लाज सूर पति तन में, कहत सबनि में नीको ॥ ६ ॥

पद

सबै दिन एक से नहिं जात ॥ टेक ॥
सुमिरन भगति लेहु करि हरि को, जों लगि तन कुशलात ॥
कबहुंक कमला चपल पायके, टेढ़ई टेढ़े जात ॥
कबहुंक मग मग धूरि टटोरत, भोजन को बिललात ॥
बालापन खेलत ही खोये, भक्ति करत असरात ॥
सूरदास स्वामी के सेवत, पै हो परम पद तात ॥ १० ॥

पद

तुम्हरी कृष्ण कहत कह जात ॥ टेक ॥
बिछुरे मिलन बहुरि कब न्है है, ज्यों तरुवर के पात ॥
शीत वायु कफ कंठ विरुध्यो, रसना टूटी बात ॥
प्राण लिये यम जात मूढ़, मति देखत जननी तात ॥
छिनुएक मांह कोटि युग बीतत, नरक की पीछे बात ॥
यह जग प्रीति सुआ सेंबरिज्यों, चाखत ही उड़जात ॥
यम की त्रांध नियर नहिं आवत, चरणनि चित्त लगात ॥
कहत सूर वृथा या देही, इतनो कत इतरात ॥ ११ ॥

पद

प्रभु बिन कोऊ काम न आयो ॥टेक॥
यह झूठी माया के लाने, रतन सो जनम गवांयो ॥
कञ्चन कलश विचित्र चित्र किये, रचि २ भवन बनायो ॥
तामें ते तत छिनु गहि काल्हि, पल एक रहत न पायो ॥
हों तुम्हरे संग आउंगी कहि, त्रिय धुनि २ धन खायो ॥
चलत हरी मुख मोरी चोरी सब, एकौ पग नाहिंन पहुंचायो ॥

बोलि २ सुत स्वजन मित्र जन, लीनो सुयश सुहायो ॥
परेउ जु काज अंत अंतक सों, उहि ढिग आनि वे धायो ॥
कोटि जनम भ्रमि २ हों हारेउ, हरि पद चित न लगायो ॥
और पतित तुम बहुत उधारे, सूर कहा विसरायो ॥ १२ ॥

पद

गति अब गति जानी न परै ॥ टेक ॥
अति अगाध सुन अगम अगोचर, बुधि बछ क्यों पसरै ॥
कबहुंक रंक रंक तें राजा, करि शिर छत्र धरै ॥
कबहुंक तृण डूबत पानी में, कबहुंक शिला तरै ॥
प्रबल प्रचंड महा बपु शायक, केहरि भूख मरै ॥
अनायास बिन उद्यम अजगर, सहजहिं पेट भरै ॥
बागर में सागर करि डारे, ठंडा नीर भरै ॥
सूर पतित तरिजाय छिनक में, जो प्रभु नेकु ढरै ॥ १३ ॥

पद

भक्ति बिनु शूकर कूकर जैसे ॥ टेक ॥
बिनु बगला अरु गीध घुघुआ, आय जनम लिये तैसे ॥
ज्यों लोमड़ी बिलाउ मोर वृक, स्कोरत रहित आंदरनि वैसे ॥
ता दिन अवधि नो सुत दारा, वे उन्हें भेद कहो कैसे ॥
जीव मारि के उदर भरत हैं, रहत अशुद्ध अनैसे ॥
सूरदास भगवन्त भजन बिन, जैसे ऊंट खर भैसे ॥ १४ ॥

पद

मोरे जिय ऐसी आन बनी ॥ टेक ॥
छांड़ि गोपाल अवर जो सुमिरों, तो लाजै जननी ॥
मन क्रम वचन और नहिं चितवों, जब कब श्याम धनी ॥
विष को मेरु कहा लै कीजे, अमृत एक कनी ॥
कहा लै करों कांच कों संग्रह, त्याग अमोल मनी ॥
सूरदास भगवन्त भजन को, तजी जात अपनी ॥ १५ ॥

॥ इति श्री कृष्णार्पण मस्तु ॥